Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111388

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111388

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतमाता

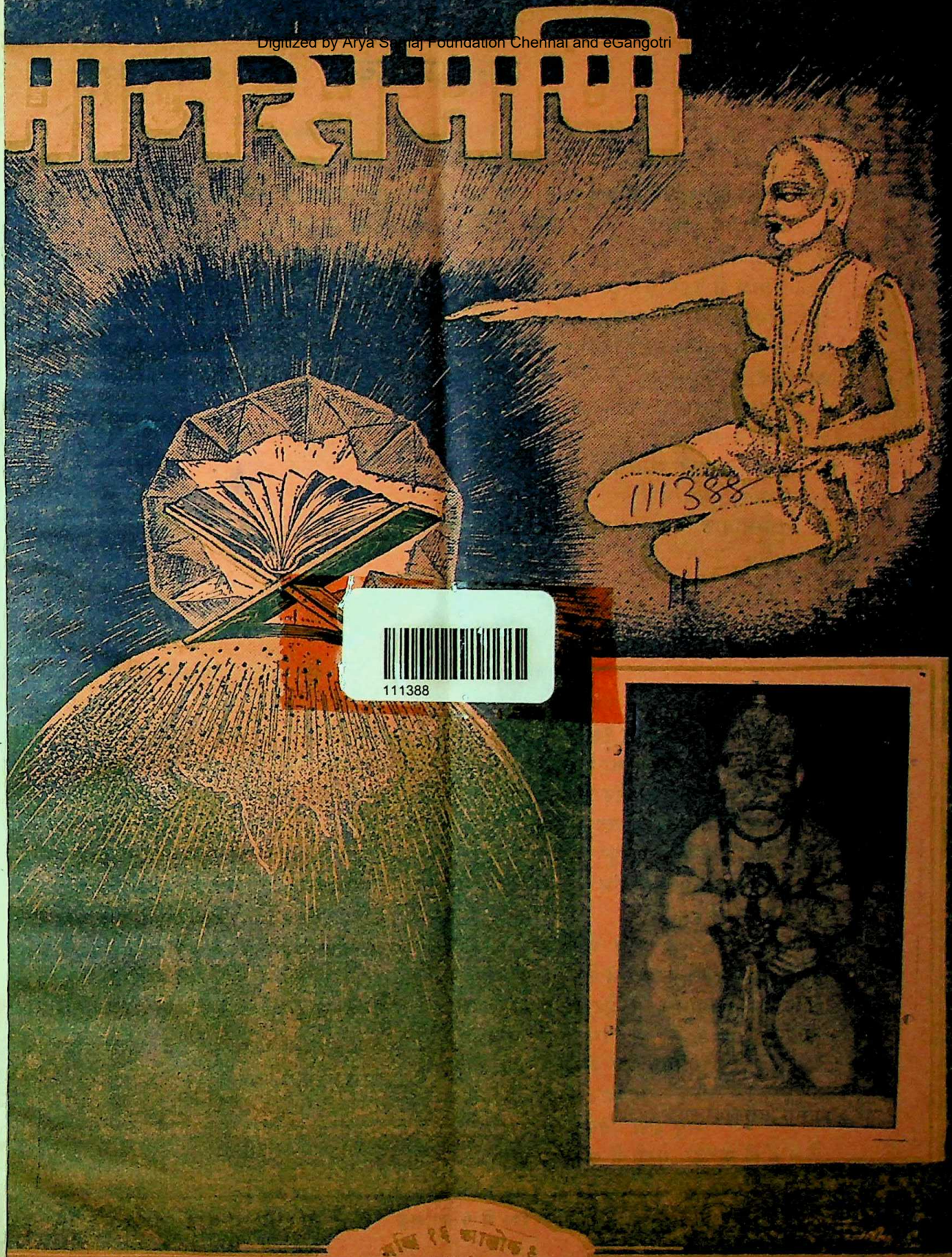

111388

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

नाम	लेखक	पृष्ठ
१. झूलना	(गीतावली से)	२५३
२. मानस का सुन्दर सोपान	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	२५४
३. सार्वभौम गीता	(श्री सुदर्शनसिंह जी)	२५५
४. अहिल्योद्धार	(श्री रतनलाल मग) ...	२५६
५. मानस में परम प्रकाश	(श्री भैरव जी रामायणी)	२६५
६. रामायण में सत्याग्रह	(श्री मुरलीधर दीक्षित साहित्यरत्न)	२६६
७. क्या तुलसी ने नारी निंदा की है	(श्री मुन्नालाल जी देवासे)	२६८
८. शंका समाधान	(श्री पं० रामकुमारदास जी)	२७१
९. संघ-समाचार	....	२७४
१०. विविध-समाचार	....	२७४
११. तुलसी जयन्ती समाचार	....	२७६
१२. रामवन-समाचार	....	२७७
१३. मानस पाठ निर्णायक समिति का अधिवेशन	....	कव्हर पृष्ठ ३

मानस से कुछ पाया है

(१) गत सितम्बर मास सन् १९५७ में हिन्दी की एक परीक्षा में बैठना था। नियम तो था, नहीं। परीक्षा मंत्री की भेंट के हेतु, मानस की

प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदय राखि कोसलपुर राजा॥

का पठन करते यात्रा आरंभ की। भगवत कृपा से कार्य सफल रहा।

(२) मेरे एक मित्र अस्वस्थ रहने के कारण इन्टर कामर्स की परीक्षा में बैठना नहीं चाहते थे। परन्तु मानस में प्रेरणा रखकर मेरे आदेश से— *जनक सुता जग जननि जानकी।*
अतिसय प्रिय करुना निधान की॥
ताके जुगपद कमल नवावउँ।
जासु कृपा निर्मल मति पावउँ॥

के पाठ से अच्छी श्रेणी में सफलता पायी।

(३) मुझे लगभग १२ महीने से दुःस्वप्न आते थे। यहाँ तक कि चित भ्रम के कारण नौकरी भी छोड़ दी। पं० श्री कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी के आदेश से मानस को पढ़ा एवं चित्त को लगाया। भगवान् की कृपा से आज इस रोग से मुक्ति पा गया हूँ।

(४) मेरे एक मित्र ने भगवत कृपा से एवं श्रद्धा से—

सखा धर्म मय अस रथ जाके।
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥

के पाठ से अदालत में दो बार विजय पाई है।

ये अनुभव सत्य हैं। मैंने एवं मेरे मित्रों ने इससे लाभ उठाया है।

—रामचन्द्र शर्मा 'छांगाणी' आर्वी

वार्षिक मूल्य तीन रुपया] विदेश में ६ शिलिङ्ग [वी० पी० से तीन रु० ६५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १६ | रामवन—भाद्रपद, मानस सम्वत् ३८४—सितम्बर १९५७ ई० | आलोक ९

झूलना

पौढ़िये लालन, पालने हौं झुलावौं।
कर, पद, मुख, चख कमल लसत लखि लोचन-भँवर भुलावौं॥
बाल विनोद-मोद-मंजुलमनि किलकनि खानि खुलावौं।
तेइ अनुराग ताग गुहिबे कहँ मति मृगनयनि बुलावौं॥
तुलसी भनित भली भामिनि उर सो पहिराइ फुलावौं।
चारु चरित रघुबर तेरे तेहि मिलि गाइ चरन चितु लावौं॥

—गीतावली से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बन्देवप्रसाद मिश्र एम० ए०, डी० लिट्]

हरिजन जानि प्रीति अति बाढ़ी।
सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी॥
बूड़त बिरह जलधि हनुमाना।
भयहु तात मो कहुँ जल जाना॥
अब कहु कुसल जाउँ बलिहारी।
अनुज सहित सुख भवन खरारी॥
कोमलचित कृपालु रघुराई।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई॥
सहजबानि सेवक-सुख-दायक।
कबहुँक सुरति करत रघुनायक॥
कबहुँ नयन मम सीतल ताता।
होइहहिं निरखि स्याम-मृदु-गाता॥
बचनु न आव नयन भरि बारी।
अहह नाथ हौं निपट बिसारी॥
देखि परम बिरहाकुल सीता।
बोला कपि मृदु बचन बिनीता॥
मातु कुसल प्रभु अनुजसमेता।
तब दुख दुखी सु-कृपा निकेता॥
जनि जननी मानहु जिय ऊना।
तुम्ह ते प्रेम राम के दूना॥

दोहा—रघुपति कर सन्देसु अब सुनु जननी धरि धीर।
अस कहि कपि गदगद भयेउ भरे बिलोचन नीर॥

(हनुमान जी को) हरिजन (रामदास) जानकर (सीता जी के मन में) अत्यन्त प्रीति बढ़ी। उनके नयनों में आनन्द अश्रु उमड़ आये और शरीर रोमांचित हो गया। उन्होंने कहा। हे तात हनुमान! तुम विरह जलधि में मुझ डूबती हुई के (उद्धार करने वाले) जहाज हो। मैं तुम्हारी बलैयाँ लूँ अब कहो कि सुख-भवन खरारि (भगवान राम)[1] अनुज सहित कुशल से तो हैं?[2]

रघुराज तो बड़े कोमल चित्त हैं, बड़े कृपालु हैं, फिर हे कपि! उन्होंने किस कारण इतनी निष्ठुरता धारण कर ली। सेवक के लिये सुखदायक होना तो उनकी सहज टेव है। क्या वे रघुनायक (इस रघुकुल-वधू का भी) कभी स्मरण करते हैं? हे तात! क्या कभी मेरे भी नयन वह श्याम मृदु गात्र देखकर शीतल होंगे? बारी (बड़ी भोली) सीता जी आगे कुछ कह न सकीं। आँखों में जलभर (केवल इतना ही बोल पाईं) "अहह नाथ! मैं एकदम भुला दी गई।" [अथवा यह समझिये कि अश्रु जल धारा ही आँखों को भर कर मानों पुकार उठी *अहह नाथ! हौं निपट बिसारी।*] सीता जी को परम-विरहाकुल देखकर कपि ने मृदु और विनीत वचन कहे, "हे माता! प्रभु (राम) अनुज समेत कुशल हैं। वे (निश्चय ही प्रभु हैं—इसलिये उनकी कुशल निश्चित ही है—परन्तु फिर भी) सुकृपा निकेत हैं अतएव आपके दुख से वे बड़े दुखी हैं।[3] हे माता! मन में किसी प्रकार के ऊनापन-किसी प्रकार की छुटाई या क्षुद्रता का अनुभव मत करो। (यह समझ लो कि) राम का प्रेम तुम से दूना है।[4] हे जननी! अब धैर्य धारण कर रघुपति का सन्देश सुनो।' ऐसा कह कपि स्वतः गद्गद् हो गये और उनकी बड़ी बड़ी आँखों में जल भर आया।

१—उन्होंने जब खर को मारा तब क्या रावण को मारना उनके लिये कोई कठिन बात है, परन्तु वे ठहरे सुख भवन अतः दूसरों के सुख दुख की उन्हें क्यों चिन्ता होने लगी। *सुख भवन खरारि* से ये भाव भी ध्वनित होते हैं।

२—अनुज की कुशल पूछना शिष्टता भी है और अनुज के वचनों की अवहेलना हुई थी इसलिये पश्चाताप के कारण भी है।

३—इसे *सुख भवन खरारि* का जवाब समझिये।

४—इसे 'निपट बिसारी' का जवाब समझिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वभौम गीता

[श्री सुदर्शनसिंह जी]

बहुत कहउँ का कथा बढ़ाई।
एहि आचरन बस्य मैं भाई॥
बैर न बिग्रह आस न त्रासा।
सुखमय ताहि सदा सब आसा॥
अनारंभ अनिकेत अमानी।
अनघ अरोस दच्छ बिग्यानी॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा।
तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा॥
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई।
दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥
मम गुन ग्राम नामरत गत ममता मद मोह।
ता कर सुख सोइ जानइ चिदानन्द संदोह॥

अर्थः-भाइयो! कथा को बहुत बढ़ाकर क्या कहूँ, मैं इस आचरण के वश रहता हूँ। (किसी से) शत्रुता न करे, विरोध न करे, (किसी की) आशा न करे, (और किसी का) भय न करे। उस के लिये सब दिशायें सदा सुखमय हैं। कोई प्रारम्भ न करे, घर न बाँधे, मानरहित, निष्पाप, क्रोध रहित, निपुण ज्ञानसम्पन्न हो, सज्जनों की समीपता में सदा प्रीति रखे, (संसार के) विषय, स्वर्ग तथा मोक्ष को (भी) तृण के समान (हेय) माने, भक्ति के पक्ष में आग्रह रखे, किन्तु शठता न रखे, सब दुष्टताओं को दूर कर दे, मेरे गुण समूह तथा नाम में लगा रहे, ममता घमंड तथा मोह से रहित हो (तब) ऐसी परमानन्द राशि स्थिति के सुख का तो वही अनुभव करता है।

श्री रघुनाथ जी अब भक्तके लक्षण बतला रहे हैं वे कहते हैं-'बहुत बढ़ा कर कथा क्या कहूँ, मैं इस आचरण के बस में हूँ, जो ऐसा आचरण करता है वह परम स्वतन्त्र, सर्वेश्वरेश्वर मुझे भी वश में कर लेता है।

'अहं भक्त पराधीनो'—श्रीमद्भागवत

'बैर न बिग्रह' किसी से शत्रुता--लड़ाई नहीं। बैर और बिग्रह में कुछ अन्तर है, इसीसे दोनों शब्द आये हैं! बैर यह भाव है और बिग्रह उस भाव की क्रिया है। मन में द्वेष है तब तक बैर है और मनका द्वेष जब बाहर गाली-गलौज, मार-पीट, मुकदमा-पंचायत आदि के रूप में आ गया तो बिग्रह प्रारम्भ होगया। किसीसे झगड़ा, लड़ाई आदि न की जाय और मन में भी किसी के प्रति द्वेष भाव न हो, यह बात 'बैर न बिग्रह' से कही गई।

'आस न त्रास' किसी से कुछ पाने की आशा नहीं और किसी के द्वारा कुछ हानि हो जायगी इसका भय नहीं। क्योंकि दूसरों की आशा करना और दूसरों से भय करना ये दोनों बातें अज्ञान से होती हैं। प्रत्येक जीव अपने ही प्रारब्ध के अनुसार सुख-दुख, हानि-लाभ, यश-अपयश पाता है। कोई

भाषण की व्यास-समास शैली में निपुण होना रवदूत का प्रधान गुण हुआ करता है। हनुमान जी इस कला में बहुत कुशल थे। संभाषण चातुरी के दिग्दर्शन के लिये उनकी उक्तियों के प्रकरण विशेष ध्यान देने योग्य हैं। इस समय उन्हें सीता की सान्त्वना के लिये राम का प्रेम और विरह बहुत बढ़ा-चढ़ा कर बताना इष्ट था; अतः उन्होंने दूने प्रेम की चर्चा की। सीता का विरह-निवेदन भी उन्होंने राम के प्रति ऐसा ही किया है। आध्यात्मिक भावना वाले लोग *तुम तें प्रेम राम के दूना* का अर्थ कर सकते हैं। हे जगज्जननी! तुम और राम दो नहीं हो। दूना तुम उन्हीं की शक्ति हो—उन्हीं की लीला हो अतएव ह्लादिनी शक्ति रूपा तुम्हारे ही कारण रामनाम धारी अलख निरंजन राम में प्रेम का प्रवाह उमड़ता है—*तुम तें प्रेम राम के*। अतः तुमको अपने मन में किसी प्रकार की छुटाई मानने की आवश्यकता ही नहीं है। *जनि जननी मानहु जिय ऊना।*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी को प्रारब्ध के विपरीत न कुछ हानि पहुँचा सकता और न लाभ। जो हानि या लाभ, सुख या-दुख, निन्दा या प्रशंसा मिलती है, वह अपने ही प्रारब्ध का परिणाम है। दूसरे लोग उसमें केवल निमित्त बनते हैं। वे निमित्त न बने तो और कोई निमित्त बनेगा। परिणाम तो वह होना ही है। फिर दयामय सर्वज्ञ सर्व समर्थ परमोदार प्रभु सर्वत्र हैं। वे जो सुख, लाभ, यश आदि हानिकर समझ कर नहीं देना चाहते, उसकी इच्छा करना ही अनुचित है और उनकी उपस्थिति में उनकी इच्छा के विपरीत कोई हमारी हानि करने में समर्थ है नहीं। ऐसी अवस्था में अन्य की आशा या किसी से भी भय क्यों होना चाहिये। भक्त तो नित्य सन्तुष्ट तथा नित्य निर्भय होता है।

'सुखमय ताहि सदा सब आसा।' यह फल है। किसी से द्वेष नहीं, झगड़ा नहीं, किसी से कुछ पाने की आशा नहीं, अतः कोई अमुक लाभ नहीं पहुँचावेगा, इसकी आशंका भी नहीं। इतने पर भी कुछ लोग अकारण सज्जनों के शत्रु होते हैं। उन्हें दूसरों की हानि करके, दूसरों को कष्ट पहुँचा कर सुख मिलता है। लेकिन विश्वके समस्त क्रूर प्राणी मिल कर भी प्रारब्ध या भगवदिच्छा के विपरीत किसी को कष्ट पहुँचाने या उस की कोई हानि करने में असमर्थ हैं। भगवदिच्छा से प्राप्त कष्ट स्वागत करने योग्य है। अतः कहीं किसी से भय नहीं। 'जो ऐसा है, उसको सदा सब दिशायें सुखमय हैं। क्योंकि दुःख तो असन्तोष या भय से होता है और ये दोनों उसमें हैं नहीं।

'अनारंभ' अनारम्भ और अनिकेत पर टीकाकारों ने बड़ा जोर लगाया है। कोई 'अनारंभ अनिकेत' का अर्थ कर्मत्यागी सन्यासी करता है और कोई इनका अर्थ अनासक्त करता है। लेकिन इतनी खींचतान अनावश्यक जान पड़ती है। अनारम्भ का अर्थ है अपनी ओर से योजना बनाकर कोई भी कार्य न प्रारम्भ करने वाला। आरंभ वह करता है जिसमें कामना होती है। वह कामना अपने सुख के लिये, सुयश के लिये या लोक हित के लिये भी हो सकती है। ध्यान रखना चाहिये कि लोकहित के नाम पर भी अधिकांशतः अपने यश, अपने प्रचार, अपने हित की कामना ही अन्तर में रहा करती है। भक्त के हृदय में ऐसी कोई कामना नहीं होती। अपना हित उसने प्रभु के चरणों में छोड़ दिया है और लोक कल्याण का ठेकेदार वह बन नहीं सकता, क्योंकि लोक उसकी दृष्टि में होता नहीं। उसकी दृष्टि में 'सीय राम मय सब जग' है और इतनी उच्च दृष्टि न भी हुई तो जगत उस लीलामय का रंगमंच है। यहाँ वह प्रभु जो सर्व समर्थ है, नाटक कर रहा है। नाटक के सब प्रिय एवं अप्रिय दृश्य उसी की प्रेरणा से ही उपस्थित हो रहे हैं।

यहीं यह समझ लेने की बात है कि अनारम्भ का अर्थ निष्क्रिय नहीं है। अनारम्भ का अर्थ केवल यह है कि अपनी ओर से कोई योजना बनाकर कोई कार्य वह प्रारम्भ नहीं करता। लेकिन जो कोई शुभ-शास्त्र सम्मत कार्य उसके सम्मुख आ जाता है, उसे वह प्रभु का कार्य समझकर पूरे उत्साह से करता है। उदाहरण के लिये वह कोई संस्था प्रारम्भ नहीं करता; किन्तु जो संस्थायें चल रही है, दूसरों के द्वारा प्रारम्भ होती हैं, उनका कार्य यदि शुभ है, लोक हितकर है, शास्त्र सम्मत है और ऐसे किसी कार्य में उसका सहयोग अपेक्षित है तो अपनी शक्ति एवं सुविधा के अनुसार वह सहयोग देता है।

थोड़े में भक्त जैसे वर्तमान स्थिति में सन्तुष्ट रहता है, न भूत के लिये पश्चाताप करता, न भविष्य की चिन्ता, वैसे ही वह वर्तमान कार्य को ही महत्व देने वाला होता है। उसे कोई योजना नहीं बनानी कोई प्रारम्भ नहीं करना। उसके सम्मुख जो वर्तमान कार्य है, वह कार्य चाहे जितना तुच्छ या महान हो, उसी को वह भगवान की सेवा, अपना कर्तव्य एवं प्रधान कार्य मानता है। इसलिये कोई पिछला कार्य पूर्ण नहीं हुआ, अमुक संस्था या उद्योग जिसे उसने योग दिया सफल नहीं हुई, अमुक कार्य आगे कैसे प्रगति करेगा, अमुक संस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या उद्योग चलना ही चाहिये, कहीं वह असफल न हो, आदि चिन्तायें उसको स्पर्श नहीं किया करतीं। कार्य प्रभु का है, वे उसे आगे चलावें या समाप्त कर दें। वह तो अपने वर्तमान कर्तव्य को ठीक निष्पन्न करके सन्तुष्ट रहता है।

'अनिकेत' अनारम्भ के समान अनिकेत का अर्थ भी बहुत खींचा गया है। कुछ टीकाकारों का मत है कि वह गृह त्यागी विरक्त होता है। कुछ के मतमें घरमें रह कर भी वह घरसे अनासक्त होता है। अनिकेत का सीधा अर्थ यह है कि वह स्वयं कोई भवन, कुटिया आदि नहीं बनवाता। घर में गृहस्त रूप में रहे या कुटिया या मठ में उसे अपना नहीं मानता। उसमें 'ममत्व' नहीं रखता।

'गृहं शरीरं मानुष्यं' 'शरीरं गृहमित्याहुः' इन वचनों को भी ध्यान में रखना ही चाहिये। इनको ध्यान में रखते हुये अनिकेत का अर्थ है शरीर की भी ममता–आसक्ति से रहित।

'अमानी' अहंकार रहित अथवा सम्मान की इच्छा न करने वाला। 'सबहि मानप्रद आपु अमानी।' दूसरों का सम्मान करने वाला; किन्तु स्वयं सम्मान न चाहने वाला। सम्मान की इच्छा सबसे प्रबल इच्छा है। मनुष्य घर-द्वार, परिवार, छोड़ देता है; किन्तु मानपाने की इच्छा नहीं जाती कौपीन धारियों में भी यह बद्धमूल देखी जाती है। यश के लिये लोग प्राण तक दे देते हैं। इसीलिये बैर, बिग्रह, आशा, त्रास के त्याग एवं अनारम्भ, अनिकेत कहने के पश्चात् अमानी कहा गया। उन सबका त्याग करते हुए अन्त में यशेच्छा का भी त्याग कर देना है।

'अनघ' अमानी के पश्चात् यह शब्द बहुत महत्व पूर्ण है। बहुत से निर्लज्ज पामर पुरुष होते हैं जिन्हें लोक निन्दा का भय नहीं होता। जिनको मान अपमान का ध्यान नहीं रहता। जो कुत्सित कर्म करके गौरव बुद्धि करते हैं। जिसमें सम्मान पाने की इच्छा नहीं, वह कुपथ पर चलता होगा–चल सकता है? कोई क्या कहेगा, इस आशंका से सत्पुरुष पापसे बचे रहते हैं। लेकिन जो लोकनिंदा का भय नहीं करता, वह पुण्य-पाप से उदासीन हो जायगा, ऐसी बात भक्त के विषय में नहीं है। वह अमानी होकर भी अनघ रहता है। वह सावधानी पूर्वक पापों से बचा रहता है। सर्वथा निष्पाप होता है वह भगवान् के नाम पर, भक्ति के नाम पर जो दम्भ पूर्वक नाना प्रकार से इन्द्रिय तृप्ति करते हैं 'परधन तथा परदार' पाना चाहते हैं, वे तो नारकी प्राणी हैं। उनका वेश गृहस्थ हो या साधु, वे भक्ति से बहुत दूर रहते हैं।

'अरोष' वैर--बिग्रह के त्याग की बात पहिले कही जा चुकी है। यहां कहा जा रहा है कि भक्त में क्रोध होता ही नहीं। उसमें रोष का भाव ही नहीं रह जाता। वह पापी पर भी क्रोध नहीं करता। जब सब जगत 'सीय राम मय' है, तो वह क्रोध किस पर करेगा। ऋषियों तथा महापुरुषों के क्रोध का वर्णन शास्त्रों में है। उनमें वह क्रोध भगवान् की मंगलमयी इच्छा से किसी के मंगल के लिये प्रगट हुआ था, यह बात वहीं स्पष्ट प्रतीत हो जायगी यदि उस घटना पर ध्यान दिया जाय। ऐसे उदाहरणों से कोई अपने क्रोध का समर्थन करे तो यह अपराध ही होगा। बात बात पर गाली देने वाला, लाठी या चमटा उठाने वाला भगवान् का भक्त नहीं हो सकता।

'दच्छ बिग्यानी' भगवद् भक्त में कार्यनिपुणता तथा प्रतिभा दोनों होती हैं। वह न अपटु होता और न मूर्ख। जो इस ज्ञान धन का किंचित् कृपा प्रसाद भी प्राप्त कर चुका, उसमें अज्ञान रह कहां सकता है। प्रत्येक क्रिया करने की सहज पटुता तथा कार्य में लग जाने की शक्ति उसमें होती है। साथ ही उसकी बुद्धि सत्वगुणमयी होने से निर्मल होती है। वह सम्यक् निर्णय करने में समर्थ होता है।

दूसरा भाव दक्ष का है कि भक्त में न आलस्य होता और न प्रमाद वह प्रत्येक कार्य सावधानी तथा श्रम पूर्वक करता है। इसी प्रकार विज्ञानी का भाव है कि भगवत् कृपा से बिना श्रवण मनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निदिध्यासन के ही उसे तत्त्वज्ञान प्राप्त रहता है। वह ज्ञान से रहित रह नहीं सकता। अनेक अपठित संत इसके उदाहरण हैं।

'प्रीतिसदा सज्जन संसर्गा' अनारम्भ, अनिकेत होकर भी भक्त का स्वभाव होता है कि वह सदा सत्पुरुषों का संसर्ग चाहता है। सत्संग में उनका प्रेम रहता है। कहीं कोई अपेक्षा न होने पर भी वह चाहता है कि उसे सत्पुरुषों का संग प्राप्त होता रहे।

'तिन सम विषय स्वर्ग अपवर्गा।' सब साँसारिक विषय सुख, स्वर्ग के सुख और मोक्ष भी उसके लिये तृण के समान उपेक्षणीय हैं। इनमें से किसी की कामना ही उसके हृदय में नहीं हुआ करती।

'भगति पच्छ हठ' उसमें दृढ़ आग्रह होता है भक्ति के पक्ष में। पुस्तकों में कुछ लिखा हो, लोग कुछ कहते हों; किन्तु भक्ति करनी चाहिये, इस सम्बन्ध में उसे कभी सन्देह नहीं होता। भक्ति के लिये वह हठी होता है। भक्ति का विरोध करने वाली किसी बातको वह स्वीकार नहीं कर सकता।

'नहिं सठताई' लेकिन उसमें शठता नहीं होती वह योग, ज्ञान आदि मार्गों का विरोध करता नहीं फिरता। वह दूसरे मार्ग से चलने वालों का अनादर नहीं करता। उन्हें तिरस्कृत नहीं करता। वह स्वीकार करता है कि वे भी मार्ग हैं-उचित मार्ग हैं। उनसे भी परम पद मिलता है। उन पर चलने वाले आदरणीय हैं। 'अपना मार्ग भक्ति ही है।' इस हठ को रखते हुये दूसरे भी इसी पर चलें और ऐसा न करें तो उन्हें अज्ञानी, भ्रान्त या तिरस्कार योग्य माना जाय ऐसा शठता भक्त में नहीं होती।

'दुष्ट तर्क सब दूर बहाई।' जितने श्रुति-स्मृति-पुराण से असम्मत तर्क हैं, वे दुष्ट तर्क हैं। अपने साधन मार्ग के विपरीत जो तर्क है, वह भी दुष्ट तर्क है। ऐसे दुष्ट तर्कों-कुतर्कों को वह दूर बहा देता है। उन्हें सर्वथा छोड़ देता है। उनका समाधान पाने का या दूसरों के दुष्ट तर्कों का समाधान करने का वह प्रयत्न नहीं करता। देवर्षि नारद ने भक्ति सूत्र में कहा है—'वादो नावलम्ब्यः बाहुल्यावकाशात्।' वाद-विवाद में नहीं पड़ना चाहिये; क्योंकि वह बढ़ जायगा, ऐसी सम्भावना है। अतः भक्त कुतर्क करने वाले लोगों से दूर रहता है। वह केवल श्रद्धालु एवं उचित-सत्तर्क करने वालों के साथ ही चर्चा करना स्वीकार कर सकता है।

'गत ममता मद मोह।' उसमें न ममता होती, न अहंकार होता, न मोह होता। यहाँ तक प्रभु ने सब निषेधात्मक बातें बतलाईं। केवल एक बात कही कि सत्संग में सज्जन संसर्ग में भक्त की प्रीति होती है। वह स्वयं क्या करता है, यह अंत में बताया।

'मन गुन ग्राम नाम रत' उसके पास और कुछ काम नहीं। वह तो अपने आराध्य के गुण ग्राम-अनन्त अपार गुणों के स्मरण, चिन्तन, गायन तथा उनके परम मधुर नाम के जप-कीर्तन में लगा रहता है।

यह सब करने से होता क्या है? 'परानन्द सन्दोह' तब जो अवस्था प्राप्त होती है, वह परमानन्द मयी है। उस स्थित का वर्णन शब्दों द्वारा नहीं हो सकता। 'ताकर सुख सोई जानै।' क्योंकि वह आनन्द अनुभव की ही वस्तु है।

यह जीवन में ही परमानन्दमयी स्थिति प्राप्त करने का ऐसा साधन मर्यादा पुरुषोत्तम ने बताया है कि जो इस अवस्था को प्राप्त कर लेता है, वह उन साकेताधीश, निखिल ब्रह्माण्ड नायक को भी अपने वश में कर लेता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिल्योद्धार

[श्री रतनलाल मग "साहित्यरत्न, शिक्षा-विशारद"]

पात्र—

गौतम—एक महात्मा। विधाता की श्रेष्ठ कृति अहिल्या को देखकर अनेक देवों की उसे पाने की इच्छा थी। देवराज इन्द्र भी उनके लिए लालायित थे। ब्रह्माजी ने अहिल्या को गौतम ऋषि के यहाँ अमानत रखी, एक वर्ष पश्चात् ब्रह्माजी ने जांच की तो अहिल्या कन्या रूप में ही प्राप्त हुई। परीक्षोत्तीर्ण गौतम ही अहिल्या के योग्य पात्र समझे गये और अहिल्या उन्हें ही दे दी गई।

अहिल्या—विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति। संसार की अद्वितीय सुन्दरी।

इन्द्र—देवाधिपति

चन्द्र—देव

कामदेव—इन्द्र के कार्य साधक, सखा, सचिव और सेनापति।

विश्वामित्र—महान तपस्वी, उत्कृष्ट पुण्यात्मा जिनके चरण श्रीराम ने दबाये।

श्रीराम-लक्ष्मण-भगवान-"निज इच्छा निर्मित तनु"

अन्य—नारियाँ, बालक और मुनि.....

पहली झलक

स्थान—गौतम ऋषि का आश्रम

समय—प्रातः

बाँस एवं पत्तों की एक स्वच्छ एवं सुन्दर कुटिया बना हुई है आस पास और भी कई कुटियाएँ दिखाई पड़ रही हैं। कुटिया के सम्मुख का द्वार खुला हुआ है। खुले द्वार में से दिखाई देते हुये पश्चिम मुख भगवान के सिंहासन पर भगवान श्रीराम की मूर्ति अलंकार-वस्त्रादि एवं पुष्पमाला से सुसज्जित है। भगवान की मूर्ति के मस्तक पर मुकुट कानों में कुण्डल, गले में मालायें एवं हाथों में धनुष-बाण हैं। दीपक एवं अगरबत्ती जल रहे हैं। सिंहासन फूलों से सजा हुआ है। पार्षद-पूजन के पात्र सभी उजले चमक रहे हैं। पंचपात्र में आचमनी पड़ी दिख रही है। आरती में ५ बत्तियाँ जल रही हैं। गरुड़घंटी एवं छोटा सा शंख भी पाटले पर सिंहासन के सम्मुख रखे हैं। परदा उठते समय—

(सिंहासन के सम्मुख मृगचर्म पर बैठे गौतम भगवान को प्रणाम करते हुए दृष्टि आ रहे हैं। गौतम की आयु २५ वर्ष, गौर वर्ण, यज्ञोपवीत और गले में कंठी-माला पड़ी है। पीताम्बर पहने हैं, कंधे पर उपवस्त्र (अंगोछा) है। बाल काले घुंघराले एवं काफी लम्बे हैं जो पीठ पर फैले हैं। मूछों की महीन सी रेखा है मस्तक पर रामानन्दी तिलक लगा है। हाथ, भुजा, कंठ, एवं वक्ष पर भी तिलक लगे हैं।

मुनि प्रणाम करके सीधे बैठते हैं एवं "रघुपति राघव राजाराम" की ध्वनि करते हैं।

कुटिया में एक ओर से अहिल्या का—"पूजन हो गई" कहते हुये प्रवेश—अहिल्या के हाथों में श्री सीताजी की मूर्ति है।)

अहिल्या आयु लगभग १८ वर्ष, गौरवर्ण, पुष्ट शरीर पीली साड़ी ओढ़े हुए, सिर के बीच माँग में सिन्दूर भरा है। बाल लम्बे घुँघराले पीठ पर फैले हैं, सिर खुला है। मस्तक में बिन्दी लगी है। कान में कर्णफूल, गले में स्वर्णमाला, भुजबन्द, पहुँची व चूड़ियां, अंगुली में मुद्रिका एवं पाँव में झाँझर पहने हैं। अहिल्या भगवान के सिंहासन के समीप आकर भगवान को मस्तक झुकाती हैं।

(हाथ की मूर्ति को आगे बढ़ाते हुए गौतम से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहिल्या—लीजिये, अब पूजा पूर्ण रूप में होगी।

गौतम—(प्रसन्न होते हुए) आहा: ये प्रतिमा कहाँ से ले आईं ?

अहिल्या—अपनी वाटिका में से।

गौतम—वाटिका में से ! कहाँ से ? कहाँ से मिलीं ?

अहिल्या—आज सबेरे खुरपी से क्यारी गोड़ रही थी, कुछ कड़ा कड़ा लगा तो खोदने लगी पहले तो समझी कोई पत्थर है, उसे निकाल दूँ पर जब निकाली तो यह निकलीं। आज से पूर्ण पूजा हुआ करेगी।

(मूर्ति गौतम ऋषि के हाथों में देती है।)

गौतम—(मूर्ति मस्तक से लगाते हैं।) जगत-जननी, जगदम्ब, माता जानकी। पधारो माँ, सिंहासन का बाम भाग रिक्त पड़ा था लो—विराजो। (अहिल्या से) अरे···एक सुन्दर वस्त्र तो ले आओ और देखो···थोड़े से आभूषण भी हों तो अच्छा।

(अहिल्या उठकर वस्त्राभूषण ले आती हैं। ऋषि सीता जी का अभिषेक करके, पूजन करते हैं। वस्त्रालंकार से सज्जित कर राम के वामाँग में पधराते हैं पुनः आरती करते हैं। मंत्र पुष्पाँजली चढ़ाते हैं और "सियापति रामचन्द्र की जय" बोलते हैं। जय बोलते हुए कुछ बालकों का मुनियों का, मुनि कन्याओं एवं कुछ नारियों का प्रवेश। अहिल्या सब को आसन देती हैं।)

गौतम— रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

सब— (आवृत्ति करते हैं)

गौतम— सीताराम, सीताराम,
पतित पावन सीताराम

सब— (आवृत्ति करते हैं)

(कीर्तन ३–४ मिनट तक चलता है। सब ताल लगा कर कीर्तन करते हैं)

गौतम (लय से)— सियावर रामचन्द्र की

सब— जय (जय बोलते हैं)

(सभी साष्टांग करते हैं, पश्चात् पुष्पांजलि चढ़ाते हैं। गौतम सब को प्रसाद बाँटते हैं। गौतम अहिल्या को प्रणाम करके सब जाते हैं।)

अहिल्या—लीजिये चौकी पर बैठ जाइये, मुझे मेरे भगवान् की पूजा करनी है। (गौतम का हाथ पकड़ कर चौकी पर बिठाती हैं)

अहिल्या—प्रथम स्नान फिर चन्दन अक्षत (जल का घड़ा उठाती हैं और गौतम पर जल डालने का भाव दिखाती हैं।)

गौतम—हें, हें, हें, अरे नहीं, नहीं, स्नान तो मैं बहुत सबेरे कर लेता हूँ। अब इसकी आवश्यकता नहीं।

अहिल्या—आरम्भ में ही देव रुष्ट तो पूजन असफल ही समझिये। आपके नकार में ही स्वीकार भास होता है। कल भोजन में जब मैं कुछ अधिक परस रही थी तो आपने इसी प्रकार हें, हें, हें, कहा था और जब मैंने परस ही दिया तो आपने सब साफ करही दिया था। इस तरह स्नान ..... (पुनः घड़ा ऊँचा उठा कर जल मस्तक पर डालने का भाव दिखाती है।)

गौतम—हाँ हाँ हाँ..... ऐसा मत करो सर्दी लग जायगी।

अहिल्या—पुनः वही हाँ, हाँ, हाँ, हाँ. फिर भला बताइये अब पतिदेव का पूजन कैसे हो ?

गौतम—मर्यादा प्रतिमाओं की तरह। थोड़ा सा जल अंजली में लो और छिड़क कर कार्यारम्भ करो। पर ठंडे मत मारो।

अहिल्या—(मुस्कराती हुई) जल की अंजली से थोड़ा छिड़क कर, - तिलक लगाती है, हार-पहनाती है (जो उसी ने बनाया था) फिर प्रणाम करती है।

गौतम—देवता सन्तुष्ट हैं। बताओ क्या दें ? घर तेरा है, मन तेरा है, गौतम तेरा है। अब तुम्हीं बताओ क्या शेष रहा जो मैं दूँ !!

अहिल्या—निष्काम पुजारी को क्या चाहिये ? बस, पूजन करनी थी, कर ली। भला आपही बताइये आप भगवान से कुछ याचना करते हो ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111388

गौतम—देवी, भगवान् के पूजन में, कीर्तन में, भजन में मुझे बड़ी शान्ती मिलती है।

अहिल्या—और मुझे आपके पूजन में, आपकी सेवा में।

गौतम—क्यों प्रिये, क्या भगवान् राम की पूजा में तुम्हारा मन नहीं लगता?

अहिल्या—लगना तो चाहिये। क्यों कि वे मेरे भगवान् के भगवान् हैं। पर मेरा मन जितना आपकी सेवा से सन्तुष्ट रहता है उतना और किसी से नहीं। मुझे राम की पूजा से राम की आज्ञा पालने में अधिक आनन्दानुभूति होती है। आपही सोचिये, जिस प्रकार आप माला लेकर राम-राम करते हैं उसी प्रकार मैं भी माला लेकर पति-पति पुकारूँ और दिन भर पति-पति ही रटती रहूँ और कुछ गृह-कार्य न करूँ तो आप बताइये आप प्रसन्न रहेंगे? (मुस्कराती है)

गौतम (हँसता है)—वाह, वाह, हाँ दिन भर तो नहीं थोड़ी देर की खुशामद कुछ बुरी नहीं।

अहिल्या—नहीं, अपनी तो रुचि ऐसी है कि मुखमें नाम, हाथ में काम और मनमें (गौतम की ओर अंगुली से संकेत करती है) राम! दूध ले आऊँ?

गौतम—हाँ, ले आओ। भगवान को भी अर्पण करना है। तुम्हारी बातों का चक्कर ही कुछ ऐसा है कि मैं तो भगवान को भी भूल जाया करता हूँ।

(अहिल्या दूध लेकर आती है, गौतम दूध का पात्र भगवान् के सन्मुख रखते हैं, और उसमें तुलसी पत्र छोड़ते हैं। आँख बन्द करके दण्डवत करते हैं। जल छोड़ते हैं।) परदा गिरता है।

दूसरी झलक

स्थान—गौतम ऋषि की कुटिया—कुटिया का द्वार बन्द है।

समय—रात्रि के दो बजे हैं। अंधेरी रात्रि है, आकाश में तारे टिमटिमा रहे हैं। रंग मंच की सभी बत्तियाँ बुझा दी जांय, केवल फोकस के प्रकाश में कार्य किया जाना चाहिये।

(अंधेरे में चन्द्र, कामदेव और इन्द्र का प्रवेश)

चन्द्र—श्वेतवस्त्र, मस्तक पर मुकुट, हाथ में कड़े, भुज बन्द,

कामदेव—वस्त्र पीले, आभूषण पहने हैं, हाथों में पुष्पों से बना धनुष बाण है।

इन्द्र ने अपना रूप गौतम जैसा बना रखा है।

इन्द्र (धीरे से)--लो मित्र चन्द्र देव, अब तुम अपना काम करो।

चन्द्र—कुकड़ूँ-कूँ (२-३ बार मुर्गे की बोली बोलता है।)

(कामदेव अपना पुष्प बाण कुटिया की ओर छोड़ता है कुटिया के भीतर से गौतम के जागने पर "हे राम" की ध्वनि आती है। गौतम कुटिया का द्वार खोलते हैं-इन्द्र चन्द्र और कामदेव कुटिया की ओट में छिपते हैं।)

गौतम (आकाश को देखते हुए) "अरे अभी से सवेरा हो गया"।

(चन्द्र फिर मुर्गे की बोली बोलता है।)

(गौतम कुटिया के भीतर जाकर धोती, गमछा, और कमंडल लिये बाहर आते हैं। कुटिया का द्वार बाहर से खींचते हुए)-

गौतम—प्रिये मैं स्नान करने जा रहा हूँ।

(गौतम का प्रस्थान। छिपे छिपे छद्म वेशी इन्द्र कुटिया का द्वार धीरे से खोलता है और कुटिया में दबे पाँव प्रवेश करता है। अहिल्या सो रही है। इन्द्र कभी आगे बढ़ता है, कभी पीछे हटता है। सोचता है। अन्ततः अहिल्या के पास जाता है। कुटिया के बाहर गौतम का प्रवेश। चन्द्र पुनः ३-४ बार मुर्गे की बोली बोलता है। इन्द्र घबरा कर बाहर आ जाता है। गौतम अपने ही सदृश्य दूसरे गौतम को देख कर चकित होते हैं।)

गौतम—(क्रोधित होकर) दुष्ट, छली, बता तू कौन है? चोर, दस्यु कहीं के, अंधेरी रात में.....

इन्द्र—(काँपता हुआ) महाराज मैं... मैं... मैं... मैं..... (भागने का प्रयत्न करता है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गौतम—ठहर दुष्ट, तू कोई भी क्यों न हो, मेरी दृष्टि में तू एक गुण्डा है।

(इन्द्र पुनः भागने की चेष्टा करता है। गौतम उसे पकड़कर पछाड़ देते हैं उसके ललाट पर कमण्डल का प्रहार करते हैं जिससे उसका ललाट फट जाता है। रक्त धारा प्रवाहित हो जाती है। वह भाग जाता है।)

गौतम—भाग गया दुष्ट, पर याद रख तेरे सिर पर मेरा प्रहार तेरे कलंक की स्मृति रहेगी। यह कलंक का टीका कभी छुड़ाये न छूटेगा। धूर्त कहीं के।

अहिल्या—(बाहर आती है) क्या हुआ नाथ? कौन धूर्त कौन था भगवन्?

गौतम—अरी चण्डालनी, सब जान गया। छलने, मेरे जाने के पश्चात् का नाटक आज प्रकट हो गया। दुष्टे कुलटा निकल जा यहां से।

अहि०—नाथ, आप यह क्या कह रहे हैं?

गौतम—क्या कह रहा हूँ। अरे नारी मुझे ही त्रिया-चरित्र दिखाती है। मैं क्या कह रहा हूँ जैसे कुछ जानती ही नहीं।

अहि०—स्वामी, मेरे प्रभो, मेरे नाथ, मैं कुछ नहीं समझी। आपके क्रोध से इतना जान पाई हूँ कि कुछ अप्रिय घटना अवश्य हुई है।

गौतम—अरी पापनी, रहने दे तेरा छल-छिद्र अब इससे अधिक नहीं चल सकता। दुष्टा, निकल अपना काला मुंह कर। क्यों आश्रम की पवित्रता को दूषित करती है।

अहि०—हे भगवान, यह क्या वज्रपात। हर हर हा प्राणनाथ, आप यह क्या कह रहे हैं?

(कुछ नारियों, बालकों और मुनियों का एक एक करके प्रवेश।)

गौतम—दुष्टा, तू ऊपर से जितनी सुन्दर है तेरा हृदय उतना ही काला है। निकल व्यभिचारिणी, कलमुँही।

अहि०—नाथ मैं कहां जाऊँ?

गौतम—(मुंह चिढ़ाकर) कहाँ जाऊँ? वहीं उसी के साथ जिसे मेरी अनुपस्थिति में बुलाती रहती है।

अहि०—हे प्रभो, मैं नहीं जानती कि आपको क्या हो गया है। हे नाथ, हे प्रभो, हे प्राणनाथ....।

(परदा गिरता है ध्वनि दूर दूर से आती है।)

तीसरी झलक

स्थान—रेतीला वन।

समय—प्रातः

(श्री विश्वामित्र मुनि—सिर पर जटा बंधी हुई, लम्बी दाढ़ी, गले मे माला, यज्ञोपवीत पहने हैं। मस्तक और हाथ, कंठ तथा छाती पर भस्मी रमी है। बाघाम्बर कटि में लपेटे हैं। भुज व पहुँची पर मालाएं हैं। हाथ में कमण्डल है।

उनके पीछे भगवान श्रीराम-लक्ष्मण हैं। माथे पर मुकुट, कानों में कुण्डल, राजसी वस्त्र पहने हैं। जड़ाऊ आभूषणों से अलंकृत हैं। कन्धे पर धनुष हाथ में बाण पीठ पर तरकस कसा है, जिसमें बाण भरे हैं।

उनके पीछे मुनियों का समूह है। सब की वेश भूषा विश्वामित्र जी जैसी ही है।

रेतीले-वन-मार्ग में अहिल्या औंधी पड़ी है। रेत के अंदर हाँथ पाँव एवं सिर का भाग दबा हुआ है।

मुनि विश्वामित्र जी चलते चलते एक ओर बचकर अहिल्या के आगे निकल जाते हैं। मुनि के पीछे आते हुए भगवान् राम का चरण अहिल्या के लगता है। उसमें गति का संचार होता है। वह किंचित हिलती है। मुखसे "हे राम" कहती है।)

भगवान् राम—मुने, यह क्या अचम्भा है? यह क्या है?

विश्वामित्र—(मुस्कराते हुए)—गौतम की त्यक्ता पत्नी अहिल्या। पतित पावन राम की आशा में पड़ी है।

भगवान् राम—मेरी आशा में मेरी? आशा में क्यों प्रभू?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वामित्र—संसार की दृष्टि में यह कुलटा है, पतित है। जिस राम का विरद पतित पावन हो उनसे आशा रखना स्वाभाविक ही है। वत्स ! जिसका अपना पति ही शत्रु हो गया हो संसार उसका वैरी हो जाय इसमें आश्चर्य नहीं।

भगवान् राम—देव, इसका इतिवृत्त समझाने का कष्ट करें।

विश्वामित्र—सर्वज्ञ, बात यह हुई कि एक रात्रि को इन्द्र ने छल से इसे पतित करने का षड़यन्त्र रचा। चन्द्र को सहायक बनाकर वह गौतम के आश्रम में पहुँचा। चन्द्र कुक्कुट की हू बहू बोली बोलने का अभ्यासी है। उसने अर्धरात्रि में ही मुर्गे की बोली बोलकर गौतम की निद्रा भंग करदी। सवेरा हो गया ऐसा जान कर गौतम स्नानादि कर्म करने नदीपर चले गये। इधर इन्द्र गौतम के वेश में कुटिया में घुसा। गौतम को नदी पर जाकर ज्ञात हुआ कि रात अभी बहुत बाकी है तो वे वापस आगये और इन्द्र से उनका सामना हो गया। बस इसी कारण से गौतम ने इसे कुलटा समझ कर घर से निकाल दिया है।

लोग इसे मारते हैं, कोई धूल उछालते हैं, कोई इस पर थूकते हैं। जहाँ गई वहाँ कुलटा कुलटा कह कर धिक्कारी गई। इन सबसे बचने के लिये यह यहाँ निर्जन में पड़ी रहती है।

पगली की दशा में, बेमान, भूखी, प्यासी मूर्छित, चैतन्य शून्य, जड़वत्, इस तपती हुई रेत में औंधी पड़ी रहती है।

भगवान्—(गद् गद् स्वर में) उठो देवी तुम निर्दोष हो।

अहिल्या—(धीरे से मस्तक उठाती हुई) एँ..... यह कौन कह रहा है ? संसार का यह प्रथम व्यक्ति है जो मुझे निर्दोष कह रहा है। इतने दिनों से कुलटा, कुलटा शब्द सुन सुन कर मेरे कान उन्हीं शब्दों को सुनने के अभ्यासी हो चले थे। कान तो ठीक मेरा मन भी अपना विश्वास खो चुका था (घुटनों के बल बैठकर) मैं निर्दोष हूँ ? किसने कहा कि मैं निर्दोष हूँ ?

राम—देवी ?

अहिल्या—अःहा ? कितना मधुर ? कितना प्रिय ? मेरे जड़ जीवन में चैतन्य का संचार करने वाले प्रभू, तुम्हारी जय हो। मुझ पतिता का उद्धार करने वाले प्रभु, युग युग तक तुम्हारा नाम माला के दानों पर लिया जावेगा।

भगवान् राम—देवी, यह राम तुम्हें प्रणाम करता है।

अहिल्या—मुझे प्रणाम ! संसार की दृष्टि में कुलटा पति की दृष्टि में छलना ! उसे..... उसे प्रणाम (रो देती है)

प्रणाम..... मुझे प्रणाम ..... राम तुम सचमुच पतित पावन हो भगवान् तभी तो मेरे भगवान् यही नाम रात दिन रटा करते हैं। (राम के चरणों में गिरती है)

राम—(उठाते हुए)– देवी, आपके दुख के दिन पूर्ण हुए।

विश्वामित्र—(एक शिष्य से)–जा, गौतम ऋषि को बुलाला।

शिष्य—जो आज्ञा (प्रस्थान)

अहिल्या—प्रभु आपकी बातों पर तो विश्वास होता है परन्तु मेरे भाग्य पर से मेरा विश्वास उठ गया।

श्री राम—ऐसा न कहो देवी, भ्रान्ति में भी अनर्थ हो जाया करता है।

(लक्ष्मण विचार मुद्रा में खड़े हैं।)

विश्वामित्र—किस विचार में हो वत्स ?

लक्ष्मण—भगवन् मैं सोच रहा हूँ इन्द्र और गौतम।

विश्वामित्र—क्या ?

लक्ष्मण—यही कि प्रभू, मनुष्यों से देव समाज उन्नत कहलाता है और देवों का राजा इन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बन्दनीय है इस प्रकार छल-छिद्र करे दूसरों की बहू बेटियों की इज्जत बिगाड़े वह इन्द्र देवाधिपति, यही आश्चर्य है भगवन्।

विश्वामित्र—वत्स, "को न कुसंगति पाइ नसाई" इन्द्र का साथी है कामदेव। यह कुसंगति का प्रभाव है। अत्यन्त तपस्या के पश्चात् फल स्वरूप देव योनि और उसमें भी स्वर्गाधिपति कुछ साधारण तप का फल नहीं बेटा, पर प्रभुता का मद और कुसंग का ज्वर बड़ा विषैला होता है।

लक्ष्मण—ऐसे इन्द्र को तबतो दूरसे ही नमस्कार। और गौतम का प्रहार-चिन्ह उसके ललाट पर वह कलंक का टीका है जो कभी नहीं मिट सकता। मानव हो चाहे देव, चरित्र--हीन सदैव गिरते हैं, लांछित होते हैं और पछताते हैं। पर गौतम ने भी कुछ न सोचा ? गुरुदेव !

विश्वामित्र—यह मानव मन बड़ा शंकित होता है पुत्र, अकारण ही यह संदिग्ध रहता है फिर गौतम को तो अपने घर में ही चोर मिल गया था। क्रोध और बुद्धि एक साथ नहीं रहते।

(गौतम का शिष्य के साथ प्रवेश—वे मुनि को साष्टांग प्रणाम करते हैं। राम-लक्ष्मण गौतम को प्रणाम करते हैं, वे आशीर्वाद देते हैं।)

श्रीराम—(गौतम से) मुने ! अब आप इस पतिव्रता को सादर ग्रहण कीजिये। वास्तविकता की अभिज्ञता से ऐसा हो ही जाता है। इस सती के साथ इन्द्र का षड्यंत्र था। चन्द्र और कामदेव उसके सहायक थे।

विश्वामित्र—(गौतम से) क्या तुमने समाधि लगा कर भी नहीं जाना ?

गौतम—इस घटना के पश्चात् समाधि लगी ही नहीं।

विश्वा०—हाँ, मैं जानता हूँ क्रोध और समाधि के बैर को।

श्रीराम—(गौतम से) मुनि ! आप इन्हें सादर स्वीकार करें।

गौतम—भगवान की आज्ञा शिरोधार्य।

श्रीराम—देखो मुनि ! आप स्वयं ज्ञानी हैं, सर्वांश में ये निर्दोषी हैं। कभी मन में भी.....।

गौतम—(बीच में ही) तथास्तु।

अहिल्या—रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

(सब आवृत्ति करते हैं कीर्तन हो रहा है। सभी राम को मस्तक झुकाते हैं भगवान आशीर्वाद की स्थिति में हाथ उठाते हैं, पर्दा गिरता है..... नैपथ्य में कीर्तन की ध्वनि होती रहती है जो शनैः शनैः दूर होती जाती है और विलीन हो जातीं है।)

—पटाक्षेप ❀

❀ लेखक ने सुप्रसिद्ध पौराणिक कथा को आधुनिक रूप देने का प्रयास किया है। ऐसा प्रयास उचित है या नहीं ? हम पाठकों की सम्मति का स्वागत करेंगे। —संपादक

श्री रामनाम लड्डू केन्द्र

नये नियमों के अनुसार भाटापारा में केन्द्र स्थापित हुआ है। अन्य स्थानों को भी आगे आना चाहिये। केन्द्रों की संख्या की कोई सीमा नहीं है। हमारी यह अभिलाषा अवश्य है कि कम से कम २५ केन्द्र शीघ्र स्थापित हो जावें। इन केन्दों से प्राप्त श्री रामनाम लड्डुओं का विवरण बराबर मानस मणि में प्रकाशित हुआ करेगा।

नियम अगस्त के मानस मणि में प्रकाशित हैं। ६।) भेजकर प्रेमी जन १०० कापी मंगा लें तथा कार्य प्रारम्भ कर दें। —शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस में परम प्रकाश

[श्री भैरव जी रामायणी]

एक प्रहर रात्रि व्यतीत हो चुकी थी। मैं अपने गन्तव्यस्थान पर शीघ्रता से चला जा रहा था कि अकस्मात् मार्ग के बीचों-बीच एक भयंकर दीर्घकाय काला सर्प दिखाई पड़ा। अकस्मात् मेरा पैर उससे ठुकरा गया और मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह सर्प मानो मेरे पैर में लिपट रहा हो। मैं घबड़ाहट में बड़े जोर से उछल पड़ा और ज्योंही भागना चाहा कि भयभीत होकर गिर पड़ा। वहाँ गिरते ही मेरे अंगों में ऐसी चोटें लगीं कि वे आजीवन के लिये अमिट चिन्ह बना गईं। आहत पैरों से रक्त की अजस्र धारा बह रही थी और मैं भागता जा रहा था। शीघ्र ही मैं एक समीपवर्ती बस्ती में पहुँचा। मुझे दौड़ते हुए देखकर उस गाँव के बहुत से लोग एकत्रित हो गये। मैंने गाँव वालों से सारी कथा सुना दी। गाँव वाले लट्ठ ले ले कर उस स्थान की ओर दौड़े जहाँ मुझे उस सर्प ने रास्ते में घेरा था। किन्तु समीप पहुँचने पर उस विशालकाय सर्प को दूर से ही देखकर सबके होश हवाश उड़ गये। आघात करना तो दूर रहा किसी का यह भी साहस न हो सका कि उस आठ दस हाथ लम्बे भयंकर सर्प के पास भी जाता। वह साँप भी कैसा निर्भीक था जो निश्चिन्त होकर निश्चल रूप से वहीं डटा हुआ था।

धीरे धीरे मैं भी अपने टूटे-फूटे आहत अंगों से रक्त बहाता हुआ सबके पीछे-पीछे उस सर्प स्थान तक गया। मैंने देखा कि उस अकेले सर्प को मारने के लिये एकत्रित वह विशाल जनसमुदाय भयत्रस्त होकर दूर ही खड़ा रह गया और किसी का भी साहस न हो सका कि वह एक पैर भी आगे बढ़ाता। इतने में गाँव के कुछ और लोग सर्प स्थान से दौड़ते हुए गाँव की ओर गये और वहाँ से एक प्रकाश लेकर पुनः सर्प की ओर आये। जब प्रकाश में ध्यान से देखा गया तो साँप के स्थान पर पड़ी हुई आठ दस हाथ की रस्सी दिखाई पड़ी। वस्तुतः वह रस्सी ही थी जिसे मैंने प्रकाश के अभाव में सर्प समझ लिया था। सर्प के स्थान पर रज्जु को देखकर सभी लोग आश्चर्य चकित रह गये और प्रकाश के अभाव में सर्पभ्रान्ति से भयत्रस्त होने से लज्जित होकर मुझ आहत की दयनीय दशा पर पश्चाताप करने लगे।

सज्जनो! यद्यपि मुझ प्रकाश-हीन को सर्प रूप में दृष्टगत होने वाली वह रस्सी वस्तुतः तब भी रस्सी ही थी किन्तु प्रकाश-हीन होने के कारण, उस रज्जु में सर्पभ्रान्ति होने से भयक्षुब्ध होकर आहत हुआ मैं आज भी विकलांग पड़ा हूँ।

सज्जनो! वस्तुतः वह त्रिकाल सत्य सर्प नहीं था प्रत्युत् मेरी मिथ्या भ्रान्ति थी। यदि मेरे पास प्रकाश होता तो मैं भी आत्म-रक्षा कर लेता। कहीं आप भी मेरी ही भांति भ्रान्ति में न पड़ जायँ। अब 'मानस' में उस 'सर्प' और 'प्रकाश' की कथा सुनें—

प्रकाश को न जानने से—

"झूठहु सत्य जाहि बिनु जाने।
जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचाने॥"

प्रकाश को जानने से—

"जेहि जाने जग जाइ हेराई।
जागे जथा सपन-भ्रम जाई॥"

तो हाँ संसार ही झूठा सर्प है और उस सर्प को समझने के लिये भगवान् श्रीराम ही परम प्रकाश हैं :—

सब कर परम प्रकासक जोई।
राम अनादि अवधपति सोई॥

× × ×

सहज प्रकास रूप भगवाना।
नहिं तहँ पुनि बिग्यान बिहाना॥

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण में सत्याग्रह

[श्री मुरलीधर दीक्षित 'साहित्य-रत्न']

आधुनिक सत्याग्रह आन्दोलन कोई नूतन आविष्कार नहीं है; वरन् इसकी आधार शिला प्राचीनता पर स्थित है। आफ्रिका तथा भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में पूज्य महात्मा गांधी के नेतृत्व में जो इसका रूप प्रस्फुटित हुआ, उसका आधार "श्रीराम चरित मानस" ही है।

सत्याग्रह (सत्य + आग्रह) का संयुक्त रूप है। सत्य पर ही इसका अस्तित्व है। सत्य पर समाश्रित व्यक्ति, समाज और राष्ट्र अपने लक्ष्य पर अबाध गति से निरन्तर अग्रसर होता जाता है। रामचरित मानस ऐसी अमूल्य एवं अपार शिक्षाओं तथा सन्देशों की अक्षय निधि है।

राजर्षि विश्वामित्र का तपोवन असुरों के उपद्रव से अशान्त बन रहा था। धार्मिक कृत्यों में बाधा पहुँच रही थी; यज्ञ, हवन आदि विध्वंस किये जा रहे थे, नित्य नैमित्तिक कर्मों की सम्पन्नता में कठिनाई का उद्भव हो रहा था। असुरों का यह कृत्य उत्तरोत्तर प्रगति पर था। तपोनिधि विश्वामित्र जी अपनी आध्यात्मिक शक्ति से इन दुर्घटनाओं को दूर कर सकने में समर्थ थे; प्रत्युत् शक्ति-क्षय के कारण इसे सर्वदा टालते रहे। पावनपुरी अयोध्या में भगवान् राम का अवतार होने के समाचार से वे प्रथम से ही अवगत थे। अतः उन्हीं के द्वारा उपद्रवी राक्षसों का वध उपयुक्त समझ, वहाँ जाने को प्रस्तुत हो गये और—

"बहुविधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं बार;
करि मज्जन सरयू जल, गये भूप दरबार"

महाराज दशरथ ने मुनि का यथोचित आतिथ्य सत्कार किया तत्पश्चात् पूछा कि—

"केहि कारन आगमन तुम्हारा,
कहहु सो करत न लावउँ बारा"

मुनि उत्तर में कारण के निर्देश में कहते हैं कि—

"असुर समूह सतावहिं मोहीं,
मैं जाचन आयउँ नृप तोहीं।"
"अनुज समेत देहु रघुनाथा,
निसिचर बध में होब सनाथा॥" आदि

राजा दशरथ यह सुनकर स्तब्ध रह गये और कहने लगे—

"चौथे पन पायउँ सुतचारी,
बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी"

मैं अपने प्राण, धेनु, भूमि और कोष समस्त देने को उद्यत हूँ : किन्तु---

"राम देत नहिं बनइ गुसांई"

एक ओर लेने का आग्रह तथा दूसरी तरफ राक्षशों का बल पराक्रम और क्रूरता तथा उनकी प्रतिद्वंद्वता में—

"कहँ सुन्दर सुत परम किसोरा"

के रूप में देने की अस्वीकृति थी। अन्ततः मुनि विश्वामित्र जी का सत्याग्रह सफल रहा।

दूसरा सत्याग्रह श्री राम वन गमन के समय श्री सीता जी ने बन में साथ जाने के लिये किया

जगत प्रकास्य प्रकासक रामू।
मायाधीस ग्यान गुन धामू॥
× × ×
परम प्रकास रूप दिन राती।
नहिं तहँ चहिय दिया घृत बाती॥
× × ×
आतम अनुभव सुख सो प्रकासा।
तब भव मूल भेद भ्रम नासा॥
× × ×
पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि, प्रगट परावर नाथ।
रघुकुल मनि मम स्वामि सोइ, कह सिव नायउ नाथ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। श्री सीता जी का बन जाने का दृढ़ समर्थन वास्तव में पठनीय एवं मननीय है—

"की तनु प्रान कि केवल प्राना"

यहां तो सत्याग्रह में प्राणों की बाजी लग चुकी थी, अब इससे अधिक क्या? भगवान राम भी इसे टाल नहीं सके। श्री जनक नन्दनी साथ गईं यह सत्याग्रह की श्री रामचन्द्र जी के मुकाबिले में दूसरी विजय थी।

भगवान् श्री राम सीता और लक्ष्मण सहित गंगाजी के तट पर हैं। केवट पार उतारने के असमंजस में है। इधर गंगा पार जाने की जल्दी है। केवट अपने ध्येय पर दृढ़ है—

"बरु तीर मारहुँ लखन पै,
जब लगि न पाँव पखारहौं,
तब लग न तुलसीदास नाथ,
कृपालु पार उतारिहौं"

केवट को अपने निश्चय पर अटल देख, भगवान् को कहना ही पड़ा—*"सोइ करु जेहि तव नाव न जाई"*

"और बेगि आनु जल पाँय पखारू"
होत बिलम्बु उतारहि पारू"

क्या यह सत्याग्रह के आदर्श का ज्वलंत उदाहरण नहीं है?

लङ्का प्रयाण के समय मार्ग में विशालकाय समुद्र अपनी उत्ताल तरंगों से ओत-प्रोत है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् मर्यादा का सीमोल्लंघन नहीं करना चाहते अतः समुद्र से मार्गोपलब्धि की प्रतीक्षा में—*"बैठे पुनि तट दर्भ डसाई"* किन्तु-

"बिनय न मानत जलधिजड़, गये तीन दिन बीत"

समुद्र टस से मस नहीं हुआ। अन्त में अन्य नीति का सहारा अनिवार्य प्रतीत हुआ। इसी पर सागर को चरणों पर झुकना पड़ा था। यह सब—

"संधानेउ प्रभु बिसिख कराला,
उठी उदधि उर अन्तर्ज्वाला"

का ही तो प्रताप था। ढोल गँवार शूद्र पशु के लिये उनके ही उपयुक्त व्यवहार अत्यधिक वाञ्छनीय भी हैं। इति शम्

अकाल की आशंका

ये पंक्तियाँ श्रावण पूर्णिमा को लिखी जा रही हैं। अब तक यहाँ इतनी वर्षा नहीं हुई है कि छोटे मोटे गड्ढे भी भरें। मानस सर में प्रायः उतना ही जल है, जितना ग्रीष्म के अन्त में था। यह सौभाग्य की बात है कि मानस सर में यथेष्ट जल है। समीपी ग्रामवासी इसमें स्नान करने आते हैं, वहाँ कुओं में जल का अभाव है। श्रावण के अंत में यह दशा है। क्या आशा की जाय।

इस वर्ष धान, कोदों, अरहर आदि की फसल प्रायः नहीं ही होगी और हमें बाहर के प्रेमियों पर ही इनके लिये निर्भर रहना पड़ेगा। गेहूँ, चने की विगत फसल ठीक नहीं हुई थी। इस कारण हमें अभी ही अड़चन है। धान आदि तो बोया ही नहीं जा रहा है उसकी फसल की क्या आशा की जाय। गेहूँ, चने की आगामी फसल के सम्बन्ध में अभी कुछ विचार ही नहीं किया जा सकता है पर इतना तो निश्चित हो चुका है कि अकाल की पूरी आशंका है।

साथ ही मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे आश्रम को कष्ट नहीं होगा। श्री हनुमान जी की प्रेरणा से प्रेमी जन हमारी सहायता करेंगे। श्री पं० रामरक्षित जी के उद्योग से बनारी से एक बोरा चावल आया है। इसका धान नीचे लिखे अनुसार दाताओं से प्राप्त हुआ था।

श्री पं० रामरक्षित जी शुक्ल रामायणी २½ खण्डी — श्री पं० बृजमोहनलाल पाण्डेय १½ खण्डी
श्री पं० बसन्तलाल पाण्डेय १ खण्डी — श्री साधराम जी साव १½ खण्डी

सिहोरा के श्री तुलसीराम जी सुरैया ने दो मन चना भेजने की कृपा की है। हम सब दाताओं के आभारी हैं। आश्रम में प्रति वर्ष १०० मन अन्न खर्च होता है ५२ मन की हमारे पास व्यवस्था है शेष ४८ मन की व्यवस्था प्रेमियों पर निर्भर है।

—शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या तुलसी ने नारी निंदा की है ?

[श्री मुन्नालाल जी देवासे, आर्वी वर्धा]

हिन्दी साहित्य में महात्मा तुलसीदास का स्थान सर्वोच्च है। वैसे तो भाषा तथा भाव की दृष्टि से उनका महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है विनय पत्रिका। परन्तु सर्व साधारण के आनन्द और पठन पाठन का क्षेत्र है रामचरित मानस। यह ग्रंथ छोटे-बड़े, गरीब--अमीर, साधारण-असाधारण सभी लोगों का प्रिय बन चुका है। आज तुलसीकृत रामायण का आदर आश्रम से लेकर राजमहल एवं झोपड़ों से लेकर भव्य-भवनों तक होता है। यदि छोटी सी पर्ण कुटीर में रामायण का पारायण होता है तो महलों में भी उसका पाठ अवश्य होता है। विद्वानों की बात तो दूर रही, आप गांव के किसी भी ग्वाले से रामायण की एकाध चौपाई या एक दो दोहे तो अवश्य सुन सकते हैं। यह है रामायण की लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण। विश्वास न हो तो परीक्षा कर लीजियेगा। हाथ कंगन को आरसी क्या ?

यद्यपि रामायण आज घर घर का दीपक और कंठ कंठ का हार अवश्य है तथापि इस मानस मोती में कुछ लोग थोड़े से खोटे मोती बतलाते हैं। इनका प्रधान आक्षेप है तुलसी के नारी वर्णन पर। प्रमाण में ये लोग यह चौपाई रखते हैं:—

ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।
ये सकल ताड़ना के अधिकारी॥

आक्षेप करने वाले लोग "ताड़न" शब्द पर नाक-भौं सिकोड़ते हैं। इनकी दलील है कि तुलसी--दास जी ने नारी के प्रति यह बहुत अन्याय किया है। यह महात्मा का बहुत बड़ा दोष है।

यहां शोचनीय बात यह है कि यदि वास्तव में तुलसीदास ने नारी के साथ इतना बड़ा अन्याय किया है तो यह असहनीय है। परन्तु मेरे विचार से हमें विचार करने के बाद अपनी धारणा बनानी चाहिये। यदि किसी ने कहा है कि अमुक बात गलत है तो हम भी गलत समझ लें, ऐसा नहीं है। हमें उसपर विचार करना चाहिये। उसको विवेक पूर्वक, उचित अनुचित की कसौटी पर कसना चाहिए। यहां ताड़न शब्द ऐसा ही है; जिस पर काफी विचार करने की जरूरत है। विचार करने से हमें यही पता लगता है कि ताड़न का अर्थ है सीख देना, शिक्षा देना, अनुशासन सिखाना, होशियार या सजग अथवा सतर्क करना। अब हमें यह विचार करना होगा कि ताड़न शब्द का प्रयोग अपनी स्थिति में ठीक हुआ है या नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और नारी इन पांचों के लिये "ताड़न" (ताड़ना) का प्रयोग किया है। अकेले नारी वर्ग के लिये नहीं। ढोल यह एक वाद्य यंत्र है। इस पर केवल संकेतात्मक थाप की जरूरत है। यदि इसे लकड़ी से भी बजाया जाय तो मर्यादा के भीतर अनुशासनात्मक ढंग से उपयुक्त ध्वनि के अन्तर्गत यदि आप ताड़ना का अर्थ पीटना लगाकर ढोलको सचमुच में पीट देंगे तो ढोलका ढोबरा बन जायगा और ताल का बेताल। गँवार को पीटने से काम नहीं चलेगा। गँवार को सीख देना होगा। यदि गँवार को भी पीटा जाय तो वह भी कम से कम पीटने वाले के प्रति क्रूर और बैर भाव अपनाने लगेगा। आदमी मार से नहीं प्यार से सुधरता है, सीख से समझता है। अतः उसे सिखाया जाय. गँवार सीखने का अधिकारी होता है, विद्वान तो नहीं। विद्वान तो स्वयं सीखा होता है। शूद्र भी इसी कोटि का है। समाज से सदा उपेक्षित रहने के कारण शिक्षा तथा सभ्यता में काफी पिछड़ा होता है। सतसंग का शिक्षा में बहुत बड़ा हाथ है। पर बेचारे शूद्रों को यह भी दुर्लभ है। अतः उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटेंगे तो वे मानव समाज के प्रति विद्रोही बनकर अपने स्वाभिमान की रक्षा करेंगे। क्योंकि स्वाभिमान मनुष्य की जन्म जात प्रवृत्ति होती है। इसीलिए तुलसी यह जानते थे कि अत्याचार किसी पर भी ठीक नहीं। वे तो अत्याचारी देवताओं तक को फटकारने से नहीं चूकते हैं–"*ऊँच निवास नीच करतूती, देखि न सकहिं पराइ विभूती।*" भला इस प्रकार न्याय प्रिय व्यक्ति आखिर शूद्रों को पीटने की बात कह ही कैसे सकता है। पशु तो मूक हैं। दया के पात्र हैं। हमारे सेवक हैं। परमोपयोगी हैं। उन्हें तो इशारा काफी है। पीटने से तो वे दम तोड़ देंगे। उन्हें भी अपने रास्ते चलने की सीख की आवश्यकता है। अब हमारा लक्ष्य नारी और ताड़न इन दो शब्द पर जाता है।

यहाँ हमें यह जानना परमावश्यक है कि नारी पुरुष की अर्धांगिनी है। उसकी सहयोगी है। गृहस्थ राज्य की अधीश्वरी है। घर का सुख दुःख उसी की खुशी पर निर्भर है। यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि नारी के सम्मान के लिए ही अयोध्या के महाराज दशरथ ने राम को वन भेजा, नारी के सम्मान के लिए ही उन्होंने अपने प्राण त्यागे। नारी के सम्मान के लिए ही राम राज महल छोड़कर जंगल जंगल भटके। नारी के सम्मान के लिए ही अयोध्या सूनी हुई। नारी के सम्मान के लिए ही बालि का बध हुआ। स्वयं राम ने कहा है:—

अनुज बधू भगिनी सुत नारी।
सुनु सठ कन्या सम ये चारी॥
इन्हें कुदृष्टि बिलोकइ जोई।
ताहि बधे कछु पाप न होई॥

और

× × ×

नारि सिखावन करसि न काना

स्त्री के कथन पर ध्यान नहीं दिया। कितना महत्व है एक नारी को। उसके कथन को नहीं मानने के कारण ही रावण की स्वर्ण की लङ्का मिट्टी में मिल गई और बालि तथा रावण दोनों को अपने प्राण से हाथ धोने पड़े। दशरथ ने नारी सम्मान के लिए प्राण दिये तो बालि और रावण को नारी के अपमान से अपने प्राण देने पड़े। यह है नारी की महत्ता। अतः अब स्पष्ट हो गया कि नारी को ताड़ना की आवश्यकता है। क्यों कि नारी घर की रानी है और पुरुष राजा। राजा का दर्जा ऊँचा है। वह उसे अपने अनुशासन में रखे। अनुशासन में शिष्टता है सौजन्यता है। अनुशासन का अर्थ गुलामी या दासता कदापि नहीं। पुरुष को नारी हृदय पर विजय पाना चाहिये। मैं पहिले ही कह आया हूँ कि विजय प्यार से मिलती है मार से नहीं और ताड़ना एक मधुर, अति मधुर प्यार है। किसी प्राचीन कवि ने कहा है—

लाड़न ते बहु दुख होत है, ताड़न ते सुख जान।
शिष्य पुत्र नहिं लाड़िये, लाड़ करे बहु हान॥

पुत्र और शिष्य पर मानव हृदय कितना प्यार करता है यह किसी से छिपा नहीं। आप प्यार में अंधे होकर शिष्य और पुत्रको उच्छृखंल उद्दंडे मत बनने दीजिए वरन् उन्हें अनुशासनात्मक ढंग से पालिये। कितना महान और मीठा है यह ताड़न। पारिवारिक जीवन के लिए इस ताड़न का खूब महत्व है। अस्तु।

नारी निन्दा की बात कहने वाले व्यक्ति अपना दूसरा प्रमाण "*जिमि सुतंत्र भए बिगरहिं नारी*" प्रस्तुत करते हैं। इनका कथन है कि वे नारी स्वतंत्रता के विरोधी थे। असल बात ऐसी नहीं है। हमें इस अर्धाली में वर्णित बात पर यह ध्यान देना आवश्यक है कि तुलसीदास ने जब रामायण की रचना की उस समय में मुगलों के शासन काल में समाज में अव्यवस्था फैली थी। जिसके कारण सैकड़ों लोग हिन्दू से मुसलमान बन रहे थे। कई स्त्रियां राजाओं के यहां ठगों के द्वारा विलासिता की पूर्ति के लिए पहुँचायी जाती थीं। उस समय के राजाओं के मन रंजन के क्षेत्र थे सुरा और सुंदरी। अतः इस बात को रोकने के लिए ही तुलसीदास का यह संकेत है। क्योंकि नारी के प्रति हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय दृष्टिकोण सदा से आदर एवम् सम्मान का, विशिष्ठ स्तर का रहा है। साथ ही इसका संकेत साम्राज्य काल की ओर है। नारी को पहिले के राजा अपहरण कर लेते थे। इस चौपाई पर खूब ध्यान देने की आवश्यकता है। स्वतंत्र होने से वे गृहस्थी से बाहर भागने का प्रयत्न करती हैं जिससे घर की सुख और शान्ति उजड़ जाती है। जीवन ही उजड़ जाता है। रामायण का ध्यान पूर्वक अवलोकन करने से यह भली भांति विदित होता है कि पुरुष के साथ नारियाँ चाहें जहां जा सकती हैं। उनसे कंधा से कंधा भिड़ाकर उनके बराबर कदम रख सकती हैं। हाँ यदि स्त्री सूर्पणखा के समान अकेली ही निकले तो वे दण्ड की पात्र होती हैं।

ऐसे ही रावण ने भी एक प्रसंग पर मन्दोदरी से विवाद करते समय झल्लाकर नारियों के दोष गिना डाले। पर रावण ने अपने मन से नहीं कहे। उसने कहा ऐसा कहते हैं। रावण पर तो अपनी ही धुन सवार थी। *"नीकी पै फीकी लगै बिनु अवसर की बात"* के अनुसार रावण को मंदोदरी का उपदेश अच्छा नहीं लगा। इसीलिए उसने उससे ऐसा कहा।

उक्त कथन के अनुसार तुलसी ने नारी निन्दा कहीं भी भूल कर भी नहीं की। उन्होंने प्रत्येक वर्ग का अच्छी तरह चित्र खींचा है। इसे समझने के लिए अधिक अध्ययन, मनन की आवश्यकता है। *"हे हरि कवन जतन भ्रम भागै।"* शीघ्र बतलाइयेगा। *"हरि तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो" "तथपि नाथ और कछु मांगौ दीजै परम उदार।"* प्रभू मेरी केवल यही आकांक्षा है कि तेरी लीला में मेरा अनुराग हो और उसे सही सही ढंग से समझने की बुद्धि दीजिए। तब ही जीवन सफल होगा।

श्री हनुमान जी की पोशाक

एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि श्री हनुमान जी को मुकुट पहिनाने का विधान कहाँ है। उन्हें यह ध्यान नहीं था कि देवता मात्र मुकुट धारण करते हैं। बैकुण्ठ में भगवान विष्णु और उनके पार्षदों के रूप रंग वेष भूषा आदि में कोई अन्तर नहीं रहता है, अन्तर श्रीवत्स चिन्ह मात्र का है। श्री हनुमान जी का शृंगार सर्वथा भगवान रामके शृंगार के अनुसार करने में कोई बाधा भक्त को न होनी चाहिये। रामवन में श्री हनुमान जी का नित्य नया शृंगार होता है। शास्त्रोक्त नियम के अनुसार सोमवार को सफेद मंगल को गुलाबी बुध को हरी बृहस्पतिवार को पीली शुक्रको बदामी नारंगी शनिवार को नीली और रविवार को लाल पोशाक पहनाई जाती है। मुकुट भी आश्रम में तीन हैं ये भी अदल बदल कर पहिनाये जाते हैं। गद्दे तकिया का शृंगार भी पाँच प्रकार का बन चुका है। गुलाबी हरा पीला मिश्रित और लाल। उत्सवों पर यह शृंगार होता है। चाँदी के पार्षद भी प्रायः सभी बन चुके हैं, जो एक दो शेष हैं वे भी भविष्य में कभी बन जांयगे।

प्रेमी जन पोषाक पार्षद आदि की सेवा करते रहते हैं, अभी हाल में मिर्जापुर के श्री बनवारीलाल गोयनका अपने लड़के का मुण्डन कराने रामवन आये थे। वे एक सुन्दर मखमल की पीली पोषाक बनवा लाये थे। होसिर से श्री केदारनाथ चौधरी ने मखमल भेजी। वह लाल शृंगार बनवाने के लिये यथेष्ठ सिद्ध हुई। सतना में श्री सूरजदीन जी एक निपुण नामदेव हैं। जो सदा श्री हनुमान जी की सिलाई मुफ्त करते हैं। सेवा करने वाले सभी भक्तों की श्रद्धा सराहनीय है।

हमारी पोषाक आदि की व्यवस्था क्रम बद्ध है। अतः इच्छुक जन पहिले पत्र व्यवहार कर लिया करें तो हमें सुविधा होगी।

—शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

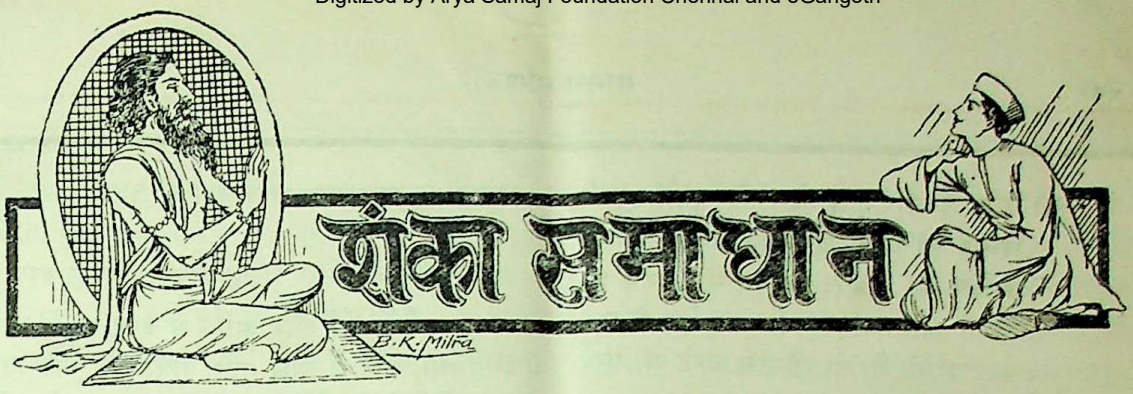

शंका

कविवर तुलसीदास जी ने ऐसा क्यों लिखा कि:—

यह रहस्य काहू नहिं जाना।
दिन मनि चले करत गुन गाना॥

जब सूर्य स्थित है पृथ्वी चलती है, तब सूर्य का चलना क्यों लिखा गया?

—उमादत्त उपाध्याय, धर्म-शास्त्री. विशारद बी. ए.

समाधान

[मानस तत्वान्वेषी पं० रामकुमारदास जी रामायणी वेदांत भूषण, साहित्यरत्न, मणिपर्वत श्री अयोध्या जी]

श्री सियको शुचिवीन सदा मम,
मानस में झनकार सुनावैं।
जो सुनि लागत फीक अनाहत,
नादहु ना जेहि की सरि आवैं॥
मो हिय तार पै श्री सिय जू,
अँगुरीन टँकारि सुभाव जगावैं।
ऐसी महा करुणामयी माय,
सुझावै 'कुमार' सोई कछु गावैं॥

आज अनेक विद्वानों ने इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि ज्योतिष की बहुत सी बातों का आदान प्रदान भारत का यूनान के साथ हुआ है। सम्राट विक्रमार्क से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व यूनानी वीर अलेक्जेण्डर (सिकन्दर) भारत विजय के लिये आया था। यद्यपि वह सफल होकर नहीं गया तो भी सेल्यूकस नामक सिकन्दर के सेनापति की लड़की हेलन का ब्याह भारत सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य से होने के कारण भारत और यूनान का पारस्परिक सम्बन्ध बना रहा। सेल्यूकस का प्रतिनिधि मेगास्थनीज तो भारत में ही रहता था। उन्हीं दिनों यूनान की अनेक बातें भारत में आईं, उन्हीं में पृथ्वी का घूमना और सूर्य का स्थिर रहना भी था जोकि यूनानी विद्वान् "पैथागोरास" के मस्तिष्क की उपज है।

सम्राट् चन्द्रगुप्त के ढाई सौ वर्ष बाद भारत सम्राट वीर विक्रमादित्य के एक सभा पंडित आर्य भट्ट ने पैथागोरास के दिमागी सिद्धान्त भूभ्रमण को अपने 'आर्यभट्टीय' नामक १२० श्लोकीय ग्रन्थ में प्रतिपादित किया, उसी समय विक्रमार्क के नौरत्न सभा के सभापति महा पंडित वराहमिहिर ने प्रश्न किया कि—

१–भ्रमति भ्रमस्थितेर्वा क्षितिरित्यवदन्ति नोडुगणः।
यद्वेदं श्येनाद्या न स्वात्पुनः स्व निलयमुपेयुः॥६॥
२–अन्यच्चभवेद्भूमेरह्ना भ्रमरहसा ध्वजादीनाम्।
नित्यं पश्चात् प्रेरणमथाल्पगास्यात्कथं भ्रमति॥७॥
३–यदिच भ्रमति क्षमा तदा स्वकुलायं कथमाप्नुयुः खगाः।
इषवोऽभिनभः समुज्झितःनिपतंतःस्युरपाम्पतेर्दिशि॥४२
४–पूर्वाभिमुखे भ्रमे भुवो वरुणाशाभिमुखो व्रजेद् घनः।
अथ मंदगमात्तदा भवेत् कथमेकेन दिवा परिभ्रमः॥४३

(शि. वृ. गो.)

अर्थ–(१) जो यह कहते हैं कि पृथ्वी घूमती है भ पंजर नहीं घूमता तो उनसे हमारा प्रश्न है कि ऐसा होने पर पक्षी अपने घोसलों में नहीं जा सकेंगे॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) यदि पृथ्वी तीव्र वेग से पूर्वाभिमुखी भ्रमण करती है तो ध्वजापताका पृथ्वी के वेग से सर्वदा पश्चिम की तरफ ही उड़ेगी और यदि पृथ्वी मन्द वेग से पूर्व को चलती है तो चौबीस घन्टे में पूर्ण भ्रमण नहीं हो सकेगा ॥७॥

(३) पृथ्वी यदि चलती है तो फिर पक्षी अपने घोंसले में नहीं पहुँच सकेंगे और आकाश का फेंका हुआ बाण पश्चिम में गिरेगा ॥४२॥

(४) यदि पृथ्वी पूर्वाभिमुख घूमती है तो फिर बादल हमेशा पश्चिम को जायेगा, यदि कहो कि पृथ्वी धीरे-धीरे चलती है इससे बादल पश्चिम को नहीं जाते तो ऐसी मन्द गति से एक दिवस में पृथ्वी का भ्रमण कैसे पूरा होगा ॥४३॥

[ये चारों श्लोक अर्थ सहित 'पुराणवर्म' से लिये गये हैं इनकी विशेष व्याख्या जिज्ञासुओं को वहीं देखनी चाहिये ।]

इन चारों श्लोकों में भू भ्रमण सिद्धान्त में पाँच दोष दिखलाये गये हैं—

१–हमेशा वायु का जोर से चलते रहना ।
२–बादलों का हमेशा पश्चिम जाना ।
३–बड़े जोर के साथ ध्वजापताकाओं का सर्वदा पश्चिम को ही उड़ना ।
४–बाण का पश्चिम गिरना ।
५–पक्षियों को अपना घोंसला न मिलना ।

इन पाँचों दोषों का परिहार उस समय आर्यभट्ट या उनके कोई भी अनुयायी नहीं कर सके और आज भी वे प्रश्न ज्यों के त्यों बने हैं । अनेक सम्मान्य ज्योतिर्विदों ने पृथ्वी को अचला और सूर्य को भ्रमण शील माना है । दैवज्ञ शिरोमणि बराहमिहिर का प्रमाण तो ऊपर देखा ही जा चुका है, अब भास्कराचार्य का लेख देखिये—

यथोष्णतार्कनलयोश्च, शीतताविधौ, द्रतिः के कठिनत्वमश्मनि ।
मरुच्चलो, भूरचला स्वभावतो यतो विचित्रात वस्तु शक्तयः ॥५॥
(सूर्य सिद्धान्त गोलाध्याय)

अर्थ—जैसे सूर्य और अग्नि में उष्णता, चंद्रमा में शीतलता, जल में निम्न गति, पाषाण में कठिनता स्वभाव से ही है वैसे ही पृथ्वी स्वभाव से ही अचला है, क्योंकि वस्तुओं की शक्तियाँ विचित्र हैं ।

ब्रह्माण्डमध्ये परिधिर्व्योम्नकक्षाभिधीयते ।
तन्मध्ये भ्रमणं भानामधोऽधः क्रमशस्तथा ॥३०॥

मन्दामरेज्य भूपुत्र सूर्य शुक्रेन्दुजेन्दवः ।
परिभ्रमन्त्यधोस्थाः सिद्धविद्याधराघनाः ॥३१॥

मध्ये समन्तादण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति ।
बिभ्राणः परमां शक्तिं ब्रह्मणो धारणात्मिकाम् ॥३२॥
(सूर्य सिद्धान्त अ० १२)

अर्थ—ब्रह्माण्ड के मध्य में जो परिधि है उसे आकाश कक्षा कहते हैं, उसके मध्य में नक्षत्र मंडल का भ्रमण होता है, उसके नीचे क्रमशः शनि, गुरु, भौम, सूर्य, शुक्र, बुध और चन्द्र एक के नीचे एक (अपनी अपनी कक्षा में) भ्रमण करते हैं । उसके नीचे सिद्ध, विद्याधर एवं मेघ हैं और चारों ओर से बीचों बीच ब्रह्माण्ड के मध्य (केन्द्र में) परब्रह्म परमात्मा की धारणा शक्ति को धारण किये हुए आकाश में भूगोल सर्वतोभावेन स्थित अचल है ।

वैदिक मतावलम्बी ज्योतिर्विदों ने तो पृथ्वी को अचला ही माना है, किन्तु जिन पर यूनानी मत की छाप पड़ी थी वे यदा कदा लिखते रहे कि पृथ्वी घूमती है सूर्य स्थिर है और आज लगभग सौ वर्ष से तो विदेशी शिक्षा ही का बोलबाला है और अब स्वतंत्र भारत में भी नीचे से ऊपर तक विद्यालयों में वही वेद विरुद्ध पैथागोरास का काल्पनिक मत सिद्धान्त रूप से विद्यार्थियों के मस्तिष्क में ठूसा जाता है । यथार्थ में तो "सूर्य घूमता है और पृथ्वी स्थिर है ।" यह संसार के सबसे पुराने ग्रन्थ वेद—ऋग्वेद का सिद्धान्त रूप से कहना है । यथा सूर्य का घूमते रहना—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ कृष्णेन रजसाऽऽवर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच।
हिरण्ययेन सविता रथेन देवो याति भुवनानिपश्यन्॥

ऋग्वेद १।३५।२ शुक्ल यजुर्वेद वाजसनेयीसंहिता
इहो ३३।४३ तैत्तिरीयसंहिता ३।४।११।२

अर्थ—भगवान् सूर्य स्वर्ण मय रथ पर बैठकर नील वर्ण वाले अन्तरिक्ष पथ—आकाश में "आ वर्त्तमान:—घूमते हुये देवादिकों और मर्त्यलोक निवासियों को अपने अपने व्यापार में लगाते हुये भू: भुव: स्व: तीनों भुवनों को देखते हुये नित्य गमन करते रहते हैं।

भ्रमत भ्रमित निशि दिवस गगन पथ०।
(विनय पत्रिका पद ८७)

सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्॥

ऋग्वेद १।११५।२, अथर्व २०।१०७।१५,
तै० ब्रा० २।८।७।१

अर्थ—जैसे कामुक पुरुष सुन्दरी प्रेयसी के पीछे पीछे घूमा करता है उसी प्रकार सूर्य रोचमाना—सुन्दरी उषादेवी के पीछे पीछे निरन्त दौड़ा करता है।

सूर्य के रथ का वर्णन "हिरण्ययेन रथेन" मंत्र देख चुके। अब सूर्य के घोड़ों का भी वर्णन देख लीजिये—

सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रं अश्वो वहति सप्त नामा।
ऋग्वेद १।१६४।२, अथर्व १३।३।८,
तै० आ० ३।११।८, निरुक्त ४।२७

इमं रथं ये सप्त तस्थुः सप्त चक्रं वहन्त्यश्वाः।
ऋग्वेद १।१६४।२, अथर्व ९।९।३

जिस वेद ने सूर्य को भ्रमण शील बतलाया है वही वेद पृथ्वी को अचला बतलाता है। देखिये—

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा स्व स्तभितं येन नाकः।
योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

ऋग्वेद १०।१२१।५, यजु० वा० ३२।६
अथर्व ४।२।४, तै० सं० ४।१।८।५

अर्थ—जिसने नक्षत्र मण्डलों सहित इस महान द्यु लोक को और पृथ्वी को स्थिर बनाया है, जिसने स्व: नाक:=देव लोक स्वर्ग को स्थिर किया है, जिसने अन्तरिक्ष में धूलि कणों के समान अनन्त विमानों के विचरने योग्य अवकाश दिया है, उस परमात्मा की पूजा हम हविष्यान्त से करें। (उसे हवि खीर भोग लगायें)।

आर्य समाजी लोग वैदिक कहते हुये भी पृथ्वी को भ्रमण शील मानते हैं परन्तु इस मंत्र में आये हुये 'दृढ़ा' का अर्थ स्थिरा ही जयदेव विद्यालंकार ने किया है और स्वा: दयानन्द जी ने 'स्व:' का अर्थ आनन्द किया 'यजु, भाष्य' में। अस्तु

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज तो कट्टर वेदानुयायी थे, इसी से उनने वेद की अवहेलना नहीं किया अर्थात् नवीन ज्योतिषियों की बात न मानकर वैदिक सिद्धान्तानुसार पृथ्वी को अचला और सूर्य को भ्रमण शील मानकर ही—

दिन मनि चले करत गुन गाना।

लिखा है। वैदिक प्रमाण तो ऊपर देखा जा चुका है महर्षि द्वैपायन कृष्ण व्यास जी ने श्री मद्भागवतादि पुराणों में सूर्य का ही चलना माना है। विस्तार भय से यहाँ पुराणों के प्रमाण नहीं दिये गये, आवश्यकता पड़ने पर पुराणों के प्रचुर प्रमाण उपस्थित किये जा सकते हैं।

सक्रिय सदस्य

मानस संघ के नये १० या अधिक सदस्य बनाने वाले सदस्य :—

	पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
(१) श्री मदनलाल जी कथावाचक मनोहर थाना	—	४६	४६
(२) श्री रामचन्द्र जी ब्रह्मपुर	—	१२	१२

इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या १९ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई मास में संघ के ६६ नये सदस्य बने तथा ४ नई शाखायें स्थापित हुई जिनका विवरण इस प्रकार है:—

शाखा संख्या १६८५ सोजपुर घघरावता [झालावाड़] सदस्य ६ मंत्री श्री प्रहलाद जी पटेल मारण क्षत्रिय। शा० सं० १६८६ साँगोद [कोटा] स० ६ मं० श्रीरामसुख जी शर्मा भार्गव। शा० सं० १६८७ अन्ताना [कोटा] स० १७ मं० श्रीचन्दालाल जी नागर। शा० सं० १६८८ कतिकनार [आरा] स० १२ मंत्री श्री चन्द्रदेवसिंह जी।

विविध-समाचार

सफीपुर :— श्री रामशंकर जी वर्मा के मकान पर १० जुलाई को मानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, सत्यनारायण की कथा होकर प्रसाद वितरण हुआ। —बैजनाथ सेठ

बिरौड़ी :— ११ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक पाठ तथा ३ व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत पाठ हुए। प्रति दिन सायंकाल में कथा रामायण गान और कीर्तन आदि होता था। आदि और अंत में श्री रामार्चा-पूजन, हवन ब्राह्मण भोजन हुआ।

जैतपुर :— ११ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक पाठ तथा ४ व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत पाठ किये गये अंत में श्री रामार्चा पूजन तथा हवन हुआ।
—रुद्रबहादुर सिंह

सीपत :— श्री मारुति मंदिर में श्रीमती जागेश्वरी बाई (पं० राजकुमार मिश्र की माँ) की अध्यक्षता में छात्राओं द्वारा श्रीमानस जी का नवाह्न पारायण हुआ। समाप्ति पर हवन तथा कुँआरी कन्या भोजन हुआ। —कु० कौशिल्यादेवी, दुलारीदेवी

मोगरा :— श्री द्वारकाप्रसाद जी पटेल के यहां ४० सदस्यों द्वारा मानस का अखंड पाठ ४८ घंटे का हुआ। बाद में सुन्दरकाण्ड का सामूहिक पाठ हुआ। श्रीबजरंगबली को चना भोग में लगाया गया। हवन होकर ब्राह्मण भोजन हुआ।
—पं० मिट्ठूलाल

डगांवाशंकर :— श्रीराम मन्दिर में २० सदस्यों द्वारा २४ घंटे का अखंड सामूहिक पाठ ज्योति जलाकर हुआ। समाप्ति पर पूजन आरती करके जलूस निकाला गया। जलूस में मूल रामायण का पाठ हुआ तथा प्रसाद वितरण हुआ।
—रामेश्वरदास

बन्देमऊ :— ज्येष्ठ दशहरा को हनुमान चालीसा, मूलरामायण का पाठ तथा कीर्तन हुआ। आषाढ़कृष्ण ६, १४ और आषाढ़शुक्ल ६ को क्रमशः श्री छोटेलाल गुप्त, सत्संग आश्रम और श्री पं० राम-सेवक के यहां मानस का अखंड पाठ हवन कीर्तन हुआ। अमावस को श्री राजाराम वर्मा तथा श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मीनारायण; श्री शिवभजन, श्री हरचन्दसिंह, श्री गयाप्रसाद के यहां सत्यनारायण की कथा हुई। श्री गिरधारीलाल और श्री रामसेवक भट्ट के यहां कीर्तन हुआ। —छोटेलाल गुप्त

गोतमा :— (छिचौर उमरिया) ता०—१२-७-५७ से १८-७-५७ तक अखंड कीर्तन बड़े समारोह के साथ हुआ। समाप्ति पर प्रसाद वितरण ब्राह्मण भोजन हुआ।
—बिनायक प्रसाद

पिपरिया (बरोदिया) :— श्री ममार रामा जी कुरुवंशी जी के यहां ९ दिन तक अखंड मानस पाठ अखंड ज्योति जलाकर हुआ। समाप्ति पर श्री-हनुमान जी को सिन्दूर लेपन तथा भजन हुआ। मिती वसाख सुदी ११ और जेठ सुदी ११ को क्रमशः श्री ममार बाबूलाल कुरुवंशी तथा श्री अयोध्याप्रसाद जी पटेल के यहां मानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, पूजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —रामरतनसिंह ममार

चीचली :— श्री राधाकृष्ण मंदिर में ता० १८--७--५७ से ३३ साधकों द्वारा नवाह्न पाठ श्री पं० सुदर्शनाचार्य जी की अध्यक्षता में हुआ।
—लेखराम पैगवार

बघोरा :— सावन कृष्ण ११ को श्री मूंगा राम कुरुवंशी के यहाँ मानस की कथा हुई। कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्री पं० दादूराम जी द्वारा कथा हुई। —प्रहलादसिंह

वाराडोली (उमरिया) :— ता० १६--७--५७ को रथयात्रा का जलूस झांझ मृदंग बजाते हुए कीर्तन करते हुए निकाला गया। रात्रि में रामायण का और उड़िया भागवत का गायन होकर प्रसाद वितरण हुआ।

दुग :— श्री रामेश्वर प्रसाद जी के दूकान में हर मंगल और शनिवार को रामायण गान होता है।

राजनांदगाँव :— सोनार मुहल्ले में ९ बजे रात्रि से १२ बजे तक कीर्तन होता है।

देवरीडीह :— हर शनिवार को रात्रि में रामायण गान होता है।

सिहाउमरिया :— रथयात्रा के उपलक्ष में रात्रि को उड़िया भागवत का गान हुआ।

चपले जनकपुर :— ता० ३-७--५७ से ७--७--५७ तक रथयात्रा का जलूस नाच गान करते हुए निकाला गया। रायगढ़ जिले और उड़िया प्रान्त के प्रत्येक गांव में रथयात्रा का जलूस बड़ी धूमधाम से निकाला जाता है। —विनायक प्रसाद

सिरसा :— श्री वनमाली लाल त्रिपाठी के मकान पर प्रत्येक मंगलवार को मानस की कथा, आरती होकर प्रसाद वितरण होता है।
—शीतलसिंह

धनवाडा :— अषाढ़ सुदी ७ से मानस पारायण हुआ। हरियाली अमावस को २४ घंटे का पारायण हुआ। —रामप्रसाद गिरि

गोलहटा :— श्री गुरु पूर्णिमा को अपने २ गुरुओं की तथा गुरु पादुकाओं की पूजा करके श्री हनुमान चालीसा श्री शिव चालीसा और मानस के पाठ किये। श्री पं० राजमणि जी के तरफ से श्री सत्यनारायण की कथा, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। रात्रि को श्री "खिन्न" जी द्वारा राम कथा हुई। —संवाददाता

खरमसेड़ा :— हनुमान धारा (कैमोर) स्थल में पूर्णमासी के बजाय अब प्रत्येक चतुर्दशी को सत्संग होता है, इसके अलावा मानस जयन्ती, सीता जयन्ती, तुलसी जयन्ती हनुमान जयन्ती और शिवरात्रि के पुनीत पर्वों में मानसमख के रक्षार्थ अवश्य पधारें। सम्बन्धी कार्य की जानकारी के लिये पत्र व्यवहार हो सकता है।
—संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिनाहट :— अषाढ़ शुक्ल १४ को श्री जगन्नाथ प्रसाद के यहां २४ घंटे का अखंड मानस पाठ हुआ। समाप्ति पर सहस्र आहुतियों तथा संपुट के एक माला द्वारा हवन हुआ। सत्यनारायण की कथा, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद बांटा गया। अपने पुत्र श्री कल्याणदास की मोटर ठेला के एक्सीडेण्ट से पूर्ण रक्षा भगवान् ने की, इसके निमित्त यह पूजा पाठ किया गया। अषाढ़ शुक्ल १५ को तपस्वी बाबा श्री परमेश्वरीदास के आश्रम पर श्रीहनुमानजी के समक्ष अखंड हरिनाम संकीर्तन २४ घंटे का हुआ। समाप्ति पर हवन, साधू ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ।

—गजाधरप्रसाद

तुलसी जयन्ती समाचार

आर्वी :— श्री तुलसी जयन्ती पर शिवजी के मन्दिर में सदस्यों द्वारा मानस पूजा, भजन कविता होकर मानस का अखंड पाठ "मंगल भवन अमंगल हारी ....." सम्पुट लगाकर हुआ। बादमें आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्रावण मास में मानस का एक मासिक पाठ, तथा श्रीनारायण प्रसाद तिवारी के यहां मानस का एक अखण्ड पाठ और श्री रामगोपालजी द्वारा एक पाठ हुआ।

—रामचन्द्र शर्मा

आर्वी :— श्री महादेव जी के मन्दिर में मानस का अखन्ड पाठ ज्योति जला कर हुआ। समाप्ति पर रामधुन कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। हिन्दी शाला में श्री गोपाल पंडित शास्त्री जी की अध्यक्षता में तुलसी जयन्ती समारोह मनाया गया। तुलसीदास जी के जीवन चरित्र एवम् उनकी कृतियों पर सारगर्भित तथा बोधप्रद भाषण, निबंध प्रतियोगिता, पुरष्कार वितरण आदि हुआ। श्री नारायणप्रसाद तिवारी के यहाँ अखन्ड ज्योति जला कर मानस का अखंड पाठ हुआ। नागपंचमी को श्री सुमेरचन्द्र जी की अध्यक्षता में नागपंचमी उत्सव मनाया गया। श्री देवासे जी ने नागदेव की महिमा, नागपूजा का महत्व बतलाया। नागदेव की पूजा होकर बालकों की कुश्ती हुई। विजयी बालकों को पुरष्कार दिया गया।

—मंत्री

झालदा :— श्रीसत्यनारायण जी के मंदिर में श्री पं० रामनारायण जी द्विवेदी की अध्यक्षता में जयन्ती उत्सव धूमधाम से मनाया गया। स्कूल में भी जयंती उत्सवमें भाषण, कविता, पाठ पुरष्कार वितरण आदि हुआ।

—हनुमानशरण सिंघानिया

विदिशा :— साहित्य परिषद् द्वारा माध्यमिक शाला भवन में एक विराट कवि सम्मेलन हुआ। गोस्वामी जी के साहित्य पर कविता और रचनायें सुनाई गईं श्रृद्धांजलि भेंट की गई। ता: ३-८-५७ को महलघाट शिव मंदिर में स्वर्णकार समाज की ओर से अखंड पाठ हुआ। इसी अवसर पर नदवाने के शिव मंदिर में भी अखंड पाठ, भजन, पूजन कीर्तन आदि हुआ।

—श्यामलाल

रामवन :— रामवन में तुलसी जयन्ती महोत्सव मनाया गया। प्रातः काल की सभा में मानस प्रचार तथा रामवन में विशिष्ट तुलसी स्मारक निर्माण के सम्बन्ध में विचार हुआ। इसमें आश्रम के साधकों, कार्यकर्त्ताओं, बाहर से आये शाखा मंत्रियों तथा प्रतिनिधियों ने भाग लिया। तीसरे पहर सिहोरा के श्री लल्लूलाल मिश्र की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा हुई। सज्जनपुर स्कूल के प्रधानाध्यापक तथा अन्य वक्ताओं ने संक्षेप में भाषण दिया तथा सभापति महोदय ने विस्तार से तुलसी पर प्रकाश डाला। रामायण गायन और प्रसाद वितरण के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

—मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन समाचार

श्री मारुति सेवा :—जुलाई मास में मानस का एक अखंड पाठ नित्य होता रहा। श्री गुरु पूर्णिमा ता० ११-७-५७ से अखण्ड संकीर्तन भी आरम्भ हुआ। यह नित्य प्रात: ७ बजे से रात्रि के ९ बजे तक १४ घण्टे होता है। अब तक इसकी व्यवस्था सावन, भादों मास के लिये हुई है और आगे प्रेमियों की इच्छा पर निर्भर करेगा।

इस मास में ९५४.५३ रु० की आय हुई और खर्च ७३८.६२ व्यय हुआ, बचत २१५.९१ रु. की रही। इस आय व्यय में श्रावण में शिव सेवा के लिये प्राप्त आय भी सम्मिलित है और उसमें हुआ इस समय का खर्च भी। पिछली बचत ११७५.८१ थी इसमें श्री शिव सेवा विभाग के ४२८.९१ तथा इस मास की बचत के २१५.९१ सम्मिलित करने पर कुल १८२०.६३ रु० हुए। इसमें से १५००.०० तुलसी संग्रहालय भवन विभाग को दिये गये। अब ३२०.६३ जमा रहे।

३-७-५७

१७.७५ श्री जीवनलाल साव, चाँपा
५०.०० ,, गुप्तदान

६-६-५६

१७.७५ श्री हरनारायण सक्सेना, मथुरा कैन्ट
१०.०० ,, रामानन्द शर्मा, रानी
५.०० ,, सी० पी० शर्मा, बुरहानपुर
२.०० ,, शिव बहादुर, लखनऊ
५.०० ,, राममूर्ति अग्रवाल, भाटापारा
१.२५ ,, शुक्लाम्बरप्रसाद, विजना
१.२० ,, पं० शुध्दूप्रसाद जी, झिरिया
११.०० ,, सागरमल शर्मा, साँवलोद
१.२५ ,, कैलाशनाथ वाजपेयी, परौंख
१.०० ,, धनसिंह, ,,
१.२५ श्रीमती विद्यावती भदौरिया, परौंख
१५.०० श्री सत्यनारायण काशीप्रसाद, ब्रह्मपुर

८-७-५७

७.०० श्री सूरजभान गर्ग, आगरा
१.०० ,, गयाप्रसाद महते, नहला
२०.०० श्रीलाल रामकिशोर शारदा, राजनादगाँव
५१.०० श्री भेरूलाल बृजमोहनदास, शुजालपुर
६.२५ ,, महादेवप्रसाद निगम, खंजनपुर

९-७-५७

१.०० श्री रामकृपालसिंह, माधवगढ़
१.०० ,, मथुराप्रसाद जी, हर्दी
१०.०० ,, ठा० रामप्रतापसिंह, गाजीपुर

१०-७-५७

५.०० श्री सेठ बिधाताराम नन्दूलाल राजनाद०
११.०० ,, मुन्नीलाल जी दरोगा, बूंदी
१.२५ ,, रामचन्द्र शर्मा, नैला
१२.२५ ,, अनंतराम ननकीसाव, बिलासपुर
१०.०० ,, रघुनन्दन नारे, नागपुर
८.५० ,, कुँवर अम्बिकाप्रसादसिंह, लादीगढ़
५.०० ,, मैकूलाल कोरी, परौंख
१०.०० ,, नारायण गेहलोत, इन्दौर
५.०० ,, ध्रुवनारायण सिंह, उदयपुर
१.२५ ,, शिवप्रसादलाल, औरंगाबाद
२.५० ,, दिनेश्वरप्रसाद ,,
५.०० ,, पं० शिवशंकरलाल त्रिवेदी, तुमड़ीवोड़

११-७-५७

१.०० श्री पं० मदनलाल शर्मा,
३.५० ,, शाखा मारायता
१३.०० ,, कवल्दा शाखा
५.०० ,, शिवराजसिंह जी ध्रुव, डाही
१.२५ ,, रामरतन शर्मा, झांसी
१.२५ ,, बाबू आनंद स्वरूप भटनागर, झांसी
१६.०० ,, मिठालाल राठी, द्रुग

१२-७-५७

११.०० श्री लक्ष्मीनारायण जी धूत, भाटापारा
२.५० ,, बोधनलाल पटवारी, देवरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.५० श्री पं० बृजमोहनलाल पाण्डेय, बनारी
५.०० ,, ठा० हरशंकरलाल जी, बघुवार

१३-७-५७

२.०० श्री लाला रामलाल जी गुप्ता, कानपुर
५.०० ,, दामोदरप्रसाद राठौर, मुक्ता
१६.५६ ,, विष्णु लार्ड कम्पनी, नैरोबी
२.०० ,, उमराव अहीर, आर्वी

१४-७-५७

१०.२५ श्री दालजी भाईलाल जी, नैरोबी

१५-७-५७

६.२५ श्री गोबिन्दलाल जी जायसवास, कटोरी
१.२५ ,, एस० सी० एन० तिवारी, मनमांड़
१२.२५ ,, विशनस्वरूप जी माथुर, देहली
६.५० श्रीमती रामप्यारी बाई ठाकुर, कौड़िया

१६-७-५७

१.२५ श्री नारायणसिंह पटेल, कोटमी

१७-७-५७

५.०० श्री हीरालाल मिश्र, गोरखपुर
१०.०० ,, दीवान केशवदास जी सोनी,
११.०० ,, रामकुमार अग्रवाल, कोमाखान
३२.०० ,, पं० रामदुलारे नारायणप्रसाद शर्मा, डगनिया
९.९४ ,, दयाल जी भाई पोपट, मोम्बासा

१८-७-५७

८.२५ श्री केशरीमल दुवानी, बालोद
३५.०० ,, बजरंगदास जी एडवोकेट, सिरसा

१९-७-५७

११.०० श्री दरबारीलाल दुलीचन्द्र अग्रवाल, करकबेल

२०-७-५७

१.२५ श्री वासुदेवप्रसाद जी दीक्षित, रामवन
१.२५ श्रीमती सरस्वती देवी, दरभंगा
४.०० श्री हे० का० महादेव सिंह पन्ना
२.०० ,, गुरुप्रसाद ,,
१.०० ,, शंकरप्रसाद ,,
२.०० ,, करणसिंह ,,
१.०० ,, हाकिमसिंह ,,

२२-७-५७

७.०० श्री पं० राजकुमार विजयकुमार श्रीपति, सीपत
५.०० ,, रामचरणलाल श्रीवास्तव, झांसी
२.०० ,, एम० आर० श्रीवास्तव ,,
२.०० ,, अमरलाल गुप्त हे० मा०, घाटोली

२३-७-५७

२.५० श्री दीपधर जी दीवान मोहन साय साहू, वाराद्वार बस्ती
१.२५ ,, मूलचन्द्र जी गट्टानी, शोभापुर

२४-७-५७

२.५० श्री उसतराम पंडा सराफ, बिछिया
१.२५ ,, ज्ञानेश्वर वर्मा, मंडला
२५.०० ,, तुलसीराम सुरैया, सिहोरा
५२.०० ,, सेठ चम्पालाल द्वारकाप्रसाद कलकत्ता
१.२५ ,, आनन्दसिंह अघरिया, लेंधरा
१.२५ ,, नरसिंह सेंठ, लेंधरा

२५-७-५७

१.२५ श्री रामलाल दर्याव, तलवाड़ा
५.०० ,, पं० मिटठूलाल जी, मोगरा
१.२५ ,, उदिया जी गेहलोत तलवाड़ा
१.२५ ,, प्रेमदास पुजारी ,,
१.२५ ,, ओटा जी गेहलोत ,,
१.२५ ,, देवचन्द्र चौधरी ,,
१.२५ ,, धनाजी सिया ,,
२.०० ,, रामनारायण हृदयस्थ, असोखर
१० ०० ,, मंगल जी जवाहर मेहता, बम्बई
१३.०० ,, राममूर्त्ति अग्रवाल, भाटापारा

२६-७-५७

५.०० श्री भारतप्रसाद शर्मा, छिरहा
१.२५ ,, ठा० पदमनसिंह, टुण्डरी
५.०० ,, सेठ कामताप्रसाद, सतना

२७-७-५७

५ ०० श्री राजेश्वरप्रसाद पटना
२.५० ,, काशीराम बघेल, रायपुर

२९-७-५७

१०५.०० गुप्तदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१.२५	श्री हिरऊराम जी, अटंग
५.००	,, जैतराम सौन, मालखरौदा
५.००	,, गुजराती मंडल, सतना
	३०-७-५७
१५.००	श्री पं० लल्लूलाल मिश्रा, सिहोरा रोड
२.००	,, रामायण कमेटी पिनाहट
१.००	,, लालाराम द्विवेदी
१.००	,, बेनीप्रसाद सराफ
१.००	,, पं० सियाराम
१.००	,, पं० केहरीलाल
.५०	,, रामलक्ष्मण सोनार
.५०	,, जगन्नाथ सोनार
१.००	,, बाबूराम सोनार
१.००	,, पंडित शिवसिंह
१.००	,, लाला भगवानदास सोनार
.५०	,, लाला गोपीचन्द्र
११.००	श्रीमती रानी सज्जनकुमारी, उदयपुर
५.००	श्री राजकुमार सत्यनारायण चरणसिंह,
५.००	,, सेठ कामताप्रसाद, सतना
	३१-७-५७
१.५०	श्री देवीप्रसाद कर्मकाण्डी, नगरिया
५.००	,, फूलकुमार पोद्दार, नागपुर
१.००	,, गुजराती मंडल, सतना
५०.००	गुप्तदान
४.०८	चढ़ोत्री
६५४.५३	कुल

श्री शिव सेवा :—इस मास में १७.८१ रु० की आय हुई और खर्च १०८.६६ रु० हुआ। कमी ९०.८५ की रही। पिछली बचत ५१९.७६ में यह घटाने पर ४२८.९१ बचे। इस विभाग में हर महीने में आय नहीं होती है और खर्च भी नहीं होता है। अतः यह उचित समझा गया है कि श्री शंकर भगवान् की सेवा का कार्य तो प्रेमियों की इच्छा के अनुरूप हुआ करे पर उसका आर्थिक हिसाब श्री मारुति सेवा के साथ ही रखा जाय। अतः यह बचत की रकम ४२८.९१ रु० श्री मारुति सेवा विभाग में जमा की जा रही है। इस मास की आय उसी विभाग में जमा की गई है और व्यय भी उसी विभाग से हुआ है।

	१-७-५७
१६.५६	श्री विष्णु लार्ड कम्पनी, नैरोबी
	५-७-५७
१.२५	श्री छेदीलाल चौधरी, भमकी
१७.८१	

श्री रामनाम सेवा :—इस मास में लड्डू आदि की बिक्री से १८.९२ की आय हुई, खर्च कुछ नहीं हुआ। पिछली कमी २१३.५५ में यह घटाने पर अब १९४.६३ की पूर्ति करना बाकी है।

इस मास में श्री विष्णु लार्ड कम्पनी नैरोबी से ३५०.०० रु० श्री रामनाम लड्डू की कापियाँ छपाने के लिये प्राप्त हुए हैं। इनके आधार पर ही श्री रामनाम लड्डू केन्द्र के नये नियम बनाये गये हैं। यह नियम विगत अंक में प्रकाशित हो गये हैं। आशा है प्रेमीजन उनके अनुसार अपने यहाँ केन्द्र स्थापित करेंगे। केन्द्रों की संख्या की कोई सीमा नहीं है। फिर भी हम चाहते हैं कि कम से कम २५ केन्द्र अति शीघ्र स्थापित हो जायँ।

जुलाई मास में ४२७ लड्डू तैयार हुये। दैनिक क्रम में १५५ लड्डू श्री मारुति जी को समर्पण हुए। शेष श्री रामनाम नौका के लिये रखे गये। केन्द्रों की स्थिति इस प्रकार है.—जुहिला २०९, बाँदा २०२, अफ्रीका १९३, भेलसा १५१, देहली १४६।

श्री तुलसी संग्रहालय भवन :—इस मास में ३.२५ की आय हुई और खर्च २३०५.०३ हुआ। कमी २३०१.७८ रु० की रही। १५००.०० रु० श्री मारुति सेवा विभाग से प्राप्त हुआ। यह घटाने पर ८०१.७८ की कमी रही। पिछली बचत ३४०.०२ थे। इस प्रकार अब कमी ४६१.७६ की रही। इस भवन में अभी बहुत काम बाकी है। आशा है प्रेमियों के सहयोग से यह पूर्ण होगा।

१.२५ श्री जमुनालाल अग्रवाल, खम्हरिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२.०० श्री नन्दनप्रसाद, होसिर ३०-७-५७
३.२५

मानस प्रचार :—इस मास में सदस्य शुल्क से ५७.५० रु० और विविध प्रेमियों से १२.५० रु० कुल ७०.०० प्राप्त हुए। पत्र व्यवहार में ४९.७६ और छपाई में १६.०० कुल ६५.७६ खर्च हुए। बचत ४.२४ की रही। पिछली कमी १४१२.१६ में यह घटाने पर अब १४०७.९२ की पूर्ति करना बाकी है। मानस सस्ता संस्करण के लिए पूर्ववत् २०) जमा हैं।

१९-७-५७
५.०० श्री पं. अम्बिकेश्वरपति जी त्रिपाठी, अयो०
१.२५ ,, दीनदयाल जी कोरी, झींझक
२५-७-५७
५.०० श्री भैयालाल जी श्रीवास्तव, भौंरा
१.२५ श्री हिरऊराम जी, अटंग २९-७-५७
१२.५०

नई कुटिया :—पूर्ववत् १४३६ २८ की पूर्ति करना बाकी है।

सक्रिय सदस्य

'मानस मणि' के सन् १९५७ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य :—

		पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
१.	श्री रामसुपाल जी भट्ट खरमसेड़ा	१८	१८	३६
२.	,, रामरक्षित जी रामायणी बनारी	२३	१	२४
३.	,, गजाननसिंह जी परिहार मौहामड़वा	१३	३	१६
४.	,, महन्त रोशनपुरी जी गोस्वामी कोहड़िया	१४	२	१६
५.	,, भैरवप्रसाद जी रामायणी इलाहाबाद	८	२	१०
६.	,, सूर्यनारायण जी चौधरी लहेरियासराय	८	१	९
७.	,, मदनलाल जी कथावाचक मनोहर थाना	२	५	७
८.	हुबलाल जी रामायणी श्रीपट्टी	२	२	४
९.	,, पंचम जी साव चैनपुर	३	१	४
१०.	,, वानेश्वर जी भगत नवागढ़	२	१	३
११.	,, भवानीशंकर जी छुल्ला	२	१	३
१२.	,, नन्दलाल जी पुरोहित तुमसर	—	८	८
१३.	,, सन्त विनीत बिहारीदास जी कथावाचक चिरगाँव	—	२	२
१४.	,, घनाराम जी रघुवंशी सांकरा	—	२	२
१५.	,, हरनारायण जी द्विवेदी महराजगंज	—	२	२
१६.	,, कृष्णगोपाल जी सांगोद	—	३	३
१७.	,, छन्नूलाल जी यादव राजनांदगाँव	—	२	२
१८.	,, नाथूराम जी खरे समनापुर	—	३	३
१९.	,, रोहनदास जी विरगहनी	—	२	२
२०.	,, रतनलाल जी मग झकनावदा	—	४	४
२१.	,, मोहरसाय जी देवांगन छुरी	—	२	२

नोट:—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे उनकी नामावली अगले मास दी जायेगी। इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ६६ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस पाठ निर्णायक समिति का अधिवेशन

श्री राम चरित मानस पाठ निर्णायक समिति का प्रथम अधिवेशन २४ जुलाई बुधवार को सायंकाल ४ बजे प्रह्लादका भवन कर्णघंटा वाराणसी में हुआ जिसमें निम्नलिखित सदस्य सम्मिलित हुये-

१. श्री राघवाचार्य जी, बरेली।
२. ,, बिन्दु गोस्वामी जी, वृन्दावन।
३. ,, श्री कान्तशरण जी, अयोध्या।
४. ,, रामकुमारदास जी, ,,
५. ,, आनन्द स्वामी जी, ऋषिकेश।
६. ,, विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र, हिन्दू- विश्वविद्यालय, काशी।
७. डा० श्री राजबली जी पाण्डेय, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
८. श्री चिम्मनलाल जी गो०, गीताप्रेस, गोरखपुर।
९. डा० श्री भगीरथजी मिश्र, विश्वविद्यालय लखनऊ
१०. श्री किशोरीदास जी वाजपेयी, कनखल।

सभापति का आसन सर्व सम्मति से श्री विश्वनाथ प्रसाद जी मिश्र ने ग्रहण किया और डा० श्री-राजबली जी पाण्डेय का निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया।

यह समिति यह अनुभव करती है कि अनेक स्तुत्स पश्चात् भी श्री राम चरित मानस के पाठ संशोधन और एक प्रामाणिक संस्करण भारत वर्ष में और बाहर भी मान्य हो सके, प्रस्तुत करने की आवश्यकता है, जिसके लिये निम्नलिखित पद्धति का अवलम्ब किया जाय।

१. प्राचीनतम प्रतियां, उनकी फोटो प्रति अथवा माइक्रो फिल्म प्रतियों का संग्रह किया जाय।
२. प्राचीनतम प्रस्तर छाप (लीथो) और प्राचीन मुद्रित प्रतियाँ भी संग्रह की जायें।
३. आधुनिक प्रतियों में प्रामाणिक संस्था द्वारा प्रकाशित तथा विशिष्ट विद्वानों द्वारा संपादित मुद्रित प्रतियां भी एकत्र की जांय।
४. सम्पादन में तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक क्रम पर ध्यान रखा जाय।
५. शब्दों के रूप के सम्बन्ध में भाषा विज्ञान, व्याकरण, अर्थ विज्ञान, परम्परा, पारस्परिक प्रमाण, तथा लोक भाषा के तत्कालीन प्रचलित रूप आदि पर ध्यान रखा जाय।
६. इस कार्य के लिये एक स्थायी-समिति-कार्यालय तथा कर्मठ कर्मचारियों का संगठन किया जाय और इसके लिए आवश्यक साधन जुटाये जांय।
७. समिति को यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि मानस के संशोधित संस्करण निकालने का एक महान कार्य तत्रभवान महाराजा श्री मन्त श्री विभूति नारायन सिंह काशी नरेश के आयोजन से पं० श्री विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र के सम्पादन में हो रहा है। समिति को यह विश्वास है कि यह संस्करण अपनी एक निजी विशेषता युक्त होगा और उससे मानस संशोधन के अन्य योजनाओं को पूर्ण करने में पर्याप्त सहायता मिलेगी।

इस प्रस्तुत योजना के कार्यान्वय के समय इस संस्करण का यथोचित उपयोग किया जाय।

उपर्युक्त स्थायी समिति का संगठन निम्नलिखित प्रकार से किया जाता है।

सभापति— श्री विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र।
मंत्री— श्री हनुमानप्रसाद जी पोद्दार।
उपमंत्री— सभापति और मंत्री की सहमति से उपमंत्री का चुनाव करा लिया जाय। उपमंत्री काशी निवासी होगा।
सदस्य— श्रीराघवाचार्य जी, श्री श्रीकान्तशरणजी श्रीरामकुमारदास जी, श्रीबिन्दु गोस्वामी श्रीआनन्द स्वामीजी, डा. भगीरथप्रसाद जी मिश्र, श्री राजबलीजी पाण्डेय, श्री-चिम्मनलाल जी गोस्वामी, श्री किशोरीदास जी वाजपेयी, श्री नन्ददुलारे जी वाजपेयी, श्री रामनरेशजी त्रिपाठी, और श्री स्वामी करपात्री जी महाराज।

समिति को यह अधिकार होगा कि आवश्यकता अनुभव करने पर वह सदस्य संख्या में वृद्धि कर सकती है।

(ह० विश्वनाथप्रसाद मिश्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरितमानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ।।) है। जहाँ नौ सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के ३६१११ सदस्य हैं और १६८८ शाखायें हैं।

२—रामचरितमानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस-मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से कुल ६३ ग्रन्थ छप चुके हैं।

४—श्रीरामचरितमानस-पत्र-व्यवहार विद्यालय द्वारा मानस संघ घर बैठे श्रीरामचरितमानस की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य विषय तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क १०) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में साधन भजन करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमाहुति जी को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

* हर विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है *

'मानस-मणि'

पो०—रामवन (सतना)

श्री [illegible]

मा० नं०—७

प्रा० गुरुकुल कांगड़ी

(हरिद्वार)

सम्पादक—पं० तरणीन्दु शेखर तिवारी। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)
मुद्रक—नीरज जैन, सुधा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस-मयूख

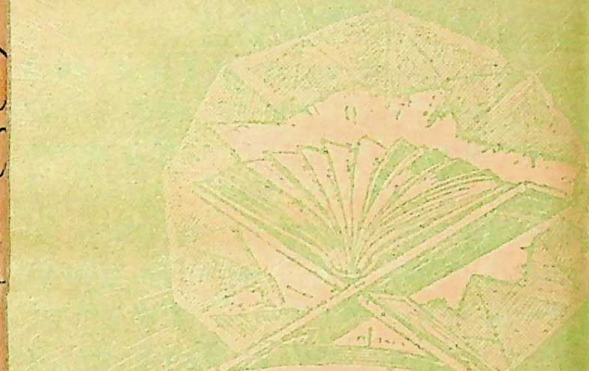

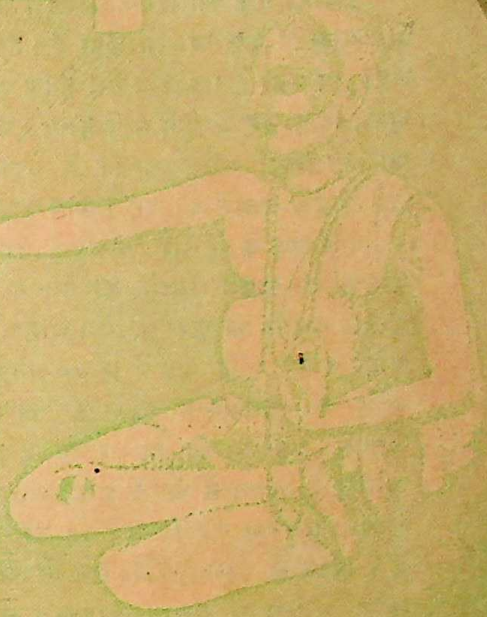

卐

राम निकेत

(२)

लोचन चातक जिन्ह करि राखे,
रहहिं दरस जलधर अभिलाषे।
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी,
रूप बिंदु जल होहिं सुखारी।
तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक,
बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

卐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरितमानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ॥) है। जहाँ नौ सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के ३६१११ सदस्य हैं और १६८८ शाखायें हैं।

२—रामचरितमानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस-मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से कुल ६३ ग्रन्थ छप चुके हैं।

४—श्रीरामचरितमानस - पत्र - व्यवहार विद्यालय द्वारा मानस संघ घर बैठे श्रीरामचरितमानस की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य विषय तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क १०) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में साधन भजन करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमारुति जी को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

* हर विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है *

'मानस-मणि'

पो०— रामवन (सतना)

सम्पादक—पं० तरुणेन्दु शेखर तिवारी। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)
मुद्रक—नीरज जैन, सुमन प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसपान

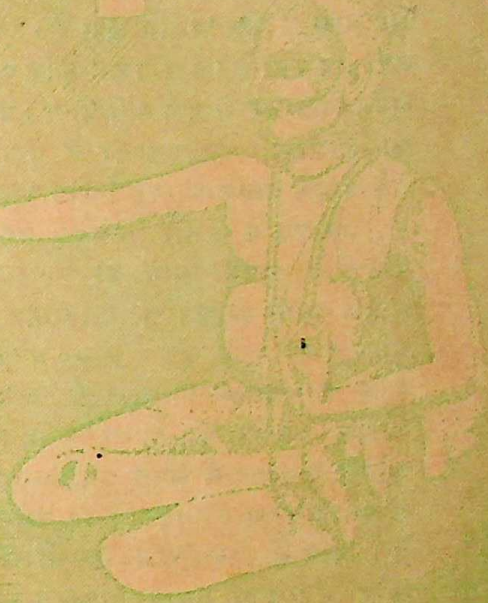

卐

राम निकेत

(२)

लोचन चातक जिन्ह करि राखे,
रहहिं दरस जलधर अभिलाषे।
निदरहिं सरित सिंधु सर भारी,
रूप बिंदु जल होहिं सुखारी।
बिन्ह के हृदय सदन सुखदायक,
बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥

卐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

— नई बात —

हमारा एक आवश्यक निवेदन मानस मणि के इस मास के कुछ अंकोंमें छपा है। इस अंक में वह नहीं छप रहा है। कारण यह है कि आपका वार्षिक मूल्य दिसम्बर में पूर्ण नहीं होगा। पर मानसमणि का सोलहवाँ वर्ष दिसम्बर में पूरा हो जायगा। नये ग्राहक बनाने का यह विशेष अवसर है।

गत वर्ष के हमारे निवेदन पर हमारे प्रेमी पाठकों ने अपने मित्रों को मानस मणि के नये ग्राहक बनाने की कृपा की है। ग्राहक संख्या में ३५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। ५० प्रतिशत होने पर मणि के स्वावलम्बी होने की आशा थी। पर आपके सहयोग की आशा पर हमने अखबारी कागज के स्थान में अच्छे सफेद कागज पर 'मणि' छापना प्रारम्भ कर दिया। यह उससे मंहगा होता है। बीच में सरकार ने नये टैक्स बढ़ाये, यह और मँहगा हो गया। डाकखर्च भी सरकार ने बढ़ा दिया है। अतः हमें फिर भी विशेष घाटा ही रहेगा।

इसकी पूर्ति के लिये हम अनेक धार्मिक पत्रों के सदृश आपसे आर्थिक सहायता नहीं मागेंगे हम तो यही प्रार्थना करेंगे कि आप और ग्राहक बढ़ाने की कृपा करें। वर्तमान संख्या में ६० प्रतिशत वृद्धि होने से आपका पत्र स्वावलम्बी हो जायगा।

सन् १९५७ में अब तक कुल ८७ प्रेमी ग्राहक दो या अधिक नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्य बने हैं। सन् १९५८ में यह संख्या इससे बहुत अधिक होनी चाहिये। आप तो अभी ही सक्रिय सदस्य बनने का व्यवस्था कर लें।

बहुधा प्रेमीजन यही चाहते हैं कि वे वर्ष के प्रारम्भ से ग्राहक बनें। अतः आप अपने मित्रों को जनवरी से ग्राहक बनाने की कृपा करें। सरकार ने डाक खर्च बहुत बढ़ा दिया है मनीआर्डर से वार्षिक मूल्य भेज कर यह पूरा पूरा बचाया जा सकता है। अपने दो मित्रों का वार्षिक मूल्य ६) आप एक ही मनीआर्डर द्वारा भेजने की कृपा करें नवम्बर में ही यह भेजदें तो उत्तम है अन्यथा दिसम्बर में तो अवश्य ही भेजें। अपना चन्दा समय पर भेजियेगा।

अनुक्रमणिका

	नाम	लेखक	पृष्ठ
१.	दीपोत्सव	(सूरदास जी)	३०९
२.	मानस का सुन्दर सोपान....	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	३१०
३.	सन्त समागम (१)	(श्री शारदाप्रसाद जी)	३१३
४.	श्री मारुति चरित्र चित्रण	(श्री पं० रामकुमार उपाध्याय 'कुश') ...	३१६
५.	मानस में सास और बहू का आदर्श	(श्री रामरक्षित जी शुक्ल रामायणी)	३२०
६.	साधु महिमा	(श्री रामसुपाल जी भट्ट)	३२२
७.	'उत्तरकाण्ड' में गोस्वामी जी की दार्शनिकता....	(श्री नरेन्द्रप्रसाद जी श्रीवास्तव)	३२४
८.	चरण रज स्पर्श	(श्री पं० रामकुमारदास जी रामायणी)	३२७
९.	गोस्वामी जी के काव्य के तीन पंडित....	(श्री महन्त रोशनपुरी गोस्वामी)	३३०
१०.	संघ-समाचार	....	३३२
११.	मास्को में तुलसी जयन्ती	....("सोवियत संघ के समाचार और विचार" से)...	३३२
१२.	विविध-समाचार	....	३३३
१३.	रामवन-समाचार	....	३३८

वार्षिक मूल्य तीन रुपया] विदेश में ६ शिलिङ्ग [वी० पी० से तीन रु० ६५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १६ | रामवन—कार्तिक, मानस सम्वत् ३८४—नवम्बर १९५७ ई० | आलोक ११

दीपोत्सव

जब सुने भरत पुर निकट भूप, तब रच्यो नगर रचना अनूप।
प्रति प्रति तोरन ध्वजा धूप, सजे सकल कलस अरु कदली जूप॥
दधि हरद दूब फल फूल पान, कर कंनक थार तिय करत गान।
सुनि भरे बेद ध्वनि संख नाद, सुनि निरखि पुलक आनंद प्रसाद॥

—सूरदास जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, एम. ए. डी. लिट्]

जो रघुबीर होति सुधि पाई ।
करते नहिं बिलम्बु रघुराई ॥
रामबान रवि उयें जानकी ।
तमबरूथ कहँ जातुधान की ॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लेवाई ।
प्रभु आयसु नहिं राम दोहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा ।
कपिन सहित अइहहिं रघुबीरा ॥
निसिचर मारि तोहि लेइ जैहहिं ।
तिहुँ पुर नारदादि जस गैहहिं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहि समाना ।
जातुधान अति भट बलवाना ॥
मोरे हृदय परम सन्देहा ।
सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥
कनक-भूधरा-कार-सरीरा ।
समर भयंकर अति बलबीरा ॥
सीता मन भरोस तब भयेऊ ।
पुनि लघु रूप पवन सुत लयेऊ ॥

दोहा–सुनु माता साखामृग नहिं बल-बुद्धि-बिसाल ।
प्रभु प्रताप तें गरुड़हिं खाइ परम लघु ब्याल ॥१६॥

यदि रघुवीर ने आपकी सुधि पाई होती तो वे रघुराज (क्षण भर का भी) विलम्ब न करते। राम-बाण रूपी रवि का उदय होने पर राक्षसों की तामसी सेना कहाँ रह जायगी ? हे माता ! मैं अभी आपको लिवा ले जा सकता हूँ परन्तु (क्या कहूँ) प्रभु का आदेश नहीं है। राम ही की शपथ। हे जननी ! कुछ दिन (और) धैर्य करो। रघुवीर (भगवान राम) कपियों के सहित यहाँ (स्वतः) आवेंगे, राक्षसों को मारकर आपको लिवा ले जायेंगे और (इस प्रकार ऐसी लीला का विस्तार करेंगे कि) तीनों लोकों में नारदादि (प्रचारक भक्तजन) उस सुयश का गान करेंगे।

सीताजी ने कहा "हे पुत्र ! कपि तो सब तुम्हारे ही समान (लघुरूप वाले) हैं न ! इधर राक्षस लोग तो बड़े बलवान भट हैं। (दोनों का मुकाबिला कैसे होगा ?) मेरे हृदय में बड़ा सन्देह हो रहा है। यह सुनते ही कपि ने अपनी (नैसर्गिक विशाल) देह प्रकट की। उनका वह शरीर कनक-भूधर (सोने के पहाड़) के आकार का था। समर में प्रति पक्षियों के लिये (महा) भयंकर वह शरीर अत्यन्त बलवीर का शरीर था। तब सीता के मन में भरोसा हुआ। पवन सुत ने फिर अपना छोटा रूप बना लिया और बोले "माता ! सुन, शाखामृग (बन्दर) में कोई विशाल बल-बुद्धि नहीं रहा करती। यह तो प्रभु का प्रताप है कि (जिसके बल पर) एक अत्यन्त छोटा संपेला भी गरुड़ (तक) को खा जाता है।" [महान विषधर साँप भी गरुड़ के सहज भक्ष्य हैं किन्तु प्रभु का प्रताप क्षुद्र भक्ष्य को भी महान भक्षक बना सकता है।]

मन सन्तोष सुनत कपिबानी ।
भगति-प्रताप-तेज-बल-सानी ॥
आसिष दीन्हि राम प्रिय जाना ।
होहु तात बल-सील-निधाना ॥
अजर अमर गुननिधि सुत होहू ।
करहिं बहुत रघुनायक छोहू ॥
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना ।
निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बार बार नायेसि पद सीसा ।
बोला बचन जोरि कर कीसा ॥
अब कृतकृत्य भयेउँ मैं माता ।
आसिष तव अमोघ बिख्याता ॥
सुनहु मातु मोहिं अतिसय भूखा ।
लागि देखि सुन्दर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिन्ह कर भय माता मोहिं नाहीं ।
जौ तुम्ह सुख मानहु मन माहीं ॥

दोहा–देखि बुद्धि-बल-निपुन कपि कहेउ जानकी जाहु ।
रघुपति-चरन हृदय धरि तात मधुर फल खाहु ॥१७॥

भक्ति, प्रताप, तेज और बल से सनी हुई कपि की वाणी सुनकर (सीता जी) के मन को सन्तोष हुआ। [हनुमान जी ने जो कथन किया था उसमें उनकी भक्ति टपकी पड़ रही थी और साथ ही प्रभु राम तथा उनके सेवक के नाते हनुमान जी का भी प्रताप, तेज और बल टपका पड़ रहा था।] (उन्हें) राम का प्रिय जानकर (सीता जी ने) आशीर्वाद दिया, हे तात ! तुम बल निधान बनो, शीलनिधान बनो, अजर होओ, अमर होओ, गुण निधि होओ, (भगवान) रघुनायक तुम्हारे ऊपर बड़ा ममत्व रखें, (भगवान) बड़ा अनुग्रह करें.....। 'प्रभु मेरे ऊपर बड़ा अनुग्रह करेंगे' ऐसा ज्योंही कानों ने सुना त्योंही हनुमान जी प्रेम से भर उठे और उसमें मग्न हो गये। उन्होंने बार-बार चरणों में सिर नवाया और हाथ जोड़कर बोले—"हे माता ! मैं अब कृतकृत्य हो गया। आपका आशीर्वाद अमोघ है—निश्चित ही फलदायक है—यह प्रसिद्ध है।" [अतः आपके आशीर्वाद से मुझे निश्चय ही भगवान का अनुग्रह प्राप्त होगा।] ❀

["सीतानुसंधान कार्य तो सम्पन्न हो गया अब अजर अमर होने का वरदान भी मिल चुका; अतएव रावण की सभा में पहुँचकर उसे कुछ चेतावनी दे देना अनुचित न होगा। परन्तु सामान्य ढंग पर पहुँचा जाय तो विलम्ब भी होगा और सम्भव है अधिकारी चक्र वहाँ तक पहुँचने ही न दें। अतएव विशिष्ट ढंग अपनाना ही सीधा मार्ग होगा। कपि के लिये वाटिका विध्वंस से बढ़कर और सुन्दर सीधा मार्ग कौनसा हो सकता है ? वाटिका रक्षक निश्चय ही भिड़ पड़ेंगे और फिर लंकेश्वर के पास तुरन्त सूचना हो ही जायगी।" कुछ इसी तरह सोचकर हनुमान जी ने अब अगले घटना क्रम की प्रस्तावना के रूप में कहा] "माता सुनो ! इन वृक्षों में सुन्दर-सुन्दर फल लगे हुए देखकर मुझको बड़ी भूख लग आई है।" (सीता जी ने कहा) "पुत्र ! भारी भारी परम सुभट रजनीचर इस विपिन की रक्षा में नियुक्त हैं।" (हनुमान जी बोले) "माँ ! मुझको उनका कोई भय नहीं है। यदि तुम मन में सुख मानो (तो मैं फल खा आऊँ)" सीता जी ने देखा कि कपि बुद्धि और बल दोनों में निपुण है (अर्थात् जहाँ बल का अवसर हो वहाँ बल का और जहाँ बुद्धि का अवसर है वहाँ बुद्धि का कुशलता पूर्वक प्रयोग कर सकता है) (अतएव) कहा कि हे तात ! जाओ और (भगवान) रघुपति के चरणों को हृदय में धारण करके मधुर फल खाओ। †

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा ।
फल खायेसि तरु तोरइ लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे ।
कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी ।
तेहि असोकबाटिका उजारी ॥
खायेसि फल अरु बिटप उपारे ।
रच्छक मर्दि मर्दि महि डारे ॥

❀ वरदानों के क्रम उत्तरोत्तर उत्कर्ष शाली हैं। सीता जी देखती हैं कि हनुमान की कोई विशेष रुचि नहीं जागी। अतः वे भी उत्तरोत्तर उत्कृष्ट बरदान देती जाती हैं। जब प्रभु के छोह की बात आती है तो सच्चे भक्त की प्रकृति वाले हनुमान जी उसे ही अपने मतलब की वस्तु पाकर गद्गद् हो जाते हैं।

† (१) भावुक भक्त लोग इन फलों को सामान्य फल ही नहीं मानते। 'रघुपति चरण हृदय धरि' तो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के से फलों का भी मधुराई से उपभोग हो सकता है।

(२) सीता जी समझ गई थीं कि हनुमान अब प्रच्छन्न नहीं रहना चाहते—वे कुछ कर दिखाना चाहते हैं। अतः अपनी योजनाओं के मधुर फल भी उन्हें मिलें यह भी इसमें संकेत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि रावन पठयेउ भट नाना।
तिन्हहिं देखि गर्जेउ हनुमाना॥
सब रजनीचर कपि संघारे।
गये पुकारत कछु अधमारे॥
पुनि पठयेउ तेहि अच्छयकुमारा।
चला संग लेइ सुभट अपारा॥
आवत देखि बिटप गहि तर्जा।
ताहि निपाति महाधुनि गर्जा॥

दोहा—कछु मारेसि कछु मर्देसि कछु मिलयेसि धरि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे प्रभु मर्कट बलभूरि॥१८॥

(सीता जी के चरणों में) सिर झुकाकर (हनुमान जी) चले और बाग में घुसे। (वहाँ उन्होंने) फल (तो) खाये (ही, साथ ही) झाड़ (भी) तोड़ने लगे। वहाँ अनेकों रखवाले वीर थे। (उनसे संघर्ष होने पर हनुमान जी ने) कुछ को तो मार दिया और (बचे हुए) कुछ लोगों ने (रावण के दरबार में) जाकर पुकार लगाई। "हे नाथ! एक भारी कपि आया है, उसने अशोक वाटिका उजाड़ दी है। फल खाये, झाड़ उखाड़े और वाटिका रक्षकों को रगड़ रगड़कर जमीन में गिरा दिया है।" रावण ने यह सुनकर अनेक प्रकार के भट भेजे। उन्हें देखकर हनुमान जी ने गर्जना की। कपि ने उन सब रजनीचरों का संहार कर दिया। कुछ अधमरे बच गये थे, वे पुकारते हुए (राज-दरबार) पहुँचे। तब रावण ने अक्षयकुमार ‡ को भेजा जो अपार सुभटों को अपने संग लेकर चला। (हनुमान जी ने अक्षयकुमार को) आते देख (एक समूचा) वृक्ष हाथ में ले लिया, उसे डपटा और (फिर सामान्य संघर्ष में ही) उसका वध करके महाध्वनि से गर्जना की। कुछ को उन्होंने मारा, कुछ को रगड़ दिया और कुछ को धूल में मिला दिया। कुछ (बचे खुचों) ने फिर जाकर पुकार लगाई, "प्रभु वह मर्कट तो बड़ा बलशाली है।"★

‡ अक्षयकुमार नाम की ओर ध्यान दीजियेगा। एक तो कु+मार अर्थात् जिसकी मार बुरी हो और फिर अ+क्षय अर्थात जिसका कभी बाल भी बाँका न हो सके। रावण को ऐसे बेटों पर बड़ा गर्व रहा होगा। अच्छा हुआ कि पहिले ही मोर्चे पर 'अक्षय' और 'कुमार' की परीक्षा हो गई। परन्तु रावण ठहरा महा-मोह का अवतार। वह इन परीक्षाओं से कब सचेत होने वाला था।

★ राक्षसों की उक्ति का चमत्कार भी देखिये। वे स्पष्ट नहीं कहते कि अक्षयकुमार मारा गया। रावण का भयंकर आतंक था न? परन्तु उनकी 'प्रभु मर्कट बल भूरि' की ध्वनि में रावण को विवश होकर सुन लेना पड़ता है—अनुमान कर लेना पड़ता है कि अक्षय-कुमार मारा गया।

साहित्यिक भवन रामवन

इसमें रहकर आप साहित्यिक साधना कर सकते हैं। थोड़े या अधिक समय तक रहने की सुविधा यह प्रदान करता है।

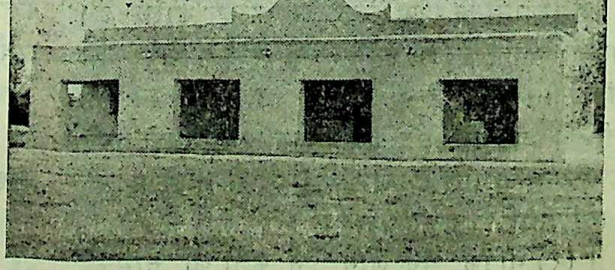

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त-समागम

[श्री शारदाप्रसाद जी]

(१)

"यह उसी गाँव से आये हैं जहाँ महाराज रामप्रसाद जी रहते हैं।" "अहा, कितने अच्छे महात्मा हैं महाराज रामप्रसाद जी। खटिया पर बैठे भजन कर रहे हैं।" कहकर ब्रह्मचारी जी ने साष्टांग दण्डवत की।

× × ×

लगभग १८ वर्ष पूर्व मैं चित्रकूट गया था। साथ में रीवा के कप्तान कन्हैयालाल जी थे। मार्ग में कहता जा रहा था कि छोटासा बाग नगर से दूर लगाना चाहता हूँ जिसमें वृद्धावस्था में एकान्त भजन की सुविधा प्राप्त हो सके। कप्तान साहब इलाका दुर्जनपूर के मैनेजर थे। उन्होंने बचन दिया था कि लौटकर वे श्रीमान् ठाकुर साहब से उपयुक्त भूमि दिला देंगे।

मार्ग में वे महात्मा रामदास जी की प्रशंसा करते जाते थे। उनके यहाँ हम लोगों को ठहरना था। संध्या समय हम लोग रामकुटी पर पहुँचे। मालूम हुआ महन्त जी कहीं चले गये हैं। अन्य कोई तो परिचित वहाँ था नहीं। अतः द्वार पर ही हम लोग बैठ गये। कुछ अन्धेरा होने पर महन्त जी आये। परस्पराभिवादन हुआ। कप्तान साहब से बातें होने लगीं। महन्त जी का स्वर मुझे कुछ परिचित सा प्रतीत हुआ। मैंने कहा क्या आप श्री रामा बाबा के शिष्य रामदास हैं। मेरा स्वर सुनते ही वे बोल उठे "भइया"। मैंने कहा 'कप्तान साहब, इन्हीं रामदास की चर्चा मार्ग भर थी। उन्होंने कहा 'हाँ'। मैंने कहा, "मैं क्या जानता था कि आप मुझे चिर-परिचित रामदास जी के यहाँ ले चल रहे हैं।" बड़ा मधुर मिलन हुआ। रामकुटी में हम लोग ठहर गये।

चित्रकूट के प्रसिद्ध महात्माओं के दर्शन करना था। रामदास जी ने कहा मौनी बाबा तो सहज ही मिल जायँगे। कहीं जाते नहीं हैं, पर ब्रह्मचारी रामनारायणदास जी का मिलना कठिन है। जंगल में न मालूम कहाँ बैठे हों। दोपहर को भोजन करके निकले हम सब ब्रह्मचारी जी के दर्शन की अभिलाषा लेकर। सिरसावन के समीप पहुँचने पर पंडा जी ने कहा मैं उस अमराई में देख लूँ। कभी कभी उसमें मिल जाते हैं। वे उधर गये और वहीं से आने का संकेत किया। भाग्य राम प्रबल थे। ब्रह्मचारी जी लेटे हुए थे। आहट पाकर बैठ गये। हम सब ने दण्डवत प्रणाम किया। वे कह रहे थे "राम पयादेहि पाये आये"। कुशल प्रश्नादि के बाद रामदास जी ने महाराज श्री रामप्रसाद जी की चर्चा की तो उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया।

कुछ देर एक दिव्य महापुरुष का सान्निध्य लाभ कर हम लोग आगे चले। कप्तान साहब ने अपने नौकर से कहा जूते उठा ले। हम नंगे पैर चलेंगे। कुछ आगे बढ़ने पर मैंने कहा—'कप्तान साहब! आपके यहाँ एक इतने उच्च महात्मा निवास करते हैं जिनका नाम सुनते ही चित्रकूट के श्रेष्ठतम महात्मा ने प्रणाम किया और आपने मुझे उनके दर्शन नहीं कराये।" कप्तान साहब ने कहा अब कर लीजियेगा।

× × ×

अपने ग्राम में ही उसने महात्माओं से चित्रकूट की महिमा सुनी थी। "कामद भे गिरि राम प्रसादा" कामद गिरि की प्रशंसा सुनी थी। इनको ही तो अब कामतानाथ कहते हैं। चित्रकूट में यात्री इनकी परिक्रमा करते हैं। यह मनोवाँ-च्छित फल प्रदान करते हैं, इससे ही इनका नाम कामद गिरि है। यह सोने के है, सोने के।

मन में बड़ी अभिलाषा लेकर आया था वह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोने के पहाड़ पर से मनमाना सोना उठा लाऊँगा, धनी हो जाऊँगा। पर यहाँ तो मिट्टी पत्थर का ही पहाड़ था। झूठे हैं वे साधु जिन्होंने कहा था कि कामद गिरि सोने का है। उनका झूठ सिद्ध करने को उसने एक छोटासा पत्थर जेब में डाल लिया। घर गया और कहने लगा गाँव वालों से कि मैं नहीं जानता था कि साधु भी झूठ बोलते हैं। कहते थे कामद गिरि सोने का है। मिट्टी और पत्थर छोड़कर वहाँ धरा क्या है? यह देखो, वहाँ से मैं पत्थर उठा लाया हूँ। जेब से उसने पत्थर निकाला। पर यह क्या? आकार तो वही था पर वह पत्थर न था, सोना था।

मैंने यह कथा सुनी, विश्वास किया उस पर और एक पत्थर उठाकर जेब में रख लिया। मुझे स्वर्ग नहीं चाहिये था। कप्तान साहब भूमि दिलायेंगे और उसमें बगीचा लगाऊँगा, हे कामता नाथ स्वामी उसे सफल करना उसमें रहकर भजन करने की सुविधा प्रदान करना यही मनौती थी, जेब में पत्थर था कि उस भूमि में इसे डाल दूँगा। यह उसे पवित्र करेगा।

भूमि सम्बन्धी अनुभव कुछ था नहीं। पर बाग की भावना मन में लहर मार रही थी। लौटने पर श्रीमान् ठाकुर साहब से प्रार्थना की गई, ४ एकड़ भूमि चाहता हूँ बाग के लिये और १२ एकड़ खेती के लिये। श्रीमान् ठाकुर साहब मेरे भी चिरपरिचित थे ही, स्वयं घूम फिर कर भूमि पसन्द की और २० एकड़ का पट्टा लिख दिया। कुआँ खोदना प्रारम्भ कर दिया गया। कामद गिरि का वह पत्थर भूमि में डाल दिया। क्या मैं जानता था कि आगे चलकर इस भूमि का नाम रामवन होगा?

महाराज रामप्रसाद जी की चर्चा फिर करूँगा। ब्रह्मचारी रामनारायणदास जी की बड़ी प्रशंसा थी— वे किसी से कुछ लेते नहीं थे। एक बार उन्होंने स्वयं कहा भी था कि हम बड़ा अच्छा व्यापार करते हैं। चारे का दूध बनाते है। नित्य जंगल से एक गट्ठा चारा ले आते हैं। गाय को खिलाते हैं। वह दूध बना देती है। बछड़ा देती है। दूसरे वर्ष ३० रु० का बछड़ा बिक जाता है। १ रु० ४ आना महीना हमें मिल जाता है इसका अन्न हमारे लिये पर्याप्त है। हम क्यों किसी से कुछ लें।

उनके दर्शन की लालसा मुझे चित्रकूट ले जाने लगी। यथा नियम एक बार भोजनोपरान्त महन्त रामदास जी को लेकर सिरसावन गया। अमराई में ढूँढ़ा, वे मिले नहीं। कुटी पर बैठकर प्रतीक्षा करना ही संभव था। साथ में जमुना कहार था। वही मोटर में साथ जाया करता था। वह मन्दाकिनी तट पर चला गया। कुछ देर में लौट कर उसने कहा मैंने महात्मा जी को ढूँढ़ लिया। उस पार रोटी बना रहे हैं। मैं दूर से देख आया हूँ। हम लोग उसके साथ चल दिये। दूर से देखा कि वे प्रसाद पाने का उपक्रम कर रहे हैं। हम लोग ठहर गये कि असमय पहुँचने से उनके प्रसाद में बाधा न पड़ जाय। जब वे प्रसाद पा चुके तब जाकर दर्शन किये। मैंने कुछ फल सामने रख दिये। हँसकर महन्त रामदास जी से कहा, अमनिया करके सबको बाँट दो हम क्या करेंगे? हमने तो चार रोटी बनाई थीं, एक गौ के लिये रखी है, घास काट चुके हैं, तीन में थोड़ी कुत्ते को दी है, थोड़ी मछलियों को। बाकी खा ली है। कल तक को फुरसत है।

महन्त जी ने भाग लगाकर सब को दे दिया। एक भाग ब्रह्मचारी जी के सामने भी रख दिया। इतने में कर्वी निवासी उनका एक भक्त वहां आगया प्रणाम कर वह फूट-फूट कर रोने लगा। वह पूछते थे कि क्या हुआ है पर उसका रोना ऐसा था कि उत्तर को अवकाश ही न देता था। संसारी सुख-दुख तो जैसा-तैसा, उसे महान दुख इस बात का था कि वर्ष भर या कितने दिन से वह बराबर उद्योग करता रहता था। अनेक बार आया और ढूँढ़ा पर पूज्य ब्रह्मचारी जी के दर्शन उसे नहीं मिले थे। आज मिलने पर उसका प्रेम उमड़ पड़ा था। मैं देख रहा था उसे, धन्य मान रहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी सद्भावना को। एक मैं था पापों का पुतला जिसके मनमें सद्भावना कभी आती ही नहीं थी।

कुछ देर में भक्त कुछ शान्त हुआ। अपने कुल समाचार सिसक-सिसक कर उसने कहे। महात्मा ने सांत्वना दी। प्रारब्ध भोग हैं। तुमने भोग लिये इनके भोगने में ही तुम्हारा हित था। इसी से हम ढूँढ़ने से नहीं मिले। लो प्रसाद खा लो, कल्याण होगा। ऐसा ही कुछ उसे समझाया था उन्होंने। महन्तजी ने कहा था यह फल महाराज रामप्रसाद जी के यहां से आये हैं। इस पर ब्रह्मचारी जी ने कहा कि यह उन महात्माका प्रसाद है लाओ थोड़ा हम भी पालें। यह कह कर केले की दुमची तोड़कर उन्होंने अपने मुंहमें डाल ली। संभव है तौल में एक दो रत्ती रही हो शेष प्रसाद उन्होंने कर्वी वाले भक्त को दे दिया।

कुछ देर में हम सब विदा हुए। वह भक्त कह रहा था—बाबू जी आप बड़े भाग्यवान हैं। आपके लाये फलों में से थोड़ा सा ब्रह्मचारीजी ने पा लिया यह सौभाग्य आज तक किसी को प्राप्त नहीं हुआ है। मैं अपने अभाग्य पर पछता रहा था कि दिन-रात पाप में लीन रहता हूँ। एक यह सन्त है कि २४ घन्टे में ४ रोटी बनाते हैं। उसमें से भी ढाई ही खाते हैं। साथ में थोड़ा सा नमक पर्याप्त होता है। एक महात्मा का आदर करने को उन्होंने एक रत्ती फल मुँहमें डाल लिया है। मैं चित्रकूट छोड़ते ही किसी डाक बंगले में अभक्ष्य भक्षण करूंगा। पेट में पाप भर कर उसका पापी पन चरितार्थ करूंगा।

× × ×

मनमें आता था कि ब्रह्मचारीजी तथा महाराज रामप्रसादजी का सन्त समागम हो तो बड़ा आनंद आये। महाराज से प्रार्थना करता था कि चित्रकूट चलिये। वे कहते थे कि मन तो होता है कि चलें पर शरीर इतनी बड़ी रेल यात्रा तथा वहाँ का चलना फिरना कर न सकेगा। मैं कहता था कि बड़े आराम से अपनी मोटर में ले चलूंगा। आप थकेंगे वहीं विश्राम कराऊंगा। चित्रकूट में जहाँ मोटर जा सकेगी वहाँ-वहाँ उसी में ले चलूँगा। वे राजी हो गये। अनुकूल अवसर समझ कर मैंने अपनी माता जी तथा कुटुम्ब को भी साथ में ले लिया। सब लोग चित्रकूट पहुँचे और ब्रह्मचारीजी के यहां भी गये। बड़े प्रेम से दोनों सन्त मिले। बहुत दिनों में भेंट हुई थी। वार्त्तालाप होने लगा। अवसर पाकर मैंने एक अमरूद महाराज रामप्रसाद जी के हाथ में दे दिया। यह उन्होंने ब्रह्मचारीजी के सामने रख दिया। मैं आशा करता था कि इसे वे पा लेंगे। पर यह क्या? उन्होंने उठाकर उसे दूर फेंक दिया। अब क्या था। महाराज रामप्रसाद जी ने उन्हें डाटना और गाली देना प्रारम्भ कर दिया। बड़ी गालियाँ दीं। मैं स्तब्ध था। ब्रह्मचारी जी बराबर हँस रहे थे। कहते जाते थे 'आप तो महात्मा हैं।' मुस्कुराते जाते थे। कुछ देर बाद फिर प्रेमालाप होने लगा।

बाद में महाराज रामप्रसाद जी ने कहा था कि हम परीक्षा लेरहे थे। देखा बाबू, कितनी गाली दीं पर उन्हें क्रोध नहीं आया। यह है महात्मा का लक्षण। मैं भी समझ सका था कि यह है महात्मा का प्रयत्न उदाहरण। और पापात्मा का उदाहरण मैं हूँ—कोई आप न कहके तुम कहदे तो घोर तामस जागृत हो उठता है।

महाराज रामप्रसाद जी तथा ब्रह्मचारी रामनारायणदासजी दोनों का ही साकेत वास हो चुका है। पर अपने तप साधन और भजन से विश्व का कितना प्रकट और गुप्त कल्याण उन्होंने किया इसका अनुमान कौन कर सकता है।

ब्रह्मचारी जी किसी से कुछ लेते न थे। सुना था एक बार किसी सेठ ने उन्हें बीस हजार रुपये देने का उद्योग किया था। पर उन्होंने तब भी लोभ पर विजय पाई थी। किसी शुभ काम में लगवा देने के उसके प्रस्ताव को भी उन्होंने स्वीकार नहीं किया था। उनके इस नियम को अच्छा या बुरा कहने का साहस मुझमें नहीं है। वे सन्त थे और उनके दर्शन का सौभाग्य मुझे मिला, यही परम सन्तोष की बात है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मारुति-चरित्र-चित्रण

[श्री पं० रामकुमार उपाध्याय 'कुश']

निर्जर पति सुत भागिनी, ता भ्राता को घोर।
ता भखु ता भखु तासु सुत, आनि बैठ यहि ठौर ॥

× × ×

बंदउँ पवन कुमार खल, बन पावक ज्ञान घन।
जासु हृदय आगार, बसहि राम सर चाप धर ॥

× × ×

सुनु कपि जिय मानसि जनि ऊना।
तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥

'ज्ञानिनां अग्रगण्य' श्री आञ्जनेय लाल का प्रभु सम्मिलनात्मक प्रथमावलोकन दृश्य मानस पटल पर बरबस आ ही जाता है। यहाँ पर कहा जा सकता है क्या कि श्री हनुमतलाल जी चूक गये थे जो कि विप्र रूप धारण करके प्रभु दर्शनार्थ प्रस्थान किया उन्होंने। नहीं, वरन् प्रीति-प्रतीति लाने के पूर्वर ऐसी परीक्षाएँ सर्वथा निर्दोषात्मक गणना में परिव्यक्त की जा सकती हैं। फिर क्या था आपका भगवत् स्वरूप दर्शनार्थ पदार्पण किष्किन्धा राज्य के मार्ग में होता है। वे विप्र वेष वेषीय बन जाते हैं। शंकर रूप होने पर भी चरित्र चित्रण तो जीव कोटि के हेतु ही था जो सर्वथा क्षम्य ही रहेगा। 'विधि हरि सम्भु नचावन हारे' श्री राम तो त्रिदेव उपास्य देव इनसे परे शक्ति परात्पर ब्रह्म थे।

बिप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ।
माथ नाइ पूछत अस भयऊ ॥

ब्रह्म ही जीव को आकर्षित करता है जिसका परिशीलन अन्यत्र किया जावेगा। उसी आकर्षण में आप मस्तक नमन करके पूछने लग जाते हैं। यथा—

की तुम तीन देव महँ कोऊ,
नर-नारायन की तुम दोऊ।
जग कारन तारन भव भंजन धरनी भार।
की तुम अखिल भुवन पति लीन मनुज अवतार ॥१॥

आप सच्चे चरण सेवी थे। सेवा ही निज इष्ट होने से कोमल मञ्जुल चरण वाले परम प्रभु का वन-वन भटकना आपको असह्य हो रहा था। 'मृदुल मनोहर सुन्दर गात' को वन्य जनित 'दुसह आतप बात' सहन करना कैसा असामञ्जस्य पूर्ण था? ध्यान करके हृदय विदीर्ण हो जाता है। इसी कारण से प्रस्तुत स्थल पर बार-बार बन शब्द का समावेश किया गया है। 'फिरहु बन बीरा', 'बिचरहु बन स्वामी' तथा 'दुसह बन आतप बाता' आदि इसी भाँति नामोपासक श्री भरतलाल जी को भी 'बिन पनही'; 'बन बनही' खटका था। कारण वशात् ही बातजात जी ने मिलन पश्चात् पुनः प्रभु राम स्वइष्टदेव को वन-वन नहीं फिरने दिया। वहाँ से ही सम्पूर्ण मार्ग लंका यात्रा तक कंधे तथा पृष्ठ भाग पर ही हुई थी। सेवक भावना का उच्चादर्श तथा उनके प्रगाढ़, निगूढ़ प्रेम का ज्वलन्त प्रमाण यह नहीं है क्या? अवश्यमेव। सच्चे जिज्ञासु अधिकारी भक्त के प्रश्नों की परिपुष्टि करते हुए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम जी नाम, रूप, लीला तथा धाम का निर्देश करते हैं। यथा—

कोसलेस दशरथ के जाए,
हम पितु बचन मानि वन आए।
नाम राम लछिमन दोउ भाई,
संग नारि सुकुमारि सुहाई ॥

अन्त में लीला की ओर इंगित करते हैं।

इहाँ हरी निसिचर बैदेही।
बिप्र फिरहिं हम खोजत तेही ॥

अन्तिम अवरेब काव्यात्मक अर्द्धाली का भाव गद्य करके ही ग्राह्य किया जा सकता है।

शंका—सीता हरण आरण्यकांड में होता है अस्तु किष्किन्धा कांड में कथन 'इहां' का निर्देश कैसा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गद्य—विप्र! हरी निसिचर वैदेही हम तेही खोजत फिरहि यहाँ।

भाव—विप्रवर! विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ कि निशाचर ने वैदेही हरण किया अस्तु हम दोनों भ्राता खोजते हुए यहाँ तक चले आये अब आगे की जानकारी का सूत्रपात समझने की जिज्ञासा है।

आपन चरित कहा हम गाई,
कहहु विप्र निज कथा बुझाई ॥

तब श्री पवन तनय जी अपने छद्म वेष पर संकुचित हो उठते है पर सत्वर संभल जाते हैं।

अथच

प्रभु पहिचानि परेउ गहि चरना।
सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ॥
पुलकित तन मुख आव न बचना।
देखत रुचिर बेस कै रचना ॥
पुनि धीरज धरि अस्तुति कीन्हीं।
हरषि हृदय निज नाथहिं चीन्हीं ॥

पुनश्च 'उलटा चोर कोतवालहिं डाटै' के न्यायानुकूल स्वयंमेव अन्तर्यामी जगत नियन्ता राम जी से प्रश्न करने लग जाते हैं। यथा—

मोर न्याउ मैं पूछा साईं,
तुम पूछहु कस नर की नाईं ॥

जीव गणना में अज्ञान तिमिर में पड़ना मुझे शोभित है पर सर्वज्ञ परमेश्वर से मानव तुल्य प्रश्न कहाँ का न्याय कहा जा सकता है? जीव कोटि से मैं—

तव माया बस फिरउँ भुलाना,
ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना ॥
एक मैं मंद मोह बस, कुटिल हृदय अज्ञान।
पुनि प्रभु मोहिं बिसारेउ, दीन बन्धु भगवान ॥ २ ॥

अभी तक उसी कपट वेषीय होने से श्री राम जी ने हृदय से (अपने वाना के अनुकूल जो अन्य लेख में होगा) नहीं लगाया था। पर जब मन में सम्पूर्ण कलमष धुलकर वास्तविकता आ गई क्योंकि—

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।

तत्पश्चात् ही—

अस कहि परेउ चरन अकुलाई,
निज तन प्रगट प्रीति उर छाई ॥
तब रघुपति उठाइ उर लावा,
निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ॥

अन्ततः सर्वज्ञ राम जी 'राम अनुज मन की गति जानी' (अनु=पीछे+ज=जन्मने वाला) अर्थात् ब्रह्म के पश्चात् ही जीव का अवतरण होता है क्योंकि जीव उसी अंशी का अंश है। "ईश्वर अंश जीव अविनाशी" कारणवश ही बूढ़े बाबा ने प्रभु के उरस्थल को रुचिर कहा है—

केहरि कंधर बाहु बिसाला,
उर अति रुचिर नाग मनि माला ॥
॥१।२१८।५॥

(प्रभु की चितवनि, सर चाप एवं उर को रुचिर कहा है)

सुतरां परम ज्ञानी बजरंग दादा के अकाट्य वचनों को समादरित करते हुए श्री मुख वाक्य निसृत ही तो हो चले। प्रभु वाक्य भला अन्यथा कैसे होगें।

सुन कपि जिय मानसि जनि ऊना।
तैं मम प्रिय लछिमन ते दूना ॥

यहाँ दूना शब्द केवल पूर्ति हेतु मान लेंगे क्या? ऐसा ही सुन्दरकांड में भी स्थल प्राप्त होता है कि—

जनि जननी मानहु जिय ऊना,
तुमते प्रेम राम के दूना ॥
॥ ५।१०।१४ दो० ॥

कदाचित् आप समझ लें कि ऊना की पूर्ति में दूना लिख दिया होगा जी। प्रेम कौन और कैसे नापेगा? ताप थोड़े ही है कि तापमापक यंत्र से तापक्रम नोट कर लिया जावे। आज तक कोई समर्थ भी हो सका है कि प्रेम नाप ले।

श्री मानस एक मर्यादित ग्रन्थ है। भारतीय एक लंगोटी वाले बाबा पवित्र आत्मा वाले सन्त के मस्तिष्क से पावन अनुवाद हुई जिसकी कृति को आशुतोष जी ने 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' से सही कया है। उन पर शंकर सुवन का सदैव वरद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस्त रहा है। अपने आयोजित अभी मानस के दो अखण्ड पाठों में (जहाँ वे अवश्यमेव पधारते हैं) उनकी अकारण कृपा का प्रत्याभास हुआ है अतएव सावधान होकर मनन करने की आवश्यकता है। सन्त वाणी सर्व स्थलों पर अनुपम विचारणीय ही होती चली गई है। 'कथा राम की गूढ़' है। अस्तु दूना प्रयोगात्मक कतिपय भाव दिये जा रहे हैं।

(१) तुम तथा लक्ष्मण समान हो। एक ही हो (दूना) द्वय कदापि नहीं हो।

(२) तुम पशु योनि सम्भूत बानर शरीर में भी अनन्य चरण प्रेमित भक्त हो। जबकि लखनलाल मानव (बुद्धि श्रेष्ठ) शरीर से अनन्य सेवक हैं। अस्तु मेरे द्विगुण प्रेम पात्र हो।

(३) श्री लक्ष्मण जी रूपोपासक हैं पर तुम नामोपासक हो। इस भांति से भी नाम-महत्ता अधिक है। 'ब्रह्म राम ते नाम बड़',

'राम न सकहिं नाम गुन गाई।'

(४) लक्ष्मण भक्ति स्वरूपा सीता के हरण होने तथा मेरे वियोग के कारणभूत बने जबकि तुम भक्ति की खोज करके ज्ञान-भक्ति का संयोग करने में सफल प्रयास सिद्ध हुए। इस भांति भी द्विगुण प्रेम पात्र हो। आशुतोष भगवान शंकर जी ही श्री हनुमान जी हैं अतः सर्व प्रकार लक्ष्मण से राम को द्विगुण प्रिय स्वतः सिद्ध हैं।

महाभारत महाकाव्य में षट् प्रकार के आततायियों का वर्णन प्राप्त होता है जो प्राण दण्ड के भागी माने जाते हैं ऐसा ही मनु स्मृति एवम् वशिष्ठ स्मृति का भी प्रवचन है।

'अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहा।
क्षेत्र-दार हरश्चैव षडेते आततायिनः॥'

(१) अग्नि से घर जलाने वाला। (२) विष देकर मारने वाला। (३) शस्त्र से प्राण हरने के लिये उद्यत। (४) धन अपहरण कर्त्ता। (५) भूमि हारक। (६) नारी अपहरण तथा भ्रूण हत्या करने वाला आदि। श्री मनु जी का आदेश है कि इन दुष्टों को जान से मारने में पातक नहीं होता। मनन कीजिये कि एक घर को भी जलाकर नष्ट करने वाला आततायी की गणना में आवेगा। श्री मारुति जी ने लंका नगर के सम्पूर्ण गृहों को अग्नि लगाकर भस्मसात् कर डाला था। यथा—

उलटि पलटि लंका कपि जारी,
कूदि परा पुनि सिन्धु मँझारी।

भ्रूण हत्या—

चलत महा धुनि गर्जेसि भारी।
गर्भ स्रवहिं सुनि निसिचर नारी॥

रामचरित्र भाषी गुरु-हनन—श्री पवन तनय पवन वेग से संजीवनी बूटी के हेतु मार्ग में गमन कर रहे थे। रावण के आयोजन से मायावी दानव कालनेमि सन्त वेष में कपट गुरु बन जाता है। इनको जाते हुए जानकर वह प्रभु का चरित्र कथन करने लग जाता है। यथा—

जाइ पवन सुत नायउ माथा,
लाग सो कहइ राम गुन गाथा।
होत महा रन रावन रामहिं,
जितिहहिं राम न संसय यामहिं॥

इस प्रकार इनसे गुरु-दीक्षा ग्रहण करने का आग्रह करने लगता है। इस वार्ता पर श्री शंकर सुवन कहने लगते हैं कि प्रथम जल से शुद्ध हो करके परिमार्जन कर लूँ तब दीक्षा ग्रहण करूँगा। मज्जन के हेतु निकटवर्ती सर पर जाने से मकरी जब पैर पकड़ लेती है तभी उसे मारने लगते हैं। मरते समय उस कपट वेषीय गुरु का सारा रहस्य प्रकट करके वह प्राण त्याग देती है। जब श्री हनुमतलाल जी मुनि वेषीय राक्षस के रहस्य से अवगत हो जाते हैं तभी इनकी भावना परिवर्त्तित हो उठती है। सन्निकट आते ही उस दानव से ही इनका व्यवहार सन्त वाणी में देखिये—

कह कपि मुनि गुरु दछिना लेहू,
पाछे हमहिं मंत्र तुम देहू।

तत्क्षण ही—

सिर लंगूर लपेटि पछारा,
निज तन प्रगटेसि मरती बारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम राम कहि छाड़ेसि प्राना,
सुनि मन हरषि चलेउ हनुमाना ॥

लंक दहन के पश्चात् प्रायः राक्षसों की उपत्ति समाप्त ही हो चुकी थी। एकदा मानी रावण ने पता लगाया कि इसका कारण क्या हो सकता है? समस्त राक्षस परिवार में सहसा क्लीवता का आक्रमण हो चुका है क्या? अथवा सम्पूर्ण रजनीचरियों को ही रोग ने ग्रस लिया है जिससे बाँझपन आ गया। ऐसा संभव हो सकता है क्या? लंकाधीश्वरी मन्दोदरी ने बतलाया कि ऐसी कोई भी घटना तथ्यपूर्ण नहीं हो सकती। साथ ही राक्षसियां सतत गर्भ भी धारण कर रही है परन्तु इसका कारण ही आश्चर्य जनक है। यथा—

समुझत जासु दूत कै करनी,
स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरनी ॥

यह सभी पुण्य प्रताप था बजरंगी जी के दर्शन मात्र का कि उन्होंने उन अत्याचारियों को (राक्षस कुल) पुनः पनपने नहीं दिया। कथित पातक पुञ्जों से आज तक कोई मानव या सद्ग्रन्थ शास्त्र पुराणादि श्री समीर कुमार को लांछित कर सके है क्या? सबका कारण था सर्व समर्थ प्रभु श्री राम जी का प्रबल प्रताप एवं वरद हस्त जोकि सीता खोज के अवसर पर ही उनका शिरत्राण हो चुका था। प्रभु ने अपना जन जान करके उनके मस्तक पर भक्त भय हारी कोमल कर-कमल रख दिया था। परिणामतः उन्हें पाप, ताप एवं माया तीनों आपत्तियों से छुटकारा मिल गया। विनयावली का संकेत है। यथा—

"कबहुँ सो करसरोज रघुनायक धरिहौं नाथ शीस मेरे।
जेहिकर अभय किएजन आरत बारेक विवस नाम टेरे॥
सीतल सुखद छांह जेहि करकी मेटत पाप-ताप माया।
निसि बासर तेहि करसरोज की चाहत तुलसिदास छाया॥

१. पाप—लंक दहन से अगणित जीवों का भस्मसात् होना, गर्जना से गर्भ स्राव, भ्रूण हत्या का होना आदि सकल पातक पुञ्ज विनष्ट हो गये।

२. ताप—

ताकर दूत अनल जेहि सिरजा।
जरा न सो तेहि कारन गिरिजा ॥

लंक प्रदाह में पुच्छ से लगाई गई अग्नि अपनी लाल-लाल रक्ताभ, विकराल लपटों से प्रलयाग्नि बन चुकी थी। उस समय की मूसलाधार वृष्टि भी घृताहुतियों का कार्य संपादन कर रही थी। उससे शान्त होने के अतिरिक्त अग्नि-ज्वाल धधक उठी थी। उस विकट संकटापन्न परिस्थिति में किसने आपको मन्दिर से मन्दिर (शिव एवं सीता प्रवेश कल्पना से ही राक्षस गृह मन्दिर बन चुके थे) पर उछलते हुए अवलोकन नहीं किया? क्या अग्नि-ज्वाल-माल्य आपको लेश मात्र भी ताप पहुँचा पायी थी। इसमें आश्चर्य एवं शंका का स्थान कहां? दीन पालक के अभय हस्त ही ने तो 'गो पद सिन्धु अनल सितलाई' कर रक्खा था। फिर आप तो जन्मतः त्रिताप विमुक्त हैं।

३. माया—आपको तीनों माया (सत, रज, तम) का पूर्वापर ही सामना पड़ चुका था न? विस्तृत भाव के हेतु देखिए विगत वर्ष की फाइल स्वलेख माला साधना मणि १३।३ आ०। परन्तु अन्त में सुरसा, लंकिनि तथा सिंहिका तीनों ही विजित होकर इन्हीं का साथ देती हैं।

उक्त चरित्र से हमें अन्यतम शिक्षा प्राप्त होती है। यदि प्राणी सर्व समर्थ की सेवा संयुक्त पुरुषार्थ करता चले तो प्रभु राम जी की महती कृपा दृष्टि प्राप्त होती चलती है और मानव जीवन भी सफल हो जाता है। श्री मुख वाक्य हैं कि:—

समदरसी मोहिं कह सब कोऊ,
सेवक प्रिय अनन्य गति सोऊ।
सो अनन्य जाके असि, मति न टरइ हनुमन्त।
मैं सेवक सचराचर, रूप रासि भगवन्त ॥

॥ बोलिये बजरंगबली की जय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस में सास और बहू का आदर्श

[पं० श्री रामरक्षित जी शुल्क रामायणी]

श्री चक्रवर्ती महाराज दशरथ जी जनकपुर से चारों पुत्र एवं पतोहुवों को साथ लेकर मानों क्रियन सहित फल चार लेकर लौटे हों श्री अयोध्या आये।

गुड़िया सी बहुओं को महारानी कौशल्या जी को सौंपते हुए महाराज ने कहा कि ये नन्हीं नन्हीं बालिकायें अभी तुम्हारे घर में आई हैं इनके हृदय में यह घर अभी पर घर है जब तक इनका घर न हो जाय तब तक तुम इन्हें इतने दुलार से रखना कि ये अपने मायके की सुधि भूल जाँय। जनकपुर के सुख साज का स्मरण न हो। श्री महारानी कौशल्या जी ने कहा कि नाथ मैं बहू नहीं बिटिया की तरह चाव से दुलारूँगी। यह सुनकर महाराज ने कहा—ऊँह बेटी माना तो क्या माना, बेटी तो जनकाधिराज रानी सुनैना भी मानती हैं, इस पर रानी कौशल्या ने कहा नाथ आप ही बतावें कैसे दुलार से रखूं क्या मानूं? तब महाराज ने समझाया—सुनो रानी!

बधू लरिकिनी पर घर आईं।
राखहु पलक नयन की नाईं॥

महारानी कौशल्या जी ने महाराज जी की इस आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। जब श्री राघवेन्द्र सरकार के साथ जानकी जी भी वनवास में जाने को उद्यत हो गईं तब महारानी कौशल्या जी ने राघवेन्द्र से कहा कि राघव! मेरी आँखों की पुतली वैदेही तुम्हारे साथ वन जाना चाहती है बेटा उसके लिये क्या आज्ञा है?

नयन पुतरि करि प्रीति बढ़ाई।
राखेउँ प्रान जानकिहिं लाई॥
सोइ सिय चलन चहति बन साथा।
आयसु काह होइ रघुनाथा॥

श्री दशरथजी के 'बधू लरिकिनी पर घर आईं' कहने का तात्पर्य यह है कि अभी ये बालिकायें अपने माता पिता की दुलारिनें मायके से आई हैं, जब तक घर में सास की प्रधानता है गृह व्यवस्था का संचालन है सयानी करती हैं तब तक सास का कर्तव्य है कि बहू को दुलारें उनकी सेवा करके सेवा का पाठ पढ़ा दें और जिस दिन घर बहू का हो जाय बहू गृह संचालिका जिम्मेदारी रखने वाली गृह स्वामिनी हो जाय तो बहू सास की सेवा दुलार आदि करे।

श्री राघवेन्द्र का अभिषेक हो रहा है। श्रीराम एवं श्री सीता जी पर गृह प्रधान स्वामी एवं स्वामिनी का भार आ रहा है 'किन्तु जब वन की आज्ञा हुई तो श्री सीता जी को सासु सेवा का सुअवसर नहीं मिला। सासु सेवा से वंचित हो गईं इसके लिये पश्चाताप करते हुए माता कौशल्या जी से कहती हैं :—

सेवा समय दैव बन दीन्हा।
मोर मनोरथ सफल न कीन्हा॥

श्री सीता जी के मन में इच्छा थी कि जब मुझे सासुयें इतने प्यार दुलार से रखती हैं कि 'पलंग पीठ तजि गोद हिंडोरा' पृथ्वी पर पाँव नहीं रखने देतीं तो सेवा के अवसर प्राप्त होने पर मैं भी सभी माताओं की जी भरकर आदर्श सेवा करूँगी। वह इच्छा वनबासिनी हो रही हैं इसलिये पूरी नहीं हुई। आगे चित्रकूट में चलकर श्री वैदेही अपनी इच्छा पूरी करती हैं। श्री पतिदेव को बन का राज्य मिला। श्री सीताराम लखन वनबासी हुए, चित्रकूट में श्री सीताराम की प्रधानता है। पतिदेव वन के राजा हैं तो श्री सीता जी वन की रानी हैं। कहने का तात्पर्य कि चित्रकूट आज दिन श्री सीता जी का निज घर हो गया है। वहाँ जब श्री राघवेन्द्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण चंचरीक भरतलाल के साथ सब मातायें पहुँचती हैं तब श्री सीता जी ने सभी सासुओं को देखा मानो बहेलिये के चंगुल में मरालिनीं पड़ी हों सीता दुखी हुईं।

सासु सकल जब सीय निहारी।
मूंदेउ नयन सहमि सुकुमारी।
परी बधिक बस मनहुं मराली।
काह कीन्ह करतार कुचाली॥
तिन्ह सिय निरखि निपट दुख पावा।
सो सब सहिय जो दैव सहावा॥

श्री अवध में तो सासुयें दुलारी बहू से सेवा वात्सल्याधिक स्नेह के कारण नहीं लेती थीं किन्तु अब यहाँ श्री सीता जी की सेवा करने का सुन्दर अवसर मिला। सेवा करने के उत्साह में जितनी सासुयें उतने ही रूप धारण कर प्रत्येक सासु की समभावना से सेवा करती हैं। वन देने वाली सासु के प्रति उदासीनता नहीं।

सीय सासु प्रति बेष बनाई।
सादर करै सरिस सेवकाई॥
लखा न मरम राम बिनु काहू।
माया सब सिय माया माहू॥

श्री सीता जी ने अपने सेवा कार्य से वैधव्य दुख प्राप्त एवं श्री राम बनवास के दुख से दुःखिनी माताओं को सुखी कर दिया।

सीय सासु सेवा बस कीन्ही।
तिन्ह लहि सुखसिख आसिष दीन्ही॥

भगवती श्री जानकी जी श्री राघवेन्द्र सरकार के साथ वन में रहीं। मातायें चित्रकूट से अवध लौट आईं। अब अवध में प्रधानता हैं माताओं की। माता श्री कौशल्या अवध की सयानी हैं इसलिये जब श्री राम लक्ष्मण वैदेही चौदह वर्ष बीतने पर वन से अयोध्या लौटते हैं तो माताओं ने श्री सीता जी की सेवा की। सासुओं ने बहू को विधि पूर्वक स्नान कराके वस्त्राभूषण से सुसज्जित किया।

सासुन्ह सादर जानकिहिं मज्जन तुरत कराय।
दिब्य बसन बर भूषण अंग अंग सजे बनाय॥
राम बाम दिसि सोभति रमा रूप गुन खानि।
देखि मातु सब हरषी जन्म सुफल निज जानि॥

अब श्री सीता जी अवध की साम्राज्ञी हो गईं। भूमि सप्त सागर मेखला एक भूप रघुपति कौशला की महारानी हैं इसलिये जीवन पर्यंत सब सासुओं की सेवा करती हैं। महारानी श्री सीता जी की दिनचर्या वर्णन करते हुए कलिपावनावतार श्री गोस्वामी जी लिखते हैं कि :—

पति अनुकूल सदा रह सीता।
सोभा खानि सुसील बिनीता॥
जानति कृपा सिंधु प्रभुताई।
सेवति चरन कमल मन लाई॥

जद्यपि गृहँ सेवक सेवकिनी।
बिपुल सदा सेवा बिधि गुनी॥
निज कर गृह परिचरजा करई।
रामचन्द्र आयसु अनुसरई॥
जेहि बिधि कृपा सिंधु सुख मानइ।
सोइ कर श्री सेवा बिधि जानइ॥
कौसल्यादि सासु गृह माहीं।
सेवइ सबन्हि मान मद नाहीं॥
उमा रमा ब्रह्मादि बंदिता।
जगदंबा संततमनंदिता॥
जासु कृपा कटाक्ष सुर चाहत चितव न सोइ।
राम पदारविंदरति करति सुभावहिं खोइ॥

॥ जय श्री जनकसुता जग जननि जानकी की ॥

मानस मणि के ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्य में नाम लिखाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधु महिमा

[श्री रामसुपाल जी "भट्ट"]

बिधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी॥

मूलाशय—ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, कवि, कोविद [पंडित] और सरस्वती, साधु महिमा कहने में संकोच करते हैं।

व्याख्यार्थ—यद्यपि यहाँ पर बानी शब्द दो अर्थों में विभक्त है। जैसे—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कवि और पंडितों की बाणी साधु महिमा बखान करने में संकुचित होती है। अथवा "बाणी" यानी श्री सरस्वती जी भी उक्त पाँचों की तरह साधु महिमा का बखान करने में सकुचाती हैं। इस प्रकार गोस्वामी जी के इस मंत्र खण्ड में हिन्दी साहित्य का श्लेष अलंकार विद्यमान है। इसी प्रकार अन्य स्थलों में भी अलंकारों का सुन्दर विभाग वर्णित है।

मैं यहाँ पर बानी का अर्थ श्री सरस्वती जी का ही सूचक मानकर करूँगा और अर्थ दोष इसलिये नहीं मानूंगा कि जगह जगह सरस्वती देवी की साधु महिमा बखान करना संकोच मय ही वर्णित है। इतना भर ही नहीं बल्कि न वर्णन कर सकना भी स्पष्ट पाया जाता है। अब यदि किसी मुख्य प्रमाण की आवश्यकता है तो मैं मानस प्रेमियों का ध्यान उस स्थल की तरफ आकर्षित कराऊँगा जहाँ अंकित है कि—

सुन मुनि साधुन के गुन जेते।
कहि न सकहिं सारद श्रुति तेते॥

अब यदि यह कहा जाय कि "गुण" और महिमा में अन्तर है तब तो बानी और "सारद" में भी कुछ कह डाला जायगा लेकिन यह कहना सुनना शास्त्रीय मर्यादा के बाहर होगा। अतः मेरी समझ में जहाँ तक दृढ़ता जमी मैंने आये प्रसंग के बानी शब्द को सरस्वती ही समझा है और आशा करता हूँ कि मानस प्रेमियों को इसमें आपत्ति न होगी।

अब मैं मानसान्तर्गत प्रमाणों से यह स्पष्ट करने की कोशिश करूँगा कि वास्तव में इन सबके लिये "साधु महिमा" अवर्णनीय है। क्यों? कैसे? निम्नांकित प्रकार·····

(१) विधि—ब्रह्मा जी के निर्माण क्षेत्र में गुण और अवगुण भरे पड़े हैं। जैसे—

बिधि प्रपञ्च गुन अवगुन साना।
कहहिं बेद इतिहास पुराना॥

परन्तु साधुजन इस प्रपञ्चान्तर्गत रहते हुए भी एक मात्र गुण से सम्बन्ध रखते हैं। अवगुण से नहीं। जैसे—

जड़ चेतन गुन दोष मय बिश्व कीन्ह करतार।
संत हंस गुन गहहिं ···· ···· ··· ···· आदि॥

बस यही एक कारण है कि ब्रह्मा जी इनकी महिमा बखान करने में सकुचाते हैं।

(२) हरि—विष्णु जगतके पालनकर्ता हैं। सबका भार सहने के कारण सुधारादि की व्यवस्थानुसार समय कुसमय आदि को ठीक रीति से चलाने के कारण व्यंगादि वचनों का प्रयोग करते रहते हैं यद्यपि यह व्यंग बचनामृत हैं। फिर भी माधुर्य क्षेत्र में व्यंग ही तो हैं। जैसे—

मनही मन महेस मुसकाहीं।
हरिके व्यंग बचन नहिं जाहीं॥

परन्तु साधुजन कभी भी व्यंग परुष बचन नहीं बोलते। जैसे—

समदम नियम नीति नहिं डोलहि।
परुष बचन कबहूँ नहि बोलहिं॥

बस इस क्षेत्र में आगे देखकर विष्णु भी साधु महिमा बखान करने में संकोच करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) हर :—आशुतोष औढर दानी होते हुए भी प्रलयंकर हैं अस्तु सिद्ध है कि क्रोध अवश्य करते हैं चाहे यह क्रोध प्रभु लीला के सम्वरण से ही सम्बन्धित हो। परन्तु क्रोध-क्रोध है। देखिये सृष्टि के चैतन्य स्वरूप कामदेव को जलाकर खाक कर दिया। जैसे—

तब सिव तीसर नयन उघारा।
चितवत काम भयउ जरि छारा॥

परन्तु साधुजन—

बूंद अघात सहहिं गिरि कैसे।
खल के बचन संत सह जैसे॥

दूसरा भाव यह भी ले लीजिये कि साधु कोटि के शंकर साधु की महिमा बखान करने में सकुचाते हैं कि अपनी हीमहिमा तो है। शंकर जी के लिये भी गोस्वामी जी ने "साधु" शब्द का प्रयोग किया है। जैसे—

मोर बचन सबके मन माना।
साधु साधु कहि ब्रह्म बखाना॥

(४) कवि—वाणीदेवी की महती अनुकम्पा हो जाने पर कवि महाशय इन्हीं साधु जनों से [जो घन बनकर रामसीय जस सलिल सुधा सम बरसाते हैं] कुछ पाकर किसी की भी महिमादि का बखान करते हैं। अस्तु! इन देवों का प्रमाण यहीं तक सीमित है। इसी कारण साधु महिमा बखान करने में संकोच करते हैं कि हमारा इसमें श्रेय ही क्या है। जैसे—

सुमति भूमि थल हृदय अगाधू।
बेद पुरान उदधि घन साधू॥
जो बरषहिं बर बारि बिचारू।
होहिं कवित मुकता मनि चारू॥

[तब] श्री रामचरित मानस के कवि ने तो स्पष्ट ही कर दिया है कि "कहा कविन पै कहैं न जाना।" दूसरा भाव यह भी हो सकता है कि आदि कवि एवं मानस कवि स्वयं सम्बन्धी पंथ के हैं—यानी साधु हैं अतः अपनी महिमा अपने ही मुहँ क्यों कही जाय जैसा कि शंकर भगवान के दूसरे भाव में व्यक्त किया गया है।

(५) कोबिद—कोविदादि [पंडित] सबलोभ की विडम्बना में ग्रसित होते हैं। जैसे—

ज्ञानी तापस सूर कवि, कोविद गुन आगार।
केहिकै लोभ बिडम्बना, कीन्ह न यहि संसार॥

यहाँ पर एक बात बड़े ही मार्के की है। वह यह है कि तापस और साधु में क्या अन्तर है। सो तो कहीं सतसंग में सुनना चाहिये। हाँ! इतना मैं संकेत कर रहा हूँ कि अन्तर बहुत है माने कोविदादियों से आगे हैं साधुजन इसलिये महिमा बखान करने में संकोच करते हैं। जैसे—

सरल सुभाव न मन कुटिलाई।
जथा लाभ सन्तोष सदाई॥

(६) बाणी—बाणीदेवी स्मरण करने से विधि लोक से पयान करती हैं। जैसे—

भगति हेतु बिधि भवन बिहाई।
सुमिरत सारद आवति धाई॥

परन्तु साधुजन—

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा।
सेवत सादर समन कलेसा॥

अतः अपने से आगे पाकर सरस्वती देवी भी साधु गुण गान एवं महिमा का बखान करने में संकोच करती है।

बस इसीलिये तो सरिता जैसी कविता को बहाने वाली कलम ने लिख दिया कि—

बिधि हरि हर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी॥

॥ बोलिए भक्ति-भक्त भगवन्त की जय ॥

रामवन की यात्रा करके पुण्य लाभ लीजिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उत्तरकाण्ड' में गोस्वामी जी की दार्शनिकता

[श्री नरेन्द्रप्रसाद श्रीवास्तव बी. ए.]

गोस्वामी जी ने जिस समय अपनी लेखनी उठाई, सर्वत्र विशृंखलता, अव्यवस्था और अनुशासनहीनता का दौर दौरा था। ज्ञान की गंभीरता केवल शब्दों तक ही सीमित थी। गोस्वामी जी इस वाह्याडंबर पूर्ण जीवन स्थिति को सहन नहीं कर सकते थे। "अलखिये" साधुओं ने समाज में इस प्रकार का बातावरण उत्पन्न कर रखा था जिससे समाज का कोई हित नहीं होना था। इस लोक विरोधी रूप का निराकरण आवश्यक था। गोस्वामी जी ने अपनी काव्य प्रतिभा से, अपने रामचरित मानस से और अपने उपदेशामृत से समाज के इस अवगुण को दूर करने का प्रयत्न किया।

गोस्वामी जी को हिन्दी साहित्य के काव्य इतिहास में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गोस्वामी जी की काव्य प्रतिभा और उनका 'मानस' ही उन्हें यह स्थान दिलाने के लिये उत्तरदायी है। 'मानस' एक महाकाव्य और सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है। गोस्वामी जी की काव्य प्रतिभा के दर्शन हमें उनके इस ग्रन्थ में होते हैं। परन्तु 'मानस' के 'उत्तरकाण्ड' में गोस्वामी जी की काव्य प्रतिभा उतनी मुखरित नहीं हुई जितनी उनकी दार्शनिक विचार धारा। इसका कारण है कि इस कांड में ऐसे वर्णनों को स्थान प्राप्त है, जोकि काव्यात्मक न होकर गम्भीर एवं दार्शनिक वर्णनानुकूल ही हैं। इस कांड में भक्ति और ज्ञान, ऐहिक सम्पन्नता और आध्यात्मिक उत्कर्ष आदि का समन्वय है। कवि ने इसमें समाज में शूद्रों की स्थिति के दर्शन कराये हैं, काकभुशुंडि के पूर्व जन्म की कथा का वर्णन किया है। ज्ञान आदि यह विषय अत्यन्त शुष्क हैं और इनमें कवि अपनी काव्य प्रतिभा का हमें उतना दिग्दर्शन न करा सका जितने कि हमें उसकी दार्शनिक विचारधारा के दर्शन प्राप्त होते हैं।

तुलसीदास जी की दार्शनिक विचारधारा के 'उत्तरकांड' में सर्व प्रथम दर्शन उस समय होते हैं जब वे कहते हैं :—

"जे ज्ञान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी।
ते पार सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी॥
बिस्वास करि सब आस परि हरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनुश्रम तरहिं भवनाथ सो समरामहे॥"

इस छन्द में गोस्वामी जी ने ज्ञान की मिथ्यता और भक्ति की उच्चता को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। आगे वे फिर कहते हैं :—

"अव्यक्त मूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने।
फल जुगल बिधि कटुमधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार विटप नमामहे॥"

इस छन्द में कवि ने 'राम' को संसार वृक्ष स्वरूप में मानकर उनकी बन्दना की है। तुलसीदास जी इस वृक्ष को संसार के मनुष्यों को मानते हैं परन्तु उस वृक्ष की जड़ें अदृष्ट हैं। उसमें मन बुद्धि, चित्त और अहंकार रूपी चार त्वचायें हैं, रक्त, मांस, अस्थि आदि इसके छः तने हैं, इसमें क्षुधा, निद्रा, आलस्य आदि २५ शाखायें हैं, इसमें नाना प्रकार के इच्छा रूपी पत्ते निकलते रहते हैं, इसमें पाप और पुण्य के फल निकलते हैं जो कड़ुवे और मीठे होते हैं। इस वृक्ष पर अविद्या और माया रूपी बेल चढ़ती है, जिससे फूल और पत्ते प्रतिदिन झड़ते और निकलते रहते हैं, ऐसा है यह वृक्ष। इसमें तुलसीदास जी की दार्शनिक गहनता का कितना सुन्दर परिलक्षण होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके अतिरिक्त वेदों द्वारा श्रीराम की विनती के जितने भी पद हैं वे दार्शनिक विचारधारा के ऊपर ही रचित हैं।

इसके उपरान्त शिवजी श्री रामचन्द्र जी की स्तुति करने के लिये आते हैं। यह स्तुति वेदों की स्तुति के समान न होकर भी दार्शनिकता को ही लिये हुए है। एक छन्द इस कथन की पुष्टि कर सकता है—

मन जात किरात निपात किए।
मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥
हतिनाथ अनाथनि पाहि हरे।
विषया बन पाँवर भूलि परे॥

इसके अनन्तर अंगद आदि की विनती चलती रहती है। रामवन से लौटकर आये है। सब अपने अपने दुख उनसे कहने को लालायित हो रहे हैं। रामचन्द्र जी अपने सेवकों अंगदादि से घर जाने को कहते हैं। उन्हें अपार दुख होता है और वे जाना नहीं चाहते। इस परिस्थिति में तुलसीदास जी यदि अपनी काव्य प्रतिभा स्पष्ट करने लगते तो वह वर्णन अस्वाभाविक हो जाता और उसका समस्त सौन्दर्य नष्ट हो जाता।

इन वर्णनों के पश्चात् राम का राज्यादर्श प्रारम्भ होता है। तुलसीदास जी वर्णाश्रम व्यवस्था के पक्षपाती थे और इसके पुर्नस्थापन की ओर उन्होंने ध्यान दिया। राम का राज्य सभी को सुख देने वाला है। किसी को भी दैहिक, दैविक और भौतिक ताप व्याप्त नहीं होते हैं। धर्म पूर्ण रूपेण स्थापित हो गया है और पाप का कहीं स्वप्न में भी नाम नहीं है। रोग का कोई पता नहीं—

"दण्ड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।
जीतहु मनहिं सुनिअ अस रामचन्द्र के राज॥

इस दोहे में तुलसीदास जी की दार्शनिकता स्पष्ट है। उनकी इस विचारधारा के दर्शन 'उत्तर-काण्ड' में पग पग पर होते हैं—

"संसय सोक निबिड़ तम भानुहिं।
दनुज गहन घन दहन कृसानुहिं॥
जनक सुता समेत रघुबीरहिं।
कस न भजहु भंजन भव भीरहिं॥
जिन्हहि सोक ते कहहुं बखानी।
प्रथम अविद्या निसा नसानी॥
अघ उलूक जहँ तहाँ लुकाने।
काम क्रोध कैरव सकुचाने॥

इसके अतिरिक्त रामचन्द्र जी की सर्व प्रकार समर्थता का वर्णन गोस्वामी जी की दार्शनिक विचारधारा को ही स्पष्ट करता है—

भव वारिधि कुंभज रघुनायक।
सेवत सुलभ सकल सुखदायक॥
मन संभव दारुन दुख दारय।
दीनबन्धु समता बिस्तारय॥

इसके अनन्तर संत और असंतों के भेद में भी हमें तुलसीदास जी की काव्य प्रतिभा के दर्शन न होकर उनकी दार्शनिक विचारधारा के ही दर्शन प्राप्त होते हैं।

तुलसीदास जी की भक्ति का रूप—

"कहहु भगति पथ कौन प्रयासा।
जोग न मख जप तप उपबासा॥
सरल सुभाव न मन कुटिलाई।
जथा लाभ सन्तोष सदाई॥
बैर न बिग्रह आस न त्रासा।
सुख मय ताहि सदा सब आसा॥
अनारम्भ अनिकेत अमानी।
अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी॥

दार्शनिकता से पूर्ण है। उसमें काव्य की प्रतिभा दिखाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

काकभुशुण्डि द्वारा गरुड़ को राम कथा समझाना, ज्ञान की अनावश्यकता बताना, पूर्ण रूप से दार्शनिक भावों से भरे हैं—

"कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन बिवेक।
होइ घुनाच्छर न्याय ज्यों पुनि प्रत्यूह अनेक॥"
"जे असि भगति जानि परिहरहीं,
केवल ज्ञान हेतु श्रम करहीं।
ते जड़ काम धेनु गृह त्यागी,
खोजत आक फिरहिं पयलागी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनु खगेस हरि भगति बिहाई,
जे सुख चाहहिं आन उपाई।
ते सठ महा सिन्धु बिनु तरनी,
पैरि पार चाहहिं जड़ करनी।

इन दोहों के द्वारा हमारे सम्मुख भक्ति की सार्थता ईश्वर प्राप्ति के लिये स्पष्ट हो जाती है और ज्ञान एक ओर ही पड़ा रह जाता है।

इसके उपरान्त जीव के हृदय में अज्ञान रूपी जो अंधकार छाया है उसे यदि ईश्वर की कृपा हो जाय तो दूर होने का वर्णन तुलसीदास जी ने किया है। इसका वर्णन गोस्वामी जी ने सात्विकी श्रद्धा रूपी गौ का रूपक लेकर किया है। उनका यह वर्णन दार्शनिक भावनाओं से ओतप्रोत है। इसके उपरान्त भी दार्शनिक विचारों का परिलक्षण होता है—

इन्द्री द्वार झरोखा नाना।
तहँ तहँ सुर बैठे करि थाना॥
आवत देखहिं विषय बयारी।
ते हठि देहिं कपाट उघारी॥

'उत्तरकाण्ड' के इन वर्णनों के अतिरिक्त उसमें और भी बहुत से वर्णन हैं जो गोस्वामी जी की दार्शनिकता को स्पष्ट करते हैं। यह वर्णन ऐसे हैं जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि 'उत्तरकांड' में गोस्वामी जी की दार्शनिकत अधिक स्पष्ट हुई है।

सक्रिय सदस्य

मानस संघ के नये १० या अधिक सदस्य बनाने वाले सदस्य :—

	पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
(१) श्री रामरक्षित जी रामायणी बनारी	२७	१०	३७
(२) महन्त श्री रोशनपुरी कोहड़िया	२६	५	३१
(३) महन्त श्री भगवान पिरौना	—	१८	१८
(४) श्रीमती सुशीलादेवी इलाहाबाद	—	१२	१२
(५) श्री पुरुषोत्तम नारायणाचार्य कुम्हौड़ी	—	११	११
(६) ,, गंगासागर राजगढ़िया मौतीहारी	८	५	१३
(७) ,, घनसाय साहू बाराद्वार	७	५	१२
(८) ,, बलभद्रप्रसाद बनौदी	८	२	१०
(९) ,, पुनऊराम हिन्छरपुर	९	१	१०
(१०) ,, रामदीन तिवारी गुर्जीकला	१४	६	२०

इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ३३ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरण रज स्पर्श

[मानस तत्वान्वेषी पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी वेदान्त भूषण, साहित्यरत्न, मणि पर्वत श्री अयोध्याजी]

राम चरन रज पूजा ताहिते पापिन तारत।
भूलेहु जो लखि लेत तासु अघ तुरत सँहारत॥
करै जो मज्जन पान तासु फल किमि कहि आवैं।
सुलभ विष्णु शिव रूप देव मुनि तेहि यश गावैं॥
बार बार बन्दन करत हरि चरनामृत धार कौं।
राम चरन रति दीजिये सुरसरि रामकुमार कौं॥

श्रीराम और लक्ष्मण जी दोनों भाइयों को लेकर जब महर्षि विश्वामित्र जी सिद्धाश्रम से जनकपुर को जा रहे थे तो मार्ग में गौतमाश्रम को शून्य देखकर श्रीराम के पूंछने पर महर्षि जी ने अहल्या श्राप की सम्पूर्ण कथा सुनाकर उसके उद्धार की प्रार्थना करते हुए कहा कि इसे अपने चरण कमल की रज दीजिये—

गौतम नारी साप बस उपल देह धरि धीर।
चरन कमल रज चाहती कृपा करहु रघुवीर॥

यहाँ श्री गुरुदेव जी ने केवल रजमात्र देने को कहा था। [खींच तान करके यह भी अर्थ किया जा सकता है कि यह चरण कमल और रज दोनों चाहती है। पर स्पष्ट अर्थ रज मात्र के ही लिये है।] और भी कई स्थलों पर यही बात कही गई है कि श्री रामभद्र जू के चरणारविन्द की रज के स्पर्श मात्र से ही अहल्योद्धार हुआ है जैसे मैथिल नायिकाओं का परस्पर कथन है कि—

परसि जासु पद पंकज धूरी।
तरी अहल्या कृत अघ भूरी॥

श्री अवधपुरी में माताओं का वचन है कि—

मुनि तिय तरी लगत पग धूरी।
कीरति रही भुवन भरि पूरी॥

श्रीराम सखा निषादराज श्री गुह ने कहा है कि—

चरन कमल रज कहँ सब कहई।
छुवत सिला भइ नारि सुहाई॥

"रावरे दोष न, पायन को,
पग धूरि को भूरि प्रभाव महा है। (कवि)

वेदों ने तो भरी सभा में डंके की चोट से कहा है कि—

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ।
परसि मुनि पतिनी तरी॥

श्री गोस्वामी जी ने भी गीतावली में वेद घोष की ही पुनरावृत्ति किया है कि—

राम पद पदुम पराग परी।
ऋषि तियत्यागि तुरत पाहन तनु छबि मय देह धरी॥
"परत पद पंकज रज ऋषि रवनी।
भई है प्रगट अति दिव्य देह धरि
मानो त्रिभुवन छबि छवनी॥

इत्यादि आदि अनेक स्थलों पर रज मात्र का ही स्पर्श होना कहा है, परन्तु कई स्थलों पर यह भी वर्णित है कि श्री रामभद्र जू ने अहल्या को चरणों से स्पर्श किया था। जैसे—

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई०।

श्री गोस्वामी जी ने गीतावली में कहा है कि श्री राम जी के श्री चरणों से शिला का एक छोर मात्र छू गया था। जैसे—

शिला छोर छुवत अहल्या भइ दिव्य देह।
गुन पेखे पारस के पंक रुह पाँय के॥

परन्तु पद पद्म से शिला का कौनसा छोर छू गया था इसको स्वयं अहल्या ही बता रही हैं कि—

सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज ममसिर धरेउ०।

और मानस के वक्ताओं ने भी स्पष्ट रूप से पद-स्पर्श होना कहा है—

जे परसि मुनि बनिता लही गति रही जो पातक मई।
ते पद पखारत भाग्य भाजन जनक जय जय सब कहँ॥

श्रीराम सखा लंकेश श्री विभीषण जी ने भी यही निश्चय किया कि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे पद परसि तरी ऋषि नारी।

कवितावली के चित्रकूट के प्रसंग को लेकर अहल्योद्धार के सम्बन्ध में यही कहा गया है कि—

परसे पद मंजुल कंज तिहारे।

ऐसे ही विनय पत्रिका में श्री गोस्वामी जी ने भी कहा है कि—

गहते गवनि परसि पद पावन घोर श्राप ते तारी।

इत्यादि अनेक स्थलों के देखने से इस जिज्ञासा का जागृत होना अनिवार्य सा ही है कि श्री रामभद्र जू ने पाषाणी अहल्या को चरण से स्पर्श किया था या रज मात्र दिया था? क्योंकि केवल रज देने मात्र से चरण स्पर्श होना नहीं कहा जा सकता; इसका स्पष्टीकरण शृंगवेरपुर में केवट के कमनीय प्रसंग से हो जाता है कि चरण स्पर्श और केवल रजः स्पर्श दोनों दो वस्तु है। हाँ चरण स्पर्श से रज का भी ग्रहण हो जाता है, परन्तु तब यह शंका उठना स्वाभाविक है कि जब गुरुदेव जी ने चरण के रज की ही आज्ञा दिया तब आपने ब्राह्मणी के मस्तक पर चरण क्यों रख दिया? वह स्वयं कह रही हैं कि:—

सोई पद मम सिर धरेउ कृपालु हरी।

इसलिये मानवेन्द्र मनु के—

यस्तर्केणानुसंधत्ते सधर्म वेद नेतरः।

इस मंतव्यानुसार कुछ तर्क का आश्रय लेने से जो समाधान समझ पड़ता है वह मानसानुरागियों की सेवा में उपस्थित है।

अहल्या का पाँच भौतिक शरीर मात्र पत्थर का होने से वह अंग संचालन में असमर्थ थी किन्तु उसकी चैतन्यता का ह्रास नहीं हुआ था। यदि उसकी चैतन्यता का ह्रास होता उसके धर्म भूत ज्ञान का संकोच रहता तो उसे दुःख का भान न होता और जब दुःख का कुछ भान ही न होता तो फिर श्राप का कुछ मूल्य ही न रहता। "यतो दृष्टिस्ततोमनः।" न्यायानुसार प्राकृतिक दृश्यों के देखने से भुक्ताभुक्त दृश्य पदार्थों के दुःख एवं सुखादि का पूर्ण भान होता है और सुख या दुःख के अनुभव न होने की दशा में आशीर्वाद या श्राप सर्वथा निष्प्रयोजनीय सिद्ध हो जाता है। अहल्या श्राप वश उपलदेह में थी, अतः ऐसे ढंग से पड़ी थी कि सभी प्राकृतिक दृश्य दृष्टिगोचर होते रहे हैं; ऐसा उत्तान पड़ना ही हो सकता है, अतः वह उत्तान पड़ी थी अर्थात् उसका पश्चात् भाग पीठ आदि पृथ्वी में संलग्न होने से सन्मुखांस मुख, ललाट वक्ष पदांगुलि आदि ऊपर थे। उत्तान पड़ी हुई अहल्या-शिला को चरण रज देने की आज्ञा श्री गुरुदेव जी ने दिया, तब श्री रामभद्र जू ने उसके मस्तक पर रज झाड़ने के लिये उसके सिर की तरफ खड़े होकर अपना चरण उसके सिर के ऊपर किया कि रज झड़कर उसके सिर पर पड़े। लिखते या कहते तो देर लगती है परन्तु रज सिर पर पड़ते ही उसके उठ बैठने में किंचित् भी देर न लगी, इतनी शीघ्रता हुई कि श्री रामभद्र जू अपना चरण हटा तक नहीं पाये कि इतने में वह उठ बैठी और उसका सिर श्रीरामजी के चरण तल से टकरा गया उसने समझा कि श्री रामभद्र जू ने अपना—

सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मय सिर धरेउ०।

अब प्रश्न हो सकता है कि श्रीराम जी उसके सिर पर ही क्यों धूरि झाड़ने लगे अन्य अंगों हस्त पादादिकों पर क्यों न झाड़ दिया? इस संभावित प्रश्न का उत्तर यह है कि जैसे रोग पीड़ा के केन्द्र स्थान पर ही औषधि के लेप मालिश आदि की समीचीन विधि है वैसे यहाँ भी समझना चाहिये अर्थात् श्राप के रहने का स्थान शीश ही है। यथा—

"लीन्ह साप मैं सीस चढ़ाई"

"साप सीस धरि हरषि हिय प्रभु सुर कारज कीन्ह"

गुरु पद रज आज्ञा तिलक शाप अशीश महान।
इन पांचौं को बुध कहत एक शीश सुस्थान॥

अतः श्रुति सेतु पालक श्रीराम जी यदि उसके मस्तक पर रज न देकर अन्यत्र देते तो वह कार्य लोक मर्यादा विरुद्ध होता और उसके सिरपर चरण न ले जाकर हाथ से रज देते तो मर्यादा विरुद्ध होता, वह रज चरण की न कहा कर हाथ की कहाती। उत्तान पड़ा हुआ व्यक्ति जब सहसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठता है तो उसके सिरहाने वाला व्यक्ति पीछे पड़ जाता है। यही हाल अहल्या का हुआ, उसके चैतन्य होकर उठते ही श्रीराम जी जब उसके पीछे की ओर पड़ गये तब तुरन्त ही वह सँभल कर—

संमुख होइ कर जोरि रही।

हाँ तो श्री रामभद्र जू की चरण रज पड़ते ही वह अपने पूर्व रूप में हो गई और चैतन्य होकर उठते ही जैसे श्रीराम जी के चरण कमल में उसके मस्तक का स्पर्श हुआ वैसे ही उसका शरीर तपः पुंज (देदीप्यमान) पूर्व से अधिक कान्ति मान हो गया। इसी को लक्ष्य करके—

प्रगट भई तप पुंज सही।

कहा गया और इसी लक्ष्य से विनय पत्रिका में भी कहा गया कि—

शिला शाप संताप बिगत भइ परसत पावन पाँव।

अर्थात् शापितशिला अहल्या रजः स्पर्श से श्राप विगत हुई और चरण स्पर्श से संताप विगत हुई जिससे कि—

तुलसी होइ बिशोक पतिलोकहिं प्रभु गुन गनत गई।

"गौतम सिधारे घर गौनो सों लिवाइ कै।"

अनजान में अचानक यदि कुछ अपराध हो जाता तो उसके लिये बहुत बड़ा सोच पछितावा होता है। जैसे—

बिप्र बिवेकी वेद बिद संमत साधु सुजाति।
जिमि धोखे मद पान कर सचिव सोचयहि भाँति॥

और जो कुछ बुरा काम भी जान बूझकर किया जाता है तदर्थ कभी पश्चात्ताप नही होता। यदि श्रीराम जी जान बूझकर अहल्या के शिर पर चरण रखते तो कभी पछतावा न होता, अचानक स्पर्श हो जाने के कारण ही तो—

दई सुगति सो न हेरि हर्ष हिय चरन छुये को पछितावा॥

कुछ लोग तर्क कर सकते हैं कि जब श्रीराम जी को पदरज स्पर्श कराने में पश्चाताप नहीं हुआ तो चरण स्पर्श से पछितावा क्यों? अतः यह भाव ठीक नहीं। परन्तु वे लोग सोचें कि रजः स्पर्श शिला के हुआ था मानुषी ब्राह्मणी के नहीं इससे उसका सोच न होना ही उचित है, परन्तु पद स्पर्श तो तब हुआ जब वह ब्राह्मणी मानुषी हो चुकी थी इसी से पश्चात्ताप बना रहा। शिला में पद रज स्पर्श का कोई दोष नहीं, इसी भाव को धनुष यज्ञ मंजरी नाटक में स्पष्ट किया गया है कि मुनि जी के आज्ञा देने पर श्री लक्ष्मण जी ने तर्क उठाया कि—

द्विज चरनन की रेणु को क्षत्रिय धारत शीश।
ते किमि तिन्हे छुवाइ हैं निज पद धूरि मुनीश॥

तब महर्षि जी ने समझाया कि—

यह विचार द्विज देह पर करन चाहिये नित्त।
जड़ पखान यहि निरखते भेद न लाइय चित्त॥

अस्तु! यद्यपि परब्रह्म परमात्मा में असावधानी और पछितावा होना असंभव होने से कहना अनुचित है परन्तु माधुर्य लीला में सभी संभव होने से उपर्युक्त प्रकार से समन्वय करना अनुचित न माना जाना चाहिये।

हौं नाहीं गौतम बधू जो तारी रघुराय।
तारत तारी बाजिहैं देखौ चरन छुवाय॥

एक सत्य घटना

मानस-कार श्री तुलसी के नाम का जो अमित प्रभाव मेरी जीवन-सरिता के साथ प्रवाहित हुआ, उसी का दिग्दर्शन यहाँ अल्प शब्दो में कराया जाता है। आशा हैं, मानस प्रेमी यथेष्ट लाभ ग्रहण करेंगे। ता: ६-६-५७ को मेरी एक पुस्तक खो गई। ढूँढने का उपाय ३ दिन जारी रक्खा पर कुछ पता न चला, अत्यन्त निराश हो गया, रात को इसी चिंता में लगभग १२ बजे तक परेशान रहा, अंत में निद्रा देवी की गोद में विश्राम पाया। स्वप्न में क्या देखता हूँ कि तुलसी मेरे सिर पर हाथ फेर रहे हैं, सहसा आँख खुल गई, मेरे मुख से निकला हे तुलसीदास! मेरी पुस्तक मिल जावे। अब पुस्तक मेरे हाथ में है। श्री तुलसीदास महाराज की जय।

— श्री वृजनन्दन गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी जी के काव्य में तीन पण्डित

[श्री गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री कोहड़िया (बिलासपुर)]

महापातक युक्तोऽपि ध्यायन्निमिषमच्युतम्।
पुनस्तपस्वी भवति पङ्क्ति पावन पावनः॥

कविता कामिनी कंत गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने मानस में श्री सुमन्त जी को महाराज श्री दशरथ जी को तथा श्री रामचन्द्र जी को पंडित की उपाधि से अलंकृत किया है। मानस में ये तीन ही पंडित हैं तब तो इसमें कुछ रहस्य अवश्य होना चाहिये क्योंकि गोस्वामी जी ने अपने मानस में अकारण एक बिन्दी भी नहीं लगाई हैं।

पंडित—विद्वान, बुद्धिमान, चतुर, निपुण, योग्य वह जिसे किसी विषय का बहुत अधिक और अच्छा ज्ञान हो।

(१) सुमंत के लिये मानस में लिखा है—

चौ०—तुम पंडित परमारथ ज्ञाता।

अयोध्या के प्रधान मंत्री श्री सुमंत जी बुद्धिमान नीतिज्ञ और राज्य कार्य में निपुण थे। इसी कारण से चक्रवर्ती जी ने उन्हें आमात्य पद दिया था। जैसे—

चौ०—जागत सबनिसि भयउ बिहाना।
भरत बोलाये सचिव सुजाना॥
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू।
बनहिं देब मुनि रामहिं राजू॥
बेगि चलहु सुनि सचिव जोहरि।
तुरत तुरंग रथ नाग सँवारे॥

आज्ञा है? बेगि चलहु के साथ में तिलक सामग्री लेकर—

घोड़े हाथी और रथ तुरन्त प्रस्तुत हो गये और उन्हें (सँवारे) सजाकर लाया गया। साथ ही राज्याभिषेक की सामग्री भी प्रस्तुत हो गई।

इस कार्य के लिये किसी को कुछ कहना सुनना न पड़ा।

तब ये पटु और दक्ष सेवक कहाँ से एकत्र हुए। इन्हें शिक्षा किसने दी अतः स्पष्ट है कि सुमंत जी राज्य कार्य के पंडित थे।

पुनः

चौ०—सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू।
तेरहुति चले साजि सब साजू॥

अयोध्या के साम्राज्य का भार महाराज जनक ने तीन व्यक्तियों पर छोड़ा। मंत्री, गुरु एवं श्री भरतलाल इन तीनों के नाम बड़े क्रम से आये हैं।

महाराज जनक ने भरतलाल की अवस्था देखकर अनुभव किया कि ये राज्य कार्य में विशेष सहयोग नहीं दे सकेंगे अतः उनका नाम अन्त में लिया, उन पर कम दायित्व रखा।

श्री गुरुदेव जी प्रधान हैं ही। परन्तु शांत ब्रह्म वृत्ति के हैं।

और राज्य कार्य बिना दण्ड के चलता नहीं तथा महर्षि से यह आशा करना कि नित्य राज सभा में पहुँच जायँ दुराशामात्र है।

प्रधान भार तो सुमंत जी को दिया गया अतः कवि ने उनका नाम प्रथम लिखा।

सुमंत जी राज्य कार्य के पंडित थे इसी लिये गोस्वामी जी ने पंडित के साथ परमारथ ज्ञाता शब्द का विशेषण लगाया है।

(२) महाराज दशरथ लिये लिखा है—

चौ०—महाराज तुम्ह पंडित ग्यानी।

महाराज दशरथ धर्म व्रत के धुरंधर पंडित थे।

दोहा—धरम धुरंधर धीर धरि, नयन उघारे राय।

महाराज दशरथ यथार्थ में धर्म के धुरंधर पंडित थे।

उनने धर्म रक्षा के लिये राम जैसे पुत्र को त्याग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरह में प्राण तो त्याग दिया, पर धर्म नहीं छोड़ा—

राम राम कहि राम कहि राम राम कहि राम।
तनु परिहरि रघुबर बिरह राउ गये सुरधाम॥

(३) श्री रामचन्द्र के लिये लिखा है कि—

चौ०—खरदूषन विराध बंध पंडित।

ऐसे तो श्री राघवेन्द्र सरकार सभी कार्यों के पंडित थे।

फिर भी खरदूषन और विराध बध में उन्होंने जो पंडिताई की हैं वह अवर्णनीय है। जैसे—

खरदूषन वध में:—

सुरमुनि सभय प्रभु देखि माया नाथ अति कौतुक कर्‌यो।
देखहिं परस्पर राम करि संग्राम रिपु दल लरि मर्‌यो॥

अर्थात् देवता और मुनियों को भयभीत देख कर माया के स्वामी प्रभु ने एक बड़ा कौतुक (पंडिताई) किया जिससे शत्रुओं की सेना एक दूसरे को राम स्वरूप देखने लगी और आपस में युद्ध करके लड़ मरी। इस तरह कौतुक (पंडिताई) किसी भी राक्षस के मारने में नहीं की।

इस प्रकार गोस्वामी जी के विचार में ये तीन ही पंडित जचे जिसे उनने मानस में लिख दिया और चौथा कोई पंडित नहीं जचा।

श्री गोस्वामी तुलसीदास जी के चरणों में कोटिशः प्रणाम॥

तुलसी संग्रहालय

हमारे प्रेमी पाठकों को मालूम है कि रामवन में तुलसी संग्रहालय भवन बन रहा है। इसका अधिकांश बन चुका है। शेष के सम्बन्ध में हमारी योजना सफल हुई तो ६ मास में यह तैयार हो जायगा।

इसके दो छोटे कमरों की छत पड़ गई है। एक का पलस्तर भी हो गया है। दूसरे का शीघ्र हो जायगा। इन दो कमरों में लगभग ४००० पुस्तकों के रखने लायक स्थान है। अब तक जो पुस्तकें संग्रह हुई हैं उन्हें तो इनमें रखा ही जा सकेगा। शेष स्थान के ग्रन्थ संग्रह का उद्योग भी अब प्रारम्भ करना उचित है। जब तक इन कमरों का स्थान भरेगा तब तक अन्य कमरे तैयार हो जायेंगे। यह क्रम अब बराबर चलने की आशा है।

हम अपने उन प्रेमी पाठकों के विशेष आभारी हैं जिन्होंने तुलसी संग्रहालय के लिये पुस्तकें भेजने की कृपा की है। अन्य पाठकों से स्थापनाभाव के कारण हमने प्रार्थना करना स्थगित कर दिया था। अब स्थान है और हम पुनः प्रार्थना करते हैं कि आप पुस्तकें भेजकर हमारी सहायता करें।

प्रत्येक प्राप्त पुस्तक पर दाता का शुभ नाम लिखा जायगा। रजिस्टर में तो उनके दान का उल्लेख रहेगा ही। हम आवश्यक पुस्तकों की सूचियाँ भी तैयार कर रहे हैं। प्रेमियों के पास हम छोटी बड़ी सूचियाँ भेज सकेंगे। आशा है कि आपके सहयोग से संग्रहालय पुस्तकों से परिपूर्ण हो जायगा।

वर्तमान क्रम में हमारी प्रार्थना है कि आप तुलसी के ग्रन्थ तथा उनके सम्बन्ध में लिखे ग्रन्थ भेजें। वैष्णव, शैव, शाक्त, वैदिक तथा पौराणिक ग्रन्थ भेजें। ऐतिहासिक आदि अन्य प्रकार के ग्रन्थों का भी हम स्वागत करेंगे। —शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

सितम्बर मास में संघ के १०६ नये सदस्य बने तथा ४ नई शाखायें स्थापित हुई जिनका विवरण इस प्रकार है:—

शाखा संख्या १९९५ कुम्हौढ़ी [झांसी] सदस्य ९ मंत्री श्री पुरुषोत्तम नारायणाचार्य जी। शा० सं० १९९६ पिरौना [जालौन] सदस्य १८ मंत्री श्री भगवानदास जी महन्त। शा० सं० १९९७ डोगरगाँव [दुर्ग] सदस्य ९ मंत्री श्री कन्हैयालाल जी शुक्ला शा० सं० १९९८ इलाहाबाद [उ. प्र.] सदस्य १२ मंत्री श्रीमती सुशीलादेवी सक्सेना।

गोस्वामी तुलसीदास की स्मृति को श्रद्धांजलि

मास्को, २१-९-५७ (तास)

आज मास्को में भारत के महान् लेखक एवं कवि तुलसीदास की स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये सभा का आयोजन हुआ। सोवियत प्राच्यविद्याविद्, सांस्कृतिक कार्यकर्ता मास्को विश्वविद्यालय तथा स्थानीय संस्थानों के छात्र इस महान् भारतीय साहित्यकार की स्मृति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिये विदेशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने वाली सोवियत संस्था में एकत्र हुए। अतिथियों में भारतीय दूतावास के सलाहकार पी० रत्नम् और उनकी पत्नी, भारतीय दूतावास के कार्यकर्ता मंडल तथा मास्को के उच्च शिक्षा संस्थानों में अध्ययन करने वाले भारतीय छात्र थे।

सभा का उद्घाटन करते हुए विख्यात सोवियत लेखक ए० चाकोक्की ने तुलसीदास की महती लोकप्रियता का जिक्र किया जो न केवल भारत में वरन् भारत से बाहर भी दूर दूर तक व्याप्त है। निरुक्त-शास्त्र के विद्वान इ० चेलीशेव ने तुलसीदास के जीवन एवं सृजनात्मक प्रयासों पर एक निबन्ध पेश किया।

भारतीय दूतावास के परामर्शदाता पी० रत्नम् ने भी एक भाषण किया जिसका समवेत-मंडली ने हार्दिक स्वागत किया।

समारोह के अन्त में सोवियत और भारतीय कलाकारों तथा बम्बई वाले कम्पनी के नर्तकों ने जो इस समय मास्को में हैं, कांसर्ट प्रस्तुत किया।

—"सोवियत संघ के समाचार और विचार" से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध-समाचार

वेटमाः— शाखा की ओरसे तुलसी उत्सव सोल्लास मनाया गया। —बालमुकुन्द

पागराः— ३३ सदस्यों द्वारा श्रावण वदी ३ से ५ तक श्रीमानस का एक सामूहिक पाठ हुआ बाद में हवन, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —गणेशप्रसाद

बघोराः— श्रीकुञ्जीलाल जी के यहां सावन सुदी एकादशी से रामायण श्री पं० रामप्रसाद जी द्वारा हुई। प्रतिदिन भजन, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण होता रहा। —प्रहलादसिंह

संहारः— गत वर्षों के भांति इस वर्ष भी बुढ़वा मंगल को श्री हनुमान जी का उत्सव मनाया गया। जिसमें सुन्दर काण्ड के ६१ पाठ तथा श्री-हनुमान चालीसा के ६१ पाठ लाउड स्पीकर द्वारा "कवन सो काज कठिन·····" सम्पुट लगा कर हुआ। उपरोक्त पाठों द्वारा हवन भी १।S का किया गया। श्री हनुमान जी को २।।S का भोग लगाया गया। ५ घंटे का अखंड कीर्तन और वीर अभिमन्यु नाटक हुआ। —गंगादास

बीना :—श्री एम. एन. धिंगा जी के यहां ताः १६-८-५७ को मानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —पं० शालिगराम दुवे

अटंग—गनेश उत्सव जलूस अच्छी तरह से मनायागया। हवन होकर प्रसाद वितरण किया गया। —हिरऊराम ढीमर

सुरगाँव बंजारीः—श्रीराम शंकरजी के मंदिर में श्री पं० सच्चिदानंद जी शुक्ल द्वारा भादव सुदी ६ से १५ तक श्री मद्भागवत सप्ताह मनाया गया। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन हुआ। —रामरत सोहनी

सोनपांडरः—श्री ठा० रामशरणसिंह जी के यहां ता० १३ से १६ तक अयोध्या निवासी पूज्य पं० रामकुमार दास जी रामायणी द्वारा पुष्प वाटिका प्रसंग पर सारगर्भित प्रवचन हुआ। —पं० हरप्रसाद

सालेचौका रोडः—श्री रामकृष्ण जी जैसवाल के यहाँ ता० २४-२५ को श्री सोभाराम जी धेनु-सेवक मानसमर्मज्ञ द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। ताः २८ को श्री बालाप्रसाद जी साहू के यहाँ पर श्री मानस का अखन्ड पाठ हुआ। पश्चात आरती हवन, पाठ हुआ। पाठशाला, मंसाराम मोदा तथा श्री खरगरामजी के यहाँ श्री गणेश स्थापना हुई। —लालचन्द्र

डंगरहाई :—दूधीतट पर माह गई में मानस का नवाह पाठ हुआ। अंतिम तीन दिन श्रीमती महादेवी शर्मा द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। आश्विन कृष्ण ५ को श्री बीरनलाल साहू के यहाँ मानस का अखंड पाठ सम्पुट से हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। आश्विन कृष्ण ७ को श्री बैजनाथसिंह जी पटैल के यहाँ मानस अखंड पाठ १० सदस्यों द्वारा हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन प्रसाद वितरण हुआ। —नन्हेंलाल शर्मा

हमीरपुरः—ताः २-८-५७ से ८-८-५७ तक सुधासागर का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्री वैरागी के यहाँ ५ दिन तक श्रीमद्भागवत का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —शुकलाम्बरप्रसाद

मवई :—श्री गिरधर गोपाल के मन्दिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को हरि कीर्तन हुआ। दूसरे दिन श्री हरप्रसाद के यहाँ कीर्तन हुआ। तीजा को कीर्तन तथा जलबिहार उत्सव मनाया गया। —नन्दकिशोर नामदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्वी :—श्री शंकरलाल जी चांडक के स्थान पर पितृमोक्ष अमावस्या के उपलक्ष में मानस का अखण्ड पाठ हुआ। समाप्ति पर कीर्तन, भजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —मुन्नालाल

हरदा :—भाद्रपद सुदी १५ को २४ घन्टे का अखण्ड मानस पाठ हुआ। समाप्ति पर सुन्दरकांड का पाठ, अखण्ड ज्योति जलाकर हुआ। प्रसाद वितरण हुआ। —राधेश्याम अग्रवाल

मोतीहारी :—श्रावण भादों मास मानस का मासिक पाठ हुआ। आरती, हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ तथा ता: २०-९-५७ से २१-९-५७ तक अखण्ड कीर्तन २४ घन्टे का पंच मन्दिर में हुआ। —गंगासागर

भिरौनी :—भादों शुक्ल ५ से ८ दिन तक अखण्ड कीर्तन तथा जप हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। साथ में मानस का पाठ भी हुआ। —रामावतार गुप्ता

उमरेट :—भाद्रपद मास में शुक्ल पक्ष १ से ९ तक १२ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। बाद में भागवत सप्ताह हुआ। पूर्णाहुति होकर प्रसाद वितरण हुआ। —मंगुभाई मंछाराम दवे

अन्ताना :—भाद्रपद कृष्ण १ से ८ तक अखंड कीर्तन हुआ। नवरात्र में ५ सदस्यों ने नवाह पाठ किया। —मंत्री

डगाँवा :—ता: २०-९-५७ को श्रीमती सरयू बाई पटेलन के यहाँ २० व्यक्तियों द्वारा श्री मानस का २४ घन्टे का अखण्ड पाठ ज्योति जलाकर किया। समाप्ति पर रामायण पूजन, बजरंग पूजन, एवं कांकड़ा आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्री रामेश्वरदास गर्ग ने मानस का एक मासिक पाठ किया। समाप्ति पर पूजन आरती करके प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

जलालपुर :—भाद्र पूर्णिमा से दीपदान और आश्विन कृष्ण १ से मानस मास का पाठ ७ साधकों द्वारा हुआ। हर मंगलवार को कीर्तन, एक माला गायत्री का जप मास में पूर्ण होकर प्रसाद वितरण तथा हवन हुआ। ता: १७-१२-५७ से २२-१२-५७ तक मानस सम्मेलन होना निश्चित हुआ। शरद पूर्णिमा को पंच वक्तेश्वर महादेव पर नदी जल कलशों में लाकर स्नान कराया गया। कीर्तन, अखण्ड ज्योति, धूप दीप होकर प्रसाद वितरण हुआ। —शिवनारायण त्रिपाठी

हमीरपुर :—ता: ३०-९-५७ को २४ घन्टे का अखण्ड कीर्तन हुआ। बाद में भजन, प्रवचन, हवन, पूजन, वन्दन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —दशरथ शर्मा

वाराडोली :—ता: २५-९-५७ को श्रीकृष्ण जन्म चरित्र पर चर्चा तथा नाटक किया गया। —जगदीश्वरप्रसाद

रायगढ़ :—मानस यज्ञ हुआ। दशहरा के उपलक्ष में श्री दुर्गा जी, श्री काली देवी की पूजन होकर जुलूस निकाला गया। प्रसाद वितरण तथा रामलीला नाटक हुआ।

खरसिया :—ता: ३-१०-५७ को रावण वध किया गया, रामलीला हुई।

चपले :—श्री गोपीराम जी के बिड़ी कारखाने में नित्य रामायण गान होता है।

चन्द्रपुर :—तारीख २ और ३ अक्टूबर को चन्द्रसेनी दुर्गा की बड़ी समारोह के साथ पूजन करके प्रसाद वितरण हुआ। रात्रि में रामलीला, उड़िया भागवत हुई।

गोतमा :—ता: ८-१०-५७ को २०-२५ टोली आसपास के गाँवों से एकत्र कर रात्रि भर उड़िया भागवत का गायन हुआ। प्रसाद वितरण हुआ। १७०० आदमियों को भोजन कराया गया।

सरिया :—ता: २८-९-५७ से ५-१०-५७ तक संगीत सहित नवाह्निक रामायण हुई। ९००० श्रोता गण इकट्ठा हुए थे। ता: ७-१०-५७ को ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —विनायकप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाटपारा :—ता: ३०-८-५७ को परम पूज्य पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी द्वारा तथा ता: ३ ४ और ५ सितम्बर को पं० श्री रामरक्षित जी रामायणी द्वारा प्रवचन हुआ। भाद्रपद कृष्ण २ से ८ तक अखण्ड रामनाम सप्ताह मनाया गया। भजन मंडलियों का जलूस निकाला गया।

—ईश्वरीप्रसाद

सागोर :—ता: २-८-५७ को संत तुलसीदास जी की जयन्ती मनाई गई। प्रातःकाल तुलसीदास के चित्र की स्थापना एवं अर्चना की गई। रामायण पारायण हुआ एवं विद्वानों के प्रवचन हुए। पश्चात् प्रसाद वितरण किया गया। दोपहर को महिला सम्मेलन हुआ। महिलाओं द्वारा भजन व कीर्तन हुए। श्री साधवी भागवतीबाई द्वारा प्रवचन हुआ। श्री रामायण की महिमा बतलाई गई। सायंकाल बौद्धिक कार्यक्रम हुआ। विद्वानों के प्रवचन हुए। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। —संयोजक

आर्वी— आयुर्वेद बृहस्पति प्राणाचार्य पं० श्री गोवर्धन जी शर्मा छांगाड़ी डी० एस० सी० का देहावसान ता: ३-९-५७ नागपुर में हो गया। आप भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध वैद्य, लेखक, साहित्यकार, पत्रकार एवं धर्म प्रेमी थे। आपने अनेक धार्मिक संस्था और पत्र-पत्रिकाओं की दिल खोलकर आर्थिक सेवा की है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा परिवार एवं मित्र समाज को दुःख सहन शक्ति दें यही हमारी हार्दिक कामना है।

—मुन्नालाल देवासे

आश्विन पारायण समाचार

[आश्विन शुक्ल १ से ९, तारीख २४-९-५७ से २-१०-५७ तक]

कुम्हरिया :— ९ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। बाद में हवन, ब्रह्मभोजन, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —राजनारायण वर्मा

घेगाँव :—३० सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। नवमी को हवन होकर जलूस निकाला गया।

—विष्णुदास साधु

नन्दौरकलाँ :— २१ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। —बनमाली प्रसाद

खरसिया :—२ व्यक्तियों ने नवाह पाठ किये।

—गुरुमुखराय रामानन्द

परौंख :— श्री मानस का अखंड पाठ श्री मैकूलाल जी के यहाँ हुआ। —मोहनलाल

पेन्डरा :— श्री शिवमंदिर और श्री सत्ती माता के मंदिर में अखंड ज्योति जलाकर श्री मानस का अखंड पाठ ११-११ सदस्यों द्वारा हुआ। समाप्ति पर दोनों जगह ११-११ सेर साकल्य से हवन, कन्या और ब्राह्मण भोजन हुआ। —विश्वनाथ गट्टानी

विदिशा :— श्री चिन्तामणि गनेश मंदिर में नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, ३०० कन्याओं और ब्रह्मणों का भोजन हुआ। भोजन के बाद दक्षिणा भी दी गई। ता० ४-१०-५७ को पंडित मदनमोहन आचार्य के सहयोग से श्री पं० चन्द्रशेखर जी धर्माधिकारी शास्त्री की अध्यक्षता में एक विराट कवि-सम्मेलन हुआ। रुपे की वजरिया के श्री हनुमान जी के यहां अखंड पाठ हुआ। इसी अवसर पर श्री हनुमान जी का चोला छुड़ाकर वैभववती में बड़े धूमधाम से विसर्जन किया गया। हवन हुआ। इस वर्ष घर-घर, मंदिर-मंदिर, गाड़ी अड्डे के हनुमान जी, श्री राठी जी, महन्त श्री मंगल दास जी, वैरा बाबा घाट पर नवाह पाठ हुए।

—श्यामलाल

नहला :— ८ सदस्यों द्वारा मानस का पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राम्हण भोजन हुआ। ता० २४-९-५७ को श्री राम मन्दिर में लाउड-स्पीकर लगाकर मानस की कथा हुई। —शीतलसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटरा :- मानस का अखण्ड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, पूजन होकर कुमारी बालिकाओं को दक्षिणा दी गई प्रसाद वितरण हुआ। रामनाम कीर्तन करते हुए जलूस निकाला गया।
—गिरिवरसिंह

मन्दरौंद :- विजयादशमी के पर्व में कुछ बालकों ने पारायण किये। ३ दिन तक रामलीला हुई। —प्रद्युम्नसिंह

दुरपा :- ५ व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए।
—नकछेदसिंह

चिल्लो :- श्रीराम डिल्लीपत के यहाँ नवाह पाठ, सुन्दरकाण्ड का पाठ, और ब्राह्मण भोजन हुआ। —माताप्रसाद

कोटमी :- श्री मा सती मन्दिर में सात व्यक्तियों द्वारा ८ पाठ हुए बाद में हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ।

तुस्मा :- ४ पाठ हुए। श्री झाड़ूराम यादव ने अखण्ड पाठ किया। बाद में हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —रामानुजदास

उजयाँन :- श्री शंकर जी के स्थान में २१ साधकों द्वारा पाठ हुआ। अन्तिम दिन हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —गनेशीलाल

भीलवाड़ा :- कूंड के बाला जी मन्दिर में नौ दिन तक अखंड कीर्तन हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। अयोध्यावासी महन्त श्री अर्जुनदास जी महाराज की मण्डली द्वारा १८ दिन तक मानस का अखंड पाठ तथा ६ दिन तक हवन हुआ। पूर्णाहुति होकर ब्राह्मण भोजन हुआ। —भँवरलाल

उरमाल :- व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए।
—फकीरराम देवाँगन

कोटमी :- तीन स्थान में नवाह पाठ हुए। प्रथम स्थान में ११ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ और लवकुश कांड की कथा, द्वितीय स्थान में १२ सदस्यों द्वारा पाठ तथा तृतीय स्थान में ४ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुए। सभी स्थानों में समप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन, दक्षिणा देकर प्रसाद वितरण हुआ। —रामरंगीलेदास

डंगनिया :- १२० साधकों द्वारा सात दिन तक अखंड नाम सप्ताह हुआ। बाद में ब्राह्मण भोजन हुआ। दशमी को रावण बध हुआ। एकादशी से नाटक हुआ। —कृष्णचन्द्र शर्मा

जबलपुर :- केवल जल पीकर नवाह पाठ किया। समाप्ति पर भजन, पूजन, प्रवचन, कन्या भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—अमरनाथ मिश्र

नरघोघी :- ६ व्यक्तियों द्वारा मानस का नवाह पाठ तथा १०८ पाठ हनुमानचालीसा के नित्य हुए। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —श्रीरामबालक झा

जावद :- १०८ साधकों द्वारा सामूहिक नवाह पाठ हुआ। साथ साथ ११ ब्राह्मणों द्वारा श्री रामायण मंत्र से हर चौपाई पर हवन होता था यज्ञ के समय घी धारा बराबर चालू रहती थी। रात्रि में श्री बाबा राघवदास जी वैष्णव की अध्यक्षता में विद्वानों के प्रवचन होते थे। तृतीया को श्री गेंदालाल जी एरन की तरफ से श्रीराम विवाह उत्सव में पाठ कर्त्ताओं और दर्शनर्थीयों को बरातियों के रूप में साकार किया गया। अष्टमी को जलयात्रा जलूस में १०८ महिलाओं के जल के कलश से भगववान को राज्याभिषेक स्नान कराया गया। पूर्णाहुति होकर ब्राह्मण भोजन, प्रीति भोजन हुआ। रामानुज कोट मंदिर में २१ साधकों द्वारा नवाह पाठ हुआ दशमी को श्री हनुमानजी के मन्दिर में १०८ साधकों द्वारा सुन्दरकाण्ड का सामूहिक पाठ एवं यज्ञ आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। मानस और वाल्मीकिय रामायण के व्याक्तिगत पाठ हुए। श्री गायत्री यज्ञ हुआ। सवा करोड़ श्रीराम मंत्र के जप हुए।
—जगन्नाथ अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहभट्टा:—व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए।
—हरीराम चतुर्वेदी

सेरसा :—मानस का नवाह पाठ तथा गायत्री के २७ हजार जप किया। बाद में कीर्तन, हवन, कन्या भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—नाथूराम पुरोहित

चौबेबेल :—११ व्यक्तियों ने नवाह पाठ किये।
—केशरीकिशोरशरणजी

पोड़ीखुर्द :—दो नवाह पाठ हुए। २४ घण्टे का अखंड कीर्तन हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —रामेश्वरप्रसाद

रेड़ा :—सदस्यों तथा २ महिलाओं ने नवाह पाठ किये। पूर्ति पर श्रीराम षडाक्षर मंत्र से आहुति दीगई। नगर कीर्तन हुआ। प्रसाद वितरण किया गया। श्री धनेश्वरप्रसाद के यहाँ नित्य कथा होती है। —संवाददाता

उमरेठ—१० सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। पूर्णाहुति होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—मंगुभाई मंछाराम दवे

पाण्डुका—नवयुवक भाइयों द्वारा नवाह पाठ हुआ। —मेहतरराम

काशीपुर—श्री पं० रामकुमार उपाध्याय आचार्य ने सम्पुट लगाकर नवाह पाठ किये। श्री त्रिभुवन त्रिपाठी ने दुर्गाजी का पाठ किया। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—संवाददाता

झिरीवा—मानस के ६ नवाह पाठ तथा दुर्गा के ३ पाठ हुए। दशमी को हवन हुआ। सायंकाल को श्री पं० शुद्धू प्रसाद तिवारी द्वारा प्रवचन और प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

मोतीहारी—श्री पंचमंदिर में ६ व्यक्तियों द्वारा नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। कुछ व्यक्तिगत पाठ हुए।
—गंगासागर

फरहदा:—दशहरा उत्सव में श्रीरामखिलावन तिवारी द्वारा लिखा नाटक लंकादहन से रावण वध तक खेला गया। बादमें भाषण होकर रामवन के सदस्य बनने की प्रार्थना की गई। प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

आर्वी:—१२ नवाह पाठ हुए। समाप्ति के उपलक्ष में श्री बाबूलाल जी के स्थान पर मानस का अखंड पाठ अखंड ज्योति जलाकर हुआ। श्रीरामचन्द्र छाँगाणी ने अखंड पाठ किया। समाप्ति पर कीर्तन, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—मुन्नालाल देवासे

बीना:—श्री बजरंग मन्दिर में ८ व्यक्तियों द्वारा नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। बाद में ३६ घन्टे का अखंड कीर्तन हुआ। दिन में महिलाओं ने भी भाग लिया समाप्ति पर हवन, पूजन, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —पं० शालिगराम दुबे

तलवाड़ा:—११ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक नवाह पाठ हुआ। अँतिम दिन सुन्दर काण्ड के पाठ से हवन हुआ। आश्विन सुदी ११ को सामूहिक अखंड पाठ हुआ। —प्रेमदास पुजारी

भैंसातरा :—ता: १-१०-५७ को ४ सदस्यों द्वारा मानस का सामूहिक अखंड पाठ हुआ। बाद में हवन, पूजन, श्री मानस का जलूस, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —भुवनलाल

खैरा :—ता: १-१०-५७ को अखँड पाठ हुआ बाद में हवन, पूजन, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —मनराखन साहू

साले चौका रोड—१३ सज्जनों द्वारा मानस का नवाह पारायण हुआ। समाप्ति पर सुन्दर कांड से हवन हुआ। सर्व श्री नर्मदाप्रसाद, प्रेमलाल जी स्वर्णकार के गृह पर श्री दुर्गाप्रसाद जी के भावपूर्ण प्रवचन हुए। विजयादशमी के उपलक्ष में समारोह किया गया स्थानीय रेलवे हेडमास्टर के गृह पर तो श्री दुर्गाप्रसाद जी के मानस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवचन हुआ ही करते हैं। शरदपूर्णिमा के पुनीत अवसर पर सायंकाल को पं० दुर्गाप्रसादजी दुबे का "मनुरूपा" प्रसंग पर भावपूर्ण प्रवचन हुआ। ता० २४-९-५७ को श्री बंशीधर जी सेठ की ओर से श्रीराधाकृष्ण के मन्दिर के निकट श्री मारुति जी के समीप मानस का अखंड पाठ हुआ, पूर्णाहुति होकर प्रसाद विवरण हुआ। साथ ही पं० हीरालाल शुक्ल के गृह पर दुर्गा की स्थापना हुई। नित्य सांयकाल श्री दुर्गाप्रसाद जी "मानसभाव-रसिक" का मानस पर भावपूर्ण प्रवचन हुआ। पूर्णाहुति के समय मानस का अखंड पारायण हुआ ता० २६-९-५७ को श्री ताराचन्द्र जी स्वर्णकार की ओर से श्रीमानस का अखंड पारायण हुआ। ता० २७-२८ को श्रीदमरूलाल कस्तूरचन्द्र कठर की ओर से मानस का अखंड पारायण हुआ। तथा मूल रामायण से हवन भी हुआ। पश्चात हवन आरती प्रसाद वितरण इत्यादि कार्य हुए।

—लालचन्द्र वमनोतिया

रायगढ़-आश्विन नवरात्र में श्री पं० रामरक्षित जी शुक्ल रामायणी के आचार्यत्व में स्थानीय श्री हनुमान मन्दिर में मानस यज्ञ हुआ जिसमें ता० २४-९-५७ को श्री रामचरित मानस को श्री गोपाल मन्दिर से भक्तों द्वारा कीर्तन भजन करते हुए लाकर श्री हनुमान मन्दिर में स्थापन पूजन किया गया। ताः २५-९-५७ से ३-१०-५७ तक १०८ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक पाठ और ११ पंडितों द्वारा हवन नित्य होता रहा। दिन में ३ बजे से ४ बजे तक गोस्वामी बालकृष्ण जी महाराज द्वारा अध्यात्म रामायण पर प्रवचन होता था। रात्रि में सर्व श्रीरामरक्षित जी रामायणी; पं० भगवान प्रसाद जी पाण्डेय द्वादश आचार्य, पं० श्यामचरण जी त्रिपाठी, डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, पं० जगदीश प्रसाद जी तिवारी, पं० भुवनलाल पाण्डे तथा श्रीमतीजमुनाबाई शर्मा के नित्य मानस पर प्रवचन होते थे। ता० ३-१०-५७ को भगवान श्री रामचन्द्र जी का राज्याभिषेकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। ताः ४-१०-५७ को पूर्णाहुति, ब्राह्मण भोजन अनाथ एवं गरीबों को भोजन कराया गया। संध्या समय जलूस निकाला गया। प्रतिदिन हजारों की संख्या में जनता ने भाग लिया। यज्ञ सफल रहा।

—श्यामलाल थवाइत

रामवन समाचार

श्री मारुति सेवा :—सितम्बर मास में मानस का एक अखंड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में ९०४.३२ रु० की आय हुई और खर्च ४९६.१२ रु० हुआ। बचत ४०८.२० रु० की हुई। पिछली बचत ४७३.६९ सहित अब ८८१.८९रु० जमा रहे।

२-९-५७

२४.५०	श्री गोविन्दलाल जायसवाल कटोरी
१.२५	,, डा० बी० एल० कोटी, मगरुलपोर
१.२५	,, प्रेमदास जी पुजारी, तलवाड़ा
१.२५	,, उदिया जी गेहलोल,

३-९-५७

११.५०	श्री सुदर्शनसिंह जी "चक्र" वृन्दावन
५०.००	गुप्तदान

४-९-५७

५.००	श्री कन्हैयालाल शर्मा, गोंदिया
५.००	,, सी० पी० शर्मा, नरसिंहपुर

५-९-५६

६.५०	श्री माताप्रसाद त्रिवेदी, चिल्ली
७.००	,, मदनमोहन तिवारी, गुरुसरायँ
१.२५	,, आर० पी० अग्रवाल, सतना

६-९-५७

१०.००	श्री रामानन्द शर्मा, दुर्ग
१.२५	,, सीताराम शान्त, वाराणसी
२.००	,, शम्भूदयाल जी अवस्थी, सतना
.५०	,, रामदास गुप्ता, सतना
१.५०	,, रामक्षासिंह, धनवाद
५.००	,, भुवनेश्वरप्रसाद शर्मा रायपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०-९-५७

१.२५ श्री शिवप्रसादलाल सिंगनलर औरंगा०
२.५० ,, दिनेश्वरप्रसाद जी, ,,
१०.०० ,, रामचरणलाल जी, झांसी
५.०० ,, ओंमप्रकाश जी, दिल्ली

११-९-५७

४५.०० श्री दाऊ कृष्णकुमारजी, अग्रवाल भाटापारा
१५.०० ,, रामकुमारलाल अग्रवाल, भाटापारा
७.५० ,, सुखनाथप्रसाद शर्मा, ,,

१३-९-५७

५.०० श्री मूलचन्द्र सोन्थालिया, फगुरम
५.०० ,, परमेश्वरीबाई, धुरकोट
१.०० ,, मेदनीप्रसादजी द्विवेदी, टायेंग
१४९.३९ ,, सी० के० जोशी, कम्पाला
१.२५ ,, रामेश्वरप्रसाद अग्रवाल, नौगांव

१४-९-५७

१.२५ श्री छोटेसिंह चौहान, बलवाड़ा
५.०० ,, मातादीन शर्मा, भिण्ड
५.०० ,, मारोतिराव, मुड़पार
७.०० ,, गिरधरलाल गोस्वामी, पीलीभीत
२९.०० ,, वालकेश्वरजी, रीवा

१६-९-५७

५.०० श्री गीताप्रसाद शर्मा, भागलपुर
५.०० ,, राधाकृष्ण मुकुन्दराम जोशी, होशंगाबाद
१०.०० ,, गंगाप्रसाद बच्चूलाल, जावरा
७.०० ,, गुलाबसिंह पटेल, वीकलपुर

१७-९-५७

.५० श्री हरप्रसादजी दुबे, मोंछ

१८-९-५७

१०.०० श्री राजाराम रतनजी, रानी
१०.०० ,, रामनिवास दरगड़, मदनगंज
५.०० ,, मिश्रीलाल, गढ़ेका पुरवा
११.०० ,, सुखनन्दनलाल जी आढ़ती, भरुआ सुमेरपुर
१६.५६ ,, विष्णुलार्ड कं०, नौरोबी
१.२५ श्री रामरतन शर्मा, झाँसी
१.२५ ,, बाबू आनन्दस्वरूपजी भटनागर झांसी

१९-९-५७

५.०० श्री सीताराम भार्गव, घेगाँव
१.२५ श्रीमती कदमबाई, कुलियाबांधा
७.०० श्री रामरतन हनुमानप्रसाद राठी, सूरत

२०-९-५७

५.०० श्री मैकूलाल कोरी, परौंख

२१-९-५७

१०.०० श्री खदेरनलाल साह, टीटागढ़
५.०० ,, गुजराती मोतीलाल सिन्धी, घेगाँव
१.२५ ,, विवेकदासजी, भटगांव

२३-९-५७

५.०० श्री त्रियुगीनारायण जी, करगीरोड
१९.०० ,, ढ़ारसी कल्याणजी, बोम्बो

२५-९-५७

१८.०० श्री जानकीदास द्वारकादास, भोपाल
२६.२५ ,, लक्ष्मणकरण वि० मेहता, बांदा
५.०० ,, बनारसीलाल गोयनका, मिर्जापुर
१०.०० ,, वी० डी० अग्रवाल, कलकत्ता
११.०० ,, के० पी० भार्गव, हल्दवानी
१.२५ ,, प्रेमदासजी पुजारी, तलवाड़ा
१.२५ ,, उदियाजी गेहलोद, ,,
१.२५ ,, रामरक्षासिंह, हीरापुर
५.०० ,, राधिकारमनप्रसादसिंह, पटना

२८-९-५७

६.२५ श्री सांवरप्रसाद देवकीनन्दन, गोरखपुर
५.०० ,, रुलीचन्द्र सरावगी; श्रीकरनपुर
५.०० ,, महिला मंडली चीचली, श्रीमती सरस्वतीबाई द्वारा
५.०० ,, जगदीशप्रसादसिंह, पटना
२.५० ,, रामरक्षासिंह, हीरापुर
५.०० ,, पुरुषोत्तम नारायणजी, बीना
१.२५ ,, हीरालाल बानी, मल्हार
१.२५ ,, रामचन्द्र शर्मा, नैला
१.२५ ,, झाडूराम अहीर, ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२००.०० श्री बाबू सालिगराम जी, मेहरोत्रा कलकत्ता
१.२५ ,, लक्ष्मणप्रसाद बजाज, मौदहा
७.०० ,, प्रवीणचन्द्र हाथीभाई, सतना
१.०० ,, जगदेवप्रसाद, जौनपुर
१.०० ,, बद्रीनारायण, ,,
१.०० ,, रमेशचन्द्र, ,,
१.७० ,, फुटकर प्राप्त ,,

३०--९--५७

१.०० श्री मती कृष्णाकुमारी, गया
७.९२ चढ़ोत्री

९०४.३२ कुल। दाताओं को धन्यवाद।

श्री रामनाम सेवा :— इस मास में लड्डू आदि बिक्री से १८.७५ की आय हुई खर्च ८.७७ हुआ। बचत ९.९८ की हुई। पिछली कमी १८१.५८ में यह घटाने पर अब १७१.६० की पूर्ति करना बाकी रहा। श्री विष्णुलार्ड कं० से प्राप्त २००) अलग जमा है।

सितम्बर मास में ९२८ लड्डू तैयार हुए। दैनिक-क्रम में १५० लड्डू श्री मारुती जी को समर्पण हुए। शेष श्री रामनाम नौका के लिये रखे गये। केन्द्रों की स्थिति इस प्रकार है :— सेंधवा ४५१, मोतीहारी ३१६, परौख २१६, जुहिला २०९, बाँदा २०२।

श्री तुलसी संग्रहालय भवन :—

इस मास में १७१२.३७ रु० खर्च हुए। आय १०.६४ रु० की हुई। कमी १७०१.७३ की रही। पिछली कमी ४३३.९० सहित अब २१३५.६३ रु० की पूर्ति करना बाकी रहा।

४-९-५७

१.२५ श्री बद्रीप्रसाद टीवरेवाल, मोतीहारी
१.२५ ,, विन्देश्वरीप्रसाद, ,,
१.२५ ,, पुरुषोत्तमजी शाह, ,,
४.३९ फुटकर प्राप्त ,,

१९-९-५७

२.५० शाखा बेटमा श्री बालमुकुन्द शारदा द्वारा

१०.६४

मानस प्रचार :— इस मास में सदस्य शुल्क से ५६.३५ रु० प्राप्त हुए और शाखाओं की सहायता रूप में ३४.५० रु० प्राप्त हुए। मानस सस्ता संस्करण के लिये जमा २०) भी इसमें जमा कर दिये गये। क्योंकि इतनी छोटी रकम से ग्रन्थ प्रकाशन सम्भव नहीं है इस प्रकार कुल आय ११०.८५ रु० की हुई। खर्च पत्रव्यवहार में ३८.६६ और कार्यालय में ३.८४ कुल ४२.५० हुआ। बचत ६८.३५ की हुई। पिछली कमी १३८७.७३ में से यह घटाने पर अब १३१९.३८ की पूर्ति करना बाकी रहा।

२--९-५७

१.२५ श्री छोटेलाल गुप्त, बन्देमऊ

४-९-५७

१.२५ श्री पं० वशिष्ठनारायण, बिहिया

५--९--५७

१.२५ श्री धनसाय साहू, बाराद्वार बस्ती

६--९--५७

१.२५ श्री पं० लक्ष्मीप्रसाद चतुर्वेदी, हर्दी
५.०० शाखा सतना श्री नन्दलाल जी

७-९--५७

१.२५ श्री प्रद्युम्नसिंह जी, मन्दरौद

९--९--५७

३.०० श्री शीतलसिंह जी, सिरसा

१९--९--५७

१.५० श्री बलभद्रप्रसाद कश्यप, बलोदी
६.२५ ,, शंकरलाल चांदाबत, महू

२०--९--५७

१.२५ श्री दीनदयाल कोरी, झींझक

२१-९--५७

५.०० श्री शाखा किरावली श्री बंगाली बाबू सिंहल द्वारा

२६--९--५७

६.२५ श्री रामकरनजी, बस्तर

३४.५०

नई कुटिया :— पूर्ववत १४३६.२८ की पूर्ति करना बाकी रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्रिय सदस्य

'मानस मणि' के सन् १९५७ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य :—

		पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
१.	श्री रामरक्षित जी रामायणी बनारी	२४	५	२९
२.	,, धनेश्वरप्रसाद जी धन्ने रेड़ा	८	१	९
३.	,, दयाराम जी शर्मा काचरी	५	२	७
४.	,, शालिकराम जी दुबे बीना	४	१	५
५.	,, महन्त रोशनपुरी जी वैद्य शास्त्री कोहड़िया	१७	१	१८
६.	,, सेठ बैजनाथप्रसाद जी सफीपुर	५	१	६
७.	,, गंगासागर जी राजगढ़िया मोतीहारी	३	१	४
८.	,, हरिप्रसाद जी पीरीबाजार	२	१	३
९.	,, पंचम जी साव चैनपुर	४	१	५
१०.	,, गणेशप्रसाद जी पटवारी सिवनी	३	१	४
११.	,, हरनारायण जी द्विवेदी महराजगंज	४	१	५
१२.	,, नन्दलाल जी पुरोहित तुमसर	११	६	१७
१३.	,, भगवतलाल जी शर्मा गंगापुर	११	२	१३
१४.	,, तुलसीराम जी देवांगन राजनांदगाँव	२	१	३
१५.	,, कंज जी रामायणी वाराणसी	३	५	८
१६.	,, डी० जी० पोपट मोम्बासा	—	५	५
१७.	,, बालमुकुन्द जी भट्ट बीजाखेड़ा	—	२	२
१८.	,, बालजी प्रेमी जौनपुर	—	२	२
१९.	,, कृष्णशरणसिंह जी पटवारी बीरमपुर	—	२	२
२०.	,, कुलदीप सहाय जी मुख्तार बिहारशरीफ	—	३	३
२१.	,, ईश्वरीप्रसाद जी धुरंधर भाटापारा	—	८	८
२२.	,, तिवारी जी रीवा	—	४	४
२३.	,, माताप्रसाद जी चिल्ली	—	२	२
२४.	,, हरप्रसाद जी दुबे मोछ	—	२	२

नोट:—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे उनकी नामावली अगले मास दी जायेगी। इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ८७ है।

मानसमणी के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर उसे स्वावलम्बी बनाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं०—पन १०१

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरितमानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ॥) है। जहाँ भी सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के २६,५०० सदस्य हैं और २००० शाखायें हैं।

२—रामचरितमानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस - मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से [illegible] चुके हैं।

४—मानस [illegible] - पत्र - व्यवहार विद्यालय द्वारा [illegible] घर बैठे श्रीरामचरित[illegible] की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य [illegible] तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क १०) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में साधन भजन करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमारुति को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

* इस विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है *

'मानस मणि'

पो० — रामवन (सतना)

मा० नं० — ७

श्री सम्पादक जी 'मानस मणि'
रामवन कांग्रेस कार्यालय - हरिद्वार

पो० - गुरुकुल कांगड़ी
(सहारनपुर)

सम्पादक—पं० नरेन्द्र शेखर तिवारी। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)।
मुद्रक—नीरज जैन, सुषमा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानससमीप

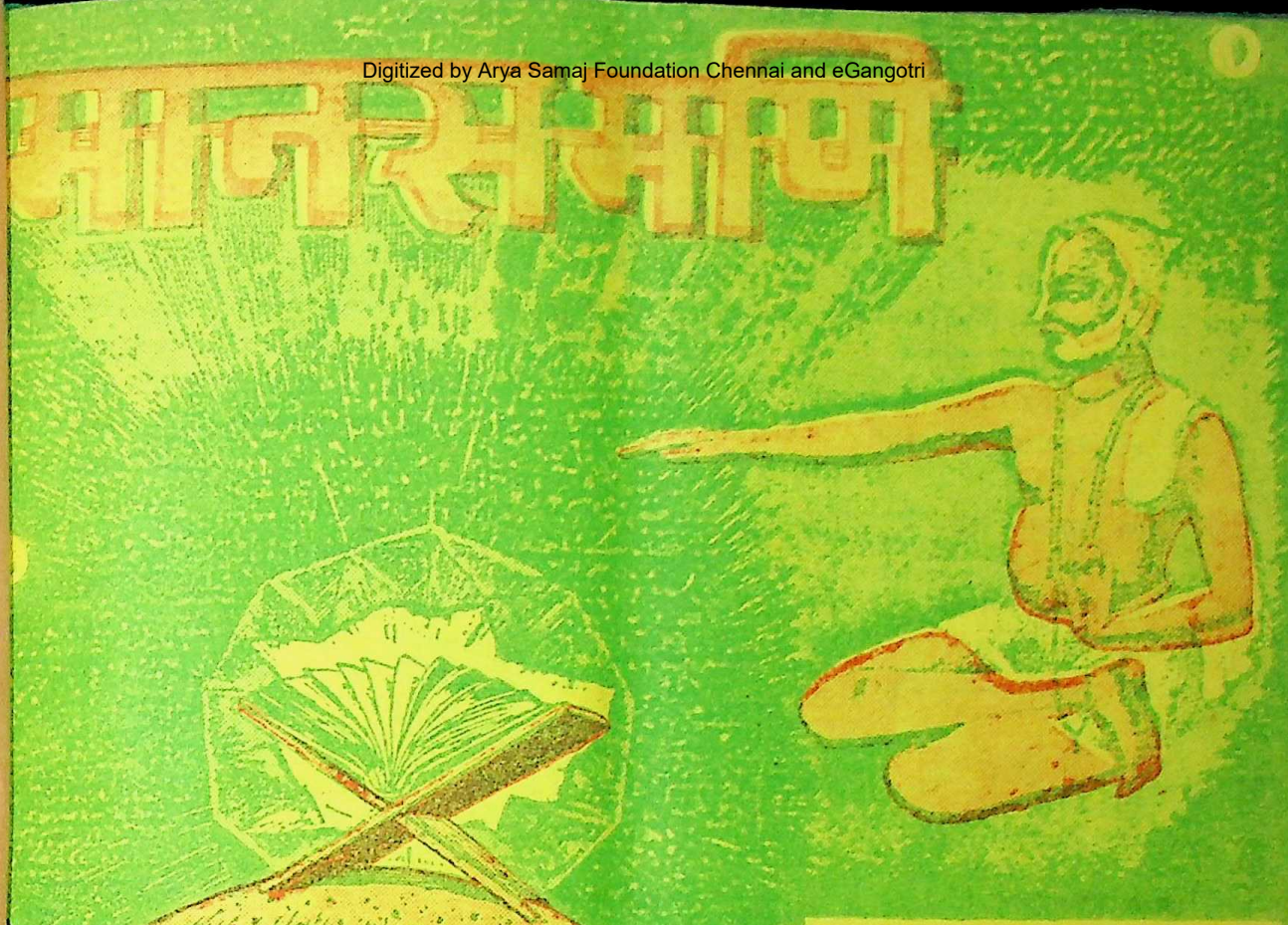

卐

राम निकेत

(१)

जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना,
कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे,
तिन्ह के हिय तुम्ह कहुं गृह रूरे॥

卐

भाद्र १६ आलोक १०
अक्टूबर १९५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

	नाम	लेखक	पृष्ठ
१.	विजया मंगल....	(कवितावली से)	२८१
२.	मानस का सुन्दर सोपान	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	२८२
३.	सार्वभौम गीता	(श्री सुदर्शनसिंह जी)	२८३
४.	रामचरित मानस में नारी का पावन स्वरूप....	(श्री राजेन्द्रप्रसाद अवस्थी)	२८६
५.	रामायण में विज्ञान	(श्री मुरलीधर दीक्षित साहित्यरत्न)	२८८
६.	प्रीति	(श्री हुब्रलाल जी व्यास)	२८९
७.	महात्मा जटायु का निर्वाण	(श्री रघुवीरसहाय माथुर)	२९१
८.	शंका समाधान	(श्री पं० रामकुमारदास जी)	२९७
९.	संघ-समाचार	....	२९९
१०.	विविध-समाचार	....	२९९
११.	रामवन-समाचार	....	३०७

तुलसी संग्रहालय भवन

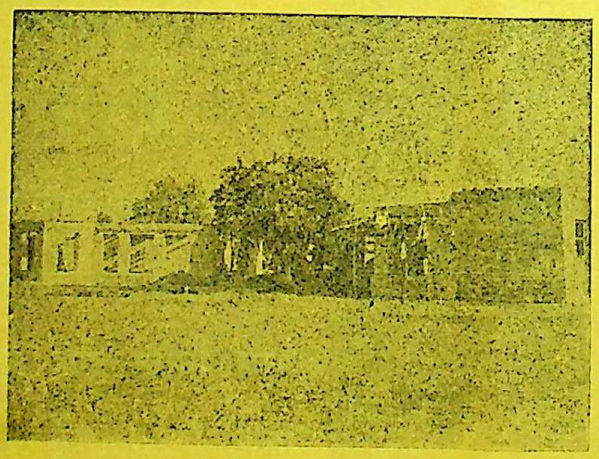

अभी इतना बना है.

यह भवन रामवन का गौरव है। इसे पूर्ण करने में सहायक होने की कृपा कीजिए।

—शारदाप्रसाद

वार्षिक मूल्य तीन रुपया] विदेश में ६ शिलिङ्ग [वी० पी० से तीन रु० ६५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १६	रामवन—आश्विन, मानस सम्वत् ३८४—अक्टूबर १९५७ ई०	आलोक १०

विजया-मंगल

कुंभकरन्न हन्यो रन राम, दल्यो दसकंधर, कंधर तोरे।
पूषन-बंस-विभूषन-पूषन तेज प्रताप गरे अति-ओरे॥
देव निसान बजावत गावत, सावँत गो, मनभावत भो रे!।
नाचत वानर भालु सबै तुलसी कहि 'हारे! हहा भइया हो रे'!॥

—कवितावली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र एम. ए. डी. लिट्]

कहेउ राम बियोग तव सीता।
मो कहुँ सकल भये बिपरीता॥
नव--तरु--किसलय मनहुँ कृसानू।
काल-निसा-सम निसि ससि भानू॥
कुवलय बिपिन कुंत-बन-सरिसा।
बारिद तपत तेल जनु बरिसा॥
जे हित रहे करत तेइ पीरा।
उरग स्वास-सम त्रिबिधि समीरा॥
कहेहू ते कछु दुख घटि होई।
काहि कहउँ यह जान न कोई॥
तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा।
जानत प्रिया एकु मन मोरा॥
सो मनु सदा रहत तोहि पाहीं।
जानु प्रीति रस एतनेहिं माहीं॥
प्रभु सन्देसु सुनत बैदेही।
मगन प्रेम तन-सुधि नहिं तेही॥
कह कपि हृदय धीर धरु माता।
सुमिरु राम सेवक--सुख--दाता॥
उर आनहु रघुपति--प्रभुताई।
सुनि मम बचन तजहु कदराई॥

दोहा—निसिचर-निकर पतंग सम रघुपति-बान कृसानु।
जननी हृदय धीर धरु जरे निसाचर जानु॥१५॥

(मन सुस्थिर कर श्री हनुमान जी बोले कि (भगवान्) राम ने कहा है कि 'हे सीता! तुम्हारे वियोग में तो मुझको (संसार के) सभी पदार्थ विपरीत (गुण धर्म वाले) हो गये हैं। नये तरु पल्लव मानों (दहकते) अंगारे हो गये हैं, रात्रि काल-रात्रि के समान हो गई है और चन्द्रमा सूर्य (की भांति दाहक) बन गया है। कुवलय विपिन अर्थात कमल कुञ्ज भालो के वन की तरह (हृदय-वेधी) हो गया है और जलधर भी मानो तप्त तेल बरसा जाता है। जो हितकारी रहे हैं वे ही अब पीड़ा पहुँचा रहे हैं। शीतल मंद सुगन्ध पवन भी साँप की स्वास के समान (उष्ण तीव्र विषवाही) बन गया है! ❀ कहने से भी दुःख कुछ कम हो जाया करता है परन्तु कहूँ भी तो किससे कहूँ? (किसी अन्य को मेरी भावनाओं की गहराई का ज्ञान कहाँ है?) कोई तो नहीं है जो इसे जानने की क्षमता रखता हो। हे प्रिये! मेरे और तुम्हारे प्रेम का तत्व केवल एक मेरा मन ही जानता था। वह मन तो सदा तुम्हारे पास रह रहा है—तुम्हीं में बस रहा है। इतने ही (शब्दों) में प्रीति रस की बात जान लो।" ‡

प्रभु का संदेश सुनते (सुनते) ही वैदेही जी प्रेम में मग्न हो गईं और उन्हें देह की सुध तक न रही। [वैदेही ही ठहरीं!] † कपि ने कहा "हे

❀ (१) 'विरह का बारहमासा' इन थोड़े से शब्दों में बड़ी सुन्दरता से आ गया है। 'नव तरु किसलय' में बसंत का संकेत है, 'काल-निसा' में ग्रीष्म का संकेत है, 'शशि' की नयनाभिरामता में शरद का संकेत है, कुवलय-बिपिन और त्रिबिधि समीर में शिशिर तथा हेमन्त का संकेत है। 'बारिद' में वर्षा का संकेत तो स्पष्ट ही है।

(२) नव तरु किसलय में रक्तिया के कारण अनल तत्व, निशा और शशि में गगन तत्व, कुवलय-बिपिन में पुष्पता के कारण स्थल तत्व, बारिद में जल तत्व और त्रिबिधि समीर में पवन तत्व की ओर भी संकेत है। विरह में न केवल षड्ऋतुएँ किन्तु पंच तत्व भी विपरीत धर्मी हो गये हैं, यह बताया जा रहा है।

‡ प्रीति-रस का जो परिचय भगवान ने दिया है वह बहुत भावना पूर्ण है।

† यह तो पाठकों ने अनुभव कर लिया होगा कि गोस्वामी जी ने जिन नामों का प्रयोग किया है—प्रभु, रघुवीर, करुणा निधान, बैदेही, बातजात आदि—वे प्रायः सर्वत्र बहुत सार्थक होकर बैठे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वभौम गीता

[श्री सुदर्शनसिंह जी]

[उपसंहार]

सुनत सुधा सम बचन राम के।
गहे सबनि पद कृपा धाम के॥
जननि जनक गुरु बन्धु हमारे।
कृपा निधान प्रान ते प्यारे॥
तनु धन धाम राम हितकारी।
सब बिधि तुम्ह प्रनतारति हारी॥
असि सिख तुम्ह बिनु देइ न कोऊ।
मातु पिता स्वारथ रत ओऊ॥
हेतु रहित जग जुग उपकारी।
तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं।
सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं॥
सबके बचन प्रेम रस साने।
सुनि रघुनाथ हृदयँ हरषाने॥
निज निज गृह गए आयसु पाई।
बरनत प्रभु बतकही सुहाई॥
उमा अवधबासी नर नारि कृतारथ रूप।
ब्रह्म सच्चिदानन्द घन रघुनायक जहँ भूप॥

अर्थ—श्रीराम जी की अमृत के समान वाणी सुनकर सबने उन कृपामय के श्री चरण पकड़ लिये (और बोले) हे कृपा निधान, (आप) हमारे माता-पिता, गुरु, बन्धु तथा प्राणों से भी प्रिय हैं। श्रीराम! आप शरीर, भवन, सम्पत्ति (के समान) हितैषी हैं और सब प्रकार से शरणागत के दुख को दूर करने वाले हैं। तुमको छोड़कर दूसरा कोई ऐसी शिक्षा नहीं दे सकता। माता-पिता भी (अपने) स्वार्थ में लगे रहने वाले होते हैं। हे असुरों के नाशक इस संसार में अकारण उपकार करने वाले दो ही हैं, एक आप और दूसरे आपके सेवक (अन्यथा) संसार में सभी अपने स्वार्थ के मित्र हैं। प्रभो! स्वप्न में भी (कोई) परमार्थ (का विचार) नहीं (करता) है। (इस प्रकार) सबकी प्रेम रस से पूर्ण बातें सुनकर श्री रघुनाथ जी हृदय में प्रसन्न हुये। प्रभु की आज्ञा पाकर उनके सुन्दर उपदेश का (परस्पर) वर्णन करते हुये (सब लोग) अपने अपने घर गये। (शंकर जी कहते हैं) पार्वती! अयोध्या में रहने वाले स्त्री-पुरुष नित्य कृतार्थ हैं, जहाँ सच्चिदानन्द घन (साक्षात्) ब्रह्म श्री रघुनाथ जी नरेश हैं।

अर्थ विस्तार करने की आवश्यकता नहीं है। केवल मुख्य मुख्य शब्दों पर कुछ विचार कर लेना है। श्रीराम की वाणी, उनका उपदेश श्रोताओं को 'सुधासम' प्रतीत हुआ। उसे सुन कर सबने उन कृपाधाम के चरण पकड़ लिये। 'सबनि' कौन? क्योंकि श्री रघुनाथ जी के बुलाने पर 'गुर द्विज पुरवासी सब आए।' थे! इनमें 'गुर द्विज' ने भी चरण पकड़े, ऐसा अर्थ करना अनर्थ कहा जायगा। उपक्रम में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रभु ने गुरु देव तथा ब्राह्मणों को उपदेश का साक्षी रहने के लिये बुलाया है। 'सुनहु सकल पुरजन मम बानी' कहकर उन्होंने केवल पुरवासी प्रजा

माता! हृदय में धीरज धरो और सेवक सुख दाता (भगवान्) राम का स्मरण करो। हृदय में रघुपति प्रभुता की अनुभूति करो और मेरे वचन सुनकर यह कायरता त्याग दो। (निश्चय समझ लो कि) निश्चारी राक्षसों का समूह रात ही में उड़ने वाले पतंग कीड़ों की तरह है (जिनके लिये) रघुपति का बाण एक अलाव की तरह-अग्निपुंज की तरह है। हे जननी! मन में धीरज रखो और यह जान लो कि निशाचर अब जल ही चुके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ही सम्बोधित किया है। अतः 'सबनि गहे पद कृपाधाम के' इसमें 'सबनि' का अर्थ सब पुरवासी जन ही हैं।

"त्वमेवमाता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥"

यह प्रार्थना प्रायः की जाती है। अयोध्या के पुरजन भी यही कह रहे हैं—'जननि जनक गुर बन्धु हमारे।' तथा 'तनु धन धाम राम हितकारी।' जिसकी कृपा से शरीर, सम्पत्ति और निवास मिला' वही तो-इन रूपों में भी है। फिर शरीर, सम्पत्ति और भवन जो सुविधा, जो सुख देते हैं, वैसा ही नहीं-उससे भी अधिक हित श्रीराम करते हैं। अतः 'तनु धन धाम' से भी अधिक 'राम हित कारी' हैं। वे 'सब विधि प्रनतारति हारी' तो प्रसिद्ध ही हैं। प्रणत क्लेश नाशन तो उनका नाम ही ठहरा।

'अस सिख तुम, बिन देइ न कोऊ।' ऐसी शिक्षा भगवान्, भगवान् के भक्त तथा गुरु ही दे सकते हैं और वे एक स्वरूप हैं। अन्यथा 'त्रिकाण्ड विषयाः वेदाः।' 'परोक्ष वादो वेदोऽयं' 'परोक्ष प्रिया हि देवाः' 'परोक्ष वादिनः ऋषयः' आदि वाक्य बतलाते हैं कि वेद, देवता तथा ऋषि-मुनि पारमार्थिक शिक्षा देते भी हैं तो परोक्ष रूप से—उस शिक्षा को गुप्त रख कर बोलते हैं। इस प्रकार सरल, स्पष्ट शिक्षा तो परम करुणामय भक्त वत्सल प्रभू ही देते हैं।

'मातु पिता स्वारथ रत ओऊ।' मात-पिता बालक के हितैषी हैं; किन्तु उनमें भी स्वार्थ रहता है। वे भी चाहते हैं कि बालक बड़ा होकर उनकी सेवा करे। उनको सुख पहुँचावे। इसलिये स्वार्थ रहित शिक्षा वे भी नहीं दे पाते।

'हेतु रहित जग जुग उपकारी।' 'संसार में बिना कारण' बिना किसी स्वार्थ के दूसरे का भला करने वाले केवल दो हैं, भगवान् तथा भगवान् के भक्त। ये आत्माराम, पूर्ण काम, नित्य तृप्त, सर्वत्र से निरपेक्ष हैं। लेकिन इनका स्वभाव है दूसरे का मंगल करना। जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता देना है, वैसे ही इनका स्वभाव सदा दूसरे का हित करना है।

'स्वारथ मीत सकल जग माहीं।' भगवान् तथा उनके भक्तों को छोड़कर संसार में सभी स्वार्थ के मित्र हैं। जब तक जिसका जिससे स्वार्थ है, तब तक वह उसका मित्र है, स्वजन है, हितैषी है। स्वार्थ सिद्ध होने की आशा न होने पर स्वजन भी उपेक्षा कर देते हैं। श्रुति कहती है— 'न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति। आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति।' अरे सब के लिये सब (स्त्री-पुत्र, परिवारादि) प्रिय नहीं होते। अपने स्वार्थ के लिये सब प्रिय होते हैं। जगत में तो स्वार्थ का ही व्यवहार तथा सम्बन्ध है। यह परमार्थ स्वप्न में भी नहीं है। माया के क्षेत्र में परमार्थ कैसा।

इस प्रकार सभी पुरजन प्रेम पूर्ण बातें कह रहे थे। श्री राघवेन्द्र में उनका सच्चा प्रेम था। उनकी बातें सुनकर श्री रघुनाथ जी हृदय से प्रसन्न हुये। आज कल प्रसन्नता प्रगट करना, किसी से मिलने पर हँस कर मिलना शिष्टता मानी जाती है। मन में उससे मिलकर क्षोभ है, यह भाव भी है कि यह कब हटे; किन्तु ऊपर से हँसते हैं, व्यक्त करते हैं कि 'आपसे मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई।' यह कपट प्रदर्शन वहां नहीं था। श्रीरघुनाथ 'हृदय हरषाने' हृदय से प्रसन्नता हुई।

क्योंकि सब लोग 'रघुनाथ बोलाए' एकत्र हुये थे, अतः 'आयसु पाई' आज्ञा पाकर 'निज निज गृह गवने' लेकिन चुप चाप नहीं चले गये। गये वे 'बरनत प्रभु बतकही' प्रभु ने जो कुछ उन्हें सुनाया था, उसका परस्पर वर्णन करते हुये गये। जो कुछ उन्होंने सुना था, उसका परस्पर कथन करते हुये मनन करते वे जा रहे थे।

यह तो प्रायः होता है कि लोग जब किसी प्रवचन, नाटक, कथा आदि से घरों को लौटते हैं तो मार्ग में परस्पर वक्ता के प्रवचन, नाटक के दृश्य, कथा वाचक की शैली की चर्चा करते हैं। उसकी प्रशंसा या निन्दा करते हैं। यहाँ 'प्रभु बत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कही' के साथ एक विशेषण है 'सुहाई' इस स्थान पर 'सुहाई' का ठीक अर्थ है 'प्रिय लगी।' प्रभु की बातें उन्हें सुहाई थीं—प्रिय लगी थीं। उन प्रिय लगी बातों का वे परस्पर वर्णन करते हुये घर गये।

उपक्रम में कह आये हैं कि यह उपदेश मर्यादा पुरुषोत्तम ने अयोध्या के पुरजनों को निमित्त बनाकर विश्व के समस्त मानव को दिया है। सदा के लिये उन नित्य शासक का यह अनुशासन है। नहीं तो अयोध्या के लोगों को उपदेश देने की आवश्यकता ही नहीं थी। वे तो पहिले से परम भक्त थे। यही बात भगवान् शंकर ने उपदेश के अन्त में भगवती उमा से कही है।

भगवान् शंकर ने भगवती पारवती को सम्बोधित करके कहा है कि ये अयोध्या वासी नर-नारि तो कृतार्थ रूप हैं। ये स्वयं कृतार्थ हों, इतनी ही बात नहीं है। कृतार्थता स्वयं इनके रूप में मूर्तिमान है। इनका दर्शन, स्मरण, चिन्तन करके दूसरे प्राणी कृतार्थ हो जाते हैं।

इनके मध्य में ब्रह्म—नित्य निर्गुण, निराकार, अवांङ्मनस गोचर श्रुति प्रतिपाद्य परम तत्त्व जो सच्चिदानन्द स्वरूप है, इनके प्रेम के कारण वह घनी भूत होकर मूर्तिमान है। वही इनका भूप है। उसी के द्वारा ये शासित-संचालित हैं। इन्हें भला उपदेश की क्या आवश्यकता है।

लेकिन इनसे अधिक उत्तम अधिकारी भी मिल नहीं सकते। नियम यह है कि जब बहुत अधिक लोगों को उपदेश करना होता है तो उनमें जो प्रमुख होता है, विद्या, विनय, श्रद्धादि में सर्व श्रेष्ठ होता है, उसी को आगे करके, उसी को निमित्त बनाकर सबको उपदेश किया जाता है। यहाँ श्री रघुनाथजी ने भी अपनी अयोध्या की 'कृतारथ रूप' प्रजा को निमित्त बनाकर विश्व के समस्त मानवों के लिये उपदेश किया है।

श्री रामचरित मानस पत्र व्यवहार विद्यालय, रामवन

नीचे लिखे महानुभावों ने श्री रामचरित मानस पत्र व्यवहार विद्यालय के प्रथम वर्ष की पढ़ाई पूरी कर ली है। इन्हें "मानस रसिक" की उपाधि से विभूषित किया गया है। विगत तुलसी जयन्ती के उत्सव पर उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। सबको बधाई है।

१—श्री वाणीभूषण पं० गोवर्धन भट्ट शास्त्री, सिवनी-मालवा, [होशंगाबाद]
२—,, शंकरदयाल जी दुबे, सब-इंस्पेक्टर पुलिस मु० पो० ठीकरी
३—श्री फकीरराम जी देवांगन, मु० पो० पाण्डुका [रायपुर]
४—,, भिखारीदास जी वर्मा आयुर्वेद शास्त्री कमालगंज [फर्रुखाबाद] उ० प्र०
५—श्री पं० रमाकान्त मिश्रा द्वारा श्री सेठ चाँदमल राठी, पेण्ड्रा [बिलासपुर]
६—,, शिवनाथ मिश्र, मु० करमवा, पो० रघुनाथपुर बाजार
७—श्री गेंदनलाल जी दुबे "सुमन", मु० परसपुर पो० जसपुरापुर [फर्रुखाबाद]

आशा है अन्य प्रेमी भी आगामी तुलसी जयन्ती के पूर्व अपनी पढ़ाई पूरी कर लेंगे।

भगवानदास सफड़िया, संचालक.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरित मानस में नारी का पावन स्वरूप

[श्री राजेन्द्रप्रसाद जी अवस्थी]

महान युगस्रष्टा और क्रान्तिकारी महाकवि गोस्वामी तुलसीदास पर कुछ समाज सुधारकों ने यह लांछन लगाया है कि उनकी मनोदृष्टि नारी-समाज के प्रति अत्यन्त संकुचित थी। उनका कहना है कि इसका स्पष्ट प्रमाण 'जिमि स्वतंत्र भए बिगरहिं नारी' —वाली चौपाई है। यदि तुलसी नारी को बन्दिनी और पुरुषों से नीचा न दिखलाना चाहते तो कदाचितू ऐसे शब्दों का प्रयोग भी न करते। वे तो नारी की स्वतंत्र सत्ता के समर्थक ही नहीं थे। इतना ही नहीं आज की गतिशील महिलाएं जब पढ़ती हैं–ढोल, गँवार, शूद्र, पशु, नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी। तब तो उन्हें इस कवि से नफरत ही होने लगती है। परन्तु देखना यह है कि क्या सचमुच महाकवि कहलाये जाने वाला व्यक्ति इतनी संकुचित मनोदृष्टि रखने वाला था!

सच्चा महाकवि देशकाल की सीमा से बद्ध नहीं हो सकता, उसकी अनुभूतियाँ तो शाश्वत जीवन की गहराई में उतर कर उनका विश्लेषण करती हैं,

एक प्रसिद्ध रूसी लेखिका कुमारी लियान्कीस्को ने लिखा है—

"नारी जीवन की गहराइयों में जितना यह महान कवि प्रवेश करपाया है, उतना आज तक शायद ही किसी कवि ने किया हो।.....तुलसी की नारी रुढ़िवादी नारी नहीं। वह नारीत्व की मर्यादा में अवश्य बद्ध है, किन्तु जीवन के विकास-क्षेत्रों में वह सबसे आगे है। अगर विश्व की नारियों का रूप तुलसीदास जी की नारियों के समान हो जाये तो विश्व की महिलाओं की कायापलट हो जाये और फिर हमें जीवन में सत्यं, शिवं, सुन्दरम्, के दर्शन होने लगें।"

रूसी विद्वानों के सिवाय अमेरिकी प्रसिद्ध विद्वान श्री फिल्सोडीन ने भी तुलसी के सम्बन्ध में लिखा है—

"भारतीय नारी का जितना पवित्र उत्कृष्ट एवं प्रगतिशील रूप हमें इस महान कवि की स्वर्णिम कृतियों में मिलता है। उतना विश्व की अन्य कृतियों में कहीं नहीं मिला।" एक जर्मन कवि ने तो तुलसी की नारी को आदर्श नारी संबोधित कर लिखा है—ऐसे देश की नारी साधारण नारी नहीं हो सकती, उसे अवश्य ही किसी देवी का अवतार समझा जाना चाहिये। यदि विश्व में सर्वत्र ऐसी देवियां हो जायें तो यह सारा संसार स्वर्ग बन जाये।"

अब विचार यह करना है कि क्या तुलसी की नारी वास्तव में प्रगति–ताड़न की अधिकारी और पैर की जूती है? वस्तुतः सत्य तो यह है कि तुलसी की रचनाओं का मर्म बिना गहरे अध्ययन के भली भांति जाना ही नहीं जा सकता, इसमें छिपे वास्तविक सौन्दर्य को नहीं पहचाना जा सकता। युग का प्रतिनिधित्व करने वाले हर युगान्तरकारी कवि की साहित्य-धारा उस पुण्य सलिला भागीरथी की धारा की तरह होती है जिसे कभी वक्र रेखा की तरह धनुषाकार, कभी सकरे और तंग रास्ते से, कभी अबाध गहराई और गम्भीरता से तो कभी घनघोर स्वर से गर्जन कर आगे बढ़ना पड़ता है। गोस्वामी तुलसीदास को भी युगान्तरकारी कवि बनने के लिये बहुरुपिया वेष रखना पड़ा है।

तुलसी का आविर्भाव एक ऐसे संकीर्ण युग में हुआ था जब हिन्दू संस्कृति और हिन्दू सभ्यता अपने निम्नतम पतन पर पहुँच गई थी। सहस्रों वर्षों की पुरातन, सम्मान्य, और स्वर्ग की ऊँचाई पर आसीन देवोपम संस्कृति पर इस्लाम का बर्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहार हो रहा था। इससे समाज में पर्दा--प्रथा, छुआछूत के गरल की सृष्टि हुई। हिन्दू नारियों की इज्जत सरे बाजार लूटी जाने लगी। जब तुलसी की आंखों ने नारियों की यह दशा देखी तो उनका हृदय तड़पने लगा और इसी तड़पन के बीच गंगा-तट की कुटिया में इस जटाजूट धारी संसार-त्यागी महात्मा ने लिखा—महावृष्टि चलि फूट कियारी, जिमि स्वतन्त्र भये बिगरहिं नारी।

यदि तुलसी यह कह कर उस समय की नारियों को सजग न करते तो क्या जानें और भी बहुत सी नारियां इस्लाम धर्मावलम्बी बन जातीं। अतः आज की प्रगतिशील नारियों को तुलसी का आभारी होना चाहिये। यदि वे नारी का वास्तविक स्वरूप देखना चाहती हैं तो कौशल्या और सुमित्रा में देखें, सीता का शील और स्नेह भरा वह विशाल हृदय टटोलें, जो अपने पति के कंधे से कंधा भिड़ा, वन की ऊबड़--खाबड़ वीथियों से हँसता हुआ जा रहा है, जो पति के सुख-दुख में अपने को खो कर कह उठता है

मैं सुकुमारि नाथ बन जोगू।
तुमहिं उचित तप मो कहं भोगू॥

इस छोटे से सीधे और सरल वाक्य में तुलसी ने कितना शिल्प-सौन्दर्य भर दिया है। इसी तरह लक्ष्मण की माता सुमित्रा का त्याग तथा आदर्श भरा वह हृदय देखिये जो अपने वात्सल्य को पत्थर के शब्दों की तह में छुपाकर कर्तव्य के आगे कह उठता है—

तात तुम्हारि मातु बैदेही,
पिता राम सब भांति सनेही।
अवध तहाँ जहँ राम निवासू,
तहँइ दिवस जहँ भानु-प्रकासू।

अब ढोल, गँवार शूद्र पशु नारी, वाले प्रसंग पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार करिए। रामायण एक प्रबन्ध काव्य है। प्रबन्ध काव्य में—मानव-जीवन के उतार-चढ़ाव, सुख-दुख और अच्छाई-बुराई सभी का समावेश होता है, वह तो वास्तव में समाज का एक दर्पण है, जिसमें उसके गुण, दुर्गुण सभी कुछ प्रतिबिम्बित होते हैं। इसके पात्र-समाज के नाना प्रकार के व्यक्तियों की तरह ही कई प्रकार के होते हैं। रामायण में जहाँ राम हैं, वहीं रावण है, जहाँ मन्थरा और कैकेयी हैं, वहीं सुमित्रा और सीता हैं। इस तरह हनुमान अंगद तथा सुग्रीव के साथ ताड़का, शूर्पणखा, कुम्भकरण का भी उल्लेख मिलेगा। पर ऐसे महाकाव्य में उपदेशात्मक और लोकोपयोगी सारी बातें आदर्श चरित्र पात्र के मुँह से ही कहलाई जायेंगी। हाँ उनका प्रतिकार खलनायक को करना ही पड़ेगा, तभी तो प्रबन्ध काव्य में समाज की सत्यता का अंकन हो सकेगा।

उक्त पंक्ति समुद्र की तुच्छता की प्रतीक है, वह रामायण का खल-पात्र है। ऐसा दुष्ट और नीच व्यक्ति नीच विचार ही रख सकता है। यदि उसके मुख से ऊँचे-ऊँचे विचारों को कहलाया जाये तो वह कवि के लिये उपहास की ही वस्तु बनेगी। इसका सम्यक् अर्थ है कि लातों के भूत बातों से नहीं मानते। पशुता में देवत्व का प्रवेश उसी समय हो सकता है जब उसे प्रताड़ित किया जाये, उस पर नियंत्रण रख उसे साम-दाम-दण्ड भेद से राह पर लाया जाये। यदि यही बात तुलसी ने किसी श्रेष्ठ पुरुष के मुख से कहलाई होती, तो वह अवश्य ही निन्दनीय होती।

तुलसीदास ने स्त्री-पुरुष को समान आसन पर बैठाया है। उनकी सदा यही आकांक्षा रही है कि वह पुरुष का बराबर साथ दे और आगे आये। दानवत्व की भावनाओं से प्रेरित रावण की पत्नी मन्दोदरी में भी देवत्व के भाव प्रेरित कर कवि ने नारी के आसन को पुरुष से भी ऊँचा उठाया है। इसी तरह उन्होंने पति-पत्नी के बीच बराबरी और एकात्मा के भाव दर्शाये हैं। यदि एक ओर तुलसी ने पत्नी पर यह बन्धन लगाया है कि—

उत्तम के अस बस मन माहीं।
सपनेहुँ आन पुरुष जग नाहीं॥

तो वहीं पुरुष पर भी वही बन्धन लागू होता है। वह सूर का, 'अलि तुम मधु के चाखनहार'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण में विज्ञान

[श्री मुरलीधर दीक्षित 'साहित्य-रत्न']

रामायण आर्य सभ्यता और संस्कृति का अमर इतिहास है। इसमें राजनैतिक, सामाजिक आध्यात्मिकता का वह संकलन है जो संसार के इतिहास में बेजोड़ है। यह वह अमूल्य और अप्रतिम निधि है जिसे अद्वितीय रत्नों का अक्षय भंडार कहा जा सकता है। इसमें ज्ञान तथा विज्ञान के साथ-साथ सर्वत्र भक्ति की भव्य भागीरथी प्रवाहित हो रही है जिसने दीन-हीन की कुटिया से लगाकर राजप्रसाद पर्यंत पहुँच, कलियुगी उत्तप्त हृदयों को शीतलता प्रदान की है, सम्प्रति कर रही है तथा भविष्य में करती रहेगी।

आज का संसार रामायण को ही आधार मानकर अथाह भवसागर से सरलता पूर्वक पार होने में, नितान्त निर्भीक हो चुका है अन्यथा इस अगाध संसार पयोधि को पार कर जाना, असंभव ही था। किसी कवि ने कहा भी है—

"यह संसार पयोधि को, उलँघि पार को जाय,

क्योंकि—

"तिय-छबि छाया ग्राहिनी, गहे बीच ही आय"

इस "तिय छबि छाया ग्राहिणी" से तो पवन पुत्र श्री हनुमान जैसे अखण्ड ब्रह्मचारी ही विजय पा सकते हैं। यह सभी की सामर्थ्य के बाहर की बात है। सभी का ऐसे बन जाना कष्ट साध्य ही नहीं; प्रत्युत् असम्भव है।

सभी प्रकार के लौकिक एवं पारलौकिक सुख-साधनों का जो सजीव-चित्राङ्कन "श्रीराम चरित मानस" में उपलब्ध होता है, वह अन्यत्र कहाँ? किसे इस प्रकार की सौभाग्योपलब्धि प्राप्त हुई है?

वर्णन में कोई ऐसा विषय ही नहीं बचा, जिसका स्पर्श श्री गोस्वामी जी की सजीव लेखनी से नहीं हुआ हो।

कुछ हिन्दी साहित्य से अनभिज्ञ व्यक्तियों का कथन है कि रामायण में विज्ञान का सर्वथा अभाव है। यदि उन्होंने रामायण का गहराई से अध्ययन किया होता तो इस प्रकार की निर्मूल शंका के लिये स्थान ही नहीं मिलता। उनके लिए कुछ वैज्ञानिक प्रमाण उपस्थित किये हैं।

श्रीराम और रावण का युद्ध सम्पूर्णतः वैज्ञानिक युद्ध था। विज्ञान के उत्कर्ष का युद्ध था।

"नभतें वर्षहिं बिपुल अंगारा;
महिते प्रकट होहिं जल धारा"
"भयउ निमिष महँ अति अँधियारा,
वृष्टि होइ रुधिरोपल छारा।"

क्या ये सब विज्ञान के चमत्कार नहीं हैं? और भी—

"बरसि धूर कीन्हेसि अँधियारा;
सूझ न आपन हाथ पसारा।" तथा—
कारनतें कारज कठिन, होइ दोसु नहिं मोर।
कुलिस अस्थितें उपलतें लोह कराल कठोर॥

अस्थि से बज्र बनना तथा पत्थर से लोहे का उत्पन्न होना वास्तविक विज्ञान है। इसी प्रकार—

"पाट कीटते होइ, तेहिंते पाटम्बर रुचिर"

यह भी तो विज्ञान के ही अन्तर्गत है।

रामायण में भूगोल, खगोल आदि सभी बातें संक्षिप्त तथा कोई विस्तृत विवेचन के रूप में रखी गई हैं। थोड़े में भी बहुत कुछ जाना जा सकता है। चित्रकार तथा कवि की चतुराई बारीकी में ही निहित रहती है।

हरिः ओम् तत्सत्।

बनकर नहीं रह सकता। उसे भी एक निष्ठा से एक पत्नी व्रतधारी रहना होगा।

मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी।
जेहि सपनेहुँ पर नारि न हेरी॥

अतः तुलसी का मानस अगाध समुद्र की नाईं है। उसकी गहराई तट पर बैठे ही नहीं नापी जा सकती, उसके लिये एक तैराक की तरह गहराई में गोता लगाना होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीति

[श्री हुबलाल जी व्यास]

चौपाई— *लोकहु वेद सुसाहिब रीती ।*
विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥

मर्यादा पुरुषोत्तम ब्रह्म श्रीराम अपने भक्तों से कितनी प्रीति करते हैं तथा उनके भक्त अपने प्रभु के प्रति कैसी व कितने प्रकार की प्रीति करते हैं? वैसे तो उपासना बद्ध भक्त-भगवान अनेक हैं पर वस्तुतः दोनों अनेक तथा एक हैं। परन्तु जिसके लिये (एक ब्रह्म तथा अखंड-अनन्त) कहा गया है, उनका विशेषण उल्लेख गहन है (मतिर्वाह्य है) जैसे—राम स्वरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धि पर, ऐसा कहा गया है। अतः ज्ञानी भक्तों के लिये क्लिष्ट मार्ग है। परन्तु प्रभु श्रीराम जी अपनी इच्छा से तथा भक्तों की प्रीति भावना से सरल तथा सुलभ हैं।

जैसे— चौ०-*जाके हृदय भगति जस प्रीती ।*
प्रभु तहँ प्रगट सदा यह रीती ॥

अब यहाँ पर जस प्रीती कहकर प्रीति के कई स्वरूप बताये।

जैसे—१. सामान्य—(सहज)
२. पावन—(पवित्र)
३. देखकर—(परीक्षा द्वारा)
४. श्रवण द्वारा (विश्वास श्रद्धा युत)
५. भय द्वारा—
६. जानकर—(ज्ञान भक्ति द्वारा)

१. सहज—(स्वाभाविक) श्रीराम अखिल ब्रह्मांड के विश्राम स्थान है, कृपालु हैं और उन्होंने "सब मम उपजाये" भी कहा है अतः सामान्य प्रीति।

२. पावन—(पवित्र प्रीति) तो केवल अपने अपने परिवार में ही पाई जाती है जैसे कोई दूसरों के बच्चों को गोदी में लेकर उतने प्रेम से नहीं प्यार करता जितने कि अपने तथा अपने परिवार के साथ करता है।

जैसे—(श्रीराम श्री लक्ष्मण में)
चौपाई—*इनकै प्रीति परस्पर पावनि,*
कहि न जाय मन भाव०।

(चारों भाई में)
दोहा—*अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परस्पर हास०*

(श्रीराम सीता में)
चौपाई—*चली अग्र करि'' 'प्रीति पुरातन लखै न कोई।*
दोहा—*सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत।*
निरखि २ रघुवीर'' 'बाढ़इ प्रीति न थोरि ॥

३. देखकर—जैसे—सुग्रीव जी ने श्री हनुमान द्वारा दृढ़ प्रीति की परन्तु अविश्वास के कारण वह प्रीति स्थिर न रह सकी फिर दुंदुभि ताल द्वारा परीक्षा करके "प्रीति" बढ़ाया।

जैसे—*देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती,*
बालि बधब इन्ह भइ परितीती।

कैकेयी ने भी कहा है कि—
चौपाई—*मोपर करहि सनेह बिसेखी,*
मैं करि प्रीति परीच्छा देखी ॥

४. श्रवण द्वारा—(सुनकर) जैसे—विभीषन जी से और प्रभु श्रीराम जी से मानस में मिलन नहीं हुआ पर विभीषन जी ने अपने घर पर रहकर प्रीति की जैसे—(रावण ने कहा)
चौपाई—*मम पुर बसि तपसिन पर प्रीती।*
सठ मिलु जाइ तिन्हहि कहु नीती ॥

श्री हनुमान द्वारा सुनकर प्रीति विशेष बढ़ी—
तब हनुमंत कही सब राम कथा,
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई—सुनहु बिभीषन प्रभु कै रीती,
करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥

इसी कारण विभीषण जी ने कहा है कि—

दोहा—श्रवण सुजस सुनि आयऊँ भय भंजन भवभीर।
त्राहि २ आरत हरन सरन सुखद रघुवीर ॥

५. भय से—जैसे—स्वयं प्रभु ने कहा कि—

दोहा—बिनय न मानत जलधि बड़ गये तीन दिन बीती,
लछिमन बान सराहन आनू भय बिन होइ न प्रीति।

और बालि बन्दर भी अभिमान के कारण तारा के समझाने पर नहीं माना अन्त में बाण लग जाने पर उसे भय हुआ।

चौपाई—पुनि उठि बैठ देख प्रभु।

तथा—

अरुण नयन सर चाँप चढ़ाये।

अतः भय मानकर—हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा।

दोहा—राम चरन दृढ़ प्रीति करि बालि कीन्ह तनु त्याग।

श्री परशुराम जी ने श्रीराम जी के विनीत बचन से अपना क्रोध नहीं त्यागा।

जैसे— चौपाई—अति बिनीत मृदु सीतल बानी,
बोले राम जोरि जुग पानी।
कहिय बेगि जेहि बिधि रिस जाई,
मुनि नायक सोइ करौं उपाई ॥

परन्तु जब भय दिखाया गया।

जैसे—जौर न हमहि पचारे कोऊ,
लरहिं सुखेन काल किन होऊ।
कहौं सुभाव न कुलहिं प्रसंसी,
कालहु डरहि न रन रघुबंसी ॥

तो सुनकर—

दोहा—जाना राम प्रभाउ तब पुलकि प्रफुल्लित गात।
जोरि पानि बोले बचन हृदय न प्रेम अमात ॥

अतः प्रभु के साथ भक्त जिस भावना की प्रीति रखते हैं प्रभु ठीक उसी भावना में उसे मिलकर सन्तोष करते हैं।

दोहा—राम न राखहिं कबहुँ रिन यही सदा की रीति।
भक्त भाव पूरन करत जाके हिय जस प्रीति ॥

शुभमस्तु।

भाटापारा केन्द्र

नये नियम के अनुसार प्रथम श्री रामनाम लड्डू केन्द्र भाटापारा में स्थापित हुआ है। इसमें प्रगति भी अच्छी हो रही है। समाचार मिला है कि लगभग ३०० लड्डू तैयार हो गये हैं। इनके प्राप्त होते ही यह केन्द्रों में सर्व प्रथम स्थान भी ग्रहण कर लेगा।

भाटापारा के बहुसंख्यक प्रेमी श्री रामनाम लिख रहे हैं। इनमें विशेष उल्लेखनीय हैं श्री रणछोड़दास पुंगलिया। आठ मास में उन्होंने १३६ श्री रामनाम लड्डू तैयार किये हैं। आशा है आप और भी प्रगति करेंगे। नित्य एक लड्डू का क्रम जमा लेना अच्छा होगा। ऐसा करने वालों का अनुभव है कि कुछ दिनों में निरन्तर चौबीसों घन्टे जप चलने लगता है।

अन्य प्रेमियों को भी श्री पुंगलिया जी के सदृश अभ्यास बढ़ाना चाहिये। अन्य स्थानों को नये नियमों से लाभ उठाकर केन्द्र स्थापित करना चाहिये।

—शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महात्मा जटायु का निर्वाण

[श्री रघुवीर सहाय जी माथुर]

महात्मा जटायु को राम चरित मानस में भक्तों की श्रेणी में एक बहुत ही उच्च स्थान प्राप्त है। उनका चरित भगवत प्रेम तथा परोपकार की भावना से ओत प्रोत है। भक्तवर तुलसीदास ने उनके चरित्र में परोपकार की महत्ता को सर्व श्रेष्ट प्रतिपादित किया है। परोपकारी जीव के लिये संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। उसके लिये परोपकार ही भगवत शरण में जाने तथा मोक्ष पाने का सर्वोत्तम मार्ग है। यह शिक्षा जटायु के प्रसंग से मानव समाज को श्री राम चरित मानस देता है। परोपकार को राम चरित मानस में अन्य स्थलों पर भी सर्वोत्तम स्थान प्रदान किया गया है। श्री बाल्मीकि जी के १४ स्थानों में भी परोपकारी के हृदय को प्रभु का स्थान बताया गया है। १४ स्थानों में से १२ स्थानों में महर्षि बाल्मीकि ने उन जीवों का हृदय प्रभु का स्थान बताया है कि जो प्रभु का गुनगान करते हैं, सुनते हैं, प्रभु की शरण जाते हैं प्रभु का ध्यान करते हैं इत्यादि परन्तु दो स्थानों में केवल आचरण मात्र से ही जीव का हृदय प्रभु का स्थान बन जाता है और प्रभु को स्वयं वहां जाकर रहना पड़ता है।

काम कोह मद मान न मोहा।
लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
जिनके कपट दंभ नहि माया।
तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया॥
अवगुन तजि सबके गुन गहहीं।
विप्र धेनु हित संकट सहहीं॥
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका।
घर तुम्हार तिन्हकर मनु नीका॥

जटायु से भी प्रभु कहते हैं—

पर हित बस जिन्हके मन माहीं।
तिन्ह कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

जब प्रभु दंडकारण्य बन में आये थे तभी उनकी श्री जटायु जी से भेंट हुई थी और तब ही से जटायु से दृढ़ मित्रता का नाता हो गया था—

गीधराज से भेंट भइ बहु बिधि प्रीति बढ़ाइ।
गोदावरी निकट प्रभु रहे परन गृह छाइ॥

श्री जटायु जी ने उसी समय से प्रभु व महारानी जी का ध्यान रखना आरम्भ कर दिया था। भगवान् की लीला से वे सीता-हरण के समय आकाश में उड़ नहीं रहे थे। अगर वह उड़ रहे होते तो वह अपनी अपार दृष्टि से सीता-हरण स्वयं देख पाते और रावण-जटायु-युद्ध उसी समय पर्णकुटी पर ही हो जाता। कविवर भक्त चूड़ामणि महात्मा तुलसीदास ने यह भाव दिखाने के लिये ही लिखा है—

"गीधराज सुनि आरत बानी।
रघुकुल तिलक नारि पहिचानी॥"

गीध की देखने की शक्ति अपार होती है, सुनने की नहीं। इस कारण से उनको महारानी जी के हरण का ज्ञान उस समय ही हुआ जब रावण निकट आ गया। उस समय महात्मा जटायु किसी स्थल पर बैठे हुये थे।

इस प्रसंग में जटायु के सम्बन्ध में कवि ने तीन बार 'धावा' शब्द का प्रयोग किया है—

धावा क्रोध वन्त खग कैसे।
छूटै पवि पर्वत कँह जैसे॥
सुनत गीध क्रोधातुर धावा।
कह सुनु रावन मोर सिखावा॥
उतरु न देत दसानन जोधा।
तबहिं गीध धावा करि क्रोधा॥

पहिली चौपाई में आरम्भ में, दूसरी में मध्य में, तीसरी में अन्त में धावा का प्रयोग किया गया है। इससे कविवर ने यह दर्शाया है कि पहिले में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीध की चाल आरम्भ में तेज थी। दूसरे में बीच में तथा तीसरे में अन्त में तेज थी। यह तीन समय गीध के तीन चक्कर दिखाते हैं। पहिले चक्कर में रावण गीध से ऊंचे स्थल पर है और गीध राज ऊपर की ओर दौड़ते हैं। इसी प्रकार क्रोधवन्त, क्रोधातुर तथा करि क्रोधा शब्दों का प्रयोग किया गया है। पहिले में आरम्भ में क्रोधवन्त हो गया। महारानी जी का आर्तनाद सुन कर क्रोध से भर गया। दूसरे में महारानी जी के पास पहुँचने की शीघ्रता है-क्रोधातुर है। तीसरे में रावण के ऊपर क्रोधित होकर चौपाई के अन्त में दौड़ा है। यह है कवि का काव्य कौशल—

अन्त में रावण ने गीधराज के पंख काट डाले और गीधराज पराजित हुये। इसका भी एक विशेष कारण है। गीधराज ने रावण को हराने का अपने बल के भरोसे पर प्रयत्न किया था। 'करिहौं जातुधान करि नासा' उन्होंने प्रभु का आश्रय ग्रहण नहीं किया। भक्त को सब कार्य प्रभु के बल भरोसे ही करना है। जहाँ अपने बल, शक्ति का अभिमान हुआ, चाहे परोपकार का कार्य क्यों न हो, उसमें सफलता मिलना असंभव है। यह त्रुटि गीधराज से इस समय क्रोध के वशीभूत होकर बन गई और इसके ही फल स्वरूप वे रावण को पराजित न करके स्वयं पराजित हो गये। रामचरित मानस में ऐसे कई और प्रसंग भी आये हैं, जहाँ भक्त ने अभिमान तथा क्रोध के वश हो अपने बल पर विश्वास रखकर कार्य करना चाहा है और वहाँ इसी कारण से कार्य के संपादन में विघ्न उपस्थित हुये हैं। गीधराज के—

सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा।
करिहौं जातुधान कर नासा॥
रे रे दुष्ट ठाढ़ किन होही।
निर्भय चलेसि न जानेहि मोही॥

यह वाक्य अभिमान से भरे हुये हैं। गीधराज ने यह न कहकर कि 'तू प्रभु को नहीं जानता' यह क्रोध के वश होकर कह दिया कि 'तू मुझको नहीं जानता' प्रभु अपने जन का अभिमान नहीं रहने देते अतएव गीधराज की हार हो गई।

लक्ष्मण जी को शक्ति लगने पर हनुमान जी भी अपना बल कहकर चले, जिसमें अभिमान की झलक प्रभु को दिखाई दी, अतएव उन हनुमान जी को जिनको एक माह तक प्रभु के कार्य में दत्तचित्त होने के कारण जिस समय वे सीता महारानी की खोज में निकले कोई प्यास नहीं लगी थी, इस समय थोड़े से समय में ही प्यास व्याकुल हो कालनेमि के आश्रम में शरण लेनी पड़ी। परन्तु वे 'राम चरन सरसिज उर राखी' चले थे, अतएव उनके कार्य में उनके अभिमान के कारण विघ्न अवश्य उपस्थित हुआ परन्तु सफलता हो सकी। अस्तु—

तब सक्रोध निसिचर खिसियाना।
काटिस परम कराल कृपाना॥
काढ़ेसि पंख परा खग धरनी।
सुमिरि राम करि अदभुत करनी॥

गीधराज पृथ्वी पर गिर पड़े। हृदय में राम की अद्भुत करनी का स्मरण करते हैं। प्रभु यदि चाहते-गीधराज रावण को हरा सकते थे और उनकी यह दशा न होती। गीधराज ने इसमें प्रभु की अद्भुत करनी का अनुभव किया कि यह प्रभु की लीला है-जिसका रहस्य जीव के लिये समझना असम्भव है। प्रभु की लीला समझ कर वह शान्त हो गये। यह कभी कभी देखा जाता है कि शुभ कार्य करते हुये उसका परिणाम अच्छा नहीं दिखाई पड़ता है। हमको उसमें दुखी न होकर उसमें प्रभु की लीला का विधान समझ कर सन्तोष करना चाहिये। गीधराज का प्रसंग हमको सांसारिक जीवन के हेतु यह शिक्षा प्रदान कर सकता है। उद्योग करना जीव का कर्त्तव्य है। परिणाम है प्रभु की अद्भुत करनी का विषय है। अद्भुत करनी कविवर तुलसीदास ने प्रभु की ही मानस में लिखी है। अतएव इस चौपाई का यह अर्थ कि गीधराज अद्भुत करनी करके गिर पड़े असंगत है। अद्भुत शब्द केवल प्रभु की करनी के लिये प्रयोग किया गया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानै कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई॥
यहि बिधि खोजत बिलपत स्वामी।
मनहु महा बिरही अति कामी॥
पूरन काम राम सुख रासी।
मनुज चरित कर अज अबिनासी॥
आगे परा गीध पति देखा।
सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा॥

इस प्रकार से खोजते विलाप करते हुए स्वामी ने आगे पड़े हुये गीध पति को देखा। प्रभु पूरन काम सुख राशि हैं। मनुज चरित कर रहे हैं और ऐसा नाट्य कर रहे हैं मानो अतिकामी हैं।

प्रभु महारानी को ढूढते हुये कुछ आगे निकल गये थे तब उनके कानों में गीध का शब्द पड़ा। वह पीछे लौटकर आते हैं—

रटनि अकनि पहिचानि गीध फिर करुना मय रघुराई।
तुलसी रामहिं प्रिया बिसरि गई सुमिर सनेह सगाई॥

उन्होंने लौटकर देखा-गीधराज मुर्छित अवस्था में पड़े हुये हैं और अपने मुख से वे स्मरण कर रहे हैं।

१- राम का।
२- राम के चरणों का।
३- राम के चरणों की रेखा का।

अथवा यों कहिये कि वे उन राम के चरणों का जोर-जोर से स्मरण कर रहे हैं जिनमें रेखा हैं अथवा राम के चरणों के साथ साथ वे उनकी चरणों की रेखाओं का भी बखान कर रहे हैं। इससे यह प्रश्न उठता है कि उनको उन चरणों की रेखाओं का स्मरण कैसे हुआ? वह क्या स्मरण कर रहे थे और उनके स्मरण करने का क्या कारण था? यह प्रसंग विचारणीय है। यह अर्द्धाली मानस में महात्मा जटायु के प्रसंग को समझने की कुञ्जी है। अधिकतर मानस प्रेमी इसको महारानी जी का ही प्रसाद मानते हैं और यह कहते हैं कि गीधराज ने इसकी शिक्षा महारानी जी से ही पाई है और उन्होंने उन्हीं का अनुकरण किया है। प्रभुके चरणों में २४ चिह्न हैं। जो चरण प्रभु के सीधे चरण में हैं वह ही महारानी जी के बायें चरण में हैं और जो प्रभु के बायें चरण में हैं वह महारानी जी के सीधे चरण में। महारानी जी उन्हीं चरणों की ओर ध्यान लगाकर अशोक-वाटिका में रहती थीं।

जेहि बिधि कपट कुरंग संग धाइ चले श्री राम।
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरि नाम॥

अतएव गीधराज ने भी यह शिक्षा महारानी जी की इसी मुद्रासे ली और जिस प्रकार महारानी जी प्रभु के चरणों की रेखाओं का ध्यान करती हैं, जटायु भी उसको करते हैं।

परन्तु यह सब प्रसंग इस प्रकार मानने में कठिनाई है। प्रथम तो यह कि सीता हरण के समय जब जटायु-रावण युद्ध हो रहा था, महारानी जी का ध्यान अपने चरणों की रेखाओं की ओर केन्द्रित रहा हो, यह ठीक नहीं ज्ञात होता। समय भी कम था और गीधराज इतनी उतावली एवं क्रोध में थे कि वह इस समय उन रेखाओं को ध्यान पूर्वक देख पाते, यह मानना कठिन है।

जिस समय से गीधराज से प्रभु की भेंट हुई थी और प्रीति दृढ़ हो गई थी, गीधराज पर्ण कुटी का सदैव ध्यान रखते थे और उसके ऊपर ही वन में मंडराया करते थे। वन में घूमते रहते होंगे। उनके चरण चिह्न दण्डकारण्य बनमें पृथ्वी पर सर्वत्र अंकित हो जाते थे। गीधराज उन चरण चिह्नों को अपनी अपार दृष्टि से देखते थे। प्रभु के चरणों को देखते देखते उनकी पहिचान उन चरणों की रेखाओं से करते थे। इस लिये उन रेखाओं का भी उनको पूरा-पूरा ज्ञान हो गया था। गीधराज का प्रभु के ऊपर आरम्भ से ही वात्सल्य भाव था। वह चरण रेखाओं को देखकर सोचते रहते थे कि—

'ध्वज कुलिस अंकुस कंजजुत बन फिरत कंटक किनलहे'

अथवा ऐसी सुन्दर रेखाओं से युक्त यह चरण इस बन में कैसे फिर रहे हैं। यह विचार उनके हृदय पटल पर बार बार अंकित होता रहता था। अतएव अंत समय में भी उनकी विचार धारा उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बह रही है। वह जोर जोर से मानो कह रहे हों—

'ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत,
बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम,
रमेश नित्य भजामहे ॥'

यही वाक्य मानो जटायु दुख में चिल्ला चिल्ला कर कह रहे थे। उनको अपने कष्ट का कोई ध्यान नहीं है ध्यान है प्रभु के चरणों का ऐसी रेखाओं से सुसज्जित कोमल चरण कंटकों से पूर्ण बन में कैसे चल रहे होंगे। वे उन चरणों को बार बार प्रणाम कर रहे हैं।

मानस में रेखाओं का वर्णन तीन जगह आया है-

१- बाल छवि में—

रेख कुलिस ध्वज अंकुस सोहे।
नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहे ॥

२- जटायु के प्रसंग में—

सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा।

३- वेदों की स्तुति में—

ध्वज कुलिस अंकुस कंजजुत बन फिरत कंटक किनलहे।

यही नहीं, जटायु द्वारा प्रार्थना में और वेदों द्वारा प्रार्थना के छन्दों में बहुत ही समानता है जो विचारणीय है—

१- दोनों के छन्द हरगीतका हैं।

२- दोनों के छन्द जय से आरम्भ होते हैं।

(रावण-वध से पहिले देवताओं की स्तुति के बाद यह पहिला-छन्द है जो जय से आरम्भ होता है। यह आशीर्वाद के छन्द हैं जिनमें रावण के वध व रावण पर विजय को निश्चय समझ कर जय का आशीर्वाद दिया गया है। महात्मा जटायु को भूत, वर्त्तमान, भविष्य का पूर्ण ज्ञान हो गया था। देवताओं की स्तुतियों में ही आरम्भ में जय का प्रयोग हुआ है। जटायु को भी देवत्व प्राप्त हो गया था अतएव वे जय से अपनी प्रार्थना आरम्भ करते हैं।)

३- दोनों की प्रार्थनाओं की कड़ीके न केवल भाव ही वरन् उनके शब्दों में भी समानता कवि ने दिखाई है—

१- जय[५] राम रूप[३] अनूप[४] निर्गुन[२] सगुन[१]
गुन प्रेरक सही।— गीधराज
जय[५] सगुन[१] निर्गुन[२] रूप[३] रूप अनूप[४]
भूप सिरोमने। — वेद

२- दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज
बल हने वेद
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन
मही।— जटायु

३- ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत
टक किन लहे। — वेद
सुमिरत राम चरण जिन्ह रेखा। — गीध

यह समानता दोनों के विचारों में, ध्यान में, स्तुति में कविवर तुलसीदास ने किसी विशेष अभिप्राय से दिखाई है। मैं तो गीधराज को वेदों का अवतार ही मानता हूँ। कविवर दोनों के विचार, ध्यान, स्तुति इत्यादि की समानता दिखा कर यह दिखाना चाहते हैं कि महात्मा जटायु वेदों के ही अवतार थे। यह तो मानना ही पड़ेगा कि महात्मा तुलसीदास ने जटायु को वेदोंका पूर्ण ज्ञाता दिखाने का प्रयत्न किया है। जिस प्रकार प्रभु के अवतिरत होने का सम्वाद पाकर सब देवता बानर भालु का अवतार लेकर प्रभु के आने का अवसर जोहते हैं, उसी प्रकार से वेदों ने भी जटायु के रूप में अवतरति होकर प्रभु की सेवा की—यह विचार कविवर भक्त चूड़ामणि मानस प्रेमियों के समक्ष उनकी प्रार्थना के छन्दों में समानता, उनके विचारों में समानता, उनके रेखाओं के ध्यान की समानता दिखाकर प्रतिपादित करना चाहते हैं, ऐसा ज्ञात होता है।

प्रभु ने जब गीधराज को देखा, उनको देखकर प्रभु दुख से विह्वल हो गये और महारानी के विरह को भूल गये।

'रटनि अकनि पहिचानि गीध फिरे करुणामय रघुराई।
तुलसी रामहि प्रिया बिसर गई सुमिर सनेह सगाई ॥'

क्यों न हो गीधराज सोच रहे थे—

'मेरे एकौ हाथ न लागी'।
गयो बपुर्बीति वादि कानन, ज्यों कलपलता दविदागी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशरथ सो न प्रेम प्रति पाल्यो, हेतु सकल जग साखी।
बरबस हरत निसाचर पतिसों, हठि न जानकी राखी॥
मरत न मैं रघुवीर विलोके, तापस वेष बनाये।
चाहत चलन प्रान पाँवरबिनु, सियसुधि प्रभुहिं सुनाये॥
बार बार तजि सांस सीसधुनि, गिरे धरनि पछिताई।
तुलसी प्रभु कृपालु तेहि अवसर, आइ गये दोउ भाई॥

बाल्मीक रामायण, और अध्यात्म रामायण में गृद्धराज को देखकर शंका होती है और श्रीराम जी जटायु से प्रश्न भी करते हैं। अध्यात्म में भी प्रभु गीध के ऊपर अपना करकमल फेरते हैं परन्तु वे तब फेरते हैं जब गीधराज कहते हैं कि मैं आपकी भार्या की रक्षा करने में घायल हुआ हूँ। अध्यात्म के राम सीता की सुधि पाने को उतावले हैं परन्तु 'मानस' के राम गीध को देख कर सीता की सुधि भूल जाते हैं और आते ही निज कर का स्पर्श करते हैं। वह कर कैसा है—

'सीतल सुखद छांह जेहि करकी मेटत पाप ताप माया।
निसवासर तेहि कर सरोज की चाहत तुलसिदास छाया॥'

गीधराज की सब पीर प्रभु के कर कमल के स्पर्श से ही मिट गई।

कर सरोज सिर परसेउ कृपा सिन्धु रघुबीर।
निरखि राम छबि धाम सुख बिगत भई सब पीर॥

महात्मा तुलसीदास ने करके साथ सरोज पद दिया वह विशेष कृपा का सूचक है—

तब कह गीध बचन धरि धीरा।
सुनहु राम जन भंभव भीरा॥

प्रभु के मुखारविन्द की छबि ही ऐसी है जो देखता है ठगा सा रह जाता है।

पुष्प वाटिका में—

केहरि कटि पटपीत धर सुषमा सील निधान।
देखि भानु कुल भूषनहिं बिसरा सखिन्हं अपान॥

अन्य स्थलों पर भी प्रभु के रूप को देखकर जीव अपनी सुधि भूल जाता है, ऐसा प्रसंग मानस में बहुत जगह आया है।

प्रभु गीधराज के दुख में विह्वल हो गये थे, अतएव गीधराज उनको पुकार कर कहते हैं कि 'हे राम सुनहु' आप तो संसार के कष्टों का नाश करते हैं, आपको इतना दुखी नहीं होना चाहिये। अन्य रामायणों में जटायु ने रावण के साथ अपने युद्ध का वर्णन किया है। परन्तु मानस के जटायु अपने मुख से इसका कुछ वर्णन नहीं करते क्योंकि वे इसमें प्रभु की अद्भुत करनी समझते हैं। प्रभु जटायु से प्रार्थना करते हैं कि वे कुछ दिन और जीवित रहें—

राघौ गीध गोद कर लीन्हो।
नयन सरोज, सनेह सलिल,
सुचि मनहु अरघजल दीन्हो।
सनहु लखन खगपतिहि मिले,
बन मैं पितु मरन न जान्यौ।
सहि न सक्यौ सो कठिन विधाता,
बड़ौ पदु आजहि मान्यौ।
बहु बिधि राम कह्यो तनु राखन,
परम धीर नहिं डोल्यौ।
तुलसी प्रभु झूठे जीवन,
लगि समय न धोखौ लैहौं।
जाको नाम मरन मुनि,
दुर्लभ तुमहि कहां पुनि पैहौं॥

मेरे जान तात कहु दिन जीजै।
देखिय आप सुवन सेवा सुख मोहि पितु को सुख दीजै,
दिव्य देह इच्छा-जीवन जग विधि मनाय भुवि लीजै।
हरि हर सुजस समाइ दरस दै लोग कृतारथ कीजै।
देखि बदन सुनि बचन अमिय तन राम नयन जल सीजै।
बोल्यो बिहग विहंसि रघुवर बलि कहौ सुनाय पतीजै।
मेरे मरिबे सम न चारि फल होहितौ क्यों न कहीजै।
तुलसी प्रभु दियो उतरु मौन परी मानौ प्रेम सहीजै।

जाकर नाम मरत मुख आवा।
अमउ मुकुत होइ श्रुति गावा॥
सो मम लोचन गोचर आगे।
राखौ देह नाथ केहि खागे॥
जल भरि नयन कहहि रघुराई।
तात करम निज ते गति पाई॥

यही एक प्रसंग मानस में है जहाँ किसी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राण त्याग के समय प्रभु के आँखों में जल भर आया है। श्री शरभंग के मरते समय, यहाँ तक कि दशरथ जी के मरने की खबर सुनकर भी प्रभु के नेत्रों में जल नहीं आया था; कारण कि निष्काम प्रेमी भक्त परोपकार भावना से पूर्ण का विछोह प्रभु सहन न कर सके। जटायु लीला में माधुर्य तथा ऐश्वर्य का सम्मिश्रण है। बालि के प्रसंग में केवल ऐश्वर्य है। इस प्रसंग भर में कहीं भी प्रभु जटायु गीधराज पक्षी इत्यादि शब्द नहीं कहते हैं। वह बराबर उनको तात का सम्बोधन करते हैं। वे कहते हैं परोपकारी जीव को अपने कर्म के फल स्वरूप ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है। यह मोक्ष कुछ मेरी कृपा के कारण नहीं मिल रहा है—

'तात करम निज ते गति पाई।'

जिन प्राणियों के हृदय में परोपकार की भावना रहती है, उनको कोई बात दुर्लभ नहीं है। श्री जटायु ने इसी संसार में ही चतुर्भुज रूप धारण कर लिया और भी स्थलों पर प्रभु ने अपना धाम भक्तों को दिया है किन्तु इस संसार में दिव्य देह केवल परोपकारी को ही प्राप्त है। गीधराज का चरित्र इस सत्य का प्रमाण है।

प्रभुहिं बिलोकत गोद गत सिय हितु घायल नीचु।
तुलसी पाई गीधपति-मुकुति मनोहर मीचु॥
बिरद करत इत भगत मुनि सिद्ध ऊँच अरु नीचु।
तुलसी सकल सिहाहि सुनि गीधराज की मीचु॥
मुए मुकुत जीवन मुकुत, मुकुत मुकुत हूँ बीच।
तुलसी सब ही ते अधिक गीधराज की मीचु॥
रघुबर बिकल बिहंग लखि सो बिलोकि दोऊ बीर।
सिय सुधि कहि सिय राम कहि देह तजी पनधीर॥
दसरथ तै दसगुन भगति सहित तासु करि काज।
सोचत बन्धु समेत प्रभु कृपा सिन्धु रघुराज॥
केवट निसिचर बिहंग मृग किए साधु सनमानि।
तुलसी रघुबर की कृपा सकल सुमंगल खानि॥

शब्द का चमत्कार

(श्री धनेश्वरप्रसाद शर्मा 'धन्ने')

श्री राम-चरित-मानस के एक एक शब्द की शक्ति का पूज्य कवि को कितना ज्ञान था उसे पाठक वृन्द जानते ही हैं।

तृतीय सोपान (अरण्यकांड) दोहा २६ के ५ और ६ चौपाई में देखिए —

उभय भाँति देखा निज मरना ❀ तब ताकेसि रघुनायक सरना॥
उतरु देत मोहिं बधब अभागे ❀ कस न मरौं रघुपति सर लागे॥

इस चौपाई में मारीच को पूरा मालूम हो गया कि रावण को प्रत्युत्तर करने पर वह मार देगा। यदि प्रत्युत्तर न कर इसकी सलाह मान 'कपटमृग' बनूँगा तो श्री राम जी अवश्य मारेंगे। उभय भाँति मेरा बध निश्चित है। इधर (रावण द्वारा) और उधर (श्री राम द्वारा) बध होना निश्चित है।

इसी लिए "बधब" शब्द ऐसा आ पड़ा कि चाहे सीधा (बायें हाथ—तरफ से) पढ़ें या उल्टा (दाहिने से बायें) पढ़ें। हर हालत में "बधब" ही पढ़ा जाता है। उभय भांति मरना का सम्पूर्ण अर्थ इस शब्द में भरा है। दोनों तरफ से बधब के लिए कितना चमत्कारिक शब्द है।

बोलिए लषन सिय रामचन्द्र की जय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शंकाएँ

१–मानस में बामदेव महर्षि का नाम कई बार आया है। परन्तु परिचय नहीं मालूम कि ये बामदेव ऋषि कौन हैं। हमारे इधर इन्हें वशिष्ठ जी का पुत्र कोई कोई कहते हैं, पर कोई प्रमाण नहीं देते अतः प्रमाण पूर्वक जानने की जिज्ञासा है। मणि में ही समाधान हो।

—राजारामसिंह साल्हे, बिलासपुर

२–मानस में एक बार तो यह कहा जाता है कि— "अपराधिहु पर कोप न काऊ।"

"खेलत खुनिस न कबहूँ देखी॥"

और विनय पत्रिका में भी—

"कहत राम बिधु बदन रिसौहैं।
सपनेहुँ लखेउ न काउ॥"

कहा जाता है। तब फिर—

"तब प्रभु परम क्रोध कहँ पावा।"

कवितावली में—

"कबहुँ रिसिआइ कहैं हठि कै०॥

आदि दोनों परस्पर विपरीत बातों का समन्वय कैसे हो सकता है?

—रामगोविन्द पाडेय्य रामायणी, गया

समाधान

मानस तत्वान्वेषी पं० श्री रामकुमारदास रामायणी, वेदान्त भूषण साहित्यरत्न मणि पर्वत श्री अयोध्या

बामदेव मुनि पद नमौ बामदेव सम बाम।
गिरिजा गुरु अरु भानुकुल मंत्री प्रोहित नाम॥

बामदेव महर्षि को कहीं भी वशिष्ठ का पुत्र नहीं कहा गया, यहाँ तक कि जहाँ कहीं श्री वशिष्ठ जी के पुत्रों का नाम गिनाया गया है वहाँ भी किसी पुत्र का नाम बामदेव नहीं कहा गया है। पुराणों के अनुसार ब्रह्मा के मानस पुत्रों में एक गोतम नाम के मानस पुत्र थे। उन्हीं ब्रह्मर्षि गोतम के पुत्र बामदेव थे इसी से ऋग्वेद के चौथे मंडल में इन्हें बामदेव गौतम कहा है। ऋग्वेद के चौथे मंडल में कुल अट्ठावन सूक्त है जिनमें ४२।४३।४४ इन तीन सूक्तों के ऋषि दूसरे हैं बाकी १ से ४१ तक और ४५ से ५८ तक ५५ सूक्तों के ५६५ मंत्रों के ऋषि महर्षि बामदेव ही हैं।

विश्व कोष का कहना है कि हेमाद्रि ने परिशेष खण्ड में इनका उल्लेख गोतम पुत्र करके किया है। वायु पुराण गया० २ अध्याय के अनुसार ब्रह्मा के मानस पुत्र थे गोतम। [स्मरण रहे कि अहिल्या पति गौतम भी गोतम ही पुत्र थे। जो दशरथ के उपपुरोहित थे।]

दशरथ जी के दो प्रधान पुरोहितों में बामदेव जी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। देखिये बाल्मीकीय रामायण बालकांड सर्ग सात—

ऋत्विजौद्वावभिमतौतस्यास्तामृषिसत्तमौ।
बशिष्ठो बामदेवश्च मंत्रिण तथा परे॥ ३॥
सुयज्ञोऽप्यथ जाबालिः काश्यपोऽप्यथ गौतमः।
मार्कण्डेयस्तु दीर्घायुस्तथा कात्यायनो द्विजः॥ ४॥
एतै ब्रह्मर्षिभिर्नित्यमृत्विजस्तस्य पौर्वका॥ ५॥

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने तो कहीं कहीं देवर्षि नारद और ब्रह्मपुत्र वशिष्ठ जी से भी पहले बामदेव जी का स्मरण किया है—

"बामदेव अरुदेवरिषि बाल्मीकि जाबालि।"
"बामदेव वशिष्ठ मुनि नायक॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री पार्वती जी के गुरु यही महर्षि बामदेव ही थे। पद्म पुराण के उत्तर खण्ड में महर्षि वशिष्ठ और महाराज दिलीप का संवाद है वहाँ अध्याय २५४ में वशिष्ठ जी ने दिलीप को बताया कि स्वयं भगवान रुद्र ने श्री पार्वती जी को भगवन्मंत्र ग्रहण करने योग्य गुरु से दीक्षा लेने को प्रेरित किया था। देखिये—

रुद्र उवाच—

गुरूपदेश मात्रेण पूजयित्वैव केशवम्।
प्राप्नोति वाञ्छितं सर्वं नान्यथा भूधरात्मजे ॥७॥

वशिष्ठ उवाच—

एवमुक्ता तदादेवी बामदेवान्तिकं नृप।
जगाम सहसा हृष्टा विष्णु पूजन लालसा ॥८॥
समेत्य तंगुरुं देवी पूजयित्वा प्रणम्य च।
विनीता प्राञ्जलिर्भूत्वा उवाच मुनि सत्तमम् ॥९॥

पार्वत्युवाच—

भगवंस्त्वत्प्रसादेन सम्यगाराधनं हरेः।
करिष्यामिद्विजश्रेष्ठ त्वमनुज्ञातुमर्हसि ॥१०॥

वशिष्ठ उवाच—

इत्युक्तस्तु तदादेव्या बामदेवो महामुनिः।
तस्यै मंत्रवरं श्रेष्ठं ददौ सविधिना गुरुः ॥११॥

इत्यादि। महर्षि बामदेव विरचित "वर्षमंजरी" नामक ज्योतिष का ग्रन्थ और "हठ योगविवेक" नामक योग शास्त्र का ग्रन्थ पाया जाना बताया जाता है।

महर्षि बामदेव के सम्बन्ध में पुराणों में बहुत जगह विभिन्न प्रसंगों पर चर्चा आई है पर कहीं भी उन्हें वशिष्ठ पुत्र या वशिष्ठ गोत्रीय नहीं कहा गया है।

(२)

हे हे सिया तब पायन में,
यह क्रोध नहीं करुणा की ललाई।
शशि सूर नहीं मणि भूरि नहीं,
तम नाशत है नखकी द्युति हाई।
याते जबै नख दर्श करैं,
सुर नेकहु ना पलकैं झपकाई।
बहिरन्तर नित्य प्रकाशित हैं,
तम जन्म 'कुमार' करैं सफलाई।

रिसिआना दो तरह का होता है—

१–अपराधी पर जो वास्तविक रिसानि-क्रोध है।
२–दूसरा स्नेही पर ऊपर से देखावा का क्रोध जिसे प्रणय कोप कहा जाता है। यथा—

केहि हेतु रानिरिसानि परसत पानि पतिहिं निवारई।
तुलसी नृपति भवतव्यता वश काम कौतुक लेखई ॥

'अपराधिहु पर कोप न काउ' की बात यह है जो श्रीराम जी का अपना अपराध कर देता है उस पर कभी कोप नहीं करते यही महर्षि जी भी कहते हैं कि—

कथं चिदुपकारेण कृते नैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकारानां शतमप्यात्मवत्तया ॥

और—*तब प्रभु परम क्रोध कहँ पावा।*
"विश्व द्रोह रत यह खल कामी ॥"

विश्व द्रोही पर था अपने कारण नहीं। विनय पत्रिका में वास्तविक रिसानि का न होना कहा गया है और कवितावली में प्रणय कोप की बात है। वास्तव की रिसानि में जिस पर रिसाया जाता है उसे भय एवं दण्ड का कष्ट होता है, परन्तु प्रणय कोप में स्नेही को स्नेही की रिसानि देखकर आनन्द होता है तभी तो कवितावली में 'मातु सबै मन मोद भरैं।' कहा गया है। अतः दोनों रिसानि दो तरह की होने से उसमें किसी तरह की विपरीतता नहीं है।

मानस मणि के ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यों में नाम लिखाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ-समाचार

अगस्त मास में संघ के १०८ नये सदस्य बने तथा ६ नई शाखायें स्थापित हुईं जिनका विवरण इस प्रकार है:—

शाखा संख्या १९८९ कोहड़िया [बिलासपुर] सदस्य २० मंत्री श्रीहोरिलगिर जी गोस्वामी। शा० सं० १९९० उजयान [झांसी] स० ९ मं० श्रीगणेशलालजी गुप्ता। शा० स० १९९१ विजयगढ़ [झांसी] स० १० मं० श्री मोतीलाल जी मुखिया। शा० सं० १९९२ भुरसा [जबलपुर] स० १५ मं० श्री ठाकुर राजेन्द्रसिंह। शा० सं० १९९३ नवापारा [रायपुर] स० १० मं० श्री तिजाऊराम जी। शा० सं० १९९४ इटिम्हा [शाहाबाद] सदस्य १० मं० श्री डाक्टर नागेश्वरप्रसाद जी।

विविध-समाचार

उमरियाः— श्री गणेश जी की ४०) में मूर्ति बनवाकर गणेशोत्सव समारोह के साथ मनाया गया। रात्रि में प्रतिदिन रामायण गान होता रहा।
—भगवानदास

डेहरी सरायः—ता: ४-८-५७ को श्री हरी शंकर जी के यहां श्री रामार्चा पूजन, श्रीमानस का अखंड पाठ, कीर्तन, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। समाप्ति पर "ॐ ह्रीं रामाय नमः स्वाहा" मंत्र से ४ ब्राह्मणों द्वारा हवन होकर ब्राह्मण भोजन हुआ। ता: २८-५-५७ को तुलसी जयन्ती समारोह भी मनाया गया।
—पुरुषोत्तम पाठक

गनेराः—श्रावण मास में श्रीमद्भागवत तथा मानस का पाठ हुआ। दोपहर तथा शाम को प्रवचन होता था। बाद में आरती होकर प्रसाद वितरण होता था।
—सीतारामदास

भागलपुरः—थियोसिफीकल हाल में ता: २-८-५७ को श्री स्वामी विद्यानन्दजी की अध्यक्षता में श्री तुलसी जयन्ती बड़े धूम धाम से मनाई गई। प्रवचन, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—जगदीशप्रसाद

गोंदियाः—श्री तुलसी जयन्ती के दिन श्रीमानस का पाठ हुआ।
—जयनारायण-कन्हैयालाल शर्मा

तपकाराः—पूरे श्रावण मास भर श्री शंकर भगवान् को १०८ बेलपत्र तथा ॐ नमः शिवाय का जप हुआ। जब का दशांस हवन हुआ।
—रामेश्वर शर्मा

धनियाः— सावनी रामायण एक मास तक हुई। अंतिम दिन रामायण की आरती होकर समाप्त हुई।
—रामशरण सिंह

झांसीः—सोपरी बाजार में श्रीश्यामबिहारी के यहाँ भाद्रमास में २४ घंटे का मानस का अखंड पाठ हुआ। पश्चात् आरती, हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। इसके बाद सत्यनारायण की कथा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण भोजन, कीर्तन आदि हुआ।
—रामरतन शर्मा

चोचलीः— श्री हनुमान् जी के चबूतरे पर ता: २१-७-५७ से ५-८-५७ तक अखंड कीर्तन हुआ। बाद में प्रसाद वितरण हुआ। —लेखराम

कन्या भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्रीकृष्ण जन्मोत्सव भी मनाया गया। —पं० मोहनलाल

सफीपुरः— श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को श्री पं० मथुराप्रसाद जी शास्त्री की अध्यक्षता में हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —बैजनाथ

सक्रिय सदस्य

'मानस मणि' के सन् १९५७ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य :—

		पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
१.	श्री हुब्बलाल जी रामायणी श्रीपट्टी	४	१	५
२.	,, मदनलाल जी कथावाचक मनोहर थाना	७	१	८
३.	,, रामबालक शरण जी होलागढ़	२	१	३
४.	,, महन्त रोशनपुरी जी वैद्य शास्त्री कोहड़िया	१६	१	१७
५.	,, हरनारायण जी द्विवेदी महराजगंज	२	२	४
६.	,, घनाराम जी रघुवंशी सांकरा	२	१	३
७.	,, रतनलाल जी मग झकनावदा	४	१	५
८.	,, नन्दलाल जी पुरोहित तुमसर	८	३	११
९.	,, दयाराम जी काचरी	३	२	५
१०.	,, पचकौड़राम जी खपरीकला	—	२	२
११.	,, बुलाकीराम जी साजा	—	२	२
१२.	,, लक्ष्मणप्रसाद जी केशरवानी गोवरी कोदवा	—	२	२
१३.	,, रमाकान्त जी मिश्र सीपत	—	२	२
१४.	,, भगवतलाल जी शर्मा गंगापुर	—	११	११
१५.	,, माधवप्रसाद जी द्विवेदी घोघरा	—	२	२
१६.	,, तुलसीराम जी देवांगन राजनांदगाँव	—	२	२
१७.	,, टी० सी० पटेल भाड़ी	—	२	२
१८.	,, देशराज जी त्रिपाठी बालाघाट	—	६	६
१९.	,, कंज जी रामायणी वाराणसी	—	३	३
२०.	,, पं० अम्बिकेश्वरपति जी त्रिपाठी अयोध्या	—	२	२
२१.	,, सदाशंकर जी चतुर्वेदी मंगलपुर	—	२	२

नोटः—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे उनकी नामावली अगले मास दी जायेगी। इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ७८ है।

कन्हरगाँतः—श्रावण में मानस का मासिक पाठ होकर रक्षा बंधन को पं० केशवप्रसाद दुबे के यहाँ अखंड पाठ, अखंड राम नाम मंत्र, हवन,

हिन्छापुरः— श्री कृष्ण जन्माष्टमी को २४ घंटे का कीर्तन हुआ। —खुजूराम

सेतगंगाः— ता: १६-७-५७ से २५-७-५७ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री शंकर जी की पूजा, मानस का नवाह पाठ और श्रीमद्भागवत हुई। बादमें आरती, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —आर. एल. गुप्ता

डँगनियाः— गांव में फैले कालरा के निवारणार्थ ६१ साधकों द्वारा श्रीमारुतिभगवान् के सामने मानस का नवाहपाठ, नामजप किया रोग शांत हुआ। —फत्तूलाल

बाँकानेरः—श्रावण कृष्ण १ से पूर्णिमा तक श्रीशंकरजी के मन्दिर में ११ व्यक्तियों द्वारा नवाह पाठ हुआ। कुछ प्रेमियों ने अपने घरों पर मासिक पाठ किया। समाप्ति पर सुन्दर काण्ड पाठ से यज्ञ पूर्णाहुति करके, आरती की गई तथा प्रसाद वितरण हुआ। —गुलाबचन्द्र

बघोराः—भाद्रपद कृष्ण ११ को श्रीछोटेलाल नामदेव के यहाँ अखंड रामायण हुई। समाप्ति पर कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ।—प्रहलादसिंह

कोटराः—भाद्रपद कृष्ण १ से ८ तक कीर्तन हुआ। समाप्ति पर हवन, पूजा, दधिकाँदव होकर प्रसाद वितरण हुआ। शाम को रामायण हुई। —प्यारेलाल गिरवरसिंह

टेंकनपाराः— श्री दशरथ भारती द्वारा ताः २८-७-५७ को रामायण पर प्रवचन हुआ। जनता ने बहुत प्रेम से कथा श्रवण किया। ६ सदस्य भी मानस संघ के बने। —उम्मेद भारतीय

बिहिया जज ठाकुर बाड़ीः—में श्री पंडित जंगबहादुर पान्डेय की अध्यक्षता में श्रावण शुक्ल ७ से ११ तक अयोध्याकाण्ड का सामूहिक पाठ हुआ। प्रतिदिन अंत में आरती, प्रवचन होकर प्रसाद वितरण होता था। —वशिष्ठनारायण

डबराः—श्री तुलसी जयन्ती पर, मानस का अखन्ड पाठ, तथा ताः ३-८-५७ से ५-८-५७ तक श्री मंजुल जी की कथा और अन्य विद्वानों के प्रवचन हुए। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —मंत्री

आर्वीः—श्री संत अवधूतानन्द जी और श्री निर्गुणनन्द जी का ३ दिन तक प्रवचन तथा आध्यात्मिक भजन हुआ। श्रोताओं ने खूब आनन्द और ज्ञान प्राप्त किया। —मुन्नालाल देवासे

दुरपाः—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को व्यक्तिगत २ अखंड पाठ मानस के हुये। श्रावण सुदी १० को हमारे दुकान पर साप्ताहिक रामायण हो रही थी। पूरे श्रावण में पानी की बारिस न होने से खेती बिलकुल बन्द हो गई थी। रामायण के बाद एक बुढ़िया ब्राह्मणी ने कहा कि आज के आठवें दिन ऐसे पानी की बारिस होगी कि खेत खार छलक जांयगे। मैं आठवें दिन एक नारियल लेकर रामायण सुनने आऊँगी। ठीक अगले रामायण सप्ताह (सोमवार) को रामायण हुई उसी समय ऐसी बारिस हुई कि तमाम खेतों में भाँठा टिकरा तक पानी भरकर उछल गया। दो रोज तक खेतों के पार बाँधने के लायक नहीं हुआ। आज भी पानी भरा हुआ है और खेती के काम हो रहे हैं। —शिवरामप्रसाद स्वर्णकार

डगाँवाः—श्री गयाप्रसाद जी पटेल और श्री रामेश्वरदास गर्ग ने श्री रामचरित मानस का अर्थ सहित मास पारायण किया। समाप्ति पर आरती, पूजन करके प्रसाद वितरण किया। —संवाददाता

कलकत्ताः—सीधी बगान, घास बगान, हावड़ा, तिरहटी बाजार, चितपुर रोड इत्यादि स्थानों में श्री हुबलाल रामायणी द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —उमाशंकर द्विवेदी

हरीसपुरः—मन्दिर में मानस पाठ भाद्रपद ७ को हुआ। पूर्णाहुति, हवन, कीर्तन के बाद प्रसाद वितरण हुआ। —रामकंकन

बन्देमऊः—श्रावण शुक्ल ५ को रामबाग में वार्षिकोत्सव, हवन, कीर्तन तथा वृक्षारोपण हुआ। ७ को तुलसी जयन्ती पर प्रवचन, कविता-सम्मेलन, गायन आदि हुआ। सत्संग आश्रम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरे मास शंकर जी का पूजन, रुद्राष्टक का पाठ तथा जप हुआ। मानस का व्यक्तिगत मासिक पाठ हुआ। —छोटेलाल गुप्त

पिनाहट:—ता: १०-८-५७ को [illegible] का अखंड पाठ लाउड स्पीकर लगाकर। [illegible] से आसपास के गाँव तक आवाज सुना[illegible] समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन होकर [illegible]साद वितरण हुआ। —गजाधरप्रसाद

नन्दोरकला :—मिडिल स्कूल में ता: ९-८-५७ को रामायण गान होकर श्री गणेश जी की जल क्रीड़ा हुई। बाद में प्रसाद वितरण हुआ। —बनमालीप्रसाद

खरगोंण:—श्रावण सुदी ९ को मन्दिर में श्री रामार्चा पूजन हुआ। —श्यामलाल

कोटमी :—श्री तुलसी जयन्ती को कीर्तन, प्रवचन, पूजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —रामरंगीलेदास वैष्णव

मन्दसौर:—अयोध्यावासी श्री अर्जुनदास जी महाराज की मंडली द्वारा १८ दिन तक मानस का अखंड पाठ तथा ९ दिन तक यज्ञ हुआ। सत्संग भवन में नित्य श्री महात्मा स्वामी स्वत: प्रकाश जी महाराज के प्रवचन रामायण पर हुए। ब्राह्मण भोजन आदि में कुल ३-४ हजार रुपये खर्च हुए। —भैरवशंकर शर्मा

पाँच श्रेष्ठ पुस्तकें

वयोवृद्ध श्री लालकृष्णवंशसिंह बाघेल रीवा राज्य के श्रेष्ठ साहित्यिक हैं। आपने अनेक महत्वपूर्ण यात्रायें भी की हैं। आपकी लिखी निम्न रोचक पुस्तकें हमें विक्रयार्थ प्राप्त हुई हैं। प्रेमीजन मंगाकर लाभ उठावें। इन पर कमीशन नहीं है।

(१) काश्मीर और सीमाप्रान्त १) (२) हिमालय के कुछ स्थान ॥)
(३) मयूर माला १) (४) वेद स्तुति विकासिका ॥) (५) तिब्बत में तेइस दिन ॥)

मंत्री—मानस संघ रामवन (सतना)

गोंदिया-शारदा वाचनालय में ता: २१-८-५७ से २५-८-५७ तक श्री पं० रामरक्षित जी रामायणी द्वारा नित्य रात्रि में ८॥ से १०॥ बजे तक कथा हुई। अन्तिम दिन श्री सुन्दरकांड का सामूहिक पारायण हुआ, प्रसाद बाँटा गया। —बृजमोहनलाल

मछरहटा :—ता: १८-९-५७ को श्री कृष्ण-जन्मोत्सव श्री सत्यनारायण जी के मन्दिर में मनाया गया। पं० श्यामसुन्दर द्विवेदी द्वारा श्री कृष्ण कथा पर प्रवचन, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —जगदेवप्रसाद

खम्हरिया :—श्री तुलसी जयंती पर विद्वानों द्वारा प्रवचन हुआ। समाप्ति पर आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —जमुनालाल

कन्हरगाँव :—ता: २७-७-५७ और २-८-५७ को मानस का अखंड पाठ, श्री रोहनी काछी तथा देवी जी की मढिया में हुआ। बाद में हवन, कन्या कुँवारी भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। स्कूल में श्री तुलसी जयन्ती समारोह मनाया गया। श्री बिच्छूलाल कचेर की ओर से तथा सरकारी सहायता से ३०००) में श्रीराम भवन तैयार हो रहा है। —रामप्रसाद

नरसिंहपुर :-स्टेशन शाखा में श्री पं० मुरलीधर जी व्यास द्वारा मास पारायण हुआ। साथ ही सुन्दरकांड के ७ पाठ तथा किष्किंधाकांड के ५ पाठ नित्य होते थे। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —वच्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबलपुरः—भानतलैया सती मंदिर में श्री तुलसीदासजी की जयन्ती मनाई गई। उनके जीवन चरित्र तथा उपदेश पर प्रकाश डाला गया। तत्पश्चात् विद्वानों का प्रवचन, मानस का अखंड पाठ पूजन, भजन, हवन, प्रसाद वितरण होकर कन्या कुँवारी भोजन कराया गया। —अमरनाथ मिश्र

बरेलाः—श्रीरामप्रसाद जी कोरी के यहाँ ता: १५-८-५७ को ८५ व्यक्तियों द्वारा १२ घंटे का अखंड कीर्तन हुआ। समाप्ति पर प्रसाद और हलुआ वितरण किया गया। कुंवारी कन्याओं को भोजन कराया गया। ता: १०,११ अगस्त को श्रीबाबूलाल विश्वकर्मा के यहां रामायण अर्थसहित हुई। श्रोता गणों को अति आनंद हुआ। राधेलाल विश्वकर्मा

सोनपांडरः— ता: ११-८-५७ से १८-८-५७ तक "श्री राम नाम" का अखंडजप हुआ। समाप्ति के दिन प्रभात फेरी, विष्णु सहस्र नाम से हवन, श्री रामचन्द्र जी का जलूस, कीर्तन आदि हुआ। बाद में प्रसाद वितरण, ब्राह्मण भोजन हुआ।

—शिवकुमारसिंह

बाराद्वार बस्तीः— ता: १५-८-५७ को स्वतंत्रता दिवस व शताब्दी समारोह के उपलक्ष में मानस का गुणगान वाद्य सहित ३ बजे से ७ बजे शाम तक हुआ। प्रवचन हुआ। श्रीकृष्णजन्माष्टमी को सदस्यों द्वारा मानसका पाठ हुआ। समाप्ति पर प्रसाद वितरण हुआ। —धनसाय साहू

कवर्धा :—ठकुराइनवार्ड नं० ५ में ता: २६-७-५७ से ५-८-५७ तक रामायण का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, श्री पं० रिखीराम रामायणी द्वारा प्रवचन होकर प्रसाद वितरण हुआ।

—ठा० थानसिंह

प्रयाग :—महिला संकीर्तन समिति में ता: १७-८-५७ से २७-८-५७ तक सुप्रसिद्ध रामायणी कवि रत्न श्री भैरवप्रसाद जी द्विवेदी के द्वारा श्रीमानस पर बहुत ही सार गर्भित, मार्मिक प्रवचन हुआ। कथा में बहुत उच्चकोटि के विद्वान आये थे। श्रोताओं की काफी भीड़ होती थी। ता: २७-८-५७ को डा० श्रीदास जी के बंगले पर कथा हुई।

—लक्ष्मीचन्द शुक्ल

बस्तरः— ता: २-८-५७ को डा० श्री गुप्ते की अध्यक्षता में श्री तुलसीदास जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया। रात्रि में सामूहिक पाठ रामायण का विद्यार्थियों द्वारा हुआ।

—रामकरण तिवारी

पिलखुआः—भक्त रामशरण जी के स्थान पर महान संत १००८ श्री हरिबाबा जी महाराज, परम पूज्या श्रीआनन्द मयी मां बंगाल, श्रीललिताप्रसाद जी गुरु महाराज, पूज्य भागवत भूषण पं० श्रीनाथ शास्त्री पुराणाचार्य श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज ब्रह्मचारी श्री रामस्वरूप जी महाराज, हिज हाइनेस महाराजाधिराज टिहरी, श्रीमान् वेन्द्रशाह जी गढ़वाल, महारानी साहिब श्रीसूरजकुमारी टिहरी आदि के सदुपदेश हुए।

—राममनोहरसिंह

दिल्लीः— के सुप्रसिद्ध परम पूज्य पं० श्री ज्योतिप्रसाद जी का वैकुण्ठ वास हो गया है। इस दुखद समाचार से सारे शहर में धार्मिक जतना में शोक उत्पन्न हुआ। आपका सारा जीवन कथा, कीर्तन, सत्संग भजन पूजन में व्यतीत हुआ। आपके आयोजन से समय २ पर कथा, सत्संग प्रवचन शहर के प्रत्येक मोहल्ले में हुआ करता था। आप बड़े उच्चकोटि के महापुरुष हिन्दू जातिके रत्न और सनातनधर्म के सूर्य थे। भगवान आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

—भक्त रामशरणदास

भाटापारा :—श्री महासती मंदिर में अ० भा० मा० प्रचार समितिका द्वितीय वार्षिक महोत्सव बड़ी धूम धाम से भाद्र शुक्ल ११ को मनाया गया। मानस का अखंड पाठ, प्रभात फेरी, श्री रामराज्य तिलक समारोह मनाया गया। पूज्य रामायणी श्री रामराक्षित जी द्वारा प्रवचन हुआ। कथा से जनता काफी प्रभावित हुई। —रामपाल त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलालपुरः— अषाढ़ शुक्ल १३ को प्रदोष मंडल द्वारा ५१ स्थानों में सविधान पूजन हुआ। २८१। का हवन, कीर्तन, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। भाद्र कृष्ण १३ को एक भद्री शंकर जी का बनाकर पूजन करके ८५। का हवन किया। बाद में कीर्तन आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। भाद्रपद शुक्ल १० को बजरंग स्थान में श्रीहनुमान चालीसा के शत पाठ किया। कीर्तन, व्याखान, आरती ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। भाद्र शुक्ल १२ को श्री शंकर भगवान् की सजावट

कार्तिक में रामवन आइये

कार्तिक विशेष पुनीत मास है। इसमें शास्त्रानुमोदित विविध सेवाओंकी व्यवस्था रामवन में की जायगी। अपनी सुविधानुसार इनमें आप भाग लीजिये।

१—कार्तिक में प्रातः स्नान का माहात्म्य है। रामवन में मानस सर में स्नान करने की सुविधा है।

२—कार्तिके धात्री वृक्षावश्चित्रान्नैस्तोषयेद्धिरिम्। ब्राह्मणान्भोजयेद भक्त्या स्वयंभुन्जीत बान्धवै॥
कार्तिक में आंवला वृक्ष के नीचे प्रभु को भोग लगावे ब्रह्मणों को खिलावे तथा बन्धु मित्रों सहित स्वयं भोजन करे। रामवन में १४ वृक्षों का सुन्दर आंवला कुञ्ज है। पूरे मास भर रसोई इसी कुञ्ज में होगी। रामवन में रहने से यह लाभ अनायास प्राप्त होगा। पूरे मास न उठा सकें तो थोड़े दिन उठावें। एक दो दिन ही सही। स्वतंत्र पाक करने वालों के लिये भी यथेष्ट स्थान तथा व्यवस्था है। वन भोज का उपयुक्त अवसर है।

३—तुलसी दल लक्षेण कार्तिकेयो ऽर्चेयद्धरिम्। पत्रे-पत्रे मुनि श्रेष्ठ लभते मौक्तिकम फलम्॥
कार्तिक में भगवान् को एक लाख तुलसी दल चढ़ाने का विशेष माहात्म्य है। रामवन में तुलसी लक्षार्चना होगी आप भाग ले सकते हैं।

४—श्रीराम नाम मन्दिर की परिक्रमा का महान पुण्य लाभ करने का अवसर तो मिलेगा ही। एक लाख परिक्रमा का विचार है।

५—कार्तिक में नित्य आकाश दीप प्रदान करने से श्री बृद्धि होती है। रामवन में नित्य आकाश दीप दान होगा।

६—कार्तिक त्योहारों का महीना है। हम सभी त्योहार मनायेंगे। कृष्ण पक्ष में द्वादशी को गोवत्स पूजन, त्रयोदशी को धात्री पूजा धनतेरस, चतुर्दशी को श्रीहनुमज्जयन्ती, अमावस्या को दीपावली-लक्ष्मी पूजा। शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा, अन्नकूट, गोपाष्टमी को गो सेवा, अक्षय नवमी प्रबोधनी एकादशी को विष्णु पूजा आदि।

७—रामवन के अधिष्ठाता श्री हनुमान जी हैं। अतः स्वाभाविक ही श्रीहनुमज्जयन्ती विशेष समारोह से मनाई जायगी। शृङ्गार होगा, भंडारा होगा। गाने बजाने की व्यवस्था की जायगी। भक्त जन भेंट समर्पण करेंगे। संध्या समय विशेष रोशनी होगी।

८—कार्तिक में रामायण पाठ की प्राचीन परम्परा है। इसकी भी व्यवस्था की जायगी।

९—जो भक्त विशेष पूजा सेवा साधन करना चाहेंगे, उनके लिये समुचित प्रबन्ध किया जायगा।

इन सब क्रमों के मध्य आनन्दमय समय व्यतीत करने का श्रेष्ठ सुअवसर प्राप्त है। इससे लाभ उठाइये। रामवन आपका है। हम यथा शक्ति सेवा करेंगे,। कृपया अपना विचार शीघ्र लिखें।

शारदा प्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके नन्दी पर सवार कराके कीर्तन बाजा के साथ जलूस निकाला गया। नदी के मध्य में भगवान् को हलुआ का भोग लगाया गया। बाद में आरती कीर्तन होकर प्रसाद बांटा गया। प्रवचन भी हुआ।
—शिवनारायण

मोतीहारी:—पंचमंदिर में ता: २-८-५७ को श्री जमुनाप्रसाद जी झुनझुनूवाला के सभापतित्व में तुलसी जयन्ती के उपलक्ष में उनके जीवनचरित्र पर प्रकाश डाला गया कविता, भजन आदि हुआ। ता: १५-८-५७ को नवयुवक पुस्तकालय में तुलसी जयंती समारोह मनाया गया। छात्रों को रामायण की पुस्तक तथा अन्य पुस्तकें वितरण की गईं। लाउड स्पीकरपर व्याख्यान हुआ। चार पाँच सौ व्यक्तियों का समूह इकत्रित था। श्रावण वदी १ से डेढ़ मास तक मासिक पाठ मानस के किये। —गंगासागर

मूरा:—ता: १२-७-५७ से १०-८-५७ तक पं० लालकुमार शर्मा द्वारा श्री शिव सेवा पूरे श्रावण मास भर की गई। प्रतिदिन रामायण गान होता रहा। —मेदनीप्रसाद

बिहिया:—ठाकुरवाड़ी में जन्माष्टमी और १३ के उपलक्ष में मानस का सामूहिक पाठ हुआ। भाद्रपद कृष्ण १० को श्री दिलीप नारायण जी के यहां सामूहिक मानस पाठ हुआ। बाद में प्रवचन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —वशिष्ठनारायण

परौंख:—पूरे श्रावण मास श्रीमद्भागवत् की कथा हुई। कुँ. धनसिंह के कमरे में जन्माष्टमी को अखंड पाठ हुआ। कीर्तन, आरती, हवन, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण किया गया।
—मैकूलाल कोरी

उमरिया:—पं० श्री डमरूधर पुजारी द्वारा तथा हरिजन पारा में उड़िया भागवत एकादश स्कन्द का गायन हुआ। श्रीगौरांग प्रधानजी द्वारा आद्यपर्व का गायन किया। श्री गणेश जी की स्थापना कर उड़िया रामायण का गान हुआ। सुभद्राहरण नाटक भी किया गया। —विनायकप्रसाद

बाराडोली:—ता: ६-९-५७ को उड़िया भागवत श्री एकादश स्कन्द का पूजा पाठ, तथा गायन हुआ। समाप्ति पर प्रसाद वितरण हुआ। श्रीकृष्ण जन्म नाटक किया गया। —जगदीशप्रसाद

डोंगरगांव:—श्री गणेशोत्सव में सुप्रसिद्ध रामायणी पं० श्रीरामरक्षितजी शुक्ल द्वारा नार्मल स्कूल तथा मोटर स्टेण्ड के मैदान में ता: ६-७ सितम्बर को प्रवचन हुआ। कथा से जनता बड़ी प्रभावित हुई। —कन्हैयालाल

कम्पाला (पूर्वी अफ्रिका)-अखण्ड पाठ:—

श्री पुरुषोत्तम हरजी भोजानी ता: ६-५-५६

नवाह पाठ—सर्व श्रीकरसन जी कल्याण जी ६-१०-५५ से १५-१०-५५ तक सुन्दरजी माधव जी देवजी मूलजी गंगा भगवानजी कानजी जिन्जा १६-१०-५५ से २४-१०-५५ पुरुषोत्तम लाखा १७-११-५५ से २५-११-५५ सनातन धर्म मंदिर ५-१-५६ से १३-१-५६ नाथालाल लाधाराम १६-२-५६ से २४-२-५६, शान्तिप्रकाशजी कौशल १५-३-५६ से २३-३-५६ हरीलाल अन्देर जी हीरालाल १२-४-५६ से २०-४-५६, वलजी हीरामिस्त्री १२-४-५६ से २०-४-५६, रनछोड़दास भगवान जी अढ़िया १०-५-५६ से १९-५-५६, हरजीवन माधव जी ६-९-५६ से १४-९-५६, कानजी माधवजी २६-१०-५६ से ३-११-५६

(सुन्दरकाण्ड) पाठ—सर्व श्रीनानजी भीम जी १-१०-५५ हरनाम भाई पटेल ८-१०-५५ नाथालाल लाधाभाई २२-१०-५५ हरनाम भाई पटेल किरा २९-१०-५५ वासर देसा ५-११-५५ जमनादास पी. चेटवानी ११-१०-५५ पुरुषोत्तम लाखा २६-११-५५ जातूलाल १९-११-५५, हीरालाल आर खेतानी ३-१२-५५, गिरधरलालजी १७-११-५५, सनातनधर्म मंदिर १४-१-५६ अम्बालाल एच ठक्कर २१-१-५६ हरनाम भाई पटेल २८-१-५६ बाबूभाई मुकोनो ४-२-५६ हरीलाल भूराभाई ११-२-५६ नाथालाल लाधाराम २५-२-५६ सनातन धर्म मंदिर ३-३-५६ पोपटलाल जीवराव १०-३-५६ शान्तिप्रकाश कौशल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४-३-५६ हरजीवन जी भयानी ३१-३-५६ मोहनलाल नाथू भाई सोनी ७-४-५६ हरीलाल अन्देर जी हीरालाल २१-४-५६ वलजी हीरामिस्त्री २१-४-५६ श्री मानकलाल २१-४-५६ हरजीवन माधव जी भयानी ५-५-५६ हरीलाल देवचंद्र गढ़िया १२-५-५६ पोपटलाल जीवराव १९-५-५६ गुलाबदास शाह २६-५-५६ कानजी माधवजी २-६-५६ लाटूराम जी ९-६-५६ रामकृष्ण भीमजी जोशी १६-६-५६ मणिशंकर पाण्डया ७-७-५६ सनातन धर्म मंदिर १४-७-५६ वसंतलाल शाह २१-७-५६ अमृतलाल ए घेला जी २८-७-५६ घूमालाल धरमजी ११-८-५६ जमनादास गोवर्धनदास १८-८-५६ श्रीमती मनीवेन पटेल २५-८-५६ केशवजी कानजी वादयानी १-९-५६ हरजीवन माधवजी भयानी १५-९-५६ सनातन धर्म मंदिर २२-९-५६ डाह्या भाई टी. शाह २९-९-५६ रनछोड़भान जी ६-१०-५६ अमृतलालजी शाह १३-१०-५६ विश्वनाथजी त्रिवेदी १५-१०-५६ नाथालाल लाधाभाई २०-१०-५६ अम्बालाल ठक्कर २५-१०-५६ ईश्वरलाल पी. ब्रदर्स १०-११-५६ रामजी लाधा दलाल १७-११-५६ सनातन धर्म मंदिर २४-११-५६ जगजीवन मूलजी पारेख १-१२-५६ हवेलीराम ८-१२-५६ सनातन धर्म मंदिर १५-१२-५६ २२-१२-५६ जगजीवन तुलसीदास २९-१२-५६

किष्किन्धाकाण्ड पाठ — सर्व श्री कावालाल भीमजी ३०-१०-५५ हरीलाल भूराभाई ११-२-५६ पुरुषोत्तम लाखा ८-४-५६ वलजी हीरामिस्त्री २७-८-५६ रविशंकरलाल सोमपुरा १९-१०-५६ हरीलाल भूराभाई सेठ ५-११-५६ मगनलाल वल्लभदास १७-१२-५६ सनातन धर्म मंदिर ३१-१२-५६

संकीर्तनः--- ॐ नमः शिवाय श्री राम जय राम आदि। सर्व श्री नानजी भीमजी ९-१०-५५ २२-१०-५५, २४-१०-५५ पोपटलाल जीवराव २३-१०-५५ कावालाल भीमजी ३०-११-५५ वलजी हीरा मिस्त्री २७-११-५५ सनातन धर्म मंदिर २९-११-५५ पुरुषोत्तम एच भोजानी २२-१-५६ हरलाल भूराभाई सेठ २६-६-५६ हीरालाल आर खेतानी २७-६-५६ बाबूभाई मोकोनो २८-६-५६ पुरुषोत्तम हरजी भोजानी २९-६-५६ सनातन धर्म मंदिर ३०-६-५६ हरजीवन माधवजी भयानी १९-८-५६ प्रागजी कालीदास लाखानी २-८-५६ हीरालाल आर खेतानी ४-११-५६ श्री नानजी भीमजी १०-१०-५६ सनातन धर्म मंदिर १४-११-५६ हरजीवन माधवजी भयानी ४-१२-५६ पुरुषोत्तम हरजीवन २९-८-५६ नारायण दास बनमाली मसक २०-९-५६ देवजी माधवजी सोनी ३०-९-५६ सनातन धर्म मंदिर २३-१२-५६ से २५-१२-५६

मास पारायणः—श्री चतुर भाई बी० पटेल ३-१२-५६, १-१-५७।

—सी० के० जोशी

सक्रिय सदस्य

मानस संघ के नये १० या अधिक सदस्य बनाने वाले सदस्य :—

	पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
(१) श्री खूजूराम जी भोथली	२	१६	१८
(२) श्री रामचन्द्र जी मसकनवां	९	३	१२
(३) महन्त श्री रोशनपुरी कोहड़िया		२६	२६
(४) सन्त श्री विनीत विहारीदास जी चिरगाँव		१९	१९
(५) ,, पं० साधूराम जी पेण्ड्रा		१५	१५
(६) ,, ताराचन्द जी हर्रई		१०	१०
(७) ,, डा० नागेश्वर प्रसाद इटिम्हा		१०	१०

इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या २६ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन समाचार

श्री मारुति सेवा :—अगस्त मास में मानस का एक अखंड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में १५६२.४३ की आय हुई और खर्च ४३६.३७ हुआ बचत ११५३.०६ की हुई। पिछली बचत ३२०.६३ सहित अब १४७३.६६ रही। इसमें से १०००.०० रु० तुलसी संग्रहालय भवन विभाग को दिये गये। अब ४७३.६६ जमा रहे।

२-८-५७

१०.०० श्री भीखमसिंह बनाफर, कवर्धा
२.०० ,, बलसिंह अध्यापक, नहला
१.०० ,, मिश्रीलाल शर्मा, सागोर
१.२५ ,, गिरीश्वरप्रसादसिंह, बाँका
१.२५ ,, नवाबसिंह, मघवापुर
२६.५५ ,, माणकचन्द्र मिलापचन्द्र गुप्त, अराँई
५१.०० गुप्तदान
५.०० श्री शिवकुमार जी,
५.०० ,, पं० गयाप्रसाद पो० मा० रामवन

३-८-५७

५.०० श्री बालकिशोर नन्दकिशोर, सागर
४.०० ,, डा० विश्वनाथसिंह बासनियाकलाँ
१.०० ,, बनमालीप्रसाद त्रिपाठी, सिरसा

४-८-५७

१५.०० श्री डा० केदारनाथ नायक, सतना

५-८-५७

१.२५ श्री शम्भूरतन, उन्नाव
५.०० ,, नन्दलाल शर्मा, इकतासा
५.०० ,, सी० पी० शर्मा, बुरहानपुर
१५.०० ,, पं० व्रजमोहनलाल पाण्डेय, बनारी
२.०० श्रीमती शारदाप्रसाद, सतना

६-८-५७

५.०० श्रीमान् राजासाहब, सोहावल
५.०० श्री तुलाराम शर्मा. हापुड़
५.०० ,, धीरजलाल, बनजरिया
५.०० ,, म० त्रि० भट्ट, सूरत
५.०० श्री जगदेवप्रसाद जी एडवोकेट जौनपुर
५.०० ,, पं० रामाधार चौबे, गनियारी

८-८-५७

१६.०० श्रीमती मझलीरानी साहिबा, अजयगढ़

९-८-५७

२.५० श्री कु० पुरुषोत्तमसिंह, जगन्नाथपुर
१.२५ ,, शिवप्रसाद, औरगांबाद
२.५० ,, लोचनप्रसाद साव जतरी
२.२५ ,, विश्रामसिंह, चैतमा
१.२५ ,, शिवदुलारे मिश्र, छोटी करगी
६.०० ,, कंज जी रामायणी द्वारा, सर्वश्री ताराचन्द सोनी २), गिरजाप्रसाद सोनी २) रूपचन्द्र सोनी १), हरीराम सोनी १),

१०-८-५७

१६.०० श्रीमती मझली राजा साहिबा, अजयगढ़
१३.०० ,, कमलेश्वरी देवी, शंकरगढ़
१५.०० ,, मझलीरानी साहिबा, अजयगढ़
५.०० श्री पं० केदारनाथ, सतना

१२-८-५७

१०.०० श्री शम्भूदयाल अवस्थी, सतना
१६.५६ ,, विष्णुलार्ड कम्पनी, नैरोबी

१४-८-५७

११.०० श्री रतनचन्द्र सोहाने, जबलपुर
१.२५ ,, जानकीप्रसाद बक्शी, झिंझरी
१०.०० ,, मोतीराम पटेल, नेपानगर

१७-८-५७

२५८.७५ श्री रामेश्वलाल सहारिया, रेहाबाड़ी

१९-८-५७

२.५० श्री दिनेश्वरप्रसाद जी, औरंगाबाद
४४.०० ,, फत्तूलाल शर्मा, डंगनिया
७.०० ,, बालकेश्वर जी तिवारी, रीवां

२१-८-५७

५.०० श्री धर्मपाल सतना
०.२५ ,, अप्पाराव, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२-८-५७

५.०० वनमालीप्रसाद शर्मा, रावनभाटा
३०.०० ,, पं० मोहनधर शर्मा वकील, विलासपुर
१५.०० ,, ओंमप्रकाश जी दिल्ली
२.०० ,, हरिशंकर पिता कन्हैयालाल डेहरीसराय
११.०० ,, नारायनप्रसाद शर्मा, डंगनिया
१७.०० ,, गंगाप्रसाद लोधी, नवापारा
५.०० ,, महेन्द्रपालसिंह यादव, गभाना

२४-८-५७

१.०० श्री लल्लूराम जी, जरिया

२६-८-५७

२६.५० श्री गिरधारीलाल हसंराज, मोम्बासा
६.५० ,, जगन्नाथ सूरजमल बोवस १), सर्व श्री चुन्नीलाल २) मोतीलाल १) कन्हैयालाल १) बालचन्द्र ।।) कन्हैयालाल टेलर ।।)
११.०० श्री डालमिया जैन ट्रस्ट, न्यू दिल्ली
२.०० ,, लेखराम पैगवार चिचली
६००.०० ,, विष्णुलार्ड कं० नकुरू

२७-८-५७

१.२५ श्री रामरतन शर्मा, झाँसी
१.२५ ,, आनन्दस्वरूप भटनागर, झांसी
१.०० ,, मेदनीप्रसाद जी, टांयेग
२.०० ,, सीताराम जी महन्त, गनेरा
१.१२ ,, दुर्गाप्रसाद जी मिश्र सलखन
१.२५ गुप्तदान
१.२५ श्री गुजराती कड़वा वल्द मोहन घेगांव
५.०० ,, सीताराम जी, घेगांव
३७.५० श्रीमान् महाराजा साहब सीतामऊ
१०.०० ,, शंकरलाल चांदावत महू
५०.०० ,, जी० पी० जायसवाल, इलाहाबाद

१९-८-५७

१०.०० श्री राममूर्ति अग्रवाल भाटापारा

३०-८-५७

११.०० श्री नारायणदास दर्शनदास आगरा
७.०० ,, चन्द्रभान खजांची किरावली
१.०० ,, रामस्वरूप जी भरुवा सुमेरपुर
१.०० श्री कन्हैयालाल भरुवा सुमेरपुर
५.२५ ,, राममरण मंत्री धनिया
५.०० गुप्तदान
५.०० श्रीमती रामानंदी देवी रांची

३१-८-५७

४९.२५ श्री शृद्धाराम कलार कौवाताल
२७.७० कुल चढ़ोत्री

१५९२.४३ कुल, दाताओं को धन्यवाद

श्री रामनाम सेवा — इस मास में लड्डू आदि की बिक्री से १३.०५ की आय हुई खर्च कुछ नहीं हुआ। पिछली कमी १९४.६३ में यह घटाने पर अब १८१.५८ की पूर्ति करना बाकी है।

श्री विष्णु लार्ड कम्पनी नैरोबी से प्राप्त ३५०) में से १५०) प्रेस, वालों को भेजे जा चुके हैं। शेष २००) कापियाँ तैयार होने पर भेजे जाँयगे।

अगस्त मास में ४१० लड्डू तैयार हुए। दैनिक क्रम में १५५ लड्डू श्री मारुति जी को समर्पण हुए। शेष श्री रामनाम नौका के लिये रखे गये। केन्द्रों की स्थिति इस प्रकार है:— परौंख २१६, जुलिहा-२०९, बांदा २०२, अफ्रिका १९३, मोतीहारी १८१।

श्री तुलसी संग्रहालय भवन — इस मास में ४०.१२ की आय हुई और १०१२.२७ खर्च हुए। कमी ९७२.१४ की हुई जो पिछली कमी ४६१.७६ सहित १४३३.९० हो गई। श्री मारुति सेवा विभाग से १०००.०० इस विभाग में लिये गये। अब ४३३.९० की पूर्ति करना बाकी है।

२-८-५७

११.०० श्री शिवकुमारधर जी किरारी

६-८-५७

११.६२ श्री गंगा सागर राजगढ़िया मोतीहारी द्वारा सर्व श्री नारायणसिंह २।।), शिवदत्त राय २।।), कान्तिभूषण १।), बद्रीप्रसाद केसरीलाल १।), कुञ्जबिहारी १।), परमानन्दप्रसाद १।), हरीन्द्रनाथ १।) फुटकर ।=)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५.०० श्री गोपीलाल बोंदर जी सुसारी
१३-८-५७
१.२५ श्री मंत्री रामायण समिति, गोटेगांव
२२-८-५७
५.०० श्री हरगोविंद सिंह ब्रह्मवंशी जबलपुर
२४-८-५७
१.२५ श्री बद्रीप्रसाद जी मोतीहारी
२५-८-५७
१.२५ श्री भागचन्द जी चीचली
१.२५ ,, कन्छेदीलाल ,,
१.२५ ,, दामोदर श्रीराम जी ,,
१.२५ ,, कालूराम लेखराम ,,
४०.१२

मानस प्रचार —इस मास में सदस्य शुल्क से ३५.५० प्राप्त हुए। शाखाओं से सहायता के रूप में ८२.०० प्राप्त हुए। कुल आय ११७.५० की हुई। खर्च पत्र व्यवहार में ८६.३१ और छपाईमें ११.०० कुल ९७.३१ हुआ। बचत २०.१९ की रही। पिछली कमी १४०७,९२ में यह घटाने पर अब १३८७,७३ की पूर्ति करना बाकी है। मानस सस्ता संस्करण के लिये पूर्ववत् २०) जमा है।

२-८-५७
२.०० श्री बारेलाल ब्रह्मवंशी जबलपुर
६-८-५७
१०.०० श्री पं० चन्दूलाल जी डग
१.२५ ,, शोभालाल माथुर गुरला
९-८-५७
५.०० श्री शिवदुलारे मिश्र, छोटी करगी
१९-८-५७
१६.०० श्री रामचन्द्र जी सोहागपुर
५.०० ,, इन्द्रदत्त जी पुरोहित, जबलपुर
५.०० ,, नर्मदाप्रसाद जी तिवारी ,,
२५-८-५७
१.०० श्री भागचन्द चीचली
१.०० श्री कन्छेदीलाल चीचली
१.०० ,, दामोदर श्री राम जी ,,
१.०० ,, कालूराम लेखराम ,,
१.२५ ,, रामचन्द्र बड़ोन्या ,,
१.२५ ,, सुखलाल पंचमलाल ,,
१.०० ,, मनूराम जी ,,
१.०० ,, मोतीलाल पैगवार ,,
१.०० ,, सखाराम ,,
१.०० ,, कोदूलाल काशीवाले ,,
१.०० ,, शंकरलाल ,, ,,
१.०० ,, करोड़ीलाल ,, ,,
१.०० ,, मिट्ठूलाल ,, ,,
१.०० ,, भगवानदास ,, ,,
१.०० ,, राधेलाल ,, ,,
१.०० ,, धन्नालाल पैगवार ,,
१.०० ,, मथुराप्रसाद ,,
१.०० ,, अयोध्याप्रसाद ,,
१.०० ,, गुन्ना जी ,,
१.०० ,, अमृतलाल ,,
१.०० ,, सुन्दरलाल ,,
१.०० ,, गौरीशंकर ,,
.५० ,, रामचन्द्र ,,
.५० ,, छोटेलाल ,,
१.०० ,, बलीराम ,,
१.०० ,, छोटेलाल ,,
२६-८-५७
५.०० श्री जगदीशप्रसाद अग्रवाल रामपुर
४.०० ,, विष्णुदास घेगाँव
२.५० ,, रामचन्द्र शर्मा दिल्ली
३०-८-५७
१.२५ गुमास्ता श्री भूपतसिंह, नयागाँव
८२.००

नई कुटिया — पूर्ववत् १४३६.२८ की पूर्ति करना बाकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरितमानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ॥) है। जहाँ नौ सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के ३६२७१ सदस्य हैं और १६६६ शाखायें हैं।

२—रामचरितमानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस-मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से कुल ६३ ग्रन्थ छप चुके हैं।

४—श्रीरामचरितमानस-पत्र-व्यवहार विद्यालय द्वारा मानस संघ घर बैठे श्रीरामचरितमानस की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य विषय तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क १०) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में साधन भजन करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमारुति जी को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

* हर विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है *

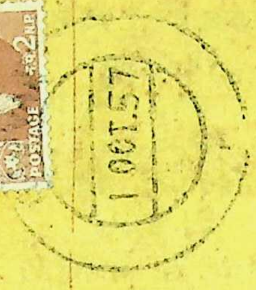

'मानस-मणि'

पो०—रामवन (सतना)

प्रा० नं०— 7

श्री सम्पादक जी गुरुकुल पत्रिका
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार
द्वा० गुरुकुल कांगड़ी
(हरिद्वार)

सम्पादक—पं० तारकेन्दु शेखर तिवारी। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)
मुद्रक—नीरज जैन, सुषमा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस मणि

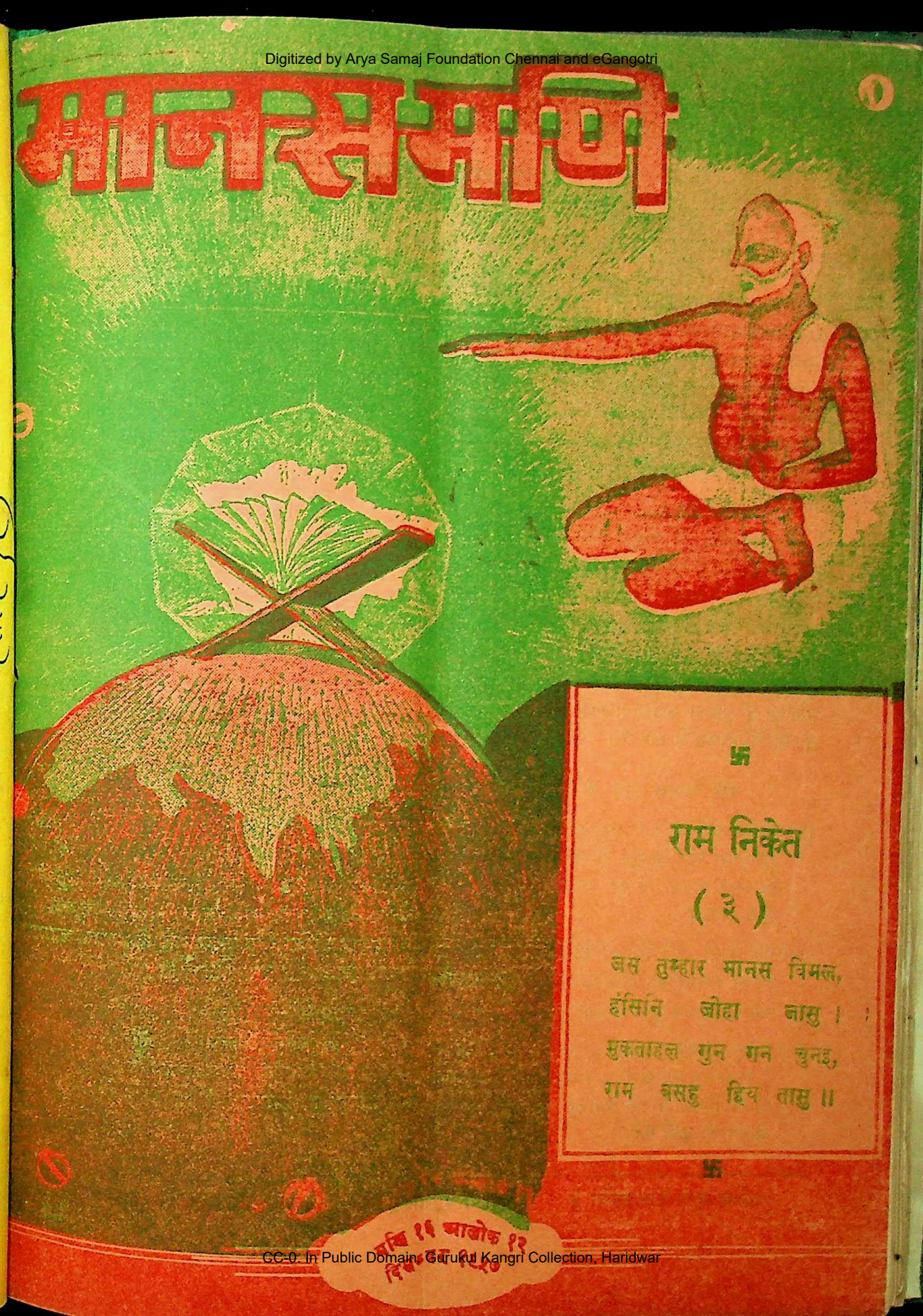

卐

राम निकेत

(३)

जस तुम्हार मानस विमल,
हंसिनि जीहा जासु ।
मुकताहल गुन गन चुनइ,
राम बसहु हिय तासु ॥

卐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी आशा

ग्राहकों से विशेष निवेदन

मानस संघ तथा रामवन आश्रम की प्रगति का मुख्य श्रेय मानस मणि के प्रेमी पाठकों को है। हमारी ग्राहक संख्या इतनी भी नहीं है कि मणि स्वावलम्बी हो। पर हैं हमारे सब ही ग्राहक सच्चे मानस प्रेमी और मानस प्रचार के लिये उत्साही। तब ही तो संस्था अपने वर्तमान रूप को प्राप्त कर सकी है। जो कोई भी रामवन आता है प्रसन्न होता है।

मानस मणि की ग्राहक संख्या वृद्धि से पत्र स्वावलम्बी तो हो ही जायगा, मानस प्रचार में भी प्रगति होगी। अभी रामवन एक धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्थल है। इसके साहित्यिक अंग की भी विशेष परिपुष्टि हो जायगी। थोड़े से त्याग से आप इसे एक साहित्यिक तीर्थ बना दे सकते हैं। आपके बल पर ही इसका उद्योग प्रारम्भ किया गया है—तुलसी संग्रहालय के रूप में।

हमें आपसे कुछ आशा है।

(१) ग्राहक संख्या १ से २००० तक का वार्षिक मूल्य इस अंक से पूर्ण हो जायगा। प्रार्थना है कि आप अपना चन्दा ३) मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज दें।

(२) दो मित्रों को नये वर्ष से ग्राहक बनाकर उनका चन्दा भी साथ ही भेजें। १९५८ के सक्रिय सदस्य आप अवश्य बनें।

(३) जिन ग्राहकों की ग्राहक संख्या २००० से ऊपर है उनका चन्दा अभी पूरा नहीं हो रहा है। वे दो मित्रों को ग्राहक बनाकर उनका ही चन्दा भेजने की कृपा करें।

कृपया वी० पी० न मंगावें। सरकार ने पुनः डाक महसूल बढ़ा दिया है। आप व्यर्थ अपनी तथा अपने मित्रों की हानि न करें। यदि किसी कारणवश आगामी वर्ष आप ग्राहक न रह सकें तो कृपया सूचना अवश्य भेज दें।

मानस मणि का जनवरी का अंक तारीख १ जनवरी १९५८ को पोस्ट हो जायगा। जिन ग्राहकों का चन्दा ३१-१२-५७ तक न आ जायगा अथवा जिनका निषेध पत्र न आ जायगा उनके नाम ८-१-५८ से वी० पी० जाना प्रारम्भ हो जायगा। डाकखाने वाले जितनी वी० पी० ले सकेंगे नित्य उतनी उन्हें दी जायगी। यदि सब प्रेमी ग्राहक रुपये भेज दें तो हमें वी० पी० भेजनी ही न पड़ें।

एक विशेष महत्व पूर्ण बात और भी ध्यान में रखी जाय। मानस मणि अभी जितना छपता है, जनवरी का अंक उससे अधिक छपेगा। हमारे अधिकांश ग्राहक दो दो नये ग्राहक बनावेंगे, इसका हमें भरोसा है। यदि अधिक छपने वाले अंक जल्दी ही पूर्ण हो गये तो वी० पी० की प्रतीक्षा करनेवालों को जनवरी का अंक नहीं मिल सकेगा। उन्हें फरवरी १९५८ से जनवरी १९५९ तक के लिये ग्राहक बनाया जायगा। आपकी फाइल न बिगड़े इसलिये भी आवश्यक है कि आप अपना चन्दा मनीआर्डर द्वारा भेज दें।

वर्तमान वर्ष की मेरी अन्तिम प्रार्थना आपसे यही है कि आप संकल्प कर लें कि १९५८ में मानस मणि को स्वावलम्बी बना देंगे और उद्योग करके यह काम कर डालें।

—शारदाप्रसाद

वार्षिक मूल्य तीन रुपया] विदेश में ६ शिलिङ्ग [वी० पी० से तीन रु० ६५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीसीत म ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १६ | रामवन—अगहन, मानस सम्वत् ३८४—दिसम्बर १९५७ ई० | आलोक १२

दूलह राम

दूलह राम, सीय दुलही री।
घन-दामिनि-बर बरन-हरन-मन सुन्दरता नखसिख निबही, री॥
ब्याह-बिभूषन-बसन-बिभूषित, सखि-अवली लखि ठगि सी रही, री।
जीवन-जनम-लाहु लोचन-फल है इतनोइ, लह्यो आज सही, री॥
सुखमा-सुरभि सिंगार-छीर दुहि मयन अमिय-मय कियो है दही, री।
मथि माखन सिय राम सँवारे, सकल-भुवन-छवि मनहुँ मही, री॥
तुलसिदास जोरी देखत सुख सोभा अतुल न जाति कही, री।
रूप-रासि बिरची बिरंचि मनो, सिला-लवनि रति-काम लही, री॥

गीतावली से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, डी. लिट्]

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना।
पठयेसि मेघनाद बलवाना॥
मारेसि जनि सुत बाँधेसु ताही।
देखिय कपिहि कहाँ कर आही॥
चला इन्द्रजित अ-तुलित-जोधा।
बन्धु निधन सुनि उपजा क्रोधा॥
कपि देखा दारुन भट आवा।
कटकटाइ गर्जा अरु धावा॥
अतिबिसाल तरु एक उपारा।
बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा॥
रहे महाभट ता के संगा।
गहि गहि कपि मर्दइ निज अंगा॥
तिन्हहिं निपाति ताहि सन बाजा।
भिरे जुगल मानहुँ गजराजा॥
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई।
ताहि एक छन मुरुछा आई॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहु माया।
जीति न जाइ प्रभंजन जाया॥

दोहा—ब्रह्म अस्त्र जेहि साधा कपि मन कीन्ह बिचार।
जौ न ब्रह्म सर मानउँ महिमा मिटइ अपार॥१६॥

सुत का वध सुन लंकेश (बड़ा) क्रुद्ध हुआ। उसने बलवान मेघनाद को भेजा। (उसने कहा) हे पुत्र! उसे मारना नहीं किन्तु बांधकर ले आना। देखूँ तो वह कहाँ का कपि है (जो इतना बलशाली बन गया)। इन्द्र को भी जीत लेने वाला वह अतुलित योद्धा (मेघनाद यह सुनकर आगे) चला। बंधु का निधन सुनकर उसमें क्रोध भड़क उठा था। कपिने देखा (अब की बार) दारुण भट आया है (इस लिये) किट किटा कर (उन्होंने) गर्जना की और (उसकी ओर) दौड़ पड़े। (उन्होंने) एक बहुत विशाल वृक्ष उखाड़ा और (उसके प्रहार से) लंकेश कुमार को रथ हीन कर दिया (मतलब यह कि उसका रथ तोड़ डाला)। उसके संग जो महाभट थे उन्हें पकड़ पकड़ कर कपि ने अपने अंगों में रगड़ना आरम्भ किया। [वानरी आकृति और प्रकति के अनुकूल ही तो था यह!] उन्हें मारकर (हनुमान जी) उस (मेघनाद) के साथ भिड़गये। ऐसा जान पड़ा मानो दो गजराज (परस्पर) भिड़ रहे हों। कपि ने उसको एक घूंसा मारा और (आप तुरन्त कुछ दूर जाकर) झाड़पर चढ़ गये। (घूंसे की चोट से) उसको एक क्षण के लिये मूर्छा आगई। (मूर्छा के अनन्तर) उठ कर फिर उसने बहुत प्रकार के माया प्रयोग किये। (माया युद्ध में तो वह कुशल था ही) परन्तु प्रभंजन-जात (कपि) जीते न जा सके। (माया प्रयोग सब हवा में उड़ गये)। तब मेघनाद ने ब्रह्मास्त्र साधा। (उस समय) कपि ने मन में विचार किया कि यदि ब्रह्मास्त्र (की अमोघता) को मैं मान्यता न दूंगा तो उसकी अपार महिमा मिट जायगी।❀

ब्रह्मबान कपि कहुं तेहि मारा।
परतिहुं बार कटकु संघारा॥

❀ हनुमान जी को रावण के समक्ष तो पहुँचना ही था। अतएव ब्रह्मास्त्र को भी विफल करने के कष्ट कर प्रयास के बदले उसकी महिमा को नतमस्तक होकर स्वीकार कर लेना ही इस समय श्रेष्ठ है—ऐसा उन्होंने निश्चिय किया। ब्रह्मास्त्र युद्ध कौशल का अंतिम अस्त्र प्रयोग है। यदि वह भी विफल हुआ तो समझ लिया जाता है कि प्रयोक्ता की अब पूरी हार हो गई। हनुमान जी यह स्थिति आने नहीं देना चाहते थे क्योंकि हारजीत का अन्तिम निर्णय तो भगवान राम के आने पर होनेवाला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ।
नागपास बांधेसि लेइ गयऊ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी।
भव बंधन काटहिं नर ग्यानी॥
तासु दूत कि बंध तर आवा।
प्रभु कारज लगि कपिहि बँधावा॥
कपिबंधन सुनि निसिचर धाये।
कौतुक लागि सभा सबु आये॥
दस-मुख-सभा दीखि कपि जाई।
कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई॥
कर जोरे सुर दिसिप बिनीता।
भृकुटि बिलोकत सकल सभीता॥
देखि प्रताप न कपि मन संका।
जिमि अहिगन महँ गरुड़ असंका॥

दोहा—कपिहि बिलोकि दसानन बिहँसा कहि दुर्बाद।
सुत-बध-सुरति कीन्हि पुनि उपजा हृदय बिषाद॥२०

उसने कपि को ब्रह्मास्त्र मारा। (कपि उसकी चोट खाकर गिर तो पड़े किन्तु) गिरते गिरते भी उन्होंने कटक का संहार कर दिया। मेघनाद ने देखा कि कपि मुर्छित हो गये हैं (अतएव उसने उन्हें) नागपाश में बांधा और ले गया। (कथाकार शंकर जी कहते हैं) "हे भवानी! जिसका नाम जप कर ज्ञानी मनुष्य भव बंधन काट देते हैं उसका दूत कहीं बंधन के नीचे आ सकता है? (यह तो) प्रभु ने (ही अपने) कार्य के लिये कपि को बंधवा दिया। अथवा यों कहिये कि उस नागपाश ने ही प्रभु-कार्य के लिये ही कपि को बंधवा दिया।"

कपि-बन्धन की बात सुनकर निशाचर लोग दौड़ आये और कौतूहल वश सब के सब (नाग-पाश बद्ध हनुमान जी के साथ ही साथ) रावण की राज सभा तक पहुँच गये। कपि ने वहां पहुँच कर दश-मुख सभा देखी। उस सभा की इतनी विशाल प्रभुता थी कि कुछ कहते ही नहीं बनता‡ देवता लोग और दिक्पाल तक विनीत हो कर हाथ जोड़े हुए (खड़े) थे और सभीत होकर रावण की भृकुटी देख रहे थे (कि कहीं किसी बात में त्योरियां तो नहीं तन रही हैं; नहीं तो न जाने किस पर क्या आफत ढह पड़े)। (उसका वह) प्रताप देखकर कपि के मन में (किसी प्रकार की) शङ्का (हुई ही) नहीं! (वे वैसे ही निःशंक निर्भीक रहे) कपि को देखते ही (दशमुख रावण पहले तो) दुर्बाद कह कर जोर से हँसा□ फिर उसने सुतवध की याद की जिससे उसके हृदय में विषाद उत्पन्न हुआ।

कह लंकेस कवन तैं कीसा।
केहि के बल घालेसि बन खीसा॥
की धौं स्रवन सुनेहि नहिं मोही।
देखउं अति असंक सठ तोही॥
मारे निसिचर केहि अपराधा।
कहु सठ तोहि न प्रान कै बाधा॥
सुनु रावन ब्रह्मांडनिकाया।
पाइ जासु बल बिरचति माया॥
जाके बल बिरंचि हरि ईसा।
पालत सृजत हरत दस सीसा॥
जा बल सीस धरत सहसानन।
अंडकोस समेत गिरि कानन॥
धरे जो बिबिध देह सुरत्राता।
तुम से सठन्ह सिखावनुदाता॥
हरकोदंड कठिन जेहि भंजा।
तोहि समेत नृप-दल-मद गंजा॥
खर दूषन त्रिसिरा अरु बाली।
बधे सकल अतुलित-बल-साली॥

दोहा—जाके बललवलेस तें जितेहु चराचर झारि।
तासु दूत मैं जा करि हरि आनेहु प्रिय नारि॥२१

लंकेश ने कहा "रे कीश! तू कौन है? किसके बल से तूने अशोक वन नष्ट कर दिया? क्या तूने

‡ प्रभु का दास प्रभुता का चमत्कार देख रहा है परन्तु कहाँ प्रभु कहाँ प्रभुता। अतएव यह 'अवर्णनीय' भले ही हो परन्तु कपि के लिये आकर्षक तो हो ही न सकती थी।

□ दस मुखों के दुर्वादों और उनके अट्टहास का क्या कहना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे (अर्थात मेरी प्रभुता को) नहीं सुना ? (क्योंकि) रे शठ ! मैं तुझे अत्यन्त निःशंक (भावसे) देख रहा हूँ। (तूने) राक्षसों को किस अपराध से मारा ? अरे शठ ! बोल, क्या तुझे (अपने) प्राणों की बाधा नहीं है ?" (हनुमानजी ने उत्तर दिया) सुनो रावण ! जिसका बल पाकर माया ब्रह्मांड-निकायों की विशिष्ट रचना कर देती है, हे दशमुख जिसके बल से ब्रह्मा, विष्णु और महेश पालन, सृजन तथा संहार करते रहते हैं, जिसके बल से सहस्रमुख शेष अपने सिर पर गिरि कानन सहित (यह) ब्रह्माण्ड-कोष धारण किये रहते हैं जिसने तुम्हारे सरीखे शठों को सिखावन देने वाले तथा देवताओं का त्राण करने वाले (विविध) शरीर धारण किये हैं, जिसने (इस वर्तमान रामावतार में) कठिन हर-कोदण्ड का भंजन किया है और तुम्हारे सहित (सम्पूर्ण आगत) नृप दलों के मद का भंजन किया है तथा अतुलित बलशाली खर, दूषण, त्रिशिरा (आदि) सभी का वध किया है; जिसके बल लवलेष से तुमने चर और अचर सबको जीत लिया है (और अब) जिसकी प्रिय नारी को तुम हर ले आये हो मैं उस (सर्वसमर्थ परमात्मा राम) का दूत हूँ।†

† यह रावण के पहिले प्रश्न का (अर्थात् तू कौन है और किस के बल से वन नष्ट किया का) उत्तर है। शेष प्रश्नों का उत्तर आगे की पंक्तियों में है। हनुमानजी का उत्तर बड़ा मार्मिक है। अपने परिचय के लिये वे अपने प्रभु की महत्ता बता देना ही पर्याप्त समझते हैं और अपने को केवल उनका दूत कह देते हैं। हनुमान जी ने संक्षेप में प्रभु राम के निराकार रूप, सुराकार रूप और नराकार रूप का सुन्दर दिग्दर्शन करा दिया है। प्रथम दो पंक्तियां निराकार रूप की, दूसरी दो पंक्तियां सुराकार रूप की और तीसरी दो पंक्तियां नराकार रूप की झाँकियाँ दे रही हैं। अंतिम दोहे में प्रथम प्रश्न का सामूहिक उत्तर समाहित है और रावण के लिये तीखी चेतावनी भी है कि अपने मूल शक्ति-श्रोत को वह स्वतः न भूल बैठे। रामरूप के इस त्रैविध्य का विशेष विवरण मेरे अन्य ग्रंथ "तुलसी दर्शन" में देखा जा सकता है।

सक्रिय सदस्य

मानस संघ के नये १० या अधिक सदस्य बनाने वाले सदस्य :—

	पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
(१) श्री रामरक्षित जी रामायणी बनारी	३७	२९	६६
(२) ,, गंगासागर राजगढ़िया मोतीहारी	१३	६	१९
(३) ,, हरप्रसाद जी सोनपांडर	—	१८	१८
(४) श्रीमती सुशीलादेवी इलाहाबाद	१२	२	१४
(५) श्री पन्नालाल जी पचोखरा	५	८	१३
(६) ,, रामनारायण जी देवरी	—	१२	१२
(७) ,, मनराखन जी साहू खैरा	९	१	१०
(८) ,, धनेश्वरप्रसाद 'धन्ने' रेड़ा	—	१०	१०
(९) ,, रामसेवक जी ललितपुर	—	१०	१०

इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ३७ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त-समागम

[श्री शारदाप्रसाद जी]

(२)

चित्रकूट से लौटकर मैं श्री महाराज रामप्रसाद जी के दर्शन करने गया। संध्या समय था वे एक खाट पर बैठे हुए थे। छोटी सी कुटिया के भीतरी भाग में उनकी खाट थी, बाहर छोटा सा ही बरामदा था। प्रणाम करके उसमें ही हम लोग बैठ गये। परिचय और कुशल प्रश्न के उपरान्त उन्होंने उपदेश प्रारम्भ किया। यह लगभग आधे घन्टे तक चलता रहा, उन्होंने क्या कहा था यह अब स्मरण नहीं है पर मैं यह भूल नहीं सकता कि उनकी विद्वता की अमिट छाप मुझ पर पड़ी थी।

इसके बाद बराबर मैं उनके पास जाता रहा। श्री ठाकुर साहब दुर्जनपुर ने भूमि दे ही दी थी, उसमे काम भी लगा दिया गया था। उस भूमि से लगभग एक मील पर श्री महाराज जी की कुटिया थी। एक पंथ दो काज सधते थे। महात्मा का दर्शन करना और बगीचे का काम देखना। हर बार वे कुछ उपदेश करते थे और यह मौलिक होता था। थोड़े ही दिनों में मुझे यह अनुभव होने लगा कि श्री महाराज जी विद्वान ही नहीं हैं, तपस्वी त्यागी और साधन सम्पन्न भी हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि वे प्रथम सिद्ध महात्मा थे जिनसे मैंने सर्व प्रथम आत्मिक संतोष लाभ किया।

बगीचे की भूमि इस स्थिति पर पहुँच गई कि उसमें वृक्षारोपण प्रारम्भ किया जाय। मैंने श्री महाराज जी से प्रार्थना की कि पहिला वृक्ष वे लगा दें। उन्होंने स्वीकार कर लिया। मुहूर्त निकलवा लिया गया और मैंने यह उचित समझा कि उस समय कुछ ब्राह्मण भोजन भी हो जाय। यह प्रस्ताव भी मैंने श्री महाराज जी के सन्मुख रखा। उन्होंने कहा कि हमारे पड़ोसी ये सब गर्ग चले चलेंगे। ये लोग बनावेंगे तो हम भी पा लेगें। ऐसी ही व्यस्था की गई। समय पर मैं श्री महाराज जी के पास गया और मोटर पर उन्हें ले आया। जिस समय सरकारी सड़क छोड़कर मोटर कच्ची सड़क में उतरी उसी समय हल्की वर्षा प्रारम्भ हो गई। स्पष्ट ही इन्द्रदेव ने श्री महाराज जी का स्वागत किया। हम लोगों के मोटर से उतरते तक में वर्षा बन्द हो गई।

कुये के समीप ही चबूतरे पर सब लोग बैठे हुये थे। श्री महाराज जी ने कहा कि "इस भूमि में हम कई बार आये हैं पर तब हमने ध्यान नहीं दिया था। आज यहाँ कुछ देर बैठने से यह बात ध्यान में आ रही है कि यह सिद्ध भूमि है। यहाँ जो कोई साधन करेगा सफल होगा।" मैंने कहा कि यह बात मेरी समझ में नहीं आती। मैं तो फलों का बगीचा लगा रहा हूँ और आप साधन भजन और सिद्धि की बात कर रहे हैं। इस पर उन्होंने कहा "तुम नहीं समझते हो इसी से हमने कहा" मुझे क्या मालूम था कि महाराज भूमि का भविष्य बता रहे थे। आगे चल कर यह स्थान रामवन बनने वाला था।

कुछ देर बाद श्री महाराज जी ने वृक्षारोपण किया और उनके हाथ का लगाया हुआ पीपल का वृक्ष आज तक रामवन में हरा भरा है। पहिले तो इस पूरी भूमि में केवल एक कैमा (बृन्दावनी कदम्ब) का वृक्ष था। उसे सुरक्षित रखा गया है और अब वह बहुत से वृक्षों का एक भीटा ही बन गया है। इस प्रकार श्री महाराज जी का लगाया अश्वत्थ रामवन का द्वितीय वृक्ष होते हुये भी अरोपितों में प्रथम है। इस भूमि का आदिम निवासी होने का गौरव उस कैमा वृक्ष को ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री महाराज जी से घनिष्टता बढ़ती जाती थी। मैं चाहता थाकि कुछ सेवा का अवसर मिले पर उन्हें किसी सेवा की आवश्यकता न थी। रहने को कुटिया थी, लेटने और बैठने को खाट थी और नित्य एक सीधा श्री ठाकुर साहब दुर्जनपुर के यहाँ से आ जाता था। पड़ोस में गर्ग परिवार रहता था उनके यहां ही भोजन बन जाता था। दूसरे तीसरे दिन मैं उनके पास जाता था। एक दिन उन्हें स्वामी बालकदास जी की याद आ गई, कहने लगे बड़े ऊँचे संत हैं, बहुत दिनों से उनका पता नहीं मिला है; बाबू उनका पता लगाओ। गोविन्दगढ़ और रामपुर नैकिन के बीच कहीं होंगे। मैंने कहा कि वे किसी ग्राम में होंगे भी तो मैं पता कैसे लगा सकूंगा। मैं तो सड़क से मोटर द्वारा निकल ही जाता हूं। अनेक बार ऐसी चर्चा होती रही।

एक दिन मेरे उनके पास पहुँचते ही श्री महराज जी ने कहा कि स्वामी जी का पता लग गया। ककलपुर करौंदी में जिस काछी के यहां हैं वह खुद आया था। जाकर उनका पक्का समाचार लाओ। इसके कुछ दिन बाद मैं वहाँ गया, श्री स्वामी जी के दर्शन किये, उनसे मैंने कहा कि महराज श्री रामप्रसाद जी ने मुझे आपके पास भेजा है। यह सुनकर स्वामी जी के नेत्रों में आंसू आ गये। पलंग पर बैठे बैठे ही उन्होंने प्रणाम किया। कहा कि मैं महाराज जी के दर्शन करने को बहुत लालायित हूँ पर ६० वर्ष का शरीर है जीर्ण हो गया डोल डाल जाने तक की शक्ति नहीं है। काछी भगत संभाल कर ले जाता है। मैं महाराज जी की सेवा में नहीं पहुँच सकता हूँ। आप मेरी ओर से उनसे बिनती कीजिये कि दर्शन देने की कृपा करें। एक बार दर्शन मिल जाँय तो हमें तरने का भरोसा हो जाय।

उनकी अन्तिम बात ने मुझे अचम्भे में डाल दिया। श्री महाराज जी उनके समाचार पाने को उत्सुक हैं और उन्हें श्री महाराज जी के दर्शन से मुक्ति की आशा है। दोनों ही सन्तों के प्रति मेरी श्रद्धा बहुत बढ़ी। मैंने कहा कि मैं आपकी बात उनसे कहूँगा और वे आना स्वीकार करेंगे तो अपनी मोटर में यहाँ ले आऊँगा।

लौटकर श्री महराज जी से मैंने सब हाल कहा वे तुरन्त जाने को तैयार हो गये। उस ओर का अपना व्यापारी काम निकालकर चौथे या पाँचवें दिन मैं श्री महराज जी को लेकर करौंदी गया। मार्ग में श्री महराज जी ने कई बार कहा, बाबू तुमने सत्संग का नाम सुना है देखा नहीं है, आज तुम्हारी समझ में आयेगा, सत्संग किसे कहते हैं। मैं कहता था कि यह मेरा सौभाग्य होगा।

करौंदी पहुँच कर काछी के द्वार पर मैंने मोटर खड़ी की। श्री महराज जी अपने साथ रामभरोसा महराज को ले गये थे। उन्होंने कहा भरोसा देखो स्वामी जी सोते हों तो जगाये न जाँय जागते हों तो कहो कि हम आये हैं। भरोसा महराज मोटर से उतरे ही थे कि मैंने देखा कि श्री स्वामीजी अपने कमरे से निकलकर आंगन में आ गये हैं। मैंने श्री महाराज जी से कहा स्वामी जी आ रहे हैं। यह सुनते ही श्री महाराज जी मोटर से उतरे और आगे बढ़े। उन्होंने काछी के चौखट पर पैर रखा ही होगा कि श्री स्वामी जी त्राहिमाम् त्राहिमाम् कहते हुये साष्टांग हो गये। श्री महराज जी ने भी उन्हे साष्टांग प्रणाम किया और तुरन्त उठकर आगे बढ़े। स्वामी जी तो लेटे ही रह गये थे उन्हें श्री महाराज जी ने उठाया और गले से लगा लिया। स्वामी जी के नेत्रों से धाराप्रवाह हो रहा था बड़ी कठिनाई से वे कह सके 'राख तो लिहेन बड़े अइसनै करत हैं।

मैंने भी स्वामी जी को साष्टांग प्रणाम किया और एक ओर खड़ा हो गया। काछी भगत का सारा परिवार आंगन में आ गया था और साष्टांग प्रणाम कर करके सब दोनों संतों को घेरे खड़े थे। के अद्भुत दृश्य था किसी के हाथ में लोटा था किसी थाली कोई गिलास में हो जल लिये ही खड़ा था। यह समझ में नहीं आता था कि इतनी जल्दी बर्तन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँज धोकर और जल भरकर ये सब कैसे आ गये, किसी ने तुरन्त कमरे में चटाई बिछा दी और दोनों संत उस पर बैठ गये। थाली रखकर श्री महाराज जी के पैर धोये गये, स्वामी जी सहित सबने चरणामृत लिया शेष जल सब घर में छिड़का गया। प्राचीन भारतीय परम्परा का स्वागत देखने का मुझे पहिला अवसर प्राप्त हुआ।

दोनों संतों में वार्तालाप होता रहा। साधारण सी बातें होती थीं पर उनमें भी कुछ अद्भुत रस आ रहा था। श्री स्वामी जी ने मुझसे कहा बाबू आपने महाराज जी के दर्शन कराये हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं। संध्या समय श्री महाराज जी ने मुझसे पूछा कि मैं पलंग पर सोऊँगा या साथरी में। मैंने साथरी शब्द रामायण में पढ़ा था पर साथरी देखी न थी। मैंने कहा कि साथरी में सोऊँगा। कोदो के पैरे की साथरी बनी और भोजनोपरांत मैं भी उसमें सोया। माघ, फागुन का महीना था रात में नींद खुली तो मैं पसीने से तर था।

दूसरे दिन सबेरे श्री महाराज जी को वहीं छोड़कर मैं चुरहट चला गया उस दिनरात वहीं रहा। दूसरे दिन तीसरे पहर लौटकर करौंदी वापस आया। सन्तों का भण्डारा हो रहा था मुझे भी थोड़ा सा प्रसाद मिल गया। लौटने की तैयारी होने लगी मैंने श्री स्वामीजी से कहा दो दिन के बीच में आपने अनेक बार कहा है कि आप मुझसे बहुत प्रसन्न हैं। मैं जो चाहूँ सो माँग लूँ। क्या सचमुच आप देंगे। उन्होंने कहा हाँ जरूर देंगे, इस पर मैंने यह मांगा कि जो बगीचा मैं लगा रहा हूँ कुछ दिन आप उसमें रहिये और श्री महराजजी भी रहें। दोनों ही संतों ने मेरी यह बात मान ली।

× × ×

बगीचे में कोई कुटिया न थी। जो बन रही थी उसे जल्दी से पूरी कराया। दोनों संतों के ठहरने लिये स्थान हो गया। बीच में जाकर मैं स्वामी जी से तिथि निश्चय करा लाया था। निश्चित तिथि पर मैं सबेरे ही मुकुन्दपुर पहुँच गया और स्वामी जी आकर मोटर में बैठ गये। उनकी अनुमति लेकर मैं मुकुन्दपुर से रीवा गया, वहां से अपने बड़े भाई बाबू गुरुप्रसाद (जज हाई कोर्ट) को साथ में लिया और रामवन आगया। श्री स्वामी जी को पहुँचाकर मैं श्री महाराज जी की कुटिया पर गया और उन्हें भी लेआया। दोनों सन्तों का पुनर्मिलन हुआ और उसी क्रम से स्वागत किया गया जिससे करौंदी में हुआ था। पर यहां बहुत बड़ी कमी थी। काछी परिवार में जो हृदय की निर्मलता थी वह यहां कहां से आती। यहां यदि कोई निर्मल मन था तो मेरे बड़े भाई ही थे पर वे भी तो लगभग अतिथि की तरह कुछ घण्टे के लिये ही आये थे। सन्तोष की बात इतनी ही थी कि दोनों सन्त प्रसन्न थे।

रामवन में गृह प्रवेश का उत्सव इन दो महान सन्तों के द्वारा सम्पन्न हुआ दोनों ने चैत्र की पूरी नवरात्र रामवन में निवास किया। दोनों का सत्सङ्ग अद्भुत था, न कभी कोई किसी को उपदेश देता न कभी ज्ञान चर्चा होती थी। सहज स्वभाव से साधारण सी बातें होती रहती थीं और सुनने वालों को देहाभास नहीं रह जाता था; उनके सत्संग का लाभ उठाकर आज के तथाकथित सत्संगों पर श्रद्धा ही नहीं रहती। स्वामी जी के सामने १५ वर्ष का एक बालक भी पहुँच जाय तो थोड़ी ही देर में वह समझ जाता था कि वह महात्मा है और स्वामी जी अबोध व्यक्ति हैं। भोजन करने के समय स्वामी जी प्रतीक्षा में बैठे रहते थे जब श्री महाराज जी दो-चार ग्रास पा लेते थे तब वे उनकी ओर हाथ बढाकर अत्यन्त विनम्र भाव से कहते थे "मोहीं एक कौरा मिल जाय" श्री महाराज जी का 'सीतप्रसाद' अपनी थाली में रख लेते थे और तब प्रसाद पाना प्रारम्भ करते थे। कोई भी काम महराज जी के आज्ञा लिये बिना नहीं करते थे।

× × ×

"बाबू उसका हाल हमसे न पूछो वह बड़ी विपत्ति थी"। मैं धृष्ट हो गया था। पीछे पड़ गया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर एक दिन स्वामीजी को कुल प्रसङ्ग कहना ही पड़ा। श्री महाराज जी से मैं पहिले सुन चुका था, फिर भी उनसे ही सुनने की अभिलाषा थी।

अब से लगभग सत्तर-अस्सी वर्ष पहिले की बात है। प्रयाग में कुम्भ का अवसर था, स्वामी जी तरुण थे इसी से गुरुदेव ने बालकदास नाम रखा था। जम्मू की महारानी ने कितने ही वर्षों का अनुष्ठान किया था; पूर्ति के लिये जागृत लिंग का पूजन आवश्यक था। मेला क्षेत्रमें नित्य मुनादी होती थी पर कोई साधु पूजा कराने नहीं गया। स्वामी जी के गुरुदेव ने कहा बालकदास जाओ पूजा करा आओ। इन्होंने बहुत कुछ कहा मुझे इस झगड़े में क्यों डालते हैं पर गुरुदेव न माने; उनके विचार से किसी का न जाना पूरी साधु समाज के लिये लज्जा की बात थी। ये जम्मू केम्प में गये और कहा हम पूजा करायेंगे। उन्होंने कहा सन्यासी की पूजा का विधान है आप वैष्णव हैं। इन्होंने कहा कि हमने पूजा कराना निश्चित कर ही लिया है हमारी सन्यास दीक्षा करादी जाय। सन्यास दीक्षा करादी गई और ३ दिन बाद पूजा हुई।

प्रातःकाल लगभग ६ बजे बालकदास को सर्वथा नग्न कर दिया गया। काश्मीर की पांच छः अतीव सुन्दरी नवयुवतियों ने इनके शरीर में उपटन लगाया, तेल लगाया और स्नान कराया, इसके बाद इन्हें एक ढालू चौकी पर लेटा दिया गया और पूजन प्रारम्भ हुई। महारानी साहिबा पूजन करती थीं और सुन्दरियाँ सामग्री प्रस्तुत करती थीं। अनेक को तो खड़े खड़े इनकी ओर घूरने का ही काम दिया गया था। मालुम नहीं कितनी बार पूजन हुआ, थकावट से यदि वे आंख मीजते थे तो इनसे कहा जाता था कि आंख क्यों बन्द करते हैं सामने देखते रहिये। पांच बजे पूजन समाप्त हुई। आठ नौ घण्टे एक रूप में इन्हें पड़ा रहना पड़ा इसके बाद ये जब उठकर खड़े हुए तब राज गुरु ने कहा हमारी पूजा तो निष्फल हो गई, विधान तो जागृत लिङ्ग का है और आप नपुंसक हैं। इन्होंने उत्तर दिया कि यदि इतनी ही बात है तो आपकी पूजा निष्फल नहीं हुई। मैं नपुँसक नहीं हूँ। इनके बारम्बार ऐसा कहने पर भी वे नहीं माने और उन्होंने कह दिया कि आप प्रमाणित करें। लाचार हो इन्होंने ताल ठोंका और राजगुरु ने इच्छित प्रमाण पा लिया। राजगुरु इनके चरणों पर गिर पड़े और तोपों की सलामी दी गई। पूजा में चढ़ा हुआ धन ३० हजार रुपये इनके सामने रखा गया। इन्होंने कहा, हमने धन के लिये पूजन नहीं कराया है हमारा ध्येय तो साधुओं की हाट को उजड़ने से बचाना था, वह काम हो गया हम रुपया न लेंगे। कठिन समस्या थी वे कहते थे आपके अतिरिक्त किसी दूसरे का अधिकार इस धन पर नहीं है ये कहते थे हमें इससे कोई मतलब नहीं है, अन्त में रुपया इन तरुण जितेन्द्रिय के गुरुदेव के पास भेज दिया गया। उन्होंने दस हजार रुपये इनमें और मिला कर कुल ४० हजार रुपये साधु सन्तों में बंटवा दिये।

श्री स्वामी जी ने यह प्रसङ्ग सुनाया मुझे अवश्य पर ऐसा करने में उन्हें बड़ा कष्ट हुआ। उनकी लज्जा की मुद्रा दर्शनीय थी, स्पष्ट था वे समझ रहे थे क्या इतनी सी छोटी बात किसी को सुनाने लायक है।

× × ×

स्वामी जी दो तीन बार रामवन आये। जब वे आते थे तब श्री महाराज जी भी आ जाते थे। सं० १९९६ के चैत्र नवरात्र में मानस यज्ञ की तैयारी हो रही थी। मैं कई बार स्वामीजी के पास गया और अपने बल भर आग्रह और अनुरोध करता रहा कि आपको यज्ञ में अवश्य आना होगा। स्वामीजी बराबर कहते रहे हम न पहुँचेंगे, तुम हमें लिवाने न आना। मैं कब मानने वाला था दो दिन पूर्व जाने को तैयार हो गया पर श्री महाराज जी ने रोक दिया। कहा मत जाओ स्वामी जी नहीं आयेंगे, यहां का काम करो। अब मैं कैसे जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। यज्ञ प्रारम्भ होने के दो तीन दिन बाद श्री स्वामी जी का काछी भगत रामवन आया। स्वामी जी साकेत पधार चुके थे, वह उनकी अस्थि प्रयाग पहुँचा कर लौटा था। अब बात समझ में आई स्वामी जी क्यों कहते थे हम न पहुँचेंगे और श्री महराजजी ने क्यों मुझे जाने नहीं दिया। प्रायः दो वर्ष तक श्री स्वामी जी के दर्शन का बीच बीच में सौभाग्य मिल जाता था, प्राचीन सन्तों का सच्चा सत्सङ्ग भी कभी कभी देखने को मिल जाता था, अब तो यह दुर्लभ ही है।

श्री रामनाम औषधि

[श्री गुलाबचन्द जी पागनिस]

सं० २०१३ वि. के श्रावण मास में, श्रीरामायण मंडल बाकानेर की ओर से शंकर मन्दिर में रामायण का सामूहिक मास पारायण चल रहा था। नित्य की भांति पाठ समाप्त होने के पश्चात् प्रसाद वितरण हुआ। मैं घर पर आकर काम काज में लग गया। जब मैं अपने घर के काम काज से निवृत्त हुआ तो बाजार में निकल पड़ा। बरसात का दिन था। पानी रिमझिम बरस रहा था। बादल घटा टोप छा रहे थे। रास्ते में मुझे पानी ने घेर लिया। अतएव मैं वहां से वापिस वेग से लौटा तो रास्ते मे पैर को कांटा चुभा। डेढ़ पाँव से चलकर घर पर आया मैंने उसे सुई से निकालना चाहा, लेकिन नहीं निकला। माताजी ने कहा कि नाई के पास जाकर निकलवा ले मैं नाई के पास पहुँचा। मैंने उनसे कहा कि भाई सा० कांटा चुभ गया है इसे निकाल दो। वे काँटा निकालने का औजार बाहर लाये और प्रकाश में आकर हम दोनों बैठ गये। उन्होंने कांटा देखा और उसे निकालना चाहा लेकिन निकला नहीं। उन्होंने कहा कि पकने के पश्चात् ही निकलेगा। वैसे मैं वहां पर ५-१० मिनिट बैठा रहा। अचानक आंखों में अँधियारा आया और मैं चक्कर खाकर गिर पड़ा। मैंने नाई से कहा कि मुझे पानी पिलाओ। उन्होंने मुझे पानी लाकर दिया। पानी पीने के पश्चात् मेरी हालत स्वस्थ हो गई। ८-१० मिनिट के बाद फिर मुझे चक्कर आया और मैंने आंखें फेर दीं। नाई के हल्ला करने पर गांव के लोग इकट्ठे हो गये और मेरे मात पिता को बुलाया। वे सब मुझे वहां से उठाकर घर पर लाये लेकिन मुझे यह भी नहीं मालुम था कि मुझे कौन लाया। १०-१५ मिनिट के पश्चात मेरी आंखें खुलीं। घर वालों ने, डाक्टर सा० को बुलाकर इंजेक्शन लगाने का विचार किया। मैंने उनको कहा कि थोड़ा समय ठहरिये। मुझे रामायण में शिवजी के गुणानुवाद में महा मंत्र मिला था। मैंने उस मंत्र का ध्यान लगाया। करीब आधे घंटे तक मैंने महा-मंत्र का जप किया। तत्पश्चात् मेरी हालत ठीक हो गई। प्रिय भाईयों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि इस महामंत्र का जप किया करें :—

राम रामेतिरामेति रमे रामे मनोरमे
सहस्रनाम तत्तुल्यं राम नाम वरानने

अर्थ श्री शंकरजी पार्वतीजी से कहते हैं कि 'राम' इन दो अक्षरों का माहात्म्य कोई कह नहीं सकता! धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जो चाहो इन अक्षरों में भरा हुआ है यह देखने में तो दो अक्षर हैं, पर महत्व में इस महामंत्र के समान कोई मंत्र ही नहीं, संसार के यावत् पदार्थ इस मंत्र के बल से सहज में प्राप्त होते हैं अन्त में देव दुर्लभ मुक्ति मिलती है।

श्रीराम श्रीराम श्रीराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्त राज जटायू की जथोचित क्रिया

[श्री गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री कोहड़िया]

जिन पद विना उपाहन, गज को दौरि उबारचो।
जिन पद छल्योबली, नाप सकल महि डारचो॥
जिन पद धूल तरी मुनि, गौतम की नारी।
उन पद रोशन लाखों, है प्रणाम तुम्हारी॥

भक्त राज जटायू की साकेत यात्रा से मानस प्रेमी परिचित ही हैं। परन्तु गोस्वामी जी का लेख अति विचित्र होने के कारण प्रेमी यदि एक ही प्रसंग पर—जीवन भर लिखते रहें तो भी कोई न कोई नूतन भाव वक्षस्थल में प्रवेश कर जाता है। आज इस लघु सेवक के हृदय में भी एक भाव उत्पन्न हो आया जो प्रेमी पाठकों की सेवा में समर्पित है। विज्ञजन भूल के लिए क्षमा करेंगे।

अविरल भगति मांगि बर, गीध गयेउ हरि धाम।
तेहि के क्रिया जथोचित, निज कर कीन्ही राम॥

यथोचित—जैसा या जितना उचित हो वैसा किया जाय।

प्रश्न—क्या श्री रामचन्द्र जी ने जटायू की मृत्यु क्रिया यथोचित रूप से (पुराणों में बताये हुए नियमों द्वारा) किया।

जैसे— *सपिण्डन दिने दत्वा, दानं विधानतः*
बहून् सम्भोजयेद्विप्रान् (ग. पु.)

अर्थात्—सपिण्डन के दिन विधि से दान देकर बहुत ब्राह्मणों को भोजन देवें।

उत्तर—हाँ श्रीराम ने जटायू की क्रिया शास्त्रानुसार की हैं।

प्रथम श्री रामचन्द्र जी के कर-कमलों द्वारा जटायू के अग्नि संस्कार तथा श्राद्ध देखिये।

गीतावली—

पितु ज्यों गीध क्रिया करि, रघुपति अपने धाम पठायो।

पुनः

रामस्तमनुशोचित्वावन्धु वत्साश्रुलोचनः।
लक्ष्मणेन समानाय्य काष्ठानि प्रददाहतम्॥ अ. रा.

अर्थात्—श्री रामचन्द्र जी ने नेत्रों में जल भरकर उसके लिये अपने स्वजन के समान शोक करते हुए लक्ष्मण से लकड़ियां मंगवा दाह कर्म किया।

पुनः

(रामवन द्वारा प्रकाशित मानस तरंग से)

पितु की अन्त क्रिया करिबेको, बड़ो पुत्र अधिकारी।
सो पितु क्रिया भरत को छोड़ी, प्रभु खग क्रिया सवारी॥

अतः सिद्ध है कि जटायू जी का अग्नि संस्कार तथा श्राद्ध कर्म श्री रामचन्द्र जी के कर-कमलों द्वारा सम्मन्न हुआ।

प्रश्न—मृतक की आत्म तथा प्रेत शान्ति के निमित्त उत्तम पदार्थों द्वारा ब्राह्मण भोजन कराने का विधान शास्त्र में आया है।

तो क्या श्री रामचन्द्र जी ने जटायू के निमित्त ब्राह्मण भोजन का आयोजन किया था।

उत्तर—शास्त्र में जैसे मनुष्य वर्ग के मृतक के लिये ब्राह्मणों को उत्तम भोज्य पदार्थों द्वारा भंडारा देने का विधान है इसी नियमानुसार मृतक के निमित्त पक्षियों को उनके भक्ष्य पदार्थों द्वारा भंडारा देना चाहिये। इसी विधान को अपनाकर श्री रामचन्द्र जी ने पक्षिराज जटायू के निमित्त मृग मास द्वारा भंडारा किया था।

[संभव है पाठक इस पर शंका कर अतः उनसे प्रार्थना है कि वे मणि के पुरानी फाइल के मानस शंका समाधान स्तम्भ देखकर शंका निवृत कर लें]

'मित्र थे पूज्य पिता के जटायु जी,
राम क्रिया विधि शास्त्र सो कीन्हें।'
अग्नि के दान निजैकर रोशन,
निजै कर श्राद्ध नदी तट दीन्हे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पक्षी थे आमिष भक्ष जटायू प्रभू,
अपने मन ठान जो लीन्हे।
मृग माँस सो पक्षिन भोज्य दिये,
यहि भाँति जटायु को तृप्त सु कीन्हे।

पुनः

स्नात्वा दुःखेन रामोऽपि लक्ष्मणेन समन्वित।
हत्वा वने मृगं तत्र मांस खण्डान्स मन्ततः ॥३८॥
शाद्वन्द्रचले प्राक्षिपद्रामः पृथक पृथगनेकधा।
भक्षन्तु पक्षिणः सर्वे तृप्तो भवतु पक्षिराट् ॥३९॥
(अ. रा.)

इसी कारण मानस विधाता कलि पावनावतार पूज्य पाद गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में जथोचित शब्द लिखकर प्रसंग को गूढ़ बना दिया है और शब्द के महत्व बढ़ाने के लिये दोहावली में लिखा है।

दशरथ ते दस गुन भगति, सहित तासु करि काज।
सोचत बन्धु समेत प्रभु, कृपा सिन्धु रघुराज ॥

नोट—गीता प्रेस से प्रकाशित अ. रा. के अनुवादक श्री मुनिलाल जी ने टिप्पणी में लिखा है कि इन दो श्लोको के अर्थ का रहस्य हमारी समझ में नहीं आया अतः इनका अर्थ नहीं दिया गया। परन्तु लघु सेवक ने इतनी धृष्टता जथोचित शब्द को अवलम्ब बना अनभिज्ञता से लिख डाला है। प्रेमी पाठक इसे गोस्वामी जी की काव्य पटुता तथा प्रभु का चरित्र समझ क्षमा करेंगे।

प्रेम से बोलो भक्त और भगवान की जय।

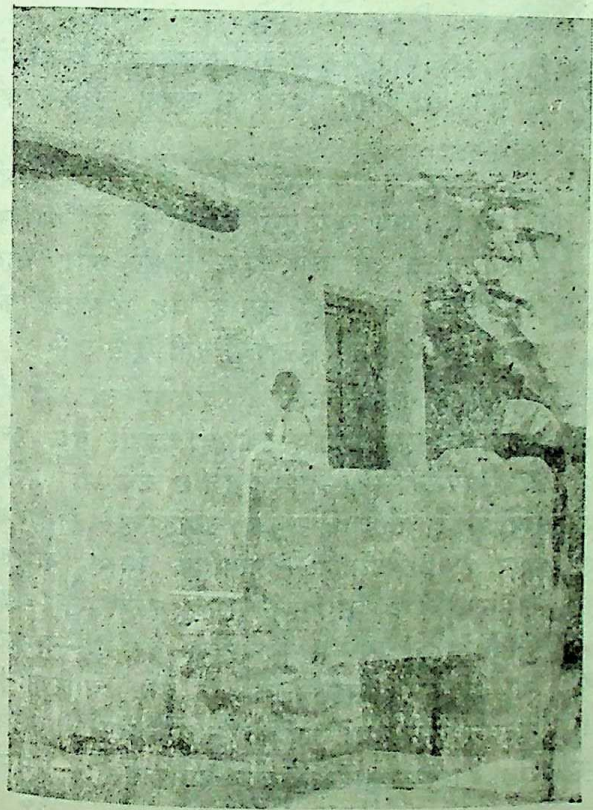

★

श्री रामनाम मन्दिर रामवन

श्री डाक्टर के० सी० मिश्र ने अपनी सहधर्मिणी के स्मारक में यह बनवाया है। इसमें ७० करोड़ रामनाम रखे जा चुके हैं। २६ करोड़ और रखना है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम और श्रीरामचरित मानस की अद्भुत रूपता

[श्री धनेश्वरप्रसाद जी शर्मा, 'धन्न']

सर्व शक्तिमान महाप्रभु श्री रामचन्द्र जी जब जनकपुर [मिथिला] महामुनि विश्वामित्र के साथ स्वयंवर भूमि में पधारे तब लाखों नर-नारी (दर्शकों) ने उन्हें देखा। राज कुंवर तेहि अवसर आये + मनहुं मनोहरता तन छाये ॥ जिन्ह की रही भावना जैसी + प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥ और एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ + तेहिं तस देखेउ कौसलराऊ ॥ इसी को रघुराज कवि ने अपने कवित्त में इस प्रकार कहा है:—

कोऊ निज बन्धु कोउ देखैं दीनबन्धु,
कोऊ शत्रु से निहारैं कोऊ मित्र से निहारे हैं।
कोऊ देखैं बालक से कोऊ देखैं घालक से,
कोऊ देखैं पालक से विश्व रखवारे हैं॥
भनो रघुराज जाको, जैसो रहो भाव ही मैं,
ताको तैसो जोहि परो अवध दुलारे हैं।
मर्म न जानै कोऊ कीन्हो जो चरित्र राम,
बरषि प्रसून देव देत से नगारे हैं॥

अब श्री रामचरित मानसान्तर्गत प्रभु को:— (१) देखहिं भूप महा रनधीरा + मनहुँ वीर रस धरे सरीरा ॥ (२) डरे कुटिल नृप प्रभुहिं निहारी + मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥ (३) रहे असुर छल छोनिप वेषा + तिन्ह प्रभु प्रगट काल सम देखा ॥ (४) पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई + नर भूषन लोचन सुखदाई ॥ (५) विदुषन्ह प्रभु विराट मय दीसा + बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥ (६) सहित बिदेह बिलोकहि रानी + सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥ (७) जोगिन्ह परम तत्त्व मय भाषा + सात सुद्ध सम सहज प्रकासा ॥ (८) हरि भगतन्ह देखे दोऊ भ्राता + इष्ट देव इव सब सुखदाता ॥ (९) रामहिं चितव भाय जेहि सीया + सो सनेहु सुख नहिं कथनीया ॥ एहि बिधि रहा जाहि जस भाऊ + तेहि तस देखेउ कोसल राऊ ॥

इस तरह एक भगवान राम ने एक समय में एक ही स्थान में, अनेक रूपों में दर्शन दिया। यह दिव्य चरित्र उनकी अलौकिक लीला का एक अंश है। जिसकी जो भावना थी उसे वही दिखाई दिए कोई महारणधीर, वीर रस को ही देखे, कोई भयानक रस देख पाये। कोई लोचन सुखद रूप और कोई विराट रूप देखे; किसी ने शिशु सम जाना, किसी ने परम तत्व मय बखाना, किसी ने इष्ट देव पहिचाना, किसी ने अपना सर्वस्व ही माना।

महाप्रभु के नाम, रूप, लीला और धाम सभी विचित्र हैं। जब स्वयं एक बराबर हैं तो श्रीराम चरित मानस जो नाम, रूप, लीला और धाम चारों विग्रह के एक ही रूप हैं वह भी भक्तों की भावनानुसार अनेक रूप क्यों नहीं दिखेगा ?

श्रीरामचरित मानस को देखकर तो कोई भी व्यक्ति उसे एक बड़ी पुस्तक ही कहेगा पर भक्त लोग अपनी अपनी भावनानुसार उसे भी अनेक रूपों में देखते हैं जैसे कुछ उदाहरण—रामायण गङ्गा है। प्रमाण:—वाल्मीकि गिरि संभूता रामाम्भोनिधि संगता + श्रीमद् रामायणी गङ्गा पुनाति भुवनं त्रयम् ॥ रामायण वन है:—प्रमाण बाल्मीकिर्मुनि सिंहस्य कविता वन चारिणः + शृण्वन् राम कथा नादं को न यान्ति पराँगतिम् ॥ मूल रामायण ॥ रामायण अमराई है:—प्रमाण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुजंतं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं + आरुह्य कविता शाखा वन्दे वाल्मीक कोकिलम् ॥ मूल रामायण ॥ (बालमीकि ही तुलसीदास माने जाते हैं) अब रामचरित मानस का महात्म्य जिसे गोपालदासजी ने लिखा है उसमें किसी ने श्री रामचरित मानस को नाव कहा है:—जल वारिधि को पार नहीं ऐसो है फैलाव + तुलसीदास कृपा करि रचि रामायण नाव ॥ मानस स्वर्ग निसेनी है:—श्री रामायण स्वर्ग निशेनी + भक्त जनन कहं आनन्द देनी ॥ श्री मन्मानस यंत्र मंत्र का खजाना है:—यंत्र मंत्र सगुनैती जेती + रामायण महं जानिय तेती ॥ मानस कल्पतरु की छाया है:—श्री रामायण सुरतरु की छाया + दुख भये दूर निकट जो आया। रामायण कामधेनु है:—रामायण सुरधेनु समाना + अभिमत दायक फल कल्याना ॥ रामायण फुलवारी है:—रामायण अद्भुत फुलवारी + राम भ्रमर भूषित रुचि भारी ॥ आदि इस तरह जाकी रही भावना जैसी + श्री मन्मानस देखी तैसी।

भगवान श्रीराम और श्री रामचरित मानस दो नाम एक शरीर है।

बालकांड प्रभु पाँय अयोध्या कटि मन मोहे।
उदर बन्यो आरण्य हृदय किष्किन्धा सोहे ॥
सुन्दर ग्रीव मुखार विन्द लंका कहि गायो।
जेहि महं रावण आदि निशाचर सकल समायो ॥
उत्तर मस्तक मानि एहि विधि तुलसीदास भन।
आदि अन्त लौं देखिए श्रीमन्मानस रामतन ॥

गोस्वामी तुलसीदास की जय।
श्री रामचरित मानस की जय।

सक्रिय सदस्य

'मानस मणि' के सन् १९५७ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य :—

		पूर्व प्रकाशित	नये	कुल
१.	श्री रामरक्षित जी रामायणी बनारी	२९	३	३२
२.	,, पं० केशरी किशोरशरण जी रामायणी चौवेवेल	१७	२	१९
३.	,, महन्त रोशनपुरी जी वैद्य शास्त्री कोहड़िया	१८	५	२३
४.	,, रामसुपाल जी भट्ट खरमसेड़ा	३६	१	३७
५.	,, हरिप्रसाद जी उपाध्याय शेरगढ़	२	१	३
६.	,, पंचम जी साव चैनपुर	५	१	६
७.	,, धनाराम जी रघुवंशी सांकरा	३	३	६
८.	,, नन्दलाल जी पुरोहित तुमसर	१७	३	२०
९.	,, भगवतलाल जी शर्मा गंगापुर	१३	२	१५
१०.	,, कामताप्रसाद जी कुशवाहा वैद्य भरथ।	—	२	२
११.	,, जनकसिंह जी साहेबगंज	—	२	२
१२.	,, राधाचरण जी वर्मा कल्याणी	—	३	३
१३.	,, मुरलीधर जी जियागांव	—	२	२
१४.	,, मनोहरलाल जी गंगापुर	—	२	२
१५.	,, शिवकुमार जी सरधना	—	२	२

नोट:—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे उनकी नामावली अगले मास दी जायेगी। इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ९२ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

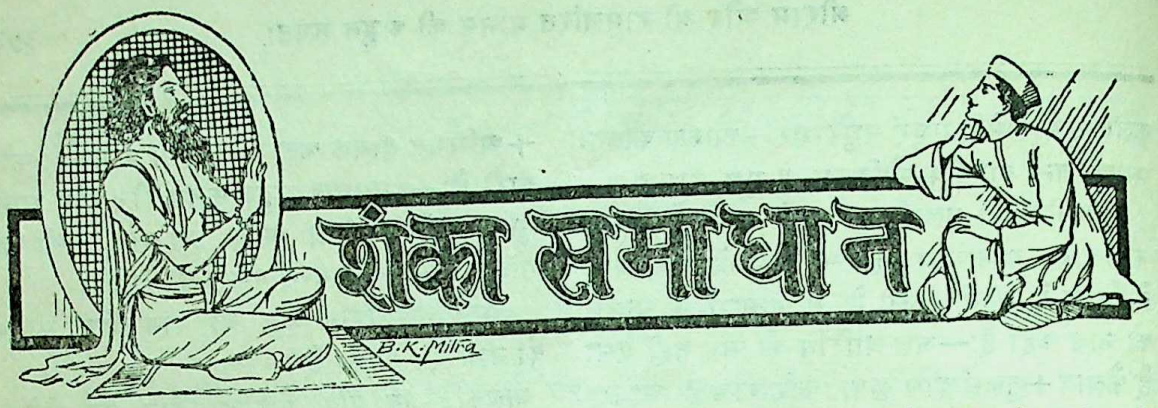

शंका

पूजिय विप्र शीलगुण हीना।
शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीना॥

एक योग्य शूद्र क्यों नहीं पूज्य है और एक अयोग्य-नालायक विप्र क्यों पूज्य है? क्या यह गोस्वामी तुलसीदास जी की स्वजाति पक्षपात और शूद्रों के प्रति ईर्ष्या, घृणा और द्वेष भावना की निशानी नहीं है?

—डा० राजेन्द्रप्रसाद सिन्हा पलामू

समाधान

(मानस तत्वान्वेषी पं० श्री रामकुमारदास रामायणी, वेदान्त भूषण साहित्य रत्न मणि पर्वत श्री अयोध्या)

बामन वपु जेहि वंशधारि हरि सुर दुख टारयो।
परशुराम जेहि वंश प्रगटि खल नृप संहारयो॥
जेहि कुल जिन सुत बुद्ध राक्षसन मति भ्रम पारयो।
कलि नाशन जेहि कुलहि कल्कि वपु धरन विचारयो॥
श्रुति पथ रक्षक जौन कुल विप्र 'कुमार' सुशान्त मन।
राम भक्त तेहि कुलजितक तिन पददबंहुँ मनबचन॥
श्री तुलसी तुलसी सरिस, पावन करन निरोग।
सबहि सुखद तजि अपन पर ताते नम लोग॥

यह ठीक है कि गोस्वामी श्री तुलसीदास जी का जन्म विप्र कुल में हुआ था, परन्तु यह ठीक नहीं कि वे स्वजाति (विप्र) का पक्षपात करने के कारण मानस में उक्त जिज्ञासित चौपाई लिखे हैं; क्योंकि जिस समय भाषा में रामचरित मानस की रचना की गई है उस समय गो० तुलसीदास जी जातिवाद से बहुत ऊँचे उठ गये थे, वे विरक्त हो गये थे और विरक्तों की कोई जाति होती ही नहीं उनकी विरक्त साधु संज्ञा होती है। जो विरक्त स्वयं को अपने पूर्वाश्रम संबन्धित वर्ण मानता है वह च्युत आरूढ़ पतित हो जाता है, वह अपने को अच्युत गोत्रीय कहने का अधिकारी नहीं रह जाता। और जो गृहस्थ विरक्त साधु को उसके पूर्वाश्रम के जाति वर्ण के भाव से देखता है वह स्वधर्म से पतित हो जाता है उसे—

विष्णोरर्चा ह्युपादानं वैष्णवोत्पत्तिचिंतनम्।
मातृयोनि परीक्षायास्तुल्यमाहुर्मनीषिणः

श्री वचन भूषण बरबर भाष्योद्धृत इस स्कंद पुराणीय व्यास वचनानुसार महान पातक लगता है। श्री गोस्वामी जी विरक्त श्री वैष्णव होने के नाते मानते और कहते थे कि—

"हौं न कोऊ जाति न चहौं काहू की जाति पाँति।"
"अति ही अयानो उपखानो नहि बूझै लोग साहेब को गोत गोत है होत गुलाम को।"
"धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जुलहा कहौ कोऊ।"

(कवितावली उत्तरकांड)

आदि। गोस्वामीजी की अपनी जाति तो विरक्त साधु-अच्युत गोत्रीय हो गई थी, इसी से वे कभी किसी जाति का पक्षपात और किसी जाति से ईर्षा द्वेष, घृणा नहीं करते थे।

उन्होंने जो गन्धर्व के प्रति श्रीराम जी की दी हुई शिक्षा का उद्धरण दिया है वह किसी द्वेष या पक्षपात के कारण नहीं अपितु श्री रामजी ने तो शास्त्रीय पद्धति उस श्रापित गंधर्व को समझाया था। अस्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जातिपांति का झमेला केवल भारत में ही है क्योंकि भारत सदैव से श्रुतिशास्त्रानुयायी रहा है। श्रुति जाति वर्ण को पूर्व जन्मार्जित कर्म का परिपाक मानती है यथा—

"तद्य इह रमणीय चरणा अभ्याशोहयत्ते रमणीयां योनिमापद्येरन् ब्राह्मण योनिंवा क्षत्रिय योनिं वा वैश्ययोनिं वा। अथ य यूह कपूय चरणा अभ्याशो ह यत्ते कपूयां योनिमा पद्येरन् श्व योनिंवा शूकर योनिं वा चाण्डाल योनिं वा॥"

(सामवेद तवल्कार शाखा का छान्दोग्य ब्रा० ५।१०७)

श्रुति ने स्पष्ट शब्दों में पूर्व जन्म के उत्तम कर्मों को विप्रत्वका कारण और कपूय-निन्द्य कर्मों को शूद्रत्व का कारण माना है। जो जिस वर्ण एवं आश्रम का धर्म विधिवत् पालन करता है तो उसकी क्रमिक उन्नति होते होते वह जीव परम सिद्धि-मोक्ष को प्राप्त कर लेता है।

इसी श्रुति का अनुवाद आपस्तंब आदि महर्षि ने भी किया है। यथा—

धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जाति परिवृत्तौ ॥१॥

अधर्म चर्यया पूर्वो पूर्वो वर्णो जघन्यं जघन्यं वर्णमापद्यते जाति परिवृत्तौ ॥२॥

यह महर्षि आपस्तम्ब का वाक्य कहा जाता है। मनुस्मृति अध्याय दो का अठाईसवां श्लोक है-

स्वाध्यायेन जपैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः॥

सारांश यह कि जो व्यक्ति जिस वर्ण या आश्रम में है उसके सविधि पालन से ही उस जीव की उन्नति है और न पालने से अवनति होती है। इसी धर्म पालन के अनुसार दूसरे जन्म में किसी वर्ण जाति में जन्म ग्रहण करता है—

शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी।
ईस देइ फल हृदय विचारी॥

यही बात गीता में भगवान् ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

स्वेस्वेकर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते पराम्।
अनेक जन्म संसिद्धस्ततो याति परांगतिम्।

व्यवहार वर्तमान को देखकर होता है सही परन्तु संस्कार पूर्व जन्म का ही होता है। जैसे आज कोई शूद्र या अन्त्यज वर्ण में है और वह स्ववर्णाश्रमोचित कर्म करते हुए तप, तीर्थ, व्रत आदि सत्कर्मों में लीन है— उन्नति के सोपान पर आरूढ़ है तो समझना चाहिये कि गत जन्म में कपूय निन्द्यकर्म करने से आज शूद्र योनि में प्राप्त है परन्तु अब रमणीय चरण सत्कर्म कर रहा है तो अगले जन्म में रमणीय उत्तम योनि द्विजत्व का अधिकारी बन रहा है, और कोई आज द्विजाति वैश्य क्षत्रिय या ब्राह्मण वर्ण में है और वह स्ववर्णाश्रमोचित कर्म की अवहेलना करके कपूय चरण-निन्द्य कर्म कर रहा है तो समझना चाहिये कि गतजन्म में रमणीय-उत्तमोत्तम कर्म करने से आज उसने विप्रयोनि को प्राप्त किया है परन्तु अब कपूय-निन्द्य आचरण करने के कारण अगले जन्म में निन्द्य योनि में पतित होगा। जैसा कि स्वयं भगवान् ने कहा है:—

क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु॥

अब समझिये एक विप्रकुलोद्भूत ब्राह्मणबंधु शील गुणहीन है स्वमर्यादा विरुद्ध कदाचारी है। इस वर्तमान को देखकर जो उसका जाति अपमान करता है तो वह उसके पूर्व जन्मार्जित विप्रत्व का अनादर करता है जिसके परिणाम स्वरूप आज उसे विप्रत्व प्राप्त है और उसके पूज्य पद से उसे वंचित करता है।

शील गुण का अर्थ विश्व कोष में इस तरह दिया है—

शील (सं० क्ली०) आचरण, चाल, व्यवहार, चरित्र, प्रवृत्ति, सद्भाव आदत, मिजाज, सदवृत्त, उत्तम आचरण, ब्राह्मण्यादि। तेरह प्रकार का धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल मनु टीका में कुल्लूक भट्ट ने लिखा है कि शील तेरह प्रकार के हैं। जैसे ब्रह्मण्यता, देवपितृभक्तता, सौम्यता, अनसूयता, अपरोयतापिता, मृदुता, अपारुष्य, मित्रता, कारुण्य, प्रियवादित्व, कृतज्ञता शरण्यता, और प्रशान्ति। रागद्वेष परित्याग का नाम शील है। मनु अध्याय दो श्लोक ६।३ उत्तम स्वभाव, ॥ ४ संकोच का स्वभाव ॥ ५ दूसरे का जी न दुखे यह भाव, कोमल हृदय ॥ ६ प्रवृत्त, तत्पर, प्रवृत्ति बाला जैसे दानशील, पुण्यशील आदि ॥ ७ इसी तरह अनेक गुण सम्पन्न लौकिक व्यवहार ज्ञान प्रवीण शूद्र के वर्तमान को देखकर जो उसका पूजन विप्रवत् करता है तो वह उसकी उन्नति को रोक देता है क्योंकि जब विप्रत्व का अधिक फल अभी हो भोग लेगा तब अगले जन्म में किस बल पर विप्र शरीर प्राप्त करेगा। स्मरण रखना चाहिये कि यहां "ज्ञान प्रवीना" ज्ञान में प्रवीण कहकर लौकिक व्यवहारिक ज्ञान का ग्रहण किया है, पारमार्थिक आत्म परमात्म ज्ञान का यहां मतलब नहीं है। पारमार्थिक—आत्म परमात्म ज्ञान में प्रवीण नहीं हुआ जाता अपितु वह उस ज्ञान को प्राप्त करने-वाला भाग्य भाजन तद् ज्ञान मय हो जाता है और पुस्तकें पढ़कर आत्म परमात्म तत्व के जो कथन में जो प्रवीणता प्राप्त कर लेता है उसे उस वाक्य ज्ञान से कोई पारमार्थिक लाभ तो होता ही नहीं—

वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावै कोई।
निशि गृह मध्य दीप की बातनि तम निवृत्त नहिं होई॥
(विनय पत्रिका)

इस तरह वाचिक ज्ञानी की तो गर्हना की गई है विप्र और शूद्र के पूज्यापूज्यत्व के सम्बन्ध में विद्वान महानुभाव उदाहरण देकर समझाते हैं कि —एक शास्त्री खण्ड या बी. ए. का विद्यार्थी यदि अपने पाठ्य ग्रन्थ कोर्स को तैयार नहीं करता प्रत्युत अपने ग्रंथ को फाड़ता रहता है तो उसे कक्षा से हटाया नहीं जा सकता, हाँ वार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर वह अध्यक्ष द्वारा ही अलग किया जा सकता है अन्य से नहीं। उसी तरह एक सत्कुल प्रसूत विप्रशील गुणहीनत्व एवं कदाचार के कारण विप्रवंशगत त्रिवर्ण से पूज्यत्व से वञ्चित नहीं किया जाना चाहिये, हाँ दूसरे जन्म में श्रुति कथनानुसार ईश्वर द्वारा कपूय निन्द्य योनि में पतित किया जायेगा। अन्य किसी को उसका त्रिवर्ण से निन्द्य मानने, अपमान करने का अधिकार नहीं है—

शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी।
ईश देइ फल हृदय विचारी॥

इसी तरह एक प्रवेशी काया नीचे क्लास का छात्र खूब परिश्रम किया तो अच्छे नम्बरों से पास होकर क्रमशः ऊँची कक्षा शास्त्री खण्ड, बी. ए. आदि में प्रविष्ट हो सकता है, यदि उसका अध्यवसाय-पढ़ने की लगन आदि देखकर उसे एकदम से (पूर्ण परिश्रम के पहले ही) ऊँची कक्षा शास्त्री खण्ड या बी. ए. क्लास में बैठा दिया जाय तो कोई लाभ न होगा वरन् उसकी वर्तमान पढ़ाई भी जाती रहेगी और आगे की उच्च कक्षा की योग्यता भी न आने पावेगी। इसी तरह यदि पूर्व जन्म के दुष्कृति के कारण वर्तमान शूद्र शरीर का वर्तमान कालिक गुण गण ज्ञान प्रवीणता के कारण उसे विप्रत्व का पूज्य पद दे दिया जाता है तो उसका वर्तमान और भविष्य दोनों नष्ट करता हुआ अर्थात् उसके भावी जन्म की (विप्रशरीरादि प्राप्त रूप) उन्नति में बाधा पहुँचाकर स्वयं को भी पाप का भागी होना पड़ता है।

इस तरह विप्र और शूद्र के पूज्यापूज्यत्व का तत्व समाहित चित्त से समझने पर किसी गुणगण का अपमान और थोथी निकम्मी रीति नहीं मालूम पड़ेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री मानस कथित पुण्य-प्रभाव

[श्री पं० रामकुमार जी उपाध्याय 'कुश', सा० विशारद, रामायणाचार्य]

रामलखन दोउ बन्धुवर,
रूप सील बलधाम ।
मख राखेउ सब साखि जग,
जिते असुर संग्राम ॥१।२१६

श्री कौशलानन्दवर्धन आनन्दकंद श्री रामचन्द्र जी सौमित्र सहित द्वय बन्धु श्रेष्ठ रूप, शील एवं बल के धाम हैं। इन्होंने ही याज्ञिक रक्षण का भार वहन किया है। यदि अनुमान किया जाता है कि मख-रक्षण में इन्होंने राजनीति के चारों अङ्ग जैसे—साम, दाम, दण्ड तथा भेद को श्रेय दिया होगा तो संत-वाक्य कह रहे हैं कि इस घटना की संसृति साक्षी भूत है जिसने नेत्रों से अवलोकन किया है कि इन्होंने स्वभुजबल अथवा पुरुषार्थ से ही प्रत्यक्ष संग्राम करके असुरों का दमन किया। अन्ततः विजय श्री प्राप्त की गई है।

अग्रिम प्रकरण में ब्रह्मज्ञानी श्री विदेह राज तथा महर्षि विश्वामित्र जी की तथ्यपूर्ण वार्त्ता को श्रेय दिया जा रहा है। वैभवशाली विरक्त विदेह श्री जनक जी आज एक लँगोटी लगाने वाले कमण्डल धारी भारतीय सन्त से स्वागतार्थ अनुनय विनय करते हैं। यथा—

चौ०—मुनि तव चरन देखि कह राऊ।
कहि न सकउँ निज पुन्य प्रभाऊ ॥

आज मैं अपने पुण्य-प्रताप की सराहना कहां तक करूँगा जिससे कि आपके चरणों के दर्शन उपलब्ध हो सके हैं। यही भारत की आर्य्य भूमि थी जहां सन्तों की खान थी। यथा—

यही भारत की भूमि थी जहां कन्चन बरसते थे।
विदेशी लोग आ आ करके दर्शन को तरसते थे ॥

प्रासङ्गिक ऐतिहासिक घटना है जबकि सिकंदर दि ग्रेट भारत वसुन्धरा पर प्रथम बार आक्रमण करता है तो जनश्रुति के आधार भूत भारतीय सन्त-दर्शन की जिज्ञासा से निकटवर्ती वन प्रान्तर विभाग में तपः रत एक सन्त को बुला भेजता है। उस पर सन्त का प्रत्युत्तर था कि मुझे लौकिक बादशाह से क्या प्रयोजन ? मैं कभी जाने का नहीं। यदि सिकन्दर को मुझसे मिलने की उत्कट अभिलाषा है तो मेरे आश्रम पर आ सकता है मैं सहर्ष स्वागत करता हूँ। अस्तु सिकंदर सन्त-कुटीर पर स्वयं जाकर के देखता है कि वही लंगोटी लगाने वाला महापुरुष संत, चिता रचकर उस पर बैठने को कटिबद्ध हो रहा है। कारण ज्ञात करके जाना कि कल केवल तीव्र ज्वर के कारण ही इस भांति से सन्त प्राण त्यागन कर रहा है। ऐसी दशा में सिकंदर ने महात्मा को पूर्णरूपेण समझाया कि भगवन् ! इतना कष्टसहन करने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती मैं अभी आदेश देता हूँ कि लुकमान हकीम आ करके स्वास्थ्य की परीक्षा कर लें जिससे पुनः कष्ट नहीं रह पावेगा अथवा जिसे भी आप समर्थन करें उसी को मैं शीघ्र आपकी सेवा में उपस्थित करा दूँ परन्तु आप चिता पर शरीर त्याग न करें। इस पर आदर्श सन्त कहता है कि "सिकन्दर सुन ! यदि तुझे, जो केवल भूखण्ड का स्वामी है, एक टूटे फूटे जर्जर झोपड़े में निवास दिया जावे तो तू इस आतिथ्य- सत्कार से सन्तुष्ट हो सकेगा क्या ? कदापि नहीं। जब तू इस भांति केवल भू भाग का स्वामी होते हुए भी जीर्ण-शीर्ण कुटी निवास को अपमान समझ रहा है तो त्रैलोक्य प्रभु राम को जो कोटि२ बादशाहों का भी बादशाह अथवा शहंशाह है वह जगत नियामक मेरे, आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं सम्पूर्ण भासमान सन्सृति के जो दृश्यमान हैं, हृद्तल में क्षण प्रति क्षण निवास कर रहा है, उसे यदि ऐसा ही झोपड़ा प्राप्त हो तो वह उसे कितना निरादर पूर्ण व्यवहार समझेगा इस पर भी कभी आपने विचार किया है क्या ? श्री गीतोक्त-प्रवचन है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्व भूतानि यंत्रारूढ़ानि मायया ॥१८।६१

ईश्वर सभी के हृदय में करता सदैव निवास है। वह जीव को करता भ्रमित, करके सुमायादास है।

ईश्वर अंश जीव अविनासी,
चेतन अमल सहज सुखरासी।

वस्तुतः मेरा वर्तमान शरीर इस योग्य नहीं रहा कि अब प्रभु राम का निवास स्थान बन सके। अतः इसका त्यागन ही अनिवार्य हो रहा है। इस प्रकार सन्तचिता रच करके उसी पर भस्म-सात् हो जाते हैं। सारांश यह है कि यह वही भारतवर्ष आर्यों की पावन भूमि है जहां कभी भी कोई प्राणी ज्वराक्रांत भी नहीं हुआ करता था।

अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा।
सब सुन्दर सब बिरुज सरीरा॥

परन्तु अब क्या कहना है डाक्टर, वैद्य विशारदों के सङ्ग नवजात रोगों की दिन प्रतिदिन बाढ़ पर बाढ़ आती चली जा रही है कारण यह है कि 'प्राकृतिक चिकित्सा' की ओर से सर्वथा उदासीनता दृष्टिगत हो रही है और जिसके भारत में केवल इने गिने केन्द्र हैं जिसमें आज भी औषधियां अथवा इन्जेक्शनों की भरमार हटाकर नियम पालन अथवा संयम का रहन सहन सिखाया जाता है।

प्रस्तुत सन्त उन्हीं चिर सन्तों की श्रेणी में थे जिन्हें विदेह जी श्रेय दे रहे हैं न कि आजकल के नामधारी सन्त। श्री गोस्वामी जी इनके प्रति भी उदासीन नहीं रहे।

मिथ्यारम्भ दम्भ रत जोई,
ताकहुँ सन्त कहइ सब कोई।

× × ×

जाके नख अरु जटा बिसाला,
सोइ तापस प्रसिद्ध कलिकाला।

इन असंतों के बाहुल्य से आज सच्चे संत की पहिचान भी विवादग्रस्त वस्तु बन गई है। वस्तुतः महर्षि कौशिक जी जैसे वास्तविक सन्त प्रवर की महिमा ही अगाध है जिन्हें पूज्यपाद सन्त जी वर्णन करते हुए कह उठते हैं। यथा—

'बिधि हरि हर कवि कोविद बानी,
कहत साधु महिमा सकुचानी।
सो मोसन कहि जात न कैसे,
साक बनिक मनि गुन गन जैसे॥'

सन्त नव के अंक के समान एवं असन्त आठ के तुल्य हैं।

'दूनो, तिगुनो, चौगुनो,
पंच, षष्ट अरु सात।
आठहु नौगुन दस गुनो,
नव ते नव रहि जात॥

—तुलसी सतसई

जिस भांति ८ और ९ की रूपरेखा समान है, उसी प्रकार से सन्त तथा असन्त के उद्गम केन्द्र स्थल भी सदा ही माता, पिता और उनके रज, वीर्य्यादि हैं। नव अङ्क के लेखन में मध्य (पेट) में एक लकीर मात्र पाई जाती है। तात्पर्य्य यह कि सन्त के उरस्थल में भक्ति की एक विशेषतम भावना अधिक रहती है। जैसे २ नव का मूल्यस्तर दूना, तिगुना, चौगुना प्रभृति बढ़ते जाने पर वह सभी अवस्थाओं में अङ्कांतर्गत समानतः विद्यमान रहा करता है उसी भांति से सन्तगण भी सम्पूर्ण परिस्थितियों (दुःख, सुख) में सदा एक रस सम चित्त रहा करते हैं। यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदहु संत समान चित, हित अनहित नहिं कोय।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि, सम सुगंधकर दोय॥
संत सरलचित जगत हित, जानि सुभाव सनेहु।
बाल बिनय सुनि करि कृपा, राम चरन रति देहु॥
१॥३।ख॥

❀ ❀ ❀

बुंद अघात सहहिं गिरि कैसे,
खल के बचन संत सह जैसे।

❀ ❀ ❀

साधु चरित सुभ चरित कपासू,
निरस बिसद गुनमय फल जासू।
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा,
बंदनीय जेहि जग जस पावा॥

अष्टम अङ्क के तुल्य आधुनिक कलि के असंत भी संत की समानता करने को कटिबद्ध हो गये। वैसी ही वेश भूषा बना करके उनसे द्विगुण रहने की ठान ली। पर अगले सोपान पर पदाघात होते ही उनका मूल्य स्तर शीघ्रता से घटने लगा। देखिये—

८×२=१६ (६+१) ७ रह गया अर्थात् १ घटा।
८×३=२४ (४+२) ६ ,, ,, २ ,,
८×४=३२ (३+२) ५ ,, ,, ३ ,,
८×५=४० (४+०) ४ ,, ,, ४ ,,

ज्ञान, कर्मोपासना से शून्य इस प्रकार काम, क्रोध, लोभ एवं अहङ्कार चारों शेष रह जाते हैं। जब धर्म मूल्यस्तर मान से भी न संभल पाये तो पुनः दुर्गति में ही पड़ते जाते हैं। जैसे—

८×६=४८ (८+४) १२ (१+२) ३ शेष रहे।
८×७=५६ (५+६) ११ (१+१) २ ,,
८×८=६४ (६+४) १० (१+०) १ ,,
८×९=७२ (७+२) ९ शेष रह कर पुनः उत्थान की ओर इंगित करने लगा कि संभल जावें और सन्त बनें। यदि ताश के पत्तों की भांति समझलें कि सभी पत्ते एका से ही काटे जाते हैं अस्तु शिक्षा ग्रहण करके एक (सङ्गठन) का पाठ पढ़ें न कि ताश के पत्तों से समय जो प्रति श्वास पर क्षण २ अमूल्य है उसे काटते फिरें। एक रंज से जीवन में खेल कर छुटकारा पाना दुस्तर है पर खेला जाता है 'शतरञ्ज' से। तब भला सुख शान्ति कहां? उसका तो स्वप्न ही देखना शेष रह जावेगा। यदि नव गुण पर भी संत बनने की असंत न सोच सका तो दस गुना बढ़कर पुनः जीवन पर्यंत पूर्ववत ही असंत रह जावेगा। (८×१०=८०=८) अस्तु पुनर्जन्म में सचेत रह कर कदाचित ही कल्याण पथ पर अग्रसर हो सके। श्री गोस्वामी जी पग २ पर चेतावनी देते हैं कि अब भी समय है संभल लो क्योंकि खल बनने में सदैव अकल्याण ही है।

खलउ करहि भल पाइ सुसंगू,
मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू।
लखि सुबेष जग बंचक जेऊ,
बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ।
उघरहिं अंत न होइ निबाहू,
कालनेमि जिमि रावन राहू॥

दनुज कालनेमि साधु बना था, रावण ने यती का वेष बनाया। राहु सुधापान में देवों की गणना में सम्मिलित हो चुका था। अंततः तीनों का हुआ सर्वनाश।

यदि ब्रह्मज्ञानी श्री जनक जी का प्राक्कथन है कि मैं आज अपने पुण्य की यथा शक्य जितनी प्रशंसा करूँ प्रश्लेष नहीं है तो सर्वथा युक्ति सङ्गत है। सन्त तथा भगवन्त दोनों पुण्य से ही प्राप्त होते हैं।

"पुण्य पुञ्ज बिन मिलहिं न संता॥

पूर्व सुकृतियों का सामञ्जस्य होने पर ही ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है। कवि सम्राट ने मानस के प्रत्येक सुस्थल पर सन्त दर्शन में पुण्य प्रताप का समावेश किया है। लङ्किनी (रजोगुणी सम्पदा) राक्षसी को भी सन्त समागम उसके पुण्य प्रताप पूर्व जन्म सङ्कलन से ही उपलब्ध हो पाये थे। यथा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि

[श्री हुबलाल जी रामायणी श्रीपट्टी]

श्री परम प्रभु साकेतीश श्री रामजी निधि हैं, (निधि=धन सम्पत्ति रहने का स्थान, खजाना) कारण कि प्रभु के पास बहुतसा अक्षय धन सदा-काल रहा करता है। श्री सरकार का (नाम, रूप, लीला, धाम) चारों कीमती धन है—

(१) नाम-धन—

राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो जो चाहसि उजियार॥

(२) रूप-धन—

नील सरोरुह नीलमनि, नील नीरधर स्याम।
लाजहि तनु सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम॥

(३) लीला-धन—

रामचरित चिंतामनि चारू··
सिव प्रिय मेकल सैल सुतासी,
सकल सिद्धि सुख संपति रासी।
जग मंगल गुन ग्राम राम के।
दानि मुकुति धन धरम धाम के॥

(४) धाम-धन—

पुर सोभा संपति कल्याना।
निगम सेष सारदा बखाना॥
मनिमय रचित चारु चौबारे।
जनुरति पति निज हाथ संवारे॥

इन चारों अंगों में मणि शब्द आया है। मणि कीमती वस्तु है—तथा-प्रभु के अंगों में भी कीमती वस्तु धन है—

चरण में—अरुन चरन पंकज नख जोती।
कमल दलनि बैठे जनु मोती॥
नूपुर धुनि सुनि मुनिमन मोहै··

कमर में—कटि किंकिनी उदर त्रयरेखा।
नाभि गम्भीर जान जेहि देखा॥

हृदय में—उर मनि माल कंदु कल ग्रीवा।
उर मनिहार पदिक की। सोभा॥
उर अति रुचिर नाग मनि माला।

भुजा में—भुज बिसाल भूषन जुत भूरी।
हिय हरि नख सोभा अति रुरी॥

उंगली में—पीत जनेउ महा छवि देई।
कर मुद्रिका चोरिचित लेई॥
कर मुद्रिका दीन्हि जन जानी॥

गले में—

कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।

तात मोर अति पुन्य बहूता,
देखेउं नयन राम कर दूता।

त्रिकालज्ञ महर्षि श्री वाल्मीकि जी के प्रति श्री मुख वचन भी यही उद्भूत हुए थे:—

तात बचन पुनि मातु हित,
भाइ भरत अस राउ।
मो कहँ दरस तुम्हार प्रभु,
सब मम पुन्य प्रभाउ ॥३।१२५॥

२ चौपाई—

सुन्दर स्याम गौर दोउ भ्राता,
आनंद हू के आनंददाता॥

सौन्दर्य प्रतिमा श्याम, गौर युगल जोड़ी आनन्द को भी आनन्द प्रद थी। श्री जनक जी पुरजन सहित निसिवासर ब्रह्मानन्द में ही निमग्न रहा करते थे।

ब्रह्मानंद लोग सब लहहीं,
बढ़इ दिवस निसि बिधि सब कहहीं।

परन्तु साकार ब्रह्म की प्राप्ति के पश्चात् परमानन्द में तल्लीन हो जाते हैं।

इन्हहिं बिलोकत अति अनुरागा।
बरबस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा॥

अन्ततो गत्वा—

हिय हरषहिं बरसहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि वृंद।
जाहिं जहां जहं बन्धु दोउ, तहँ तहँ परमानन्द॥

❀ सियावर रामचन्द्र की जय ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृषभ ंध केहरि ठवनि बल निधि बांहु बिसाल ॥

राजकुमार का शृङ्गार— क्रीट-मुकुट-कुण्डल

नासिका में— नासामणि

शिर में—चिक्कन कच कुंचित गभुआरे।
बहु प्रकार रचि मातु संवारे॥

यहाँ पर बहु प्रकार तथा मणि तथा रत्न-शृङ्गार कहा—

सरकार का आयुध भी कीमती है—

कार्मुक कनक मंडला कारहि चार ओर चमकावत।
(रामस्वयंवर)

अतः धनुष भी कीमती है, स्वर्णमूल्य है, ऐसा होते सरकार के कुछ नाम भी निधि में कहा गया है।

कृपानिधि—

दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहौं सतिभाउ,
चाहउँ तुमहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ।

तथा—यहि बिधि जाय कृपानिधि उतरे सागर तीर,
जहँ तहँ लागे खानफल भालु बिपुल कपि बीर।

तथा—तब रिषि निज नाथहिं जिय चीन्ही,
बिद्यानिधि कहं बिद्या दीन्ही।

तथा— राम सुस्वामि कुसेवक मोसो,
निज दिसि देखि दयानिधि पोसो।

तथा—

कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।
बृषभ कंध केहरि ठवनि बलनिधि बाहु बिशाल॥

अर्थात्—दयानिधि-विद्यानिधि कृपानिधि-बलनिधि-इत्यादि विशेषण पूर्ण हैं। परन्तु—

करीब १५ वर्ष से नर नाट्य् तथा रूपान्तर अवतार, से ब्रह्म शक्ति, दोनों जन दो स्थान में अवतीर्ण हुये और जब से धनुष यज्ञ का निश्चित दिन करीब रह गया, जनकपुर में विशेष भीड़ होने लगी। इधर अम्बा श्री सीताजी अपनी निधि प्रभु श्रीराम जी के लिये घबराने लग गई, जब से सरकार का आगमन जनकपुर में हुआ है तब से श्री सीताजी को विशेष इच्छा निधि दर्शन की है, कारण कि अपनी कीमती वस्तु तथा निधि खजाने पर सभी का ध्यान रहता है और भीड़ का तो मुख्य कारण है ही, जैसे—

सुनि हरषीं सब सखी सयानी।
सिय हिय अति उतकंठ ानी॥

आगे चलकर निधि की पहिच भी हुई है—

सीय चकित चित र हि चाहा।

तथा

तासु बचन अति सियहिं सुहाने।
दरस लागि लोचन अकुलाने,

तथा

देखि रूप लोचन ललचाने।
हरषे जनु निज निधि पहिचाने॥

आगे चलकर यज्ञ शाला में प्राप्ति हुई—

मुनि समीप देखे दोऊ भाई,
लगे ललकि लोचन निधि पाई।

जिनका खजाना है उनको प्राप्त हुआ, इस निधि को लुटेरे डाकू लूटना चाहे परन्तु सफल नहीं हुए—

धाये धाम काम सब त्यागी।
मनहु रंक निधि लूटन लागी॥

सफल कैसे हों उन्हीं के राजा की पुत्री राजकुमारी सीता की निधि खजाना और प्रजा लूटे यह असंगत है अतः सफल नहीं हुए—यह निधि श्री रामजी लूटने से नहीं मिलते, यह ज्ञानी भक्तों को मिलते हैं जैसे—विश्वामित्र जी के लिये कहा गया कि—

स्याम गौर सुन्दर दोउ भाई।
बिस्वामित्र महानिधि पाई॥

इन्हें ज्ञान से प्राप्त हुए हैं, विश्वामित्र जी ज्ञानी हैं—

बिश्वामित्र महामुनि ग्यानी।
बसहि बिपिन सुभ आश्रम जानी।

प्रभु को प्राप्त करने का सुलभ मार्ग भक्ति ही है।

॥ श्रीराम जै राम जय जय राम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामचरित मानस

[श्री कमलादेवी हाड़ा]

राम चरित मानस जैसे पावन और गहन विषय पर जितनी भी विवेचना की जाय, उतनी ही थोड़ी है। यह एक ऐसा गहन विषय है कि इसे जितना मथा जाय उतना ही इसमें रस निकलता है। यही इस ग्रन्थ की महानता है।

यह ध्यान में रखने की बात है कि गोस्वामीजी ने इस महान् ग्रंथ के लिखने में पूर्ण मर्यादा का पालन किया है। उनका भगवान राम के प्रति 'स्वामी' और सीता के प्रति माता का भाव संपूर्ण लेखनी में कहीं परिवर्तित नहीं हुआ। क्योंकि वे तो पूर्व ही कह चुके थे कि—

मैं सेवक रघुपति पति मोरे।

इस महान आदर्श को लेकर रामायण की रचना हुई है।

अरण्य काण्ड के प्रारम्भ में ही भगवान ने जो सीता जी को पुष्पों के आभूषण पहिराये हैं उसके सम्बन्ध में कुछ लोगों का ख्याल है कि भगवान ने शक्ति रूप सीता की शक्ति प्राप्त हेतु आराधना की है। जैसे—

एक बार चुनि कुसुम सुहाये।
निज कर भूषन राम बनाये।
सीतहिं पहिराये प्रभु सादर।
बैठे फटिक सिला पर सुन्दर।

यह जो सादर पहिराये शब्द रखा है यह आराधना का प्रथम चरण है और पहिराकर बैठे फटिक सिला पर सुन्दर इसका अर्थ यह निकला कि भगवान पहनाते समय खड़े थे और खड़े होकर पहिनाये। याने पत्नी को इतना आदर करके नहीं पहिनाये बल्कि पत्नी रूप शक्ति को आदर दिया क्योंकि सीताजी शक्ति की स्वरूप हैं। वह यहां पुष्ट होता है।

आदि सक्ति जेहि जग उपजाया।
सोउ अवतरिहिं मोरि यह माया।
उद्भवस्थिति संहार कारिणीं क्लेश हारिणीम्
सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं राम वल्लभां।
देखे जहँ तहँ रघुपति जेते।
सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते।

इस तरह भगवान ने सीता शक्ति रूप की आराधना की यह अर्थ यद्यपि उत्तम है पर कुछ जँचा नहीं। क्योंकि शक्ति भगवान की स्वयं की है इसलिये उन्हें आराधना की आवश्यकता नहीं। वह तो स्वयं प्राप्त है ही।

जब सती ने भगवान की परीक्षा ली थी उस समय सती ने स्वयं देखा कि—

देखे जहं तहं रघुपति जेते।
सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते।

तात्पर्य यह कि जब भगवान स्वयं शक्तिमान हैं तो शक्तिवान को शक्ति की आराधना करके शक्ति की प्राप्ति करना पड़े, यह सर्वथा असङ्गत सा जान पड़ता है।

सीता शक्ति तो भगवान की चेरी हैं और चेरी को प्राप्त करने के लिये आराधना नहीं की गई बल्कि नारी स्वभाव के अनुकूल सीता माता का श्रृङ्गार कर उन्हें रिझाने का प्रयत्न किया गया है। क्योंकि यह नारी स्वभाव ही है कि वह आभूषणों से प्रसन्न होती है कारण यह है कि वह उनका एक श्रृङ्गार है।

पर यहाँ मातेश्वरी को रिझाने का कौन-सा स्थल आ गया तो इस शङ्का के समाधान के लिये आगे चौपाई आई है कि—

लछिमन गये बनहिं जब लेन मूल फल कन्द,
जनक सुता सन बोले बिहसि कृपा सुख वृन्द।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनहु प्रिया ब्रत रुचिर सुसीला।
मैं कछु करबि ललित नर लीला।
तुम पावक महं करहु निवासा।
जौ लगि करौं निसाचर नासा।

यहां भी भगवान ने सीताजी की प्रशंसा करते हुए उन्हें फुला फुलाकर राजी किया है। इससे सिद्ध है कि जो आभूषण पहिनाये गये हैं वे भी रिझाने के लिए ही पहिनाये गये हैं शक्ति प्राप्त करने के लिये आराधना की झलक नहीं जान पड़ती।

अब यहां रिझाने की आवश्यकता इसलिये जान पड़ती है कि भगवान को सीताजी से विच्छेद करना है। जैसा चौपाई से स्पष्ट है।

तुम पावक महं करहु निवासा।
जब लगि करौं निसाचर नासा।

याने सीताजी को अग्नि प्रवेश करना है पर कहीं सीताजी साथ ही रहने के लिये हठ न पकड़लें इसलिये उन्हें रिझाना पड़ा। अभी से उसकी भूमिका बांधनी पड़ी। क्योंकि वे जानते थे कि सीता जी बड़ी हठीली हैं। यदि उन्होंने हठ पकड़ली तो साथ नहीं छोड़ेंगी। पहिले एक बार ऐसा प्रसङ्ग आ गया है। वन गवन के समय अनेक प्रकार से समझाने पर सीताजी नहीं मानी जो इन चौपाइयों से स्पष्ट है कि—

बन दुख नाथ कहे बहुतेरे,
भय बिषाद परिताप घनेरे।
प्रभु बियोग लवलेस समाना,
सब मिलि होहिं न कृपा निधाना।
अस जिय जानि सुजान सिरोमनि,
लेइअ संग मोहि छांड़िय जनि।
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते,
पिय बिनु तियहिं तरनिहुते ताते।
मैं पुनि समुझि दीख मन माहीं,
पिय बियोग सम दुख जग नाहीं।
प्राननाथ करुनायतन सुन्दर सुखद सुजान।
तुम बिनु रघुकुलकमल बिधु सुरपुर नरक समान॥
तनु धनु धाम धरनि पुर राजू,
पति बिहीन सब सोक समाजू।
प्राननाथ तुम बिनु जग माहीं,
मो कहँ सुखद कतहुं कछु नाहीं।
अस जिय जानि सुजान सिरोमनि,
लेइय संग मोहि छांड़िय जनि।

और साथ चली ही गईं इसी तरह कहीं यहां भी हठ न कर बैठें इसलिये उन्हें पहिले से प्रसन्न कर लेना अच्छा होगा इसी दृष्टि कोण से भगवान ने—

सीतहिं पहिराये अति सादर

इससे यह स्पष्ट हो गया कि भगवान ने सीता जी को आभूषण पहिराये हैं पूजा नहीं की। यह भी उनकी एक नर लीला थी।

एक बार इसी तरह की नरलीला को देख सती के मन में सन्देह उत्पन्न हो गया था और शङ्कर जी के अनेक प्रकार से समझाने पर वह सन्देह दूर नहीं हुआ। प्रमाण में—

लाग न उर उपदेस जदपि कहेउ सिव बार बहु।
बोले बिहसि महेस, हरि माया बलु जानि जिय॥
जो तुम्हरे मन अति सन्देहू,
तो किन जाइ परीछा लेहू।
तब लगि बैठ अहउँ बट छाहीं,
जब लगि तुम ऐहहु मोहिं पाहीं।
जैसे जाइ मोह भ्रम भारी,
करेहु सो जतन बिबेक बिचारी।

यह कह तो दिया पर शङ्कर जी ने अनुमान किया कि—

चली सती सिव आयसु पाई,
करहिं बिचार करौं का भाई।
इहां संभु अस मन अनुमाना,
दच्छ सुता कहं नहिं कल्याना।
मोरेहु कहे न संसय जाहीं,
बिधि बिपरीत भलाई नाहीं।

पर सती ने बिधि बिपरीत कर्म किया ही और इसीलिये कष्ट भी उठाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी तरह यहाँ भी श्रङ्गार करते समय की नर लीला देखकर अभिमानी सुरपति सुत जयन्त को भी सूझी और उसने अभिमान के वश बल देखना चाहा, बल की थाह लेनी चाही।

अब यहां यह प्रश्न उठता है कि यहां जो जयन्त ने अभिमान वश परीक्षा ली तो सती की भी परीक्षा अभिमान युक्त होना चाहिये। पर नहीं! परीक्षा तो दोनों ही थीं पर उनमें बहुत बड़ा अन्तर था। याने—

सती हृदय अनुमान किय, सब जानेउ सर्वग्य
कीन्ह कपट मैं संभु सन, नारि सहज जड़ अग्य।

कि नारि स्वभाव वश भ्रम हुआ था पर भाव—

मोरे सबइ एक तुम स्वामी,
दीन बन्धु अरु अन्तरजामी।
मैं सेवक रघुपति पति मोरे॥

इस प्रकार था इसीलिये यहाँ सती को सठ नहीं कहा गया पर जयन्त को—

सुरपति सुतधरि बायस बेषा,
सठ चाहत रघुपति बल देखा।

याने सठ कहा गया।

गोस्वामीजी ने रामचरित मानस में जिन शब्दों का उपयोग किया है वह बहुत चुनकर किया है। सारे राम चरित मानस में जहाँ सठ का उपयोग किया है वहां अभिमान अवश्य विच्छिन्न है। याने अभिमानी को सठ कहा है सम्पूर्ण रामचरित मानस खोल कर देख लीजिये—

लै सुग्रीव संग रघुनाथा,
चले चाप सायक गहि हाथा।
तब रघुपति सुग्रीव पठावा,
गर्जेसि जाइ निकट बल पावा।
सुनत बालि क्रोधातुर धावा,
गहि कर चरन नारि समुझावा॥
कहबाली सुनु भीरु प्रिय समदरसी रघुनाथ,
जो कदाचि मोहि मारहिं, तौ पुनि होउँ सनाथ।
अस कहि चला महा अभिमानी,
तृन समान सुग्रीवहि जानी।
परा बिकल महि सर के लागे,
पुनि उठि बैठ देख प्रभु आगे।
मैं बैरी सुग्रीव पियारा,
अवगुन कवन नाथ मोहिं मारा।
अनुज बधू भगिनी सुत नारी,
सुनु सठ ये कन्या सम चारी।

सठ क्यों? इसलिये कि वह अभिमानी था। और चलिये—

सुनि दसकंधर बचन तब कुम्भकरन बिलखान।
जगदम्बा हरि आनि अब सठ चाहत कल्यान॥
सुनि अंगद सकोप कह बानी,
बोलु संभारि अधम अभिमानी।
सहस बाहु भुज गहन अपारा,
दहन अनल सम जासु कुठारा।
जासु परसु सागर खर धारा,
बूड़े नृप अगनित बहु बारा।
तासु गर्व जेहि देखत भागा,
सो नर क्यों दससीस अभागा।
राम मनुज कस रे सठ बंगा,
धन्वी काम नदी पुनि गंगा।
आन बीर बल सठ मम आगे,
पुनि पुनि कहसि लाज पति त्यागे।
मन महुँ समुझि बचन प्रभु केरे,
सहेउँ कठोर बचन सठ तेरे।
सठ सूने हरि आनेहि मोही,
अधम निलज्ज लाज नहि तोही।
सो भुज कंठ कि तव असि घोरा,
सुनु सठ अस प्रमान पन मोरा।
धरइ जो बिबिध देह सुर त्राता,
तुम्ह से सठन्ह सिखावन दाता।
जे सठ गुरु सन इरिषा करहीं,
रौरव नरक कोटि जुग सत परहीं।
एक बार हर मन्दिर जपत रहेउ सिव नाम।
गुरु आयउ अभिमान ते उठि नहि कीन्ह प्रनाम॥
मंदिर माझ भई नभ बानी,
रे हतभाग्य अग्य अभिमानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदपि साप सठ दैहउँ तोही,
नीति विरोध सुहाइ न मोही।

इस तरह का उपयोग अभिमान के लिये गोस्वामी जी ने हर जगह किया है। कहने का तात्पर्य यह कि जयन्त भी अभिमान वश होकर रघुपति बल देखने आया था, यह सिद्ध हुआ इसलिये— सठ चाहत रघुपति बल देखा।'

तो इस अभिमानी सठने रघुपति बल की परीक्षा लेने के लिये अभिमान के वशीभूत होकर मन्द मति से काम लिया इसलिये उसकी गणना यहाँ मूढ़ में हो गई।

सीता चरन चोंच हति भागा,
मूढ़ मन्द मति कारन कागा।

सीता जी के चरणों में चोंच मार कर भागा। यहाँ किसी किसी का मत है कि सीताजी को चरण और चोंच दोनों मारकर भागा। इसलिये भगवान ने उसे क्रोध में आकर--सींक धनुष सायक संधाना।

परन्तु यदि भगवान को क्रोध आया होतो वे बड़े से बड़ा शस्त्र छोड़ते पर यहाँ तो भगवान को अभिमान का मर्दन करना था उसे मारना नहीं था इसीलिये उन्होंने अपने बल दिखाने और अभिमान का मर्दन करने ही के लिये—

सींक धनुष सायक सन्धाना।

वह सींक चली जयन्त के पीछे। वह सठ त्रैलोक्य घूम गया पर उसे वह लगी नहीं। रही उससे दूर ही। सब जगह गया सबसे बातचीत भी की। सबको अपनी कथा सुनाई इतनी देरी लगी तब भी वह सींक उसे न लग सकी। वह लौटकर रघुनाथजी के शरण भी आ गया तब भी उसे नहीं लगी दूर ही रही इस सबका अर्थ ही यह है कि उस सींक सायक द्वारा जयन्त के अभिमान का मर्दन करना था उसे मारना नहीं था।

यदि परीक्षा की ही बात मानें तो परीक्षक भागा क्यों। भाई उसे तो सामने रहना चाहिये पर वह तो भागा है। इसका समाधान यह है कि यहां जयन्त परीक्षा लेने नहीं आया था इसलिये ही वह भागा। पर भगवान को तो उसके अभिमान का मर्दन करना था इसीलिये—

सींक धनुष सायक सन्धाना।

क्योंकि अभिमान का नाश और अपने बल को दिखाने में भगवान सींक सायक से ही समर्थ हैं उन्हें अस्त्र शस्त्र की आवश्यकता नहीं तभी तो स्वयं जयन्त ने भगवान से शरणागत होकर कहा—

अतुलित बल अतुलित प्रभुताई,
मैं मति मन्द जानि नहि पाई।
निजकृत कर्म जनित फल पायेउँ,
अब प्रभु पाहि सरन तकि आयेउँ।

इसलिये प्रायश्चित स्वरूप—

एक नयन कर तजा भवानी।

श्री रामनाम लड्डू केन्द्र

प्रगति हो रही है। नये नियमों पर स्थापित केन्द्रों की संख्या अब ६ है। सूची इस प्रकार है :— १. भाटापारा २. महू ३. डगनिया ४. हसुवा ५. नौगाँव ६. गोरखपुर

आशा है १९ केन्द्र और स्थापित होकर २५ की संख्या शीघ्र पूर्ण होगी। भाटापारा केन्द्र में विशेष काम हो रहा है। ३२५ लड्डू वहाँ से आ चुके हैं। श्री ईश्वरीप्रसाद जी धुरन्धर बड़ा सराहनीय उद्योग कर रहे हैं। अन्य केन्द्रों से भी लड्डू आने लगे हैं।

आपके यहाँ केन्द्र कब स्थापित होगा ?

—शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

अक्टूबर मास में संघ के १२२ नये सदस्य बने तथा ६ नई शाखायें स्थापित हुईं जिनका विवरण इस प्रकार है :—

शाखा संख्या १९९९ तागा [बिलासपुर] सदस्य २४ मंत्री श्री भगऊराम जी कुर्मी। शा० सं० २००० देवरी [नरसिंहपुर] स० १२ मंत्री चौधरी श्री गयाप्रसाद जी। शा० सं० २००१ रेड़ा [रायगढ़] स० १० मंत्री श्री धनेश्वरप्रसाद जी। शा० सं० २००२ पचोखरा [दतिया] स० १० मंत्री श्री पन्नालाल जी स्वर्णकार। शा० सं० २००३ ढावा [दुर्ग] स० ९ मंत्री श्री चन्दुराम जी सैन। शाखा संख्या २००४ ढावा [दुर्ग] सदस्य ९ मंत्री श्री गणेशराम जी साहू।

विविध-समाचार

आर्वीः—महादेव मन्दिर में सिन्धी भाइयों के गुरु स्वामी शुद्ध ब्रह्मानंद जी का मानस पर दो दिन प्रवचन हिन्दी में हुआ। आर्वी में यह प्रथम अवसर है कि प्रवचन में हिन्दी, मराठी और सिन्धी भाषियों ने सम्मिलित रूप से सोत्साह रामचरित्रामृत श्रवण का लाभ पाया।

—मुन्नालाल देवासे

रावटीः—श्री मनकामेश्वर महादेव जी के मंदिर में श्रीमानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर सुन्दरकांड पाठ से यज्ञ पूर्णाहुति करके आरती की गई। प्रसाद वितरण हुआ।

—बसन्तीलाल ठाकर

रोंढाः—ता० १८-१०-५७ से दीपावली तक रामायण संगीत रूपक (नाटक) शिक्षक तथा छात्रों द्वारा खेला गया। समाप्ति पर राज्याभिषेक उत्सव मनाया गया। श्री बाबूलाल जी देवासे के यहाँ अखंड पाठ मानस का हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मण पाठक, श्रोतावृन्द को भोजन कराया गया।

—मुन्नालाल देवासे

खैराः—श्री हनुमानजी के चबूतरे में पं० श्री रमाकान्त मिश्र द्वारा कार्तिक कृष्ण ५ से श्रीमद्भागवत पुराण की सप्ताह कथा हुई।

—रामअधार शर्मा

विहटाः—नित्य हरिनाम संकीर्तन की व्यवस्था हमारे यहाँ होती है।

—वासुदेव राय

घोघराः—क्वार शुक्ल पूर्णिमा को १० प्रेमियों द्वारा तथा कार्तिक कृष्ण ९ को ६ प्रेमियों द्वारा मानस का अखंड पाठ १००० रामनाम जप व १००० आहुति सम्पन्न हुआ। बाद में आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —माधवप्रसाद

कर्माः—ता: ६-१०-५७ को २४ घंटे का सामूहिक रामायण पाठ हुआ। —लक्ष्मीचन्द्र

कबर्धाः—मोरमदेव स्थान में ता० ११-१०-५७ को श्री मानस का २ आवरण अखंड पाठ हुआ। पूर्णाहुति होकर कार्य सम्पन्न हुआ।

—शिवदयालसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधोपुरः—चैत्र रामनवमी से कुआँर नवमी तक रामायण, गीता, श्री हनुमान चालीसा पाठ तथा कन्या भोजन नित्य हुआ।

गरयाबन्दः—तुलसी जयन्ती पर मानस अखंड पाठ हुआ। जलूस निकाला गया। शरद पूर्णिमा को वार्षिक उत्सव, रामायण, भजन, प्रवचन आदि हुआ। बाद में प्रसाद वितरण हुआ। —महेशराम साहू

औरंगाबाद:—श्री द्वारकाप्रसाद जायसवाल की ओर से श्री एस. एन. ए. मिश्रा की अध्यक्षता में शरदपूर्णिमा को श्री रामराज्यभिषेकोत्सव समारोह मनाया गया। अन्त में दुग्धपान होकर प्रसाद वितरण हुआ। —गोवर्धनलाल

अहमदाबाद—सोसाइटी की चाल अमराई रोड में ता० ५-१०-५७ से १३-१०-५७ तक श्रीमानस का नवाह पाठ होलागढ़ निवासी रामायणी श्री रामबालक शरणजी महाराज मानस शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ। ५ साधकों द्वारा "दैहिक दैविक....." सम्पुट लगाकर पाठ हुआ। पूर्णाहुति श्री स्वामी रामचरणशरण जी के द्वारा हुई। विद्वानों के सारगर्भित भाषण हुए। बाद में प्रसाद वितरण हुआ। —श्री गिरधारीसिंह

सैदा—ता० २६-१०-५७ को श्री पं० रामरक्षित जी रामायणी द्वारा श्रीराम के आदर्श पर ३॥ घंटा तक भावपूर्ण प्रवचन हुआ। जनता काफी तादाद में इकट्ठी हुई थी। —प्राणनाथ पाण्डेय

सेऊ—हटचोर हनुमान जी के यहाँ ता० २६-१०-५७ को श्रीमानस का अखण्ड पाठ हुआ। कीर्तन, हवन, कन्या, साधू ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —श्यामलाल

उमरिया—ता० १४-१०-५७ को उड़िया भागवत गाजे बाजे सहित ४०-५० गायकों द्वारा हुई। —विनायकप्रसाद

मुँगेली—श्री रामगुलाम साव सुखरू प्रसाद साव के यहां ता० ३०-१०-५७ से २-११-५७ तक तक श्री रामरक्षित जी रामायणी द्वारा मानस प्रवचन हुआ। कार्तिक शुक्ल ११ को श्रीसेवकराम के यहां १०८ व्यक्तियों द्वारा सुन्दरकाण्ड का पाठ हुआ। श्री रामायणी जी के प्रवचन से नागरिक बहुत प्रभावित हुये। —राजधर बड़गैंयाँ

करमा—ता० २७-१०-५७ से ३-११-५७ तक श्रीरामनाम अखंड सप्ताह हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन हुआ। —लक्ष्मीचन्द्र

लिंगा—हर पूर्णिमा को अखंड रामायण होकर प्रसाद वितरण होता है। यहां प्रत्येक जयन्ती उत्सव, अखण्ठ कीर्तन आदि समय २ पर होता रहता है। इन अवसरों पर कुछ शराबी लोग विघ्न बाधा उपस्थित करते थे। एक महात्मा यहां आये और इस विघ्नबाधा निवारण के लिये ४१ दिन तक खड़े रहकर तपस्या किया जिसके कारण शराबियों ने घबड़ाकर आत्म समर्पण किया। —बुद्धूलाल श्रीरंग

अमोदा—के रामायण प्रेमी श्री दिलेश्वरराम जी वैद्यभूषण का स्वर्गवास ता० ३ अगस्त ५७ को हो गया। आप रामायण प्रेमी, बड़े श्रद्धालु भक्त थे। परमात्मा इस दिवंगत आत्मा को पूर्ण शान्ति प्रदान करें। इनके दुखी परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति दें। —विनायकप्रसाद

मानसमणि के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर उसे स्वावलम्बी बनाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्विन नवरात्र पारायण समाचार

डौंड़ी :—व्यक्तिगत १२ पाठ मानस के, गीता पाठ, रामस्तवराज, विष्णु सहस्त्र नाम तथा हनुमान चालीसा के पाठ हुए। —भवनाथसिंह

औरंगाबाद :—श्री नरसिंहराव जी सर्वदे के मकान पर मानस का नवाह पाठ हुआ। पूर्णाहुति होकर प्रसाद वितरण हुआ। —प० न० सर्वदे

खापरखेड़ा —में ९ सदस्यों द्वारा चिखल्दा में २ व्यक्तियों द्वारा तथा धुलसर में ५ व्यक्तियों द्वारा व्यक्तिगत पाठ हुए। —शंकरलाल

बड़गांव :—व्यक्तिगत नवाह पाठ हुआ। श्री रामलाल ने गायत्री अनुष्ठान भी किया। समाप्ति पर यज्ञ हुआ। —नारायण बाबने "वरुण"

लहरापुर :—दो व्यक्तियों ने नवाह पाठ किये। समाप्ति पर हवन, कीर्तन, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —राममनोरथ पाठक

अमारी :— सामूहिक नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर प्रसाद बाँटा गया। —प्रेमलाल

धनगाँव :—आश्विन शुक्ल ९ से १० तक मानस का अखंड पाठ और अखंड कीर्तन २४ घंटे का हुआ। —दशरथ भारती

हिरमी :—मानस नवाह पाठ, २ माला जप तथा गीता के १० श्लोक का नित्य पाठ किया। अन्त में प्रसाद वितरण हुआ। —चोबाराम

सीपत :—६१ पीतवस्त्रधारी साधकों द्वारा श्री हनुमान जी के मन्दिर में मानस का सामूहिक पाठ हुआ। समाप्ति पर विजया पूजन, हवन होकर प्रत्येक साधकों ने ९००० मंत्र दक्षिणा में दान दिया। —देवकुमार

गरियाबंद :—३५ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। —महेशराम साहू

साँमर:— आश्विन शुक्ल १ से १० तक हे कृष्ण गोविन्द···मंत्र का अखण्ड कीर्तन हुआ। कार्तिक कृष्ण २ से ११ तक मानस का नवाह पाठ हुआ। दोनों की समाप्ति पर हवन; कुवारी तथा ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —भुवनलाल पाण्डेय

रतनपुर :—१९ पाठ मानस के हुए। कार्तिक बदी १० को २४ घंटा का नाम सप्ताह हुआ। —रामजी तेजनाथ

बंदेमऊ:—९ व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए। दो स्थान पर नवदुर्गा पाठ हुआ। बाद में हवन हुआ। —छोटेलाल

गङ्गापुर :—श्री हनुमान जी के मन्दिर पर २३ सदस्यों ने नवाह पाठ किये। अंतिम दिन हवन और ब्राह्मण भोजन हुआ। २० यक्तिगत पाठ हुये। —भगवत शर्मा

जियागाँव :—श्री मारुति मन्दिर में ९ पाठ हुए। समाप्ति पर हवन, पूजन, आरती, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्रीरामायण की झाँकी गाजे-बाजे के साथ नगर में निकाली गई। —रामगोपाल पाराशर

बाराद्वारबस्ती :—व्यक्तिगत नवाह पाठ हुआ। रात्रि में रामायण गान होकर प्रसाद वितरण हुआ। —धनसाय साहू

ललितपुर :—२५ सदस्यों ने सामूहिक नवाह पाठ श्रीसंकट मोचन हनुमान जी के मन्दिर में किया। बाद को हवन व कन्या भोज आदि हुआ। श्री रामसेवक कौशल ललितपुर शाखा के नये मंत्री चुने गये। १० नये सदस्य बनाये गये। आशा है कि ललितपुर शाखा अब आगे बढ़ेगी। —नर्वदाप्रसाद वर्मा

हिन्छापुर :—११ सदस्यों ने नवाह पाठ किया। शाम के वक्त टीका सहित रामायण होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। बाद में हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। गायों को खिचड़ा भात; कुवांरी भोजन, बाल भोजन खिलाया गया। आमामुड़ा में सामूहिक पाठ हुआ।
—पुनऊराम साहू

मछरहटा :—नवाह पाठ हुआ। धनतेरस को मानस का अखंड पाठ तथा श्री हनुमज्जयन्ती को श्रीहनुमान चालीसा के १०८ पाठ सुन्दर काण्ड के ७ पाठ हुए। सभी के अन्त में कीर्तन आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —जगदेवप्रसाद

कोहड़िया :—श्री गोस्वामी होरिलगिरी जी के मंत्रित्व में १२ सदस्यों द्वारा मानस का अखंड पाठ तथा ६ सदस्यों द्वारा अखंड रामनाम जप, अखंड ज्योति, अखंड धूप होता रहा। समाप्ति के दिन ५१ सज्जनों द्वारा सुन्दर कांड के सामूहिक पाठ से हवन, पुरोहित दक्षिणा ब्राह्मण भोजन हुआ। वेदान्त भूषण मानस तत्वान्वेषी पं० श्रीरामकुमारदास जी रामायणी द्वारा सत्संग हुआ। विद्वानों तथा बच्चों के प्रवचन हुए। सुन्दर काँड रामायण का दान भी किया गया। —पं० रामानुज उपाध्याय

सिरसा :—श्री देवी जी व श्री महावीर जी के स्थान पर १७ सदस्यों द्वारा मानस का सामूहिक नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, पूजन, कीर्तन तथा ब्राह्मण भोजन हुआ।

डूड़ा:—में १३ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ।

रसूलपुरा:—में ७ सदस्यों द्वारा मानस का सामूहिक नवाह पाठ हुआ। सभी के अन्त में हवन पूजन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —बनवारीलाल

इलाहाबाद:—अष्टमी को सुन्दरकांड का पाठ करके हवन किया। कई सदस्याओं के यहाँ मानस का अखंड पाठ तथा नवाह पाठ हुआ।

गंडई—श्री पं० जगदीशप्रसाद जी तिवारी वकील जांजगीर के तत्वावधान में विजयादशमी का उत्सव मनाया गया। ९ दिन तक प्रवचन हुआ। श्री रामशरणसिंह भुवाल के तत्वावधान में सरकार आयोजित मद्यनिषेध सप्ताह मनाया गया। श्री भुवाल जी के प्रवचन से जनता ने नशे की चीजों का परित्याग करने की प्रतिज्ञा की।
—चन्दूलाल जायसवाल

हरदा:—बड़े मन्दिर के सामने श्री कंज जी रामायणी की अध्यक्षता में ५०० साधकों द्वारा सामूहिक नवाह पाठ रात्रि में ७॥ बजे से ११ बजे तक ९ दिन तक नित्य हुआ। समाप्ति पर हवन होकर ब्राह्मण भोजन हुआ। श्रोताओं की काफी भीड़ होती थी। एक बोरा अन्न रामवन के लिये प्रदान किया गया। —मानसयज्ञ समिति

अकाल

आशंका ने घटना का रूप धारण कर लिया है। यह क्षेत्र अकाल ग्रस्त हो गया। वर्तमान फसल सूख गई और अगली तो बोई ही नहीं जा सकी है। तालाबों में जल कम भरा है। गोरुओं के लिये जल कष्ट की आशंका होने लगी है।

नगरों में सरकारी दुकानें खुल रही हैं और विदेशी गेहूँ बिकने लगा है। आश्रम में चावल नहीं है। थोड़ा कोदों बचा है वही काम आ रहा है। गेहूँ के लिये बोम्बो के श्री एच. डी. कारिया ने १०० शिलिंग भेजे हैं। लगभग एक मास का काम इनसे चल जायगा। आगे की व्यवस्था श्री हनुमान जी करेंगे ही।

हमारी समझ में जल की व्यवस्था पूर्ण हो चुकी थी। पर इतनी अनावृष्टि की तो संभावना नहीं थी। यदि यह विपत्ति बढ़ी तो मानस सर और गहरा करवाना होगा। समय पर समुचित व्यवस्था करना ही अपना कर्तव्य है। —शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन समाचार

श्री मारुति सेवाः— अक्टूबर मास में मानस का एक अखण्ड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में ८५१.५० की आय हुई और खर्च ८१२.६१ हुआ, बचत ३८.८९ की हुई। पिछली बचत ८८१.८९ रु० सहित अब ९२०.७८ जमा रहे।

४-१०-५७

८.०० श्री राममूर्ति अग्रवाल, भाटापारा

५-१०-५७

५०.०० गुप्तदान
१०.२५ श्री विट्ठलदासवल जी, म्वेल
१६६.०० ,, विष्णुलार्ड कं०, नैरोबी
३.७५ ,, दिनेश्वरप्रसाद, औरंगाबाद
१५.२५ ,, भगवानदास कुञ्जविहारीलाल, बाँदा
५.०० ,, हरगोविन्दसिंह ब्रह्मवंशी, जबलपुर
७.०० ,, गुरुमुखराय रामानन्द, खरसिया
१९.५० जस्टिस श्री हरिश्चन्द्र जी, न्यू देहली
१०.०० श्री नारायणप्रसाद शर्मा, डंगनिया

८-१०-५७

५.०० श्री गणेशप्रसाद जी, पांगरा
१.२५ ,, एस० पी० लाल, औरंगाबाद
५.०० ,, भैरवशंकर जी शर्मा, मन्दसौर
५.०० ,, अंबिकेश्वरपति त्रिपाठी, अयोध्या
५.०० ,, सी० पी० शर्मा, नरसिंहपुर

१०-१०-५७

३.७५ श्री डा. वी. एल. कोटी, मगरूलपीर
६.२५ ,, सांवरप्रसाद देवकीनन्दन, गोरखपुर
५.०० ,, पुरुषोत्तमसिंह, जगन्नाथपुर
७.०० ,, रामसुन्दर त्रिपाठी, बोवनपल्ली
१०.०० ,, सागरमल शर्मा, साँवलोद
५०.०० ,, सेठ नरसिंहदास फतेचन्द्र जी मोर, नागपुर
४.२५ भैंसातरा शाखा
१.२५ श्री पचकौड़नापित
१.२५ ,, जयलाल
१.२५ ,, गणेशराम
१.२५ ,, आशाराम
२.३० श्रीमती लक्ष्मीबाई
४.४५ फुटकर
१.२५ खैरा शाखा
१.२५ श्री टीकाम्बर नाई
·६२ ,, मनराखन साहू

१२-१०-५७

१.२५ श्री रामलाल साव, बलौदा
१.२५ ,, दौलतराम, ,,
१.२५ ,, रामरतन शर्मा, झांसी
१.२५ ,, बाबू आनंदस्वरूप भटनागर, झांसी
२.०० ,, सेठ विरदीचन्द्र पोद्दार, नागपुर
११.०० ,, जयदयाल जी डालमिया, देहली
६.२५ ,, तीरथराम थवाइत, रायगढ़
२.०० ,, शिबचालक शर्मा, बांदा

१४-१०-५७

१.२५ श्री शुद्धप्रसाद तिवारी, तूमा
६.२५ ,, थानसिंह, कवर्धा
७.५० ,, एम. जे. कक्कड़, धनवाद
५.०० ,, शम्भूदयाल अवस्थी, सतना

१५-१०-५७

१,२५ श्री अमृतलाल दुबे, बाबई
१.२५ श्रीमती सावित्रीदेवी छिंदवाड़ा
१.२५ ,, मालतीदेवी ,,
१.२५ ,, विमलादेवी ,,
१.२५ ,, मथराबाई छिंदवाड़ा
१३.०० श्री परमेश्वर झा, जहानगीरा
१.०० ,, प्रभूदयाल लिटौरिया, नहला
५.०० ,, गोविन्दलाल जी वर्मा, चेचट

१६-१०-५७

५.०० श्री ओ० पी० आरसे, दतिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७-१०-५७

५.०० श्री नन्दलाल शर्मा, नागपुर
१.२५ शाखा तिमारपुर दिल्ली श्री सूरजभानशर्मा

१८-१०-५७

२.५० महन्त श्री रामप्रपन्न रामानुजदास जी विसिमगिरी
७.५० महाजन श्री चेतराम चौकसे, कामती
११.०० श्रीमती कृष्णादेवी, गया
१५.०० श्री राममूर्त्ति अग्रवाल, भाटापारा

१९-१०-५७

१.२५ श्री श्यामकार्तिक पाण्डेय, पौंसरा
१.२५ ,, जगदीश्वर वारीक, सिंहाचमरिया
५.०० ,, रामकिशोर अग्निहोत्री, जबलपुर

२१-१०-५७

५.०० ,, नन्दलाल नामदेव, सतना
१.२५ ,, रामबहादुर, कोंच
३.३४ ,, पंचमराम, धुरकोट

२२-१०-५७

५०.०० गुप्तदान

२४-१०-५७

४.०० श्री देवकामता दीक्षित, कानपुर
२.५० सर्व श्री पुनऊराम साहू, ग्राम आमामुड़ा
१.२५ श्री तारकेश्वर प्रसाद, पटना
४.०० गुप्तदान
१.२५ श्री ठाकुरप्रसादसिंह, रीठी
१.२५ ,, धनराजसिंह, छुलियाबांधा
१.२५ श्रीमती सोनवती बाई ,,
५.०० श्री राधिकारमन सिन्हा, पटना
२.५० ,, एन० के० पाठक, छोटामुरी
३.५९ ,, राजकिशोर खत्री, सतना

२६-१०-५७

२.०० श्री दुर्गाप्रसाद मिश्र, मुङ्गावली
५.०० ,, दुर्गाप्रसाद अधिकारी, गोवर्धन
१.२५ श्री प्रेमदास पुजारी, तलवाड़ा
१.२५ श्री उदियाजी गेहलोत, ,,
५०.०० श्रीमती रूपीबाई, नागपुर
६६.२५ श्री एच० डी० कार्या, बोम्बो
४३.०६ ,, विष्णुलार्ड कं०, नैरोबी
१०.०० ,, मि० वाल्तर गार्गल (जर्मन)

२८-१०-५७

१०.०० श्री डा० बी० एन० मुकर्जी, कानपुर
१.०० ,, शीतलसिंह, नहला
१०.०० ,, सूर्यप्रतापसिंह, शिवकालीनगर

२९-१०-५७

५.०० श्री रामदयाल पूरनमल खंडेलवाल, सरसीवा
५.०० श्री आनन्दसिंह पटवारी, चोरभट्ठी
११.१४ चढ़ोत्री

८५१.५० कुल। दाताओं को धन्यवाद।

श्री रामनाम सेवाः—इस मास में लड्डू आदि की बिक्री से ५९.१० की आय हुई और श्री के० सी० मिश्र ने १००.०० रु० भेजने की कृपा की है। कुल आय १५९.१० की हुई। १७१.६० की पूर्ति करना बाकी था १२.५० की पूर्ति करना बाकी रहा। तारीख १-११-५७ को रामनाम लड्डू की बिक्री से १२.५० प्राप्त हुए। इस प्रकार इस विभाग का आय व्यय का हिसाब पूरा हो गया।

नये नियम के अनुसार अधिकांश लड्डू अब डाक खर्च मात्र पर भेजे जाते हैं जिसका हिसाब पत्र व्यवहार विभाग में रहता है। अतः भविष्य में जो कुछ लड्डू की बिक्री होगी वह मानस प्रचार विभाग में जमा की जायगी और खर्च पत्र व्यवहार में लिखा जायगा। श्री रामनाम सेवा का आर्थिक विवरण अलग से नहीं छपा करेगा। श्री विष्णु लार्ड कं० से प्राप्त जो २००) जमा हैं वे भी मानस प्रचार विभाग में जमा कर दिये जा रहे हैं। श्री रामनाम लड्डू का विवरण केन्द्रों के विवरण में छपा करेगा।

अक्टूबर मास में ७४५ लड्डू तैयार हुए। दैनिक क्रम में श्रीमारुति जी को १५५ लड्डू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण हुए शेष श्री रामनाम नौका के लिये रखे गये। केन्द्रों की स्थिति इस प्रकार है:— सेंधवा ४५१, भाटापारा ३२५, मोतीहारी ३१६, परौंख ३००, जुहिला २०६।

श्री तुलसी संग्रहालय भवनः—

इस मास में ३३३.०१ रु० खर्च हुए और आय ११०.०० रु० की हुई, कमी २२३.०१ की रही। पिछली कमी २१३५.६३ रु० सहित अब २३५८.६४ की पूर्ति करना बाकी रहा।

१५-१०-५७

६.०० श्री राजाराम मिश्र, सिमरी

२४-१०-५७

१०१.०० श्री भीमराज ज्वालाप्रसाद, सतना

११०.००

मानस प्रचारः—इस मास में सदस्य शुल्क से ५६.०० रु० और शाखाओं से ४४.२५ रु० प्राप्त हुए। श्री रामनाम सेवा में श्री विष्णुलार्ड कं० से प्राप्त २००) इस विभाग जमा में किये गये इस प्रकार कुल आय ३००.२५ की हुई। श्री रामनाम लड्डू भेजने के खर्च सहित पत्र व्यवहार में ६६.३७ खर्च हुए। बचत २००.८८ रु० की रही। पिछली कमी १३१६.३८ रु० में से यह घटाने पर अब १११८.५० रु० की पूर्ति करना बाकी है।

५-१०-५७

५.०० शाखा आर्वी श्री मुन्नालाल देवासे

८-१०-५७

८.०० श्री नन्दलाल कोष्टा, अंतरिया

५.०० श्री रामकंकन तिवारी, हरसिंहपुर

१५-१०-५७

५.०० शाखा चेचट श्री कन्हैयालाल जी

१७-१०-५७

३.७५ शाखा तिमारपुर दिल्ली, श्री सूरजभान शर्मा द्वारा

२६-१०-५७

०.२५ श्री कामताप्रसाद मंत्री चन्दला

१.२५ महन्त श्री अयोध्यादास, वामोती

५.०० श्री अमृतलाल पटेल, मेड़ीकोना

२६-१०-५७

११.०० श्री महेशप्रसाद चतुर्वेदी, घंसौर

४४.२५

नई कुटियाः—पूर्ववत् १४३६.२८ की पूर्ति करना बाकी है।

मानस यज्ञ रमपुरा

भगवान श्री राघवेन्द्र की कृपा से रमपुरा की मानस संघ शाखा ने माघ कृष्ण ५ शुक्रवार तारीख १०-१-५८ से माघ कृष्ण १४ शनिवार तारीख १८-१-५८ तक **मानस यज्ञ** करना निश्चित किया है। इसमें १०८ साधकों द्वारा श्री रामचरित मानस का सामूहिक पाठ होगा। दशांस हवन आदि की भी व्यवस्था साथ ही रहेगी। यज्ञ सुप्रसिद्ध रामायणी श्री पं० रामरक्षित जी रामायणी की अध्यक्षता में होगा। कुछ अन्य व्यास भी बुलाये जा रहे हैं। मानस संघ की अभी शाखाओं से प्रार्थना है कि इस पुनीत कार्यक्रम में सम्मिलित होने की कृपा करें। यज्ञ छत्तीसगढ़ में हो रहा है इससे वहाँ की शाखाओं से विशेष अनुरोध है कि वे अवश्य भाग लें। रमपुरा आने के लिये— मुंगेली, रायपुर और भाटापारा से बस सर्विस की व्यवस्था है। अपने आने की पूर्व सूचना नीचे लिखे पते पर भेजने की कृपा करें।

निवेदक—

गजाननसिंह वर्मा,

ग्राम-रमपुरा, पो०-संवलपुर, (दुर्ग) म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

	नाम	लेखक	पृष्ठ
१.	दूलह राम	(गीतावली से)	३४१
२.	मानस का सुन्दर सोपान....	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	३४२
३.	सन्त समागम (२)	(श्री शारदाप्रसाद जी)	३४५
४.	भक्तराज जटायू की जथोचित क्रिया	(श्रीगोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री)	३५०
५.	श्रीराम और श्रीरामचरित मानस की अद्भुत रूपता....	(श्री धनेश्वरप्रसाद जी शर्मा)	३५२
६.	शंका समाधान	(श्री पं० रामकुमारदास जी रामायणी)	३५४
७.	श्री मानस कथित पुण्य-प्रभाव	(श्री पं० रामकुमार जी उपाध्याय 'कुश') ...	३५७
८.	निधि	(श्री हुबलाल जी रामायणी श्रीपट्टी)	३६०
९.	रामचरित मानस	(श्री कमलादेवी हाड़ा)	३६२
१०.	संघ-समाचार	....	३६६
११.	विविध-समाचार	....	३६६
१२.	आश्विन नवरात्र पारायण समाचार ...	....	३६८
१३.	रामवन-समाचार	....	३७०

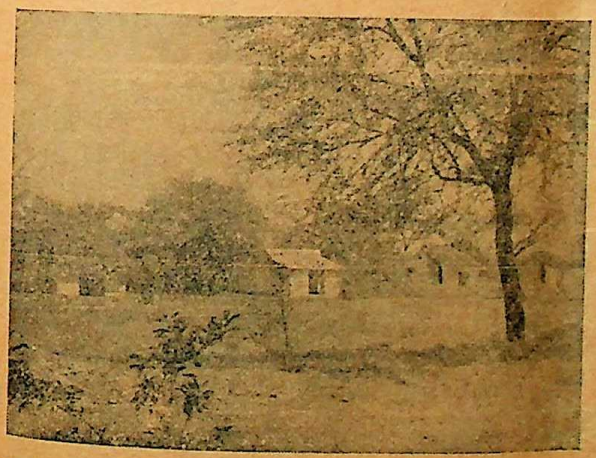

साधक कुटियां रामवन

रामवन में कुटियाँ एक दूसरे से अलग बनी हैं। एकान्तवास और भजन का सुयोग प्रदान करती हैं। थोड़े या अधिक समय के लिए आकर साधन कीजिये। रामवन के शान्त वातावरण से लाभ उठाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरितमानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ॥) है। जहाँ भी सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के १६४३६ सदस्य हैं और २००४ शाखायें हैं।

२—रामचरित मानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस - मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से कुल ६३ ग्रन्थ छप चुके हैं।

४—श्रीरामचरितमानस - पत्र - व्यवहार विद्यालय द्वारा मानस संघ घर बैठे श्रीरामचरितमानस की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य विषय तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क १०) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में साधन भजन करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमारुति जी को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

* हर विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है *

'मानस मणि'

पो० - रामवन (बलन)

प्रा० नं० — ७

श्री सम्पादकजी 'गुरुकुल पत्रिका'

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय - हरिद्वार

पो० गुरुकुलकांगड़ी

(सहारनपुर)

सम्पादक—पं० तत्त्वेन्दु शेखर तिवारी। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (बलन)
मुद्रक—मारुत जैन, सुषमा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसमणि

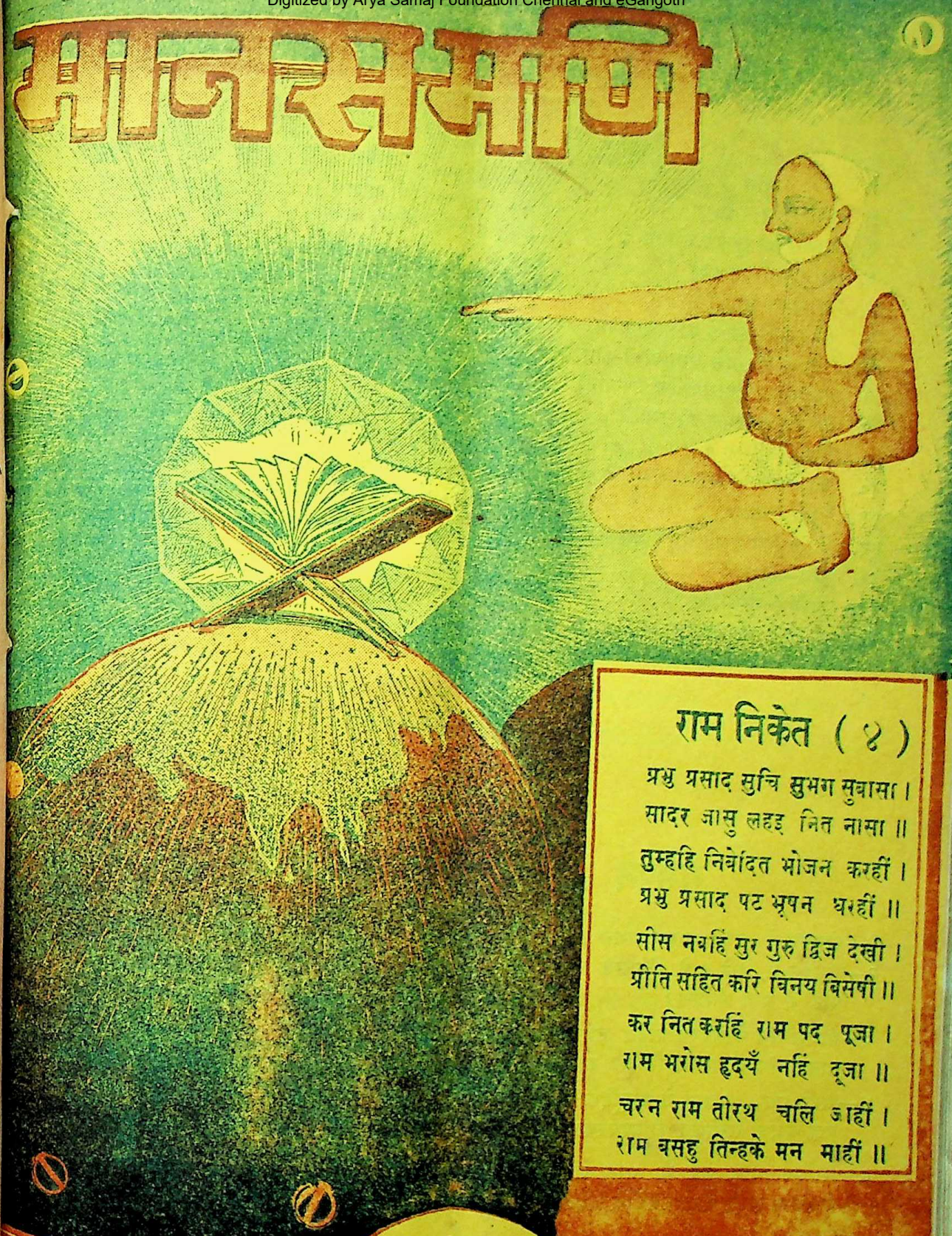

राम निकेत (४)

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा ।
सादर जासु लहइ नित नासा ॥
तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं ।
प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं ॥
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी ।
प्रीति सहित करि बिनय बिसेषी ॥
कर नित करहिं राम पद पूजा ।
राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा ॥
चरन राम तीरथ चलि जाहीं ।
राम बसहु तिन्हके मन माहीं ॥

आलोक १७ मसि १
जनवरी १९२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

नाम	लेखक	पृष्ठ
१. मुग्ध प्रश्न	(श्री सूरदास)	१
२. मानस का सुन्दर सोपान....	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	२
३. सन्त समागम (३)	(श्री शारदाप्रसाद जी)	५
४. श्री भरत जी को सन्देश	(पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी)	७
५. श्री हनुमान-भक्त का सच्चा स्वप्न	....(स्वामी श्री किशोरी रमणाचार्य जी रामायणी)....	९
६. मानस में सबसे बड़ा अंधा कौन है	(गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री)	१०
७. राक्षसराज (धारावाहिक उपन्यास)	(श्री सुदर्शनसिंह जी) ...	११
८. शरणागतवत्सल श्रीराम	(श्री प्रेमरानी दीन जी एम ए.)	१६
९. प्रेम ही-संसार है	(स्वामी श्री शिवानन्द जी सरस्वती)	१८
१०. श्री गोस्वामी जी का उपासना मार्ग	...(कथा वाचक पं, श्री सीतारामदास जी महान्त)....	२०
११. पिता वचन	(पं० श्री रामदत्त जी उपाध्याय)	२२
१२. "प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी"	(श्री रामचन्द्र जी शर्मा छांगाणी)	२६
१०. संघ-समाचार	....	२८
११. विविध-मसाचार	....	२८
१३. रामवन-समाचार	....	३०

॥ श्री राम ॥

रामवन से लाभ के विविध क्रम

१—रामवन में रहकर साधन भजन कीजिये।

२—रामबन में होने बाले निष्काम तथा सकाम पाठों में भाग लीजिये।

३—मानस संघ के सदस्य बनिये तथा अपने यहाँ मानस संघ की शाखा स्थापित कीजिये।

४—अपने नगर या ग्राम में सामूहिक पाठ, मानस यज्ञ अथवा सम्मेलन की व्यवस्था कीजिये।

५—लिखित नाम जप में भाग लीजिये। श्री रामनाम लड्डू केन्द्र स्थापित कीजिये।

६—रामवन के तुलसी संग्रहालय को पुस्तक आदि प्रदान कीजिये।

७—श्री रामचरित मानस पत्र-व्यवहार विद्यालय के छात्र बनकर मानस का ज्ञान अर्जन कीजिये।

८—आश्रम संचालन के लिये आर्थिक सहयोग प्रदान कीजिये।

९—मानस मणि मासिक पत्र के ग्राहक बनिये।

१०—रामवन से प्रकाशित साहित्य का प्रचार कीजिये।

इन क्रमों से आपका कल्याण तो होगा ही साथ ही संस्था का हित साधन भी होगा। मानस प्रचार में प्रगति होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १७ | रामवन—पौष, मानस सम्वत् ३८४—जनवरी १९५८ ई० | आलोक १

मुग्ध प्रश्न

सखी री! कौन तिहारे जात?
राजिव नैन धनुष कर लीन्हे, बदन मनोहर गात॥
लज्जित होंहिं पुरबधू पूछत, अंग अंग मुसकात।
अतिमृदु चरन पंथ बन बिहरत, सुनियत अद्भुत बात॥
सुन्दर तन सुकुमार दोउ जन, सूर-किरन कुम्हिलात।
देखि मनोहर तीनौं मूरति, त्रिबिध ताप तन-जात॥

—श्री सूरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, एम. ए. डी. लिट्]

जानउँ मैं तुम्हार प्रभुनाई।
सहसबाहु सन परी लराई॥
समर बालि सन करि जसु पावा।
सुनि कपि बचन बिहँसि बहरावा॥
खायेउँ फल प्रभु लागी भूखा।
कपि सुभाव तें तोरेउँ रूखा॥
सब के देह परम प्रिय स्वामी।
मारहिं मोहि कु-मारग गामी॥
जिन्ह मोहिं मारा ते मैं मारे।
तेहि पर बांधेउ तनय तुम्हारे॥
मोहिं न कछु बांधे कइ लाजा।
कीन्ह चहउँ निज प्रभु कर काजा॥
बिनती करउँ जोरि कर रावन।
सुनहु मान तजि मोर सिखावन॥
देखहु तुम निज कुलहिं बिचारी।
भ्रम तजि भजहु भगत-भय-हारी॥
जाकै डर अति काल डेराई।
सो सुर असुर चराचर खाई॥
ता सों बैरु कबहुं नहिं कीजे।
मोरे कहे जानकी दीजे॥

दोहा—प्रनतपाल रघुनायक करुनासिंधु खरारि।
गये सरन प्रभु राखिहहिं तव अपराध बिसारि॥२२॥

"मैं तुम्हारी प्रभुता को (खूब) जानता हूँ। सहस्रबाहु के संग (तुम्हारा ही तो) युद्ध हुआ था। बालि के साथ युद्ध करके (तुमने ही तो) यश पाया था ....." [रावण के पराक्रम के यह दोनों ही बड़े कमजोर दांव थे जिनमें पड़कर उसे करारी हार मिली थी। संभव है हनुमान जी इसी प्रकार की और भी कुछ घटनाओं का उल्लेख करते। परन्तु रावण ने बीच में ही बात टाल दी] कपि वचन सुनकर (रावण ने) बिहँसकर बात बहला दी। (हनुमानजी ने तब तीसरे प्रश्न का उत्तर दिया:—) "प्रभु जी! मुझे भूख लगी थी (इसलिये) मैंने फल खा लिये (और) कपि स्वभाव के कारण वृक्ष तोड़ दिये। [यह तो कपि का नैसर्गिक स्वभाव है अतएव इसके लिये मारपीट की क्या आवश्यकता थी? परन्तु] कुमार्ग-गामी लोग मुझे मारने पीटने लगे। स्वामी जी! (आप तो जानते ही हैं कि) सब लोगों की (अपनी २) देह परम प्रिय होती है। (अतएव) जिन्होंने मुझे मारा। [आत्म रक्षा के सिद्धान्तों पर बंधी हुई व्यवहार नीति तो यही है] उस पर (तुर्रा यह कि) तुम्हारे तनय ने मुझे बन्धन में डाल दिया (खैर मुझे बँध जाने की कोई लज्जा नहीं है (क्योंकि) मैं तो निज प्रभु का काज कर लेना चाहता हूँ। (इसलिये) हे रावण! मैं हाथ जोड़ कर विनती कर रहा हूँ। अभिमान छोड़ कर मेरा सिखावन सुनो। तुम विचार कर (जरा) अपने उज्वल कुल की ओर देखो! भ्रम को छोड़कर भक्त भय हारी का भजन करो। जिसके डर से काल—वह काल जो सुर-असुर, चर-अचर (सबको) खा जाता है—भी बहुत डरता है। उससे कभी बैर न कीजिये और मेरे कहने से जानकी जी को (वापिस दे) दीजिये। (प्रभु रामचन्द्र जी) रघुनायक होते हुए भी प्रणतपाल हैं और खरारि खर विध्वन्सी होते हुए भी-करुणा सिन्धु हैं। शरण जाने पर (वे) प्रभु तुम्हारे (सब) अपराधों को भुलाकर तुम्हारी रक्षा करेंगे—तुम्हें अपनी शरण में रख लेंगे। ❀

❀ रघुकुल वधू के अपहरण से रघुनायक का तुमने बड़ा अपराध किया है। वे तुम्हारे समान बली का विध्वंस कर चुके हैं अतएव तुम्हारा भी विध्वंस सहज ही कर सकते हैं परन्तु वे करुणासिन्धु हैं और प्रणतपाल हैं यह भी जान लो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-चरन-पंकज उर धरहू ।
लंका अचल राज तुम्ह करहू ॥
रिषि-पुलस्ति-जस बिमलमयंका ।
तेहि ससि महं जनि होहु कलंका ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा ।
देखु बिचारि त्यागि मदु मोहा ॥
बसनहीन नहिं सोह सुरारी ।
सब भूषन-भूषित बरनारी ॥
राम बिमुख संपति प्रभुताई ।
जाइ रही पाई बिनु पाई ॥
सरित मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ।
बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दसकंठ कहउँ पन रोपी ।
बिमुख राम त्राता नहिं कोपी ॥
संका सहस बिस्नु अज तोही ।
सकहिं न राखि राम कर द्रोही ॥

दो०—मोहमूल बहु सूल प्रद त्यागहु तस अभिमान ।
भजहु राम रघुनायक कृपासिंधु भगवान ॥२३॥

राम के चरण पङ्कज हृदय में धारण करो और तुम लङ्का का अचल राज करो । ‡ पुलस्त्य ऋषि के यशरूपी मयङ्क (चन्द्र) में तुम कलङ्क रूप न बनो । राम नाम के बिना गिरा (वाणी) की शोभा नहीं; मद मोह त्याग कर (इस बात को) विचार देखो । हे सुरारी! सब भूषण भूषित (भी हो तो भी) श्रेष्ठ सुन्दर नारी वसन विहीन (रही तो) शोभित नहीं होती—सुहाती नहीं । राम विमुख (व्यक्ति की) सम्पत्ति और प्रभुता (यदि है तो चली जाती है और यदि प्राप्त कर ली गई तो वह बिना पाई (के बराबर) हो जाती है । (अथवा यदि सम्पत्ति परम्परागत रूप से उसके घर रहत आई है तो वह चली जाती है और प्रभुता यदि किसी प्रकार—तपश्चर्या आदि के कारण—प्राप्त भी हो जाय तो वह अप्राप्त के तुल्य हो जाती है ।) जिन सरिताओं में उसका मूलश्रोत नहीं है वे वर्षा बीत जाने पर फिर सूख जाती हैं । हे दसकण्ठ ! सुनो, (मैं) प्रणरोप कर कहता हूँ कि राम विमुख का त्राण कर्ता कोई भी नहीं है, यदि तुम राम का द्रोह करोगे तो हजारों शङ्कर, विष्णु या ब्रह्मा भी तुम्हारी रक्षा न कर सकेंगे । तामसी अभिमान मोह-मूल है और बहुत शूल-प्रद है; (तुम उसे) त्याग दो (और उन) राम का भजन करो जो (नराकार रूपमें) रघुनायक हैं, (सुराकार रूप में) कृपासिंधु हैं और (निराकार रूप में) भगवान हैं ।"

जदपि कही कपि अतिहित बानी ।
भगति-बिबेक-बिरति-नय-सानी ॥
बोला बिहँसि महाअभिमानी ।
मिला हमहि कपि गुरु बड़ ग्यानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोही ।
लागेसि अधम सिखावन मोही ॥
उलटा होइहि कह हनुमाना ।
मतिभ्रम तोहि प्रगट मैं जाना ॥
सुनि कपि बचन बहुत खिसियाना ।
बेगि न हरहु मूढ़ कर प्राना ॥
सुनत निसाचर मारन धाये ।
सचिवन्ह सहित बिभीषन आये ॥
नाइ सीस करि बिनय बहूता ।
नीति बिरोध न मारिय दूता ॥
आन दण्ड कछु करिय गोसाईं ।
सबहीं कहा मंत्र भल भाई ॥
सुनत बिहँसि बोला दसकंधर ।
अंग भंग करि पठइय बंदर ॥

दो०—कपि कै ममता पूँछि पर सबहिं कहेउ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥२४॥

यद्यपि कपि ने अति हित-प्रद वाणी कही—(ऐसी वाणी) जो भक्ति, विवेक, वैराग्य और नीति

‡ पंकज शब्द से यह ध्वनित है कि रावण का हृदय पंक के समान भले ही दूषित हो परन्तु वहीं तो पंकज की स्थिति संभव हुआ करती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से सनी हुई थी † [परन्तु रावण तो यह सब कुछ न सुनने का दृढ़ निश्चय किये बैठा था अतएव वह] महा अभिमानी विहँस कर बोला "(वाह! आज) हमें (यह) बन्दर बड़े ज्ञानी गुरू (के रूप में) मिला। (क्या खूब!) [फिर त्योरियां बदलता हुआ बोला] हे खल! (तेरी) मृत्यु निकट आ गई है, इसीलिये हे अधम! तू मुझको सिखावन देने लगा है। हनुमानजी ने (शाँत भाव से) कहा यह तो उल्टा ही होगा (क्योंकि) तुम्हें मति भ्रम हो गया है (यह) मैं प्रकट रूप से, प्रत्यक्ष रूप से जान चुका हूँ।=

कपि के वचन सुनकर रावण बहुत खिसिया गया (वह चिढ़ गया और चिल्लाकर बोला) "(इस) मूढ़ के प्राण (तुम सब लोग) जल्दी क्यों नहीं हर लेते? "(ये वचन सुनते ही नागपाश बद्ध हनुमान जी को) निशाचर लोग मारने दौड़े। (इतने ही में वहां) साथियों के सहित विभीषणजी आ गये! ÷ (उन्होंने यह दृश्य देखा! हनुमान जी से पूर्व-परिचय हो ही चुका था और उनके प्रति प्रेम भी जाग चुका था। परन्तु राजनीति की मर्यादा भी इस समय हनुमान जी के पक्ष में थी क्योंकि राजदूत अवध्य हुआ करता है। अतएव विभीषण ने) सिर नवाकर (रावण की) बहुत विनय की (और कहा) "(दूत को मारना) नीति विरुद्ध (होगा अतएव) दूत को मारिये मत। हे गोसाईं, हे स्वामी! कोई दूसरा दण्ड (भले ही) दे दीजिये। "सब सभासद बोल उठे "(यह) सलाह बहुत भली है, बहुत सुन्दर है।" [बात यह है कि रावण की ललकार पर सभासदगण हनुमानजी को मारने तो दौड़ पड़े थे, परन्तु उन्हें अशोक वाटिका की भी स्मृति तुरन्त हो आई थी और वे समझ चुके थे कि हनुमान जी यद्यपि नागपाश बद्ध हैं फिर भी उनको मार डालना हँसी खेल नहीं। वे रुक जाने का कोई बहाना ही चाह रहे थे। विभीषण ने वह अवसर उन्हें दे दिया। अतः झट सबने विभीषण की बात का समर्थन करना शुरू कर दिया। रावण ने सभा का रंग देखा तो स्वतः भी बात पलट दी।] (सबकी बात) सुनते ही दसकन्धर ने विहँस कर कहा— "(अच्छा इस) बन्दर को अङ्ग भङ्ग करके भेजो। "(उसने) सबको समझा कर कहा "कपि की ममता पूँछ पर (रहा करती है। अतएव इसकी पूँछ को) तेल में डुबा कर कपड़े से बांधकर अथवा कपड़े उसमें बाँधकर फिर (उसमें) आग लगा दो।"

---

† (१) पूर्व दोहे के बाद की प्रथम दो पंक्तियों में भक्ति तत्व है, दूसरी दो पंक्तियों में विवेक तत्व है, तीसरी दो पंक्तियों में वैराग्य तत्व है और चौथी दो पंक्तियों में नीति तत्व है। मनुष्य के विकास के लिये ये ही चार मार्ग हैं और इन्हीं के तत्व लेकर उसकी 'हित की बात' समझाई जा सकती है।

(२) पहली दो पंक्तियों में हृदय की पवित्रता का उपाय बताया गया है, वह है प्रभु प्रेम। दूसरी दो पंक्तियों में वाणी की पवित्रता का उपाय बताया गया है, वह है रामनाम। तीसरी दो पंक्तियों में क्रिया की पवित्रता का उपाय बताया गया है, वह है राम सम्मुखता। चौथी दो पंक्तियों में सबका सार सिद्धान्त है।

='मृत्यु निकट आई खल तोही। लागेसि अधम सखावन मोही' का शब्दों की ध्वनि से एक उलटा अर्थ भी निकलता है। 'मृत्यु निकट आ गई है तोही (अर्थात्) इसीलिये मुझ) खल को सिखावन अधम जान पड़ रहा है। खल यदि संस्कृत शब्द 'खलु' का रूपान्तर मान लिया जाय तो 'मृत्यु निकट आई खलु' का अर्थ होगा, निश्चय ही मृत्यु निकट आ गई है। संभव है हनुमान जी ने इस अर्थ की ओर संकेत करते हुए रावण के मतिभ्रम की बात कही हो।

÷ कैसी नाटकीयता के साथ प्रसंग रचकर विभीषण का प्रवेश कराया गया है, यहाँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त-समागम

[श्री शारदाप्रसाद जी]

(३)

मऊगंज के हाफिज जी की प्रशंसा कप्तान श्री कन्हैयालाल जी किया करते थे। मैंने दर्शन की विशेष अभिलाषा प्रकट की तो वे वहां चलने को भी तैयार हो गये। मऊगंज रीवा से प्रायः ४२ मील मिर्जापुर सड़क पर है। कप्तान साहब को वहां लेकर गया। कुटिया के पास मोटर पहुँचने ही वाली थी कि कप्तान साहब ने मुझे रोका। हाफिज जी पीछे से आ रहे थे। उतरकर हम लोगों ने प्रणाम किया। दुबला, पतला शरीर, पतली लम्बी दाढ़ी, आधी धोती पहिने और आधी धोती ओढ़े, यह था प्रथम दर्शन।

उनके साथ ही कुटिया तक गये। "आ बैठ जलेबी खायेगा।" हमलोगों ने कहा कि खाने की इच्छा तो नहीं है पर वहां तो हुक्म हो गया था चिड्डु के नाम "कँदुआ को बुलाला कहदे जलेबी ले आवे।" हलवाई जलेबी लाया, हम सब ने खाया। उसने ही अपना पात्र लाकर पानी पिला दिया। धीरे से मैंने पूछ लिया कितना दाम हुआ और उसे चुपके से दे भी दिया।

कुछ देर साधारण बातें होतीं रहीं, इत्र की शीशी निकलवाई गई, पान लगवाये गये और इत्र पान का व्यवहार हुआ। थोड़ी देर का संत सान्निध्य लाभ कर हम लोग लौट आये। मार्ग खुल गया। कभी कभी मैं मऊगंज चला जाता था, कभी रीवा में ही दर्शन हो जाते थे, कभी वे सतना भी आ जाते थे। सच तो यह है कि वे मुझ पर बड़ी कृपा करते थे।

उनके चमत्कारों की अनेक कथायें प्रसिद्ध थीं। कभी कभी मेरे मन में भी आ ही जाता था कि क्या ये सत्य होंगी? एक बार संध्या समय मऊगंज पहुँचा। कप्तान साहब भी साथ में थे। उन्होंने प्रस्ताव कर दिया "हुजूर मोटर पर घूमने चलियेगा?" बोले "चलेंगे ला हमारी गुदड़ी।" गुदड़ी लेकर बैठ गये। पांच सात मील गये आये। मार्ग में अचानक मोटर सुगंध से भर गई प्रश्न था यह कहां से आई, पास की झाड़ी से आने का अनुमान किया गया। पर ऐसी कोई झाड़ी नहीं दिखी जो बड़ी दूर तक सुवास प्रदान करती। कप्तान साहब ने कहा कि सुगंध के भण्डार तो बगल में ही बैठे हैं। हनुमना की ओर जाते समय सुगंध आई थी लौटते समय कहीं नहीं आई।

तमाखू कम्पनी के श्री इकबाल बहादुर श्रीवास्तव के साथ सिगरेट बिक्री व्यवस्था में मैं रीवा गया था। वहाँ राय हो गई मऊगंज चला जाय। उतरते जेठ की दोपहरी थी, फिरभी संत दर्शन की अभिलाषा से हम लोग मऊगंज पहुंच गये। लगभग तीन बजे पहुँचे होंगे। "आ बैठ" से स्वागत हुआ और साधारण वार्तालाप होने लगा। उन दिनों अपने मित्र लालरामायणप्रताप सिंह जी मऊगंज में पुलिस के सर्किल इन्स्पेक्टर थे। मेरे आने की सूचना पाकर वे भी हाफिज जी के यहां आगये और वार्तालाप में सम्मिलित हो गये। उन्होंने पूछा "हजूर पानी कब बरसेगा?" इस पर हाफिज जी ने कहा "पानी? पानी तो आज बरसेगा।" इस पर मैंने कहा अगर पानी आज बरसना तो हो हुकुम होजाय मैं वापस चला जाऊँ, वरना मोटर में भीग जाऊँगा।" इस पर उन्होंने कहा "बैठ पानी बरसेगा और तू नहीं भींगेगा।" मैंने कहा फिर क्या चिन्ता है। मैं सोचता जरूर रहा कि क्या वास्तव में पानी आज बरसेगा? मैं तो कड़ी धूप सहता हुआ आया हूँ। लगभग पांच बजे मैंने कहा, "हुजूर मोटर में रोशनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं है अब हुकुम हो तो चला जाऊँ। अगर मोटर की रोशनी जल उठने वाली हो तो और भी ठहरा रहूँ।" इस पर उन्होंने कह दिया कि अब जा।

कुटिया के बाहर निकलने पर यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आकाश में एक कोने पर एक टुकड़ा बादल आ गया है। हाफिज जी को प्रणाम कर हम लोग वापस चले। लगभग ८-१०मील आये होंगे कि ठंडी ठंडी हवा चलने लगी। बाबू इकबाल बहादुर तो मोटर में बैठे बैठे ही झपकी लेने लगे। मैं मोटर चला रहा था, इस कारण इस सुख से वंचित रह गया, पर यह क्या; देखता हूँ मोटर के सामने पानी बरस रहा है। जैसे मोटर आगे बढ़ती जाती है वैसे पानी भी आगे बढ़ता जाता है। यह देखकर अगल बगल नजर दौड़ाई। सड़क के बाहर दोनों ओर वर्षा हो रही थी। मैंने बाबू इकबालबहादुर को जगाया, देखिए यह क्या हो रहा है। वे कहने लगे कि ऐसा अचम्भा तो मैंने कभी नहीं देखा। मोटरके पीछे सीट पर अपना भृत्य विश्वनाथ बैठा था उससे मैंने पूछा पीछे क्या हाल है। उसने मोटर के पीछे झांककर देखा और कहा कि पीछे भी पानी बरस रहा है। चारों ओर पानी बरस रहा था। मोटर गीली सड़क पर दौड़ती हुई चली जा रही थी और ऊपर कोई अदृश्य छाता लगा हुआ था कि उसपर कोई बूंद नहीं आती थी। लगभग डेढ़-दो मील तक यही दशा रही, इसके बाद पानी बन्द हो गया। हम लोग समय से सतना वापस आगये।

यह था एक महान् चमत्कार जो हाफिज जी की कृपा से घटित हुआ और एक नहीं तीन व्यक्तियों को देखने को मिला।

एक दिन दोपहर के समय शेख छेदी की दुकान में रीवा में हाफिज जी मिल गये। प्रणाम करके मैं पास में बैठ गया और मैंने कहा "हजूर, एक जमीन ली है बगीचा लगाना है।" कुछ देर तो वह चुप रहे इसके बाद बोले "अच्छा किया है बाग लगा, ठीक रहेगा।" इस पर मैंने कहा "हजूर आप तो २२ मील दूर से दुआ दे रहे हैं क्या यह ठीक रहेगा।" इसपर उन्होंने पूछा "क्या चाहता है" मैंने कहा "चाहता हूँ आप वहां चलकर दुआ दें।" यह सुनकर वे मुस्कराये और बोले--"इन्शा अल्लाह चलेंगे, ला मोटर अभी चलेंगे।" उनकी आज्ञा सुनकर मैं प्रसन्न हुआ। मोटर तो पास में ही खड़ी थी, लाकर दुकान के सामने खड़ी कर दी। वे उसमें आकर बैठ गये और मैं उन्हें लेकर नई ली हुई भूमि पर पहुँच गया। घूम फिरकर आपने भूमि देखी। मिट्टीका एक ढेला उठाकर दोनों हाथों से मला और कहने लगे "इस जमीन को कभी मत छोड़ना यहां बहुत अच्छा रहेगा।" उनका आशीर्वाद प्राप्त कर मैं उन्हें पुनः रीवा पहुँचा आया।

अवश्य ही उनका आशीर्वाद सफल हो रहा है और उस भूमि पर ही आपका रामवन आश्रम है। अब हाफिज जी इस संसार में नहीं हैं। उनकी बड़ी कृपा इस आश्रम पर थी। आशा है कि मैं उनसे संबंधित अन्य प्रसंगों के विवरण आगामी अंक में दे र कूंगा।

मानसमणि के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर उसे स्वावलम्बी बनाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री भरत जी को सन्देश

[मानस तत्वान्वेषी पं० श्री रामकुमारदास जी रामायणी, वेदान्त भूषण, साहित्यरत्न, मणिपर्वत श्री अयोध्याजी]

नमो नित्यानन्दे निखिल निगमाधारनिलये,
विधाने विज्ञाने विधि विभव विस्मापन करे।
कलापूर्णे तूर्णे रघुपति पदाम्भोजमधुपे,
ममैषाविश्लेषारहित रतिरेखास्तु भरते ॥
सीतापादाब्जभृंगं माण्डवी हृद्विहारिणम्।
लोकोत्तरं रामदासं भरतं तं नमाम्यहम् ॥

शृङ्गवेरपुर से जब सुमन्त जी श्रीराम जी को पहुँचा कर अयोध्या में आये तो राजा दशरथ जी से बतलाया कि गङ्गाजी के इसी पार से मुझे लौटाते हुए श्री रामजी ने अपने सब प्रियजनों को अलग अलग सन्देश कहते समय श्री भरतलालजी लिये कहा है कि—

कहब संदेश भरत के आये।
नीति न तजब राजपद पाये ॥

इस पर कुछ लोग पूर्वापर के समन्वय पर विचार किये बिना ही अर्थ कर देते हैं कि श्रीराम जी ने श्री भरत के लिये कहा है कि 'भरत! राज्य पद पाकर नीति मत छोड़ देना।' इस अर्थ से तो ऐसा मालूम पड़ने लगता है कि श्री रामजी को भी भरत जी के नीति त्याग देने का निश्चय सा था तभी तो ऐसा कहा। परन्तु ऐसा अर्थ करना ठीक नहीं, क्योंकि—

'भरतहिं होइ न राजमद विधि हरिहर पदपाय।'
सुनहु लखन भल भरत सरीखा।
विधि प्रपंच महँ सुना न दीखा ॥

ऐसा श्री रामजी का दृढ़ निश्चय है। अतः उस चौपाई का ऐसा अर्थ है कि "संतुष्टातु नृपाधमः।" (चाणक्य नीति) अतएव उस सन्देश का यह भाव है कि "एक राजा किंवा राजपुत्र को राजपद पाकर त्याग देना नीति नहीं है, लोकवेद के मर्यादा की रक्षा करते हुये जो राज्य मिले उसे करना चाहिये यही नीति है।" ऐसा सन्देश कहने का कारण यह है कि श्री रामजी को भरत जी का स्वभाव पूर्णरूपेण मालूम है। जानते हैं कि भरत जी राज्य लेना नहीं चाहते; इससे दबाव डालते हैं कि

नीति न तजिअ राज पद पाये।

जानते हैं कि मेरे वनवास का कारण होने से मझली माता कैकेयी जी के प्रति भरतलाल की पूर्ववत् माता वाली निष्ठा न रह जायेगी अतः जोर देकर कहा कि—

सेयेहु मातु सकल सम जानी।

तिस पर भी तो गीतावलि में वर्णित है कि—

कैकेयी जबलौं जियति रही।
तबलौं भरत मातु सों मुहँ भरि बचन न भूलि कही ॥

और यह भी जानते हैं कि मेरे वियोग दुःख में भरतलाल को अपने ही शरीर का सार संभार रखना भारी हो जावेगा इसीसे यह भी सन्देश कहलाया कि—

पालेहु प्रजहिं कर्म मन बानी।

जब अपना होश हवास दुरुस्त रखेंगे तभी तो मनक्रमबानी से प्रजाओं का पालन कर सकेंगे। प्रजा पालन में ही तो सम्पूर्ण नीति निहित है—

मुखिया मुख सों चाहिये खान पान को एक।
पालै पोषै सकल अंग तुलसी सहित विवेक ॥
राज धर्म सर्वस इतनोई।
जिमि मन मांझ मनोरथ गोई ॥

अतः एक साथ ही "राजपद पाकर नीति न छोड़ना और मन क्रम बानी से प्रजा का पालन करना कहना चर्वित चर्वण वत् ही हो जाता है। वाल्मीकि रामायण में तो इसे अत्यन्त स्पष्ट रूप से व्यक्त किया ही है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तातस्यप्रियकामेन यौवराज्यमवेक्षता ।
लोकयोरुभयोः शक्यं नित्यदासुखमेधितुम् ॥
[अयो० ५२।३६]

संस्कृत की सुप्रसिद्ध टीका शिरोमणि में "अवेक्षिता" का अर्थ स्वीकुर्वता और "एधितुम्" का अर्थ "विर्द्धयितुम" किया है। पूरे श्लोक का अर्थ है कि "यदि तुम पिता जी को प्रसन्न करने के लिये युवराज पद लेना स्वीकार कर लोगे तो दोनों लोक में तुम्हारे लिये सदा सुख की वृद्धि होगी।

वक्तव्यश्चमहाबाहुरिक्ष्वाकु कुलनन्दनः ।
पितरं यौवराजस्थो राज्यस्थमनुपालयः ॥ ५८।२२।

महाबाहु इक्ष्वाकु कुलनन्दन भरतलाल से कहना कि युवराज पद पर आसीन होकर ही महाराज पिता जी की आज्ञा का पालन करो ॥

भरतजी को जितने सन्निकट से रामजी जानते हैं उतना और कोई नहीं—

तात तुमहिं मैं जानौं नीके ।

इसी से भरतजी पर दबाव डाल रहे हैं कि राज्य अवश्य करना । यही भरत जी भी कह रहे हैं कि—

"शोक सनेह कि बाल सुभाये ।
आयेउं लाय जयसु पाये ॥"
"प्रभु चित वचन मोह वश पेली,
आयेउं इहां समाज सकेली ॥"

श्री भरत जी अपना दो अपराध मान रहे हैं। एक तो—प्रभु (श्री राम जी) की और पिताजी की आज्ञा का उल्लङ्घन करना अर्थात राज्य न करना क्योंकि—

लोक वेद सम्मत सबहीका ।
जेहि पितु देइसो पावइ टीका ॥
और—राय राजपद तुम कहँ दीन्हा ॥

इस मिले हुये राज्य का भरत जी ने परित्याग कर दिया—

पिता दीन्ह तजि राज । जात मनावन रघुपतिहिं ।

और दूसरा अपराध यह मानते हैं कि—समाज बटोर कर (एकान्तवास में बाधा देने के लिये) यहां चित्रकूट में आना । इसी से भरत जी का कहना था कि—

मोरे नीत न धर्म विचारू ।

सेवक का परम धर्म है स्वामी की आज्ञा का पालन करके स्वामी को प्रसन्न रखना—

"आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा ।'
'चहै स्वमिहित सेवक सोई ॥'

महर्षि श्री वशिष्ठ जी ने कहा था कि भरत! तुम राज्य करने लगोगे तो—

सुनि सुख लहब राम वैदेही ।

माता श्री कौशल्या जी ने भी इसी का समर्थन किया कि—

पूतपथ्य गुरु आयसु अहई ।

महर्षि भरद्वाजजी ने भी यही कहा था कि—

करतेहु राज तुमहि न दोषू ।
रामहिं होत सुनत संतोषू ॥

अतः श्री भरत जी ने जो अपने आप में नीति और धर्म विचार का अभाव बतलाया उसका कारण यह है कि प्राप्त राज्य का त्यागना-राज न करना-केवल यही मात्र अनीति है; अन्य प्रकार की कोई भी अनीति श्री भरत जी में नहीं है और प्रभु और पिता की आज्ञा का उल्लङ्घन करना अर्थात राज्य न करना ही धर्म विचार का अभाव है अन्य नहीं। वैसे श्री भरत जी के धर्म और नीति पर ही विश्व टिका है, यह श्री रामजी का मत है जैसा कि चित्रकूट में कहा था—

भरत भूमि रह राउरि राखी । सत्य कहौं०

श्री गुरुदेव वशिष्ठ जी ने भी कहा था कि—

समुझब कहब करब तुम जोई ।
धर्मसार जग होइहि सोई ॥

अतः "नीति न तजब राज पद पाये ।" का राजपद पाकर नीति न छोड़ना' अर्थ करना सरासर नीति का गला घोंटना है। राजा या राजकुमार के लिये 'राजपद पाकर उस राज को त्याग देना नीति नहीं है।' यही अर्थ समीचीन, युक्ति, प्रकरण एवं शास्त्र सम्मत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री हनुमान-भक्त का सच्चा स्वप्न

[स्वामी श्री किशोरी रमणाचार्य जी रामायणी]

श्री वृन्दावन धाम में एक "श्री भोली चचे" रहते थे जो श्री रंग मन्दिर में काष्ठ के सामान की टूट फूट का तथा अन्य वस्तुओं का भी सुधार का सेवा कार्य करते थे। श्री भोली चचे बड़े सुहृदय उदार प्रेमी और हनुमान भक्त थे। वृन्दावन में दशहरे पर जो प्रति वर्ष रंग मंदिर के पच्छिम द्वार पर रामलीला होती थी, आप उसमें सेवा करते थे। लक्ष्मण शक्ति लीला को आप तार का एक सिरा तो रंग मंदिर के मुख्य द्वार शिखर पर बाँधते थे, और दूसरा जमीन पर।

उस रोज आप हनुमान चालीसा पाठ करते और व्रत करते। स्वयं हनुमान जी का वेश धारण करके शिखर पर गदा व पर्वत लेकर बैठ जाते थे। और जिस वक्त रामलीला में यह सोरठा आता था—

प्रभु विलाप सुनि कान, 'विकल भये बानर निकर'।
आइ गये हनुमान, जिमि करुणा महँ वीर रस॥

उसी क्षण आप तार पर होकर जै श्रीराम कहकर आकाश मार्ग द्वारा जमीन पर आ जाते थे। इस दृश्य को देखने के लिये, इर्द-गिर्द के गांव के लोग और मथुरा आगरा तक के लोग आते थे। आज भी यह कार्य आश्विन में बराबर होताहै।

उनकी वृद्धावस्था के कारण उनसे कहा गया कि आप घर बैठ कर भजन करें और मन्दिर में न आयें तो उन्होंने अनशन किया और कहा कि मैं आजीवन प्रभु सेवा ही चाहता हूँ। ऐसी प्रतिज्ञा देखकर उन्हें सेवा कार्य पुनः सोंपा गया। श्री रंग मंदिर का ब्रह्मोत्सव मेला प्रति वर्ष होता है जिसे १०० से अधिक वर्ष हो चुके और चैत्र कृष्ण नवमी को भगवान का रथ निकलता है।

श्री "भोली चचे" उस रथ को समय पर चलाना तथा उचित स्थान पर रोकना, यह सेवा कार्य प्रति वर्ष करते थे।

इस वर्ष आपने रथ के एक दिन पूर्व बताया कि स्वप्न में हम रथ चाक से दब कर मर गये और एक सुन्दर यान में बैठ कर स्वर्ग चले गये ऐसा स्वप्न देखा है। किसी ने ध्यान न दिया और ता २४-३-५७ चैत्र कृष्ण नवमी रविवार शाम के ३ बजे जब रथ वापिस लौटकर श्री रंग मंदिर के पश्चिम द्वार पर आया तो रथ को रोकते समय अचानक भगवान का दिव्य रथ चाक श्री भोली चचे पर आ गया। तुरन्त ही उनका प्राणान्त हो गया।

हनुमान भक्त का स्वप्न सच्चा हो गया। भगवान के आगे ही भक्त भोली का सुन्दर विमान सजाया गया, विमान के साथ कीर्तन मण्डली तथा अनेक लोग थे। मृतक शव वृन्दावन के परम पावन मार्गों पर भ्रमण करता हुआ श्री भानुजा तट पहुँचा, और पञ्च भौतिक शरीर का संस्कार किया गया।

ता० २५-३-५७ को रंग मंदिर बारह द्वारी में श्री हीरालालजी शास्त्री श्री जयदयालजी गोयन्दका श्री राघवाचार्य जी का तथा मेरा प्रवचन हुआ और इस घटना की प्रशंसा बड़े बड़े महापुरुषों के मुख से हुई।

वास्तव में भक्तों की पहिचान कठिन है। भोली चचे की श्री व्रज वसुन्धरा में इस प्रकार भगवान के दिव्य रथ चाक द्वारा मृत्यु एक आदर्श घटना तथा भक्त की निष्ठा की परिचायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस में सबसे बड़ा अंधा कौन है?

[गोस्वामी महंत रोशनपुरी वैद्य शास्त्री कोहड़िया]

मानस में अंध शब्द का प्रयोग 'अंध, अंधउ, अंधहि' के रूप में किया गया है, और कोष में अन्ध शब्द का अर्थ अन्धा=नेत्र हीन, जिसके आंखों में ज्योति न हो किन्तु अज्ञानी अविवेकी मूर्ख अनजान, असावधान, अचेत, मतवाला, उन्मत्त को भी अंधा कहा गया है।

मानस में ५ प्रकार के अंधों का वर्णन है—

(१) कामी को अंधा कहा गया है। जैसे—

मदन अन्ध व्याकुल सब लोगा।

(२) दूसरा अंधा शत्रुता है। जैसे—

बैर अन्ध प्रेमहिं न प्रबोधू।

(३) तीसरा अंधा मद है। जैसे=

सहज असंक लंकपति, सभा गयउ मद अन्ध।

(४) चौथा अंधा मोह है। जैसे—

मोह न अन्ध कीन्ह केहि केही।

(५) और सबसे बड़ा पांचवा अंधा वह है जो श्रीराम को नहीं पहचानता। जैसे—

अंगद ने रावण को कहा है।

सो नर क्यों दसकंध, बालि बध्यो जेहि एक सर।
बीसहु लोचन अंध, धिगतव जनम कुजाति जड़॥

अंगद ने ठीक ही तो कहा। रावण के २० नेत्र होते हुए भी वह अन्धा था, क्योंकि भगवान को पहचानने के लिए चर्म चक्षु की आवश्यकता नहीं रहती, उसके लिये तो हृदय चक्षु की आवश्यकता होती है।

हनुमान जी हृदय चक्षु खुलते ही श्रीराम को पहचान गये।

पुनि धीरजु धरि अस्तुति कीन्ही।
हरष हृदय निज नाथहिं चीन्ही॥

बाली भी हृदय चक्षु खुलते ही प्रभु को पहचान गया—

पुनि पुनि चितइ चरन चित दीन्हा।
सुफल जन्म माना प्रभु चीन्हा॥

अतः—*हृदय प्रीति मुख बचन कठोरा।*
बोला चितइ राम की ओरा॥

यही हृदय चक्षु रावण के पास नहीं था। तभी तो वह श्री सरकार को तापस, भूप-सुत आदि नाम से संबोधित करता रहा। जैसे अंगद से कहा—

गर्भ न गयहु व्यर्थ तुम्ह जायहु।
निज मुख तापस दूत कहायहु॥

इसके उत्तर में अंगद जी ने ठीक ही उत्तर दिया

हम कुल घालक सत्य तुम्ह कुल पालक दससीस।
अंधउ बधिर न अस कहहिं नयन कान तव बीस॥

पुनः—*अइसिहु मति उर बिहर न तोरा।*

अंगद जी के ऐसे बोलने में एक रहस्य है।

भगवान राम ने राक्षसों को मारते समय, उनका सिर हाथ पांव ही काटा है पर बाली के हृदय में बांण मारा है।

मारा बालि राम तब हृदय माझ सरतान।

श्री सरकार ने बालि के हृदय में बाण मारकर उसके अभिमान को दूर कर दिया क्योंकि अभिमान का स्थान हृदय होता है।

इसी तरह अंगद जी भी रावण के हृदय को फाड़कर उसके हृदय चक्षु को खोलना चाहते हैं। अतः हृदय फटने को कहा और जिन्हें हृदय चक्षु प्राप्त हो जाता है वह राम दर्शन से नेत्र पाने का लाभ अनुभव करता है। जैसे—

अंधहिं लोचन लाभु सुहावा।

पुनः—*मनहु अंध फिर लोचन पाए।*

इस तरह गोस्वामीजी ने अपने मानस में यह स्पष्ट बता दिया है कि सबसे बड़ा अन्धा वह है जो राम को नहीं पहचानता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारावाहिक उपन्यास—

राक्षसराज

(श्री सुदर्शनसिंह)

[उपक्रम]

राक्षसराज रावण ब्राह्मण था । वह ब्रह्माजी के मानस पुत्र महर्षि पुलस्त्य का पौत्र था, केवल इतने से ही वह ब्राह्मण नहीं था । वह श्रुतिधर था । वेदों का इतना प्रकाण्ड विद्वान था कि उसने वेद भाष्य किये । वह कमिष्ठ था, यह दूसरी बात है कि उसके कर्म हमारी कर्मधारणा के अनुसार नहीं थे । बहुत सीधी रीति कहें तो वह तन्त्रों में तथा कुछ राजस तामस तान्त्रिक पद्धतियों में आस्था रखता था ।

राक्षस राज रावण ने सत्ताइस चतुर्युगी राज्य किया । उसके शौर्य एवं अमित पराक्रम की चर्चा व्यर्थ है । लेकिन उसने वह भूमि प्रस्तुत की जिससे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम को अवतार लेना पड़ा । उस सुरासुरजयी के प्रति आपके मनमें चाहे जितनी जुगुप्सा हो किन्तु यह आप भी स्वीकार करेंगे कि वह हम आप सबसे अधिक धन्य था, पुण्यात्मा था क्योंकि उसे प्रभु ने दर्शन दिये । प्रभु के सम्मुख उसे उनके ही वाणों से देह त्याग का अवसर मिला ।

'जोगि वृन्द दुर्लभ गति, तोहि दीन्हि भगवान ।'

श्री रामचरित तो गोस्वामी तुलसीदास जी के 'मानस' में है ही । 'मानस' से अधिक पूर्ण, भाव-शबल कोई भी रामचरित और क्या लिखेगा । लेकिन रावण-चरित ही रामचरित की भूमिका है । रावण-चरित समझ में आजाय तो यह भी समझमें आजाय कि श्रीराम का अवतार क्यों हुआ और उसकी कितनी बड़ी आवश्यकता थी ।

जब मनुष्य ही नहीं, देव शक्तियां भी किसी आसुरी शक्ति के दमन में असमर्थ हो जाती हैं, तब सर्वात्मा को उसकी व्यवस्था करनी पड़ती है । जब महामारी, भूकम्प, बाढ़, अग्नि आदि कोई समर्थ न हों—सब आधिदैविक बाधायें पराजित हो चुकी हों और भौतिकता—आसुरभाव अदम्य हुँकार करता हो तो सर्वशक्तिमान अवतरित होता है । रावण—आसुरभाव का अग्रदूत, भौतिकता का मूर्तिमान सम्राट--कैसा था वह, बिना समझे श्री रामावतार की पृष्ठ भूमि कैसे समझ में आवेगी ।

राक्षसराज रावण ने सत्ताइस चतुर्युगी राज्य किया । सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलयुग सभी देखे उसने । रघुवंश की अनेकों पीढ़ियों से उसका काम पड़ा । पुराण प्रतिपादित आर्यसंस्कृति एवं असुर संस्कृति दोनों का पूर्ण चित्र आजाना ठहरा राक्षसराज के चरित में । यह सब सोचकर मैं इस उपन्यास का आरम्भ कर रहा हूँ । मेरे आधार है महर्षि वाल्मीकि एवं भगवान व्यास उनका नित्य प्रसाद भोगी यह जन—लेकिन यह उपन्यास है, क्योंकि उपन्यास के बिना पूर्ण चित्र उपस्थित करना शक्य नहीं था । मेरी लेखनी कितनी सफल हुई सत्य को स्पष्ट करने में यह निर्णय तो आप करेंगे ।

महर्षि पुलस्त्य

'मेरा कर्तव्य ?' मेरु के सुरम्य शिखर पर मृगचर्म बिछी वेदी के ऊपर आसीन प्रज्वलित आवहनीय अग्नि के सम्मुख वे तेजोमय दूसरे अग्नि के समान प्रतीत होते थे । उन्होंने नित्य कर्म समाप्त कर लिया था । प्रातः कालीन हवन की आहुति के कारण कुण्ड से सुगन्धित धूम्र उठ रहा था, जैसे धरा की श्रद्धा गगन को पवित्र करने बढ़ी जा रही हो । स्रु, स्रुवादि उपकरण अभी यथा स्थान पड़े थे ।

'जीविका परम कर्तव्य है जनार्दन से एकत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की अनुभूति।' वह सतयुग था और वह भी इस कल्प का प्रथम सतयुग। धरा मलकलुष से अपवित्र नहीं हुई थी, फिर मन में रजस का चाञ्चल्य एवं तमस् का कल्मष तो कल्पना से परे था। साक्षात श्रष्टा के मानसपुत्र महर्षि पुलस्त्य की निश्चयात्मिका बुद्धि एवं सहज निर्मलमन में मानवमात्र के सुनिश्चित जीवन लक्ष्य के प्रति विकल्प की सम्भावना ही नहीं थी।

'जनार्दन—जीव के नित्य सखा वे तो अपने स्वरूप हैं।' न श्रवण की आवश्यकता थी, न मनन की और न निदिध्यासन की ही। चित्त जहां निर्मल एवं स्थिर है, वहाँ वासुदेव ज्योति स्वयं प्रतिफलित होगी ही। तत्त्वज्ञान—वहाँ तो महर्षि की नित्यअनुभूति है।

'सृष्टि!' यही एक प्रश्न था जो उन तेजोदीप्त स्वर्ण गौर, देवोपम ब्रह्मपुत्र को कई बार समाधि विचलित कर चुका था। सृष्टि—रजोगुण की स्वीकृति के बिना सृष्टि कैसे चल सकती है और उन परम सात्विक के चित्त में राजस चेष्टा की रुचि चाहने पर भी प्रकट नहीं हो रही थी।

'अन्धकार--केवल अन्धकार था चारों ओर। प्रकाश भी था; किन्तु वह मेरे ही आसपास।' महर्षि को अपने पूज्य पिता ब्रह्मा जी के वचन स्मरण हुए। 'मैं जिस कमल पर आसीन हूँ–तुम देख ही रहे हो कि ज्योतिर्मय है वह। अनन्त समुद्र उत्ताल तरङ्गों से आलोड़ित। न दिशायें थीं न गगन था और न अन्य कुछ था। जल–केवल अनन्त विस्तार तक व्याप्त जल था और उसमें इस ज्योतिर्मय लोकपद्म पर मैं किसी की प्रेरणा से प्रगट हो गया था।'

अकेला मैं—सहस्त्रों वर्ष तक कमल नाल का पता लगाने के लिए मैं जल में नीचे उतरता गया। व्यर्थ था मेरा प्रयत्न।' भगवान ब्रह्मा ने बताया था—'वे परमपुरुष साधन साध्य नहीं है, यह तब मुझे अविदित था। निराश होकर मैं लौट आया और श्रान्ति की चरम सीमा ही उनकी प्राप्ति का स्वर्णिम क्षण होता है। उन्होंने मुझे मेरे हृदय में ही दर्शन दिया। मेरे अन्तश्चक्षुओं ने देखा उन सच्चिदानन्दघन सान्द्र नील अनन्तशायी को। मृणाल धवल सहस्त्र फणमौलि शेष की शय्या पर शयन किये वे दूर्वा दल श्याम—वत्स! मैं धन्य हो गया उनके दर्शन करके। यह जानकर तो मैं कृत्य कृत्य हो गया कि मैं उनका पुत्र हूँ। उन्हीं की नाभि से यह लोक पद्म प्रस्फुटित हुआ है और इसी से मैं व्यक्त हो गया हूँ।'

'तप! तप! अपने उन परमोद्भव की दिव्य व्यक्त वाणी जो मैंने सुनी--उसमें मुझे यही आदेश था।' ब्रह्मा जी के नेत्र भर आये थे जब उन्होंने यह कहा था–'मैं उस आदेश का पालन करने में लग गया और मुझे पता लगा कि उन निखिल नियन्ता की इच्छा के प्रति अपने को पूर्णतया समर्पित कर देना ही अपनी सफलता एवं सार्थकता है। उनकी इच्छा—उनकी सृष्टि की इच्छा ही मेरे रूप में व्यक्त हुई है वत्स!'

'सृष्टि।' महर्षि पुलस्त्य के भाल पर एक मन्द आकुञ्चन आया। लोक स्रष्टा ने अपने सभी पुत्रों को सृष्टि करने का आदेश दिया। सम्भवतः उन्हें यही एक आदेश देना आता ही है।

'उनका आदेश—पिता का आदेश पुत्र न माने तो? महर्षि ने अपना मस्तक वेग से झटक दिया। यह अशिष्ट विचार लगा उन्हें और एक पल भी उसे अपने में प्रश्रय देने को वे प्रस्तुत नहीं थे। 'मेरे ज्येष्ठ भ्राता चतुष्टय ने पिता का आदेश स्वीकार नहीं किया। अच्छी बात तो नहीं यह। एक अधर्म की परम्परा का बीज पड़ गया एवं लोक भयंकर रुद्र का आविर्भाव हो गया उस अवज्ञा के परिमाण स्वरूप।'

सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा जी के प्रथम मानसपुत्र सनक, सनन्दन, सनातन एवं सनत्कुमार ने स्रष्टा की सृष्टि करने की आज्ञा स्वीकार नहीं की थी। स्वयं सृष्टि कर्ता अपने इन नित्यकुमार परम विरक्त पुत्रों का अत्यधिक सम्मान करते हैं। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलस्त्य जी तो इन कुमारों के अनुज हैं, अपने इन अग्रजों के प्रति उत्कट भक्ति है उनके चित्त में, किन्तु अग्रजों द्वारा पिता की अवज्ञा को उचित मान लें, ऐसी आशा उनसे कैसे की जासकती है। गुरुजनों के भी भ्रांतकर्म आचरणीय नहीं होते—सतयुग के उन महान पुरुषों को यह शिक्षा देना आवश्यक नहीं था।

'सृष्टि !' यहीं आकर चित्तवृत्ति शिथिल हो जाती थी। अन्तर्मुख सुख वृत्तियां बाहर आना नहीं चाहतीं। नित्यकर्मादि के लिए भी आवश्यक गति शरीर में सप्रयत्न आती है और ऐसा महामानव सृष्टि करे! कहां से आवे सृष्टि के उपयुक्त उसमें सक्रियता ? लेकिन वह युग व्यापनी समाधि में बैठ नहीं पाता—सृष्टि ! स्रष्टा का आदेश उसे बैठने नहीं दे रहा है।

× × ×

'तुम सब यहां क्यों आईं ?' महर्षि के मन में रोष नहीं था; किन्तु खेद था। सहसा कोलाहल ने उन्हें ध्यान से उत्थित कर दिया था। धीरे से उन्होंने नेत्र खोले और देखा कि एक पूरी भीड़ किशोरियों की उनके आसपास अपनी उन्मुक्त क्रीड़ा में लगी है।

'कोई अपराध हुआ देव ?' एक संकोच शीला ने अञ्जलि बांधकर मस्तक झुकाया।

'अपराध !' महर्षि आगे बोल नहीं सके। ये सौन्दर्य सौकुमार्य की सचल मूर्तियाँ और इनका यह सहज मुग्ध बाल्य-इनसे क्या अपराध हुआ। ये कुमारियाँ यदि प्रकृति की उन्मुक्त क्रोड़ी में परस्पर क्रीड़ा करती हैं तो इनका दोष क्या। शिथिल कण्ठ से उन्होंने कहा—'मेरे ध्यान में व्याघात पड़ा।'

'हम उधर निर्झर के समीप चली जाती हैं।' दूसरी कुमारी ने कहा। दस बीस पद आगे जाकर उनका मञ्जु हास्य गूँजा। वे बालिकाएं ही तो, फिर भूल गईं अपनी क्रीड़ा में कि उनके आसपास कोई अन्य भी हैं और उसे व्याघात हो सकता है।

'इसका निदान ?' महर्षि का प्रशान्त भाल तनिक आकुञ्चित हुआ। 'मेरु पर्वत का यह सुरम्य शिखर, राजर्षि तृणबिन्दु के आश्रम का यह पावन पार्श्व भाग; किन्तु क्या इसका परित्याग करना पड़ेगा ?'

पुष्पित वल्लरियाँ, फल भार से विनम्र तरुराजि, गुञ्जार करते भ्रमर, शाखाओं पर पक्षियों का कूजन, समीप सुरम्य निर्झर, प्रफुल्ल पद्म सरसी—मेरु के शिखर के अतिरिक्त धरा अभी आश्रम के उपयुक्त अन्य कहीं हुई कहाँ थी।

न नगर बने थे और न ग्राम। पर्वत श्रेणियाँ, एवं सघन कानन भूमि। मानव में अभी वर्ग नहीं थे। नित्य निर्मल अन्तःकरण, सहज सन्तुष्ट मानस—तप, ध्यान, समाधि—मानव अपने स्वरूप में स्थित था। उसकी आवश्यकतायें सीमित थीं और उसने जाना ही नहीं था कि क्लेश और भय भी कुछ होता है।

देव और मानव—लेकिन यह भेद भी नहीं जैसा था। यह उदार मानव का शील कि वह देव वर्ग को वन्दनीय मानता था। वैसे देवताओं के लिये मानव मान्य था। ऋषिगण तो सदा देव वन्द्य रहे हैं।

महर्षि पुलस्त्य—भगवान ब्रह्मा के मानस पुत्र महर्षि। देवताओं के भी वे परमप्रिय, सम्मान्य हों, इसमें कुछ अद्भुत था ही नहीं। लेकिन देवलोक साधन भूमि नहीं हो सकता और धरा—धरा पर भी उपयुक्त आश्रम भूमि कम ही थी। महर्षि को स्रष्टा ने सृष्टि करने का आदेश दिया था। सर्वथा जनहीन स्थान उनका आश्रम बनने का सौभाग्य कैसे प्राप्त कर सकता था।

'इन बालिकाओं का भी क्या दोष !' महर्षि का मन आज चिन्ता करने लगा था। 'यह सुरम्य भूमि उनको भी आकृष्ट करती है और उनका स्वभावगत चाञ्चल्य यहाँ सत्य के सुखद संयोग से आमोद बनकर क्रीड़ा करता है।'

'स्थान परिवर्तन उपयुक्त नहीं है।' पिता ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि को मेरु के इस शिखर पर आश्रम बनाने का आदेश दिया था। वे सर्वज्ञ स्रष्टा—उन्हें यह पता तो था ही कि यह भूमि देवकन्याओं, गन्धर्व-कन्याओं तथा ऋषिकन्याओं की क्रीड़ा स्थली है। 'उपाय ही आश्रयण के योग्य है।'

'तुम सब.....!' सहसा फिर समीप हास्य ध्वनि उठी कई कन्ठों से। महर्षि ने दृष्टि उठाई। दौड़ती-खेलती कुमारियां उनसे कुछ दूर तक आ गई थीं। महर्षि ने यह ध्यान नहीं दिया कि यह किशोरियों का दूसरा यूथ है।

'सुनो!' कुमारियां सहसा सङ्कुचित खड़ी हो गईं। 'अब से यदि कोई बालिका इस आश्रम भूमि में प्रवेश करेगी तो वह प्रवेश करते ही गर्भवती हो जायगी।'

'हे भगवान!' बालिकाओं का प्रफुल्लमुख भय से श्वेत हो गया। वे सबकी सब वहाँ से अविलंब दूर चली गईं।

'निरपराध उपाय!' महर्षि ने नेत्र बन्द कर लिया। अब वे निश्चिन्त ध्यान कर सकते थे।

× × ×

'मातः!' राजर्षि तृणबिन्दु की महारानी चौंक पड़ीं। उनकी पुत्री का यह आर्तस्वर था। वह दौड़ती आई और माता के वक्ष में मुख छिपा कर सिसकने लगी।

'वत्से!' महारानी ने पुत्री के मस्तक पर स्नेह पूर्ण कर फेरा। उसका मुख उठाया ऊपर और वे भी चौंक पड़ीं। वे उसे लिये अपने उटज से बाहर राजर्षि के सम्मुख पहुँचीं।

'यह आपकी कन्या.....।' राजमहिषी ने वाक्य पूरा नहीं किया।

'पुत्री! तुम्हारी यह क्या दशा है?' राजर्षि को भी आश्चर्य हुआ। उनकी पुत्री का पाटलारुण मुख पीताभ है उसके खञ्जन मंजु दृगों में शोकाश्रु हैं; किंतु साथ ही एक अलसभाव है और.....।

'मुझे पता नहीं तात!' शोक विह्वल कण्ठ से उस बालिका ने बताया—'मैं क्रीड़ा के लिये पार्श्व प्रपात की ओर गई। ढूँढ़ने पर भी मुझे मेरी कोई सहेली मिली नहीं। पता नहीं आज गन्धर्व कुमारियां क्यों नहीं आईं। निर्झर से मुझे जलद गम्भीर स्वरों में उठती सामगान की ध्वनि सुनाई पड़ी। मैं समीप से सुनने के लोभ से उधर बढ़ गई।'

'तुम महर्षि पुलस्त्य के आश्रम में चली गईं? आश्चर्य से आती हुई एक ऋषि कन्या बोल उठी—'तुम्हें उनके शाप का पता नहीं था?'

× × ×

'मैं भिक्षा लाया हूँ देव!' सपत्नीक राजर्षि तृणबिन्दु महर्षि पुलस्त्य के आश्रम में पधारे थे। उन्होंने महर्षि को प्रणिपात करके अपनी कन्या को आगे कर दिया—'यह मेरी पुत्री है। आपकी आराधना में यह सहायिका होगी। आश्रममार्जन कन्दमूलादि आहरण तथा अन्य सेवा के लिये इसे आप स्वीकार करें।'

महर्षि ने लज्जा से अपने आपमें संकुचित उस राजकन्या की ओर देखा। एक क्षण को उनके नेत्र बन्द हुए और फिर उन्होंने बिना किसी आवेश उद्वेग के कहा—'एवमस्तु!'

सतयुग की विवाह पद्धति इतनी ही। राजर्षि ने पुनः पत्नी के साथ महर्षि को प्रणिपात किया और पुत्री को वहीं छोड़कर अपने उटज की ओर लौट पड़े।

'भद्रे!' राजर्षि के जाने पर महर्षि ने पत्नी की ओर देखा 'सृष्टिकर्ता मेरे पिता सत्य सङ्कल्प हैं। उनका सङ्कल्प पूर्ण हो। तुम अंतरवत्नी हो और हो मेरी दी त्रुटि के कारण।'

राजकन्या का मुख अरुण हो रहा था। उसने मस्तक झुका रखा था। अपने पद नख से वह भूमि कुरेद रही थी। महर्षि कह रहे थे—'नारि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सफलता माता बनने में ही है। तुम माता बन गई हो। तुम्हारे उदर में पुत्र है। क्योंकि तुम मेरी वेदपाठ ध्वनि सुनने आकर गर्भवती हुई हो तुम्हारे इस पुत्र का नाम विश्रवा होगा। लेकिन यह स्मरण रखो—नारी की सार्थकता पति को परमपद दिला देने और पुत्र को उसके लिये उन्मुख कर देने में है।'

महर्षि का आदेश प्राप्त करके राजकन्या ने उटज को आवास बनाया। महर्षि अब गृहस्थ हो चुके थे।

सक्रिय सदस्य

"मानस मणि" के सन् १९५८ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य

			ग्राहक संख्या
१	श्री	रामलालजी गुप्ता सतगंगा	४
२	,,	पं० हरप्रसादजी सनेही सोनपांडर	२
३	,,	पं० रामरक्षित जी रामायणी बनारी	४
४	,,	शारदाप्रसाद जी रामवन	३
५	,,	डा० वृन्दावन जी भारद्वाज आदिलाबाद	७
६	,,	भुखाराम जी कन्नौजे साजा	३
७	,,	पं० रामेश्वरप्रसाद जी कबरई	२
८	,,	भैरवशंकर जी शर्मा वकील मन्दसौर	२
९	,,	आनन्दसिंह जी पटवारी चोरभट्टी	२
१०	,,	राजारामजी वाजपेई भाटापारा	२
११	,,	नटवरलाल जी महता इलाहाबाद	२
१२	,,	मस्तराम जी शर्मा शिक्षक नवागांव (ख)	२
१३	,,	धनेश्वरप्रसाद जी शर्मा "धन्ने" रेड़ा	३
१४	,,	गिरीश्वरप्रसाद जी बाँका	२
१५	,,	मूलचन्द जी संथालिया अड़भार	२

नोट—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे, उनकी नामावली अगले मास दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरणागतवत्सल श्री राम

[श्री प्रेमरानी दीन जी, एम. ए.]

जयन्त देवराज महाराज इन्द्र का पुत्र था न, इसलिए उसे एक बार अभिमान हो आया—"मैं तो देवताओं के महाराज का पुत्र हूँ। देवता—जो सभी के मन की जान सकते हैं, अपनी इच्छा से जो चाहें शरीर धारण कर सकते हैं। मैं तो अत्यन्त ही बलवान और वैभवशाली हूँ। मेरे सामने राम की क्या शक्ति है, परन्तु मैं देखता हूँ राम की सभी देवी देवता हृदय से प्रशंसा करते हैं, मेरी नहीं करते। मैं इन सभी को दिखा दूँगा कि राम मेरे सामने कुछ भी नहीं हैं। मैं देवता हूँ, देवताओं में भी महाराज कुमार और वह हैं मनुष्य—साधारण मनुष्य।" जयन्त के मन में इस प्रकार के एक नहीं अनेक विचार उठने लगे, मन में विचारों के कारण हलचल मच गई, स्पर्धा की भावना जागरित हो उठी। अपने बल वैभवादि के घमण्ड में चूर, वह शक्ति और वैभव के महासागर श्रीराम की वीरता-बल की टोह लेने को तैयार हो गया। वह इस बात को तो भूल ही गया कि राम भी महाराज अवधेश श्री दशरथजी के पुत्र हैं। वही महाराज दशरथ, जिनकी सहायता से एक नहीं अनेक बार देवताओं की रक्षा हुई। देवासुर संग्राम में देवताओं की विजय हुई। जब भी वे इन्द्रलोक में आते, महाराज इन्द्र उन्हें अपना अर्ध सिंहासन प्रदान करते थे। किन्तु इन सभी बातों को विस्मरण सा कर, जयन्त चित्रकूट की ओर चला—श्रीराम की परीक्षा लेने के लिए। था तो देवताओं का महाराज कुमार; लेकिन राम के सामने जाते समय शरीर धारण किया काग—कौए का।

जाते ही जयन्त ने दूर से देखा कि सौन्दर्य सागर श्रीराम अपनी प्राण बल्लभा महारानी श्री-जानकी के सहित एक दुग्ध के समान श्वेत शिला खण्ड पर बैठे हैं। सुन्दर अत्यन्त ही सुन्दर पुष्पों के विभूषण स्वयं बना बनाकर, अपनी प्राणप्रिया का श्रृंगार कर रहे हैं। श्रृंगार कर चुकने पर, प्रेम में विभोर हो, श्री जानकी जी के मुख-चन्द्र को चकोर की भांति एकटक निहारने लगे। सौन्दर्य के सागर भी महारानी के सौन्दर्य को निहारते निहारते अपने आप को भूल गये—विमुग्ध हो गये। जयन्त तो ऐसे ही समय की प्रतीक्षा में था। उसने झट जाकर श्री जानकी जी के कमल से भी कोमल चरण में चोंच मारी। महारानी जी की चीख से श्री राम का ध्यान भंग हुआ—देखा उनकी प्रियतमा के चरण से रुधिर की धार बह रही है। हैं, यह क्या हो गया। सामने, अपने बिलकुल सामने देखा एक वन-विटप पर काग रक्त से सनी चोंच बैठा है। क्रोध आ गया—हैं, इस दुष्ट क्षुद्र जीव की इतनी हिम्मत, मेरी प्राणप्रिया के साथ छेड़खानी, अवश्य ही यह छद्मवेष कोई दुराचारी है। अच्छा अभी मैं इसे देखता हूँ। अवधेशकुमार श्रीराम ने पृथ्वी पर से एक सींक उठाई, उसे ब्रह्ममंत्र से प्रेरित किया, धनुष पर चढ़ाया और छोड़ दिया। बस छोड़ने भर की देर थी कि वह ब्रह्मशर जयन्त की ओर दौड़ा। जयन्त देवताओं का महाराज कुमार जयन्त, शक्ति के अभिमान में चूर जयन्त भय के कारण भागा। कविकुल शिरोमणी संत-भूषण गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने मानस ग्रंथ में इस प्रकरण को इन शब्दों में दिया है :—

एक बार चुनि कुसुम सुहाए।
निज कर भूषण राम बनाए॥
सीतहि पहिराए प्रभु सादर।
बैठे फटिक सिला पर सुन्दर॥
सुरपति सुत धरि बायस बेषा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सठ चाहत रघुपति बल देखा ॥
जिमि पिपीलिका सागर थाहा ।
महा मन्दमति पावन चाहा ॥
सीता चरन चोंच हति भागा ।
मूढ़ मन्दमति कारन कागा ॥
चला रुधिर रघुनायक जाना ।
सीक धनुष सायक संधाना ॥
अति कृपालु रघुनायक सदा दीन पर नेह ।
ता सन आइ कीन्ह छलु मूरख अवगुन गेह ॥
प्रेरित मन्त्र ब्रह्मसर धावा ।
चला भाजि बायस भय पावा ॥

भागते भागते जयन्त इन्द्र लोक में पहुँचा। अपने वास्तविक रूप में पिता के समक्ष परम भय-भीत, हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और रक्षा के लिये प्रार्थना करने लगा। महाराज इन्द्र ने जब अपने पुत्र की करनी को सुना और जाना कि यह श्रीराम का विद्रोही है, तो उसकी रक्षा से इन्कार कर दिया। केवल महाराज इन्द्र ने ही नहीं, वरन् तीनों लोकों में जहाँ जहां भी वह गया, सभी ने उसे अपनी शरण में रखने से मनाकर दिया। यहां तक कि ब्रह्मा और शिव भी उसके भय को दूर करने में समर्थ न हो सके। गोस्वामी जी लिखते हैं:—

ब्रह्मधाम सिवपुर सब लोका ।
फिरा श्रमित ब्याकुल भयसोका ॥
काहूँ बैठन कहा न ओही ।
राखि को सकइ राम कर द्रोही ॥

भला किसकी इतनी शक्ति थी कि वह श्रीराम के द्रोही को अपनी शरण में रखता। जयन्त के लिये सारा सन्सार अग्नि स्वरूप ही नहीं वरन् उससे भी अधिक तप्त करने वाला हो गया। माता पिता, सगे सम्बन्धी सभी उस समय उसके विपक्षी बन गये। गोस्वामी जी का तो विचार है कि अत्यन्त ही कृपालु, दीनों पर सदैव से ही दया करने वाले भगवान श्रीराम से जो भी छल करे उसकी ऐसी गति होना स्वाभाविक ही है।

मातु मृत्यु पितु समन समाना ।
सुधा होइ बिष सुनु हरि जाना ॥
मित्र करइ सत रिपु कै करनी ।
ता कहँ बिबुध नदी बैतरनी ॥
सब जगु ताहि अनलहु ते ताता ।
जो रघुबीर बिमुख सुनु भ्राता ॥

जयन्त को अत्यन्त ही भ्रमित और भय से व्याकुल देख, देव ऋषि नारद के कोमल हृदय में दया उमड़ पड़ी। बोले—"जयन्त समस्त विश्व तुम्हारी रक्षा करने में असमर्थ है, तुम यदि अपनी रक्षा चाहते होतो वह केवल श्री राम की शरण में ही प्राप्त हो सकती है। तुम जाओ और उनके चरणों में गिर कर रक्षा के लिये याचना करो—क्षमा मांगो।" जयन्त ने जैसे ही इन सन्त की बात को सुना, वह तुरन्त ही दुबारा चित्रकूट की ओर भागा। पहले तो परीक्षा लेने के लिये गया था—अभिमान और घमण्ड से भरा हुआ, किन्तु इस बार शरणागत-वत्सल भगवान के शरणापन्न होने के लिये, अत्यन्त ही दीन हीन भाव को लेकर उनकी ओर दौड़ा। वहां पहुँच कर दयानिधान के चरणों में गिर पड़ा। श्रीमद् बाल्मीक जी ने लिखा है कि वह अत्यन्त ही घबराया हुआ चरणों में उलटा गिरा, उसे यह भी ध्यान न रहा कि चरणों में सर रखा जाता है या पैर। वह गिरा जब तो पैर भगवान के चरणों की ओर थे और सर दूसरी ओर। माँ के हृदय में दया न होगी तो भला किसमें होगी। जगत-जननी श्री सीता जी ने उसकी इस भूल को देखा, उन्हें दया आ गई। झट माँ ने उसे उठाया—सर भगवान के चरणों में कर दिया। महारानीजी का तो वह अपराधी ही था—जब उन्हें दया आ गई तो भला दयानिधान बिना द्रवित हुये कैसे रह सकते थे। जयन्त की अत्यन्त ही दीनता से भरी पुकार को सुन, महारानी जी के मुख पर मातृ-स्नेह और करुणा को आच्छादित देख, श्री राम उसे क्षमा प्रदान करने के लिये कटिबद्ध हो गये। बाण उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम ही-संसार है

[स्वामी श्री शिवानन्द जी सरस्वती]

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावों का शांत स्थिर उद्गारहीन समावेश है। उसमें दया और क्षमा श्रद्धा और वात्सल्य सहानुभूति तथा सम्मान अनुराग और विराग अनुग्रह और उपकार सभी मिले होते हैं।

अतः प्रेम ही–संसार है

प्रेम स्वाभाविक गुण है वह प्रकृति प्रदत्त वस्तु है। प्रकृति का विचार ही वस्तु स्थिति प्रेम का सत्य=संतुलन है और वह प्रमाण रूप से—बहुत्व-वाद द्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवाद केवलाद्वैतवाद कार्य कारण विषयक पंच प्रकारवाद असत्कार्यवाद सत्कार्यवाद सदसत्कार्यवाद अनिर्वचनीयवाद सिद्धान्तपक्ष सत्सस्वरूप जगत्कामूल उपादान समवायीकारण असमवायीकारण=परमाणु-प्रतियोगी अनुयोगी प्रतियोगिता अवच्छेदक अवच्छिन्न निरूपक निरूपित उपाधि अनैकान्त अतिव्याप्ती अव्याप्ती आत्माश्रय अन्योन्याश्रय अनवस्था अत्यंताभाव=भाव प्रमाण वाच्यप्रमाण सम्प्रद प्रमाण कौत्विक प्रमाण रहस्य प्रमाण तथा तत्व प्रमाणादि सम्बन्ध ही=प्रेम का मूलत्व है। वह त्रिकाल में एक्योभाव से अपने ही विश्वव्यापी ध्रुव पर स्थित है किन्तु दर्शनाचार्यों के मत या रूप भिन्न भिन्नता क्यों नहीं पर वास्तविक विशुद्ध प्रेम का ही निरूपण अनेक रूपों से किये हैं। यदि प्रेम का निर्णय असंभावित प्रमाण सिद्ध होता तो उपरोक्त वादविवादों का घनिष्ट सम्बन्ध निकृष्ट हो जाता और जगत का मूलत्व लक्ष्य भी मृतप्राय हो जाता वस्तुतः प्रेम ही विश्वास है उसी विश्वास का घनत्व ही संसार है वही संसार का मैत्रीत्व ही प्रेम है।

अतः प्रेम ही–सन्सार है

यह प्रायः प्रत्येक मनुष्य के अनुभव में आया होगा कि जब कभी हमारे हृदय में दया के भाव उद्भव होते हैं तब हम एक दीन से प्रेम पूर्वक वार्तालाप करने लगते हैं। उस दीन से चाहे भले ही हमारा पूर्व परिचय न रहा हो किन्तु उसे देखते ही हमें सहसा एक प्रकार की दया आती है और हम उससे प्रेम भरी बातें करने लगते हैं। वह दीन हमारी बातों से प्रसन्न होता है और उसकी आत्मा भी हमें प्रेम भरी दृष्टि से देखती है। जब हमारा प्रेम किसी व्यक्ति से हो जाता है तब हमें उसके सारे कार्य प्रिय और अच्छे लगने लगते हैं। "अहा प्रेम" यह दो अक्षरों का एक शब्द क्या ही सुन्दर और कर्णप्रिय लगता है। तब तो प्रेम का प्रादुर्भाव प्रेम से उद्भव होता है।

अतः प्रेम ही संसार है

कभी कभी प्रेमासक्त व्यक्तियों से अनुचित कार्य भी हो जाया करते हैं। तब भी प्रेमीय व्यक्ति की

अमोघ था, वह अपने निशान से कैसे चूक सकता था। जयन्त अवश्य ही उसके द्वारा भस्म हो जाता। करुणानिधान श्रीराम ने अपनी कृपा से उस ब्रह्मशर को शांत किया एवं काग का एक नेत्र बाण की भेंट कर, उसकी रक्षा कर ली।

भूतभावन महेश्वर भगवती उमा से कहते हैं—"हे उमे! यद्यपि उस दुष्ट का वध ही उचित था, उसने ऐसा ही अपराध किया था, किन्तु परम कृपालु रघुकुल भूषण रघुवीर हमारे प्रभु ने कृपा कर उसे एक नेत्र वाला बनाकर छोड़ दिया—यह है उनकी शरणागत वत्सलता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्तगुण राशि के समक्ष भला उसके अल्प दोष हमें क्यों कर खटक सकते हैं। अतः प्रेम में नेम नहीं। प्रेम एक सौन्दर्य रूप यौवन आकृति की ओर होता है। चाहे वह ज्ञान अथवा मान से =वृद्धि हो गुण तथा स्वभाविक ओर से आकर्षण करता है। परन्तु जिस भाग्यशाली के पास चरित्रधन है उस पर सहसा प्रेम की वृद्धि होती है। मेरा प्रेम एक अबोध बालक पर जैसा है वैसा ही अपने गुणहीन पड़ोसी पर है। प्रेम का वेग ऐसा विचित्र है कि अनायास ही मानव हृदय में एक क्षणमात्र में उत्पन्न हो उठता है और इसे विलीन होते भी देर नहीं लगती तब तो प्रेम का रहस्य अति गूढ़ है। भले प्रेम का भाव भिन्न २ रूप से क्यों न हो किन्तु प्रेम एक ही हैं। जैसे पुत्र प्रेम स्त्री प्रेम धन प्रेम भाई बहिनों का प्रेम और पूज्य वर्गजनों से देव तक। वैसे प्रकृति सौंदर्य से भी प्रेम अवश्य है चाहे समयोचित समयानुकूल एक अनेक रूप हो जाय तो भी "प्रेम" तो एक ही है।

अतः प्रेम ही–संसार है

विशुद्ध प्रेम सन्सार में मणि सूत्रवत् ओतप्रोत है यद्यपि प्रेम (भक्ति) प्रेमी (भक्त) और प्रेमास्पद (भगवान) तीनों एक ही रूप में परिणित हो एक ही बन जाते हैं।

अतः प्रेम ही–सन्सार है

सन्सार स्वतन्त्र है और जीवादि भी स्वतन्त्र हैं किन्तु मल विक्षेप आवरणका प्रपंच इतना विस्तीर्ण है कि प्रत्येक वस्तु में अपने सौन्दर्य कणों से परिपूर्ण है। जब मानव की स्वतन्त्र धारणा उसी सौंदर्य में तल्लीन होने से अपने को आप स्वतन्त्र समझने में असमर्थ हो जाया करती है तब प्रेम का बन्धन विरह है। यदि शुद्ध प्रेम में हम विरह का उपयोग न करें तो हम विशुद्ध प्रेम के रहस्य तत्व को जानमे में प्रेमी हो सकते हैं।

अतः प्रेम ही–संसार है

प्रेम का स्वरूप वास्तव में अनिर्वचनीय है अतः श्रवण-मनन निधिध्यासन द्वारा केवल अनुमान किया जाता है। प्रेम क्या है? "प्रेम" व्यापक विशुद्ध-शक्ति है तब तो सन्सार में सर्व व्यापक विशुद्ध होने से जन्म मरण से रहित हो जाता है। उस परम तत्व का नाम ही "प्रेम" है।

अतः प्रेम ही–संसार है

वास्तव में प्रेम ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसकी उपमा दे सकें पर अनायास उदय किसी के हृदय में तरङ्ग सी आती जाती रहती है वह कितनी समय से और कहां से और कैसे यह नहीं कहा जा सकता। यदि अशुद्ध प्रेम (मोह) होता तो उपमा सहित वर्णन हो सकता है पर विशुद्ध प्रेम का नहीं।

अतः प्रेम ही–संसार है

प्रेममय संसार में प्रेम का ही प्रकाश होने से प्रेम का प्रादुर्भाव होकर प्रेम से ही दर्शाये गये मार्तण्ड जैसे अपने पूर्ण प्रतिबिम्ब में सन्सार को प्रकाशमय कणों से प्रकाश करता रहता है पर प्रकाश का पूर्वोपरि प्रकाश में है। वैसे सन्सार का सार भूत संसार में ओतप्रोत है। जब मनुष्य इन्हीं रहस्यों को खोजने के लिये ८४ लक्ष योनियों का अनुभव करता है तब सर्वज्ञ कहलाता है वह सर्वज्ञ स्वतः विशुद्ध प्रेम के आश्रय से विशुद्ध प्रेम में लीन हो जाता है उसका नाम—प्रेम-भक्ति, श्रद्धा, ज्ञानत्व, त्याग, सन्तोष, क्षमा, दया, शांति वैराग्य प्रलय, निवृत्ति आवागमन से रहित और मोक्ष आदि से प्रसिद्ध है।

अतः प्रेम ही–संसार है

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गोस्वामी जी का उपासना मार्ग

[कथा वाचक पं० श्री सीतारामदास जी महान्त—श्री वैष्णव]

इस बात को सारा संसार ज नता है कि श्री गोस्वामी जी श्री वैष्णव साधु थे और श्री सीताराम जी के अनन्य भक्त थे। इष्ट और उपासना का अर्थ महारामायण में ऐसा किया कि—

गुरु मंत्रानुसारेण लयंध्यानं जपं तथा।
पाठं तीर्थं च संस्कारमिष्टं सर्व्वपरात्परम् ॥१॥
इष्ट पूजां प्रकुर्य्याद्वैतत्कथां शृणुयात्पठेत्।
तदंशंव्यापकं विश्वं कथ्यते साप्युपासना ॥२॥

अर्थात्—गुरु मंत्रानुसार लय ध्यान जप पाठ तीर्थ माला मुद्रादि पंचसंस्कार इन सबको सर्वोपरि मानना इष्ट है। अपने इष्ट की पूजा करना उनकी कथा सुनाना सुनना तथा पढ़ना और अपने इष्ट के अंश से ही संसार को व्यापक जानना उसको उपासना कहते हैं। सो रामायण में तथा और सब ग्रन्थों में श्रीराम जी को सर्वोपरि मानना उन्हीं के अंश से संसार को व्यापक तथा कोटि कोटि ब्रह्मा, विष्णु शिवादिक को कहना प्रसिद्ध ही है। सो यही अनन्य भक्तों के लक्षण हैं। सब चराचर को अपने स्वामी इष्ट का सेवक जानना यह किष्किन्धा कांड में स्पष्ट रूप से हनुमान जी से श्रीराम जी ने कहा ही है—

सो अनन्य जाके असि मति न टरइ हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूप स्वामि भगवंत ॥

अर्थात्—चिदचिद्विशिष्ट श्रीराम जी को जान कर भक्ति करना इसी को विशिष्टाद्वैत कहते हैं। यही विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त श्री गोस्वामी जी का है।

जड़ चेतन जग जीव जे सकल राममय जान।
सीय राम मय सब जग जानी ॥

शिव जी का सिद्धान्त सुनो—

उमा जे राम चरण रत विगत काम मद क्रोध।
निज प्रभु मय देखहिं जगत केहि सन करहिं विरोध ॥

इत्यादि। रामतापनीयोपनिषद में कहा है—

विघ्नेशं वाणीं दुर्गाक्षेत्र पालकं सूर्य्यं चंद्र नारायणं नृसिंह वासुदेवं वराहं सीतालक्ष्मणं शत्रुघ्नं भरतं विभीषणं सुग्रीवं अंगदं जामवंतं प्रणव मेतानि रामस्यांगानि जानीयाः।

नारद जी ने पंचरात्रांतर्गत वृहद ब्रह्मसंहिता में लिखा है—

ब्रह्मा शक्रश्च रुद्रश्चगणेशोभास्करस्तथाः।
विचिन्त्य वासुदेवस्य तनुभूता विभूतयः ॥

अर्थात्—वैष्णवों को चाहिये कि ब्रह्मा, इन्द्र, गणेश और सूर्य्य को वासुदेव का शरीर ऐश्वर्य जानकर चिन्तन करे। इसलिये सब देव देवों को श्रीराम जी के अंग जानकर श्री गोस्वामी जी ने बंदना की है। सो श्री श्रीराम जी की भक्ति के ही लिये। इससे कितने ही लोग बिना जाने बूझे श्री गोस्वामी जी को स्मार्त वैष्णव कहते हैं। कोई कोई गोसांई भी कहते हैं पर गोस्वामी का अप भ्रंश शब्द गोसांई है। वर्तमान समय में तीन समाज में गोसांई कहने की विशेष रीति है। एक तो श्रीवल्लभ संप्रदाय में दूसरी गौड़ संप्रदाय में तीसरी दस नामी गोसाइयों में तो प्रसिद्ध ही है। पूरब देश में साधु ब्राह्मण सबको गोसांई कहते हैं। गोसांई कहना एक देश भाषा है। इसलिये गोसांई कहने से श्री गोस्वामी जी को श्री वल्लभ एवं गौड़ संप्रदाय के कहना अथवा दसनामी गोसांई कहना भारी भूल है। अस्तु कोई गोस्वामी जी को स्मार्त वैष्णव कहते हैं। शैव शाक्त गाणपत्य सौर्य्य और वैष्णव यह पंचदेव के भिन्न भिन्न उपासक तो शास्त्रों में कहे हैं। पर स्मार्त वैष्णव का पता नहीं चलता है। परन्तु वेदोक्त कर्म वाले स्मार्त श्रौत कहाते हैं। स्मार्त के कर्म वाले अथवा वर्णाश्रम वाले स्मार्त कहाते हैं। जैसा कि वायु पुराण में और स्कंध पुराण में कहा है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इज्या वेदात्म कः श्रौतः स्मार्तो वर्णाश्रमात्मकः।

वचनों से सब धर्म वैदिक और शास्त्रोक्त होने से सबको श्रौत स्मार्त कहना चाहिये। यदि कोई कहे कि किसी के हाथ का भोजन न करे। स्वयंपाकी हो उसे स्मार्त वैष्णव कहते हैं सो यह भी कहना ठीक नहीं क्योंकि चारों संप्रदायों में बहुत वैष्णव ऐसे हैं जो किसी के हाथ का भोजनादि नहीं करते हैं तो इससे वे स्मार्त वैष्णव नहीं कहाते हैं। इससे स्मार्त वैष्णव कहना शास्त्र प्रतिकूल है। श्री गोस्वामी जी परम वैष्णव थे। आपका अत्यन्त गम्भीर भाव था। आप सबके प्रिय सबके हितकारी थे। आप किसी के मत के विरोधी नहीं थे। इसी से आपके ग्रन्थों में सब मत पाये जाते हैं। इसीलिये आपने कहा भी है कि—

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

अर्थात्—काव्य और ऐश्वर्य उत्तम वही है जो गंगा जी के समान सब को हितकारी हो। इससे आपकी ग्रन्थावली में शैव शाक्त गाणपत्य सूर्य्य तथा द्वैताद्वैत आदि अनेक मत पाये जाते हैं। आपकी विलक्षणता तो यही है कि सबके मत को कहते हुए अपने ही सिद्धान्त को सर्वोपरि स्थापित करते हैं। यदि केवल अपने ही सिद्धान्त को मानस में कहते तो सर्व मान्य न होते। कोई गोस्वामी जी को अद्वैतवादी भी कहते हैं। सो केवल कलियुग का प्रभाव है। क्योंकि आप लिखते हैं—

तेइ अभेद बादी ज्ञानी नर।
देखा में चरित्र कलिजुग कर॥
ब्रह्म ज्ञान बिनु नारि नर करहिं न दूसरि बात॥

इससे गोस्वामी जी को अद्वैतवादी कहना भारी भूल है। भला विचार करना चाहिये कि श्री संप्रदाय के वैष्णव होकर पूर्वाचार्यों के प्रतिकूल कैसे कथन करेंगे। यदि कोई कहे कि 'रामायण में' जीव ब्रह्म की एकता कई जगह पर कथन किया है इसलिये अद्वैतवादी थे। तो इसका उत्तर यही है कि यह पूर्व पक्ष है कहीं पूर्व पक्ष के कहने से भी कोई अद्वैतवादी हुआ है। वे पूर्व पक्ष के कथन करने से अद्वैतवादी नहीं हो सकते हैं। देखिये सिद्धान्त में आप क्या कहते हैं—

माया बस परिछिन्न जड़ जीव कि ईस समान॥

इत्यादि बहुत कुछ कहा है। ज्ञान से भक्ति को विशेष माना है। ज्ञान दीपक के आगे आपने कहा है—

ते जड़ कामधेनु गृह त्यागी।
खोजत फिरहिं आक पय लागी॥

यदि कोई कहे कि यहां पर शुष्क ज्ञानियों को जड़ कहा है। पर जीव ब्रह्म की एकता में भक्ति भी तो नहीं हो सकती है। इसलिये श्री गोस्वामी जी विशिष्टाद्वैत वादी थे। श्री गोस्वामी जी को जगद्गुरु परमाचार्य्य आदि कहने से जगद्गुरु के पदाधिकारी बुरा मानते हैं। कहते हैं कि गोस्वामी किस गादी के आचार्य थे। भला मैं पूछता हूँ कि आचार्य का क्या लक्षण है। गुरु किसे कहते हैं? क्या आचार्य के लक्षण में भी गादी का होना नियम है। यदि है तो गादी के पूर्व जितने आचार्य हुए हैं उनकी कौन गादी थी? इसलिये ऐसा कहना असंगत है। शास्त्रों में तो आचार्य का लक्षण ऐसा कहा है—

"आलोक्य सर्व्व शास्त्राणि पुराणाणि च वैष्णवः
तदर्थमाचरेद्यस्तु स आचार्य्य इतीरितः॥
वृद्धहारीतस्मृति॥
आचिनोति हि शास्त्रार्थानाचारे स्थापयेत्यति।
स्वयमा चरते यस्तु स आचार्य्यः॥"

अर्थात्—सकल शास्त्रों के सार सिद्धान्तों को एकत्र करके स्थापित करें और उसी में सबको लगावें और आप भी उसी के अनुकूल आचरण करे। उसको आचार्य कहते हैं। ऐसे ही गुरु का अर्थ भी है—

गु शब्दस्त्वन्धकारश्चः रू शब्दस्तन्निरोधकः।
अन्धकार निरोधित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते॥

अर्थात्—अंधकार रूप अज्ञान को दूर कर जो ज्ञान रूप प्रकाश देवै उसे गुरू कहते हैं। श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता वचन

[पं० श्री रामदत्त जी उपाध्याय]

श्रृंगवेर पुरी में गुह निषाद जी के विनय करने पर—

कृपा करिअ पुर धारिअ पाऊ।
थापिअ जन सब लोग सिहाऊ॥

श्रीराम जी कहते हैं।

कहेहु सत्य सब सखा सुजाना।
मोहि दीन्ह पितु आयसु आना॥

वह आयसु क्या है ?

बरष चारि दस बास बन, मुनि व्रत बेष अहार।
ग्राम बास नहिं उचित सुनि, गुहहिं भयउ दुख भार॥

रिष्यमूक पहाड़ी की तलहटी में बटु वेषधारी श्री हनुमानजी के पूछने पर श्रीराम जी कहते हैं—

कोसलेस दसरथ के जाए।
हम पितु बचन मानि बन आए॥

और लंका में विभीषण को राज्य गद्दी देते समय वे कहते हैं—

पिता बचन मैं नगर न जाऊं।
आपु सरिस कपि अनुज पठाऊं॥ आदि

इस तरह श्रीराम जी अपने बन आने का कारण पिता वचन प्रसंगानुसार कहते चले गये हैं और इस "पिता बचन" का सम्मान मानस प्रणेता श्री शँकरजी, भक्त भुशुंडि जी एवं याज्ञवल्क्य जी, राजऋषि जनकजी आदि महान विभूति भी अपने कथा प्रसंगों में सादर अपनाते चले हैं, पर श्री-राम चरित मानस के अनुशीलन से चक्रवर्ती महाराज दशरथ जी का वचन (रामजी को बन जाने के लिये) आयसु देना कहीं नहीं पाया जाता। किंतु इसके विपरीत बन जाने से रोकने के लिये वचनों और प्रयत्न अनेक स्थलों में मिलते हैं, यथा—

बिधिहिं मनाव राउ मन माहीं।
जेहिं रघुनाथ न कानन जाहीं॥
सुमिरि महेसहिं कहइ निहोरी।
बिनती सुनहु सदासिव मोरी॥
आसुतोष तुम अवढर दानी।
आरित हरहु दीन जन जानी॥
तुम्ह प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु।
बचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि सील सनेहु॥
अजसु होउ जग सुजस नसाऊ।
नरक परौं बरु सुरपुर जाऊ॥
सब दुख दुसह सहावहु मोही।
लोचन ओट राम जनि होंहीं॥
अस मन गुनइ राउ नहिं बोला।

श्री दशरथ जी की मानसिक स्थिति कितनी वेदना पूर्ण है। श्री रघुनाथ जी को बन जाने से रोकने लिये उन्हें संसार में अपयशी होने का अथच नरक में पड़ने का जरा भी भय नहीं वे सब प्रकार के दुसह दुख सहन करने के लिये

गोस्वामी जी में क्या ये सब लक्षण नहीं थे। अर्थात् श्रीमद् गोस्वामी जी जगद्गुरु एवम् परमाचार्य थे, वे श्री रामानन्दीय श्री वैष्णव संप्रदाय के विशिष्ट अनुयायी और श्रीराम जी के अनन्य उपासक थे। श्री गोस्वामी जी की गुरू परम्परा और महामंत्र की परम्परा मानस संघ से प्रकाशित सार्थ रामतारक प्रयोग विधि में विस्तार पूर्वक लिखी है सो देख लेना चाहिये। यहां लेख विस्तार भय से गुरु परम्परा नहीं लिख रहा हूँ। अस्तु श्री गोस्वामी जी श्री वैष्णव साधु थे। इस पर भी जो कोई किसी प्रकार का सन्देह करें अथवा गोस्वामी जी का उपासना मार्ग ढूढ़ें तो कितनी भारी भूल है। अपनी भूल मिटाने के लिये वह मानस संघ से प्रकाशित "मानस सिद्धान्त" ग्रन्थ मंगाकर पढ़ें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तैयार हैं। यह चक्रवर्ती जी के मन की दशा है। अब उनका बचन और प्रयत्न देखिये—

सीता लक्ष्मण के साथ राज महल में आकर महाराज से विदा मांगते समय श्री रघुनाथ जी कहते हैं—

पितु असीस आयसु मोहिं दीजै।
हरष समय बिसमउ कत कीजै॥
तात किए प्रिय प्रेम प्रमादू।
जस जग जाइ होइ अपवादू॥

पिताजी! आशीर्वाद दीजिये, यह समय हर्षित होने का है, विस्मय होने का नहीं। प्रिय वस्तु में प्रेमाधिक्यता से प्रमाद होता है, जिससे संभावित पुरुष को भी अपयश मिलता है, रघुनाथ जी का ऐसा वचन सुनकर श्री दशरथजी कहते हैं—

सुनहु राम तुम्ह कहं मुनि कहहीं।
राम चराचर नायक अहहीं॥
सुभ अरु असुभ करम अनुहारी।
ईसु देइ फल हृदय बिचारी॥
करइ जो करम पाव फल सोई।
निगम नीति असि कह सब कोई॥
और करै अपराधु, कोउ और पाव फल भोगु।
अति बिचित्र भगवंत गति, को जग जानै जोगु॥

(१) हे राम! मुनि लोग तुमको चराचर नायक कहते हैं (भाव यह कि चराचर नायक कर्तुं अकर्तुं अन्यथाकर्तुं कर सक्ता है।)

(२) जीव के शुभाशुभ कर्म के अनुहार ही, ईश्वर विचार कर फल देता है (भाव यह कि तुम्हारे कर्म बन जाने योग्य नहीं हैं तुम जीव नहीं हो।)

(३) हे राम! जो कर्म करता है, वही उसके फल को भोगता है। यही बात वेद तथा नीति शास्त्र तथा सब कोई ऐसा ही कहते हैं (तब तुम बन जाकर कष्ट भोक्ता क्यों बन रहे हो।)

(४) कोई दूसरा अपराध करे और कोई दूसरा उसका फल भोगे भगवत गति अति विचित्र है। अपराधी तो मैं हूँ जो "बर बिचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा" और फल तुम भोगने जा रहे हो! भगवत गति विचित्र ही नहीं अति विचित्र है।

ग्रंथकार जी कहते हैं:—

राय राम राखन हित लागी।
बहुत उपाय किए छल त्यागी॥

इस तरह महाराज दशरथ जी रघुनाथ जी को रोकने का ही उद्योग मन से तथा प्रयत्न से करते गये हैं। भले ही वाणि से स्पष्ट रूप में न तो रोक ही सके हैं, न, जावो, कह ही, सके हैं तब रघुनाथ जी का पिता वचन को मानकर वन आना कहना किस प्रकार समझा जा सकता है?

चक्रवर्ती जी के पास कैकेयी रानी के दो वरदान थाती रूप में थे। दासी मंथरा के भड़काने से सौतिआ डाह से प्रेरित होकर महारानी कौशिल्या से बदला लेने के लिए ही, मझली रानी कैकेयी ने अपने पुत्र भरत जी के लिये राज्य गद्दी माँगी और सौतिकौशिल्या के पुत्र श्रीराम जी के लिये चौदह वर्ष का वनवास मांग बैठी।

राजा जी भरत को राज्य देना उसी समय स्वीकार कर गये थे, पर श्रीराम जी को वनवास देने के लिये अंत तक अनुनय विनय करते रह गये, हां, नहीं कुछ नहीं कर सके हैं। रानी कैकेयी के आगे राजा जी कहते हैं—

जानेउँ मरम राउ हँस कहई।
तुमहिं कोहाब परम प्रिय अहई॥
थाती राखि न मागिहु काऊ।
बिसरि गयउ मोहि भोर सुभाऊ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्रान जाहुँ बरु बचन न जाई॥
सत्य मूल सब सुकृत सुहाये।
बेद पुराण बिदित मनु गाये॥

हे रानी! हमारे रघुकुल के परंपरागत रीति यही है कि अपने दिये गये बचनों का निर्वाह हम लोग प्राण देकर करते हैं। सब सुकृतों का मूल सत्य है और रामजी सुकृत के सीमा ही हैं।

श्रीराम जी के ऊपर राजा जी का अपार स्नेहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, दूसरे वरदान से उसी स्नेही पुत्र का वियोग चिरकाल तक होना था। महाराज संकट में पड़ गये। पुत्र स्नेह से अपने कुलवत प्राण देकर वचन पालन से विमुख होने जा रहे थे, जिसे संभाल करने के लिये माता कैकेयी श्रीराम जी से अनुरोध करती हैं कि—

पितहिं बुझाइ कहहु बलि सोई।
चौथें पन जेहिं अजस न होई॥
तुम्ह सम सुअन सुकृत जेहिं दीन्हे।
उचित न तासु निरादर कीन्हे॥

बेटा श्रीराम! बलैया लेती हूँ, सरकार को समझाकर कहना, चौथेपन में यह अपयश क्यों ले रहे हैं, जिस सत्य सुकृत ने उन्हें तुम्हारे समान सत्पुत्र को दिया है उस सत्य का निरादर उन्हें उचित नहीं है।

श्रीराम जी भी महाराज के आगे विदा मांगते हुये कैकेयी रानी की शिक्षा अनुसार ही तो विनय करते हैं।

पितु असीस आयसु मोहि दीजै।
हरष समय विषमउ कत कीजै॥
तात किए प्रिय प्रेम प्रमाद।
जस जग जाय होइ अपवाद॥

हे तात! वन जाने के लिये आप मुझे आज्ञा और आशीर्वाद दिजिये। हर्ष के समय में आप विस्मय क्यों कर रहे हैं। प्रिय जनों के प्रेम में पढ़कर प्रमाद करने से यश चला जायगा, और अपवाद फैलेगा।

श्रीराम जी के कहने का भाव भी तो यही है। कि मेरे ऊपर आपका निस्सीम स्नेह होने से आपका कुलवृत (प्राण देकर वचन पालन) नष्ट हो जावेगा।

रघुकुल रीति सदा चलि आई।
प्राण जाहु बरु वचन न जाई॥

अतः इस वचन पर संभार कीजिये। स्नेह जन्य कातरता त्याग कर वन जाने के लिये हुक्म दीजिये।

उपर्युक्त वचन जो अभी गत रात्रि में चक्रवर्ती जी रानी कैकेयी को सुना चुके हैं उसी के पालन के लिये श्रीराम❀ उत्तम पुत्र होने से, वन जाने के लिये तत्यकाल तैयार हो गये, और इसे ही पिता वचन हर प्रसंग में कहते चले गये हैं।

(पिता से यहां केवल पिता का ही भाव लेने में संकुचित हो जाता है पिता से यह भाव लेने में कि वचन पालन हमारे पिता ने किया था, पितामह भी वचन पाले थे, और प्रपिता मह वृद्ध प्रपिता महादिकों ने भी प्राणों की बाजी लगाकर वचन पाला था, तभी रघुकुल रीति बनेगी, और सदा चलि आई का भाव सुस्पष्ट होगा।)

और सर्व प्रथम माता कौशिल्या जी से विदा मांगते हुये कहते हैं। "करि पितु वचन प्रमान"

पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू।
जहँ सब भांति मोर बड़ काजू॥
आयसु देहिं मुदित मन माता।
जेहि मुद मंगल कानन जाता॥

❀ अध्यात्म रामयण में श्रीरामजी रानी कैकेयी से कहते हैं—

अनाज्ञप्तो ऽपि कुरुते पितुः कार्य्यः स उत्तमः।
उक्तः करोतियः पुत्र समध्यम उदाहृतः॥
उक्तोपि कुरुते नैव सपुत्रो मल उच्यते।
अतः करोमि तत्सर्वं यन्मामाह पिता मम॥

जो पुत्र पिता का कार्य, पिता के बिना हुक्म दिये करता है वह उत्तम पुत्र है।

हुक्म देने पर जो करता है वह मध्यम पुत्र है।

हुक्म देने पर भी जो नहीं करता वह तो मल है, जैखे विष्ठा, मूत्र।

राजा ययाति के छोटे पुत्र पुरु ने वृद्ध पिता के युवाऽवस्था मांगने पर यही तो कहा है—

अप्रच्छत्तनयं परुं, वयसोनं गुणाधिकम्।
न त्वमग्रजवद्वत्स, मां प्रत्याख्यातु मर्हसि॥
उत्तमश्चितितं कुर्यात्प्रोक्त कारीतु मध्यमम्।
अधमोऽश्रद्धया कुर्यादकर्ता च्चरितं पितुः॥

श्री मद्भागवते नवमस्कंधे अष्टादशोध्यायः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनि सनेह बस डरपसि मोरे ।
आनंद अंब अनुग्रह तोरे ॥
बरष चारि दस बिपिन बसि, करि पितु बचन प्रमान ।
आइ पाँय पुनि देखिहउं, मन जनि करसि मलान ॥

राजा जी सदाशिव को मनाते हुये कहते हैं—

बचन मोर तजि रहहिं घर, परि हरि सील सनेहु ।

तब राजाजी का बचन कौनसा है ? कि—जिसे श्रीराम जी मान्यता दिये हैं ।

यही कि—रघुकुल रीति सदा चलि आई ।
प्रान जाइ बरु बचन न जाई ॥

बब ! महज्जन क्या सर्व साधारण भी अपने कुल धर्म की श्रेष्ठता के गौरव, अब भी करते मनाते आ रहे हैं । कहा भी है—नोल्लंघनीया कुल देश धर्माः ।

रानी कैकेयी ने भी तो रामजी के बन जाने अथवा घर रह जाने का भार रामजी की इच्छा के ऊपर ही छोड़ दिया था ।

नृपहिं प्रान प्रिय तुम्ह रघुबीरा ।
सील सनेह न छाडिहि भीरा ॥
सुकृत सुजस परलोक नसाऊ ।
तुम्हहिं जान बन कहहिं न काऊ ॥
अस बिचारि सोइ करहु जो भावा ।
राम जननि सिख सुनि सुख पावा ॥

श्रीराम जी को बन गमन ही अच्छा लगा और वे चले गये ।

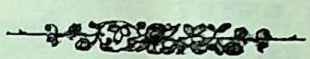

मानस यज्ञ ठेगापाली

भगवान श्री राघवेन्द्र की कृपा से गाँव ठेगापाली में माघ शुक्ल ४ शुक्रवार, तारीख २४--१--५८ से माघ शुक्ल १२ शनिवार, तारीख १--२--५८ तक मानस यज्ञ करना निश्चित हुआ है । यज्ञ सुप्रसिद्ध रामायणी श्री पं० रामरक्षित जी की अध्यक्षता में होगा । अन्य व्यास भी बुलाये जा रहे हैं । समस्त छत्तीसगढ़ की मानस संघ की शाखाओं से प्रार्थना है कि वे अपने प्रतिनिधि भेजकर इसमें भाग लेने की कृपा करें । ग्राम ठेगापाली रायगढ़ शहर से रेगालपाली बाजार के रास्ते पर ६ मील की दूरी पर स्थित है ।

श्यामलाल थवाइत
मंत्री—मानस संघ शाखा, रायगढ़

श्री रामनाम लड्डू

नवम्बर मास में ५३६ लड्डू तैयार हुए । दैनिक क्रम में श्री मारुति जी को १५० लड्डू समर्पण हुए । शेष श्री रामनाम नौका के लिये रखे गये । केन्द्रों की स्थिति इस प्रकार है:—

(१) सेंधवा ४५१, (२) मोतीहारी ३६२,
(३) भाटापारा ३२५ (४) परौंख ३००,
(५) जुहिला २०६, (६) महू ६४,
(७) डगनिया १०६ (८) हँसुवा २५,
(९) नौगाँव ४२, (१०) गोरखपुर ३८,
(११) जलालखेड़ी १७ (१२) वाड़ा (गुल्लू)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी"

[श्री रामचन्द्र जी शर्मा, छांगाणी]

'भगवान का हृदय पटल अत्यन्त ही कोमल है। प्रभु-भक्त वत्सल हैं, अतएव अपने भक्त के प्रेम को तुरन्त ही जान लेते हैं। परम पूज्य श्री गोस्वामी जी ने भगवान की हास्य-मुस्कान का जो माधुर्य प्रस्तुत किया है, वह भक्त प्रेमियों को अपने भगवान की अद्भुत लीला का संकेत है। जिन्होंने भगवान की मुस्कान और हास्य का मधुर-पान किया है वे प्राणी धन्य हैं। प्रभु को मुस्काते देख हमारे गोस्वामी जी महाराज ने भी उस मधुरता का पान किया ही होगा इसमें संदेह नहीं क्योंकि जिसने भगवान के उस आनंदमय स्वरूप को अपने नयनों से निहारा वही उसका रसास्वादन लौकिक दृष्टि से अन्य जीवों को भी करा सकता है। भगवान ने जब भी मधुर मुस्कान ली, कि तन्मयता का आवरण डाल दिया उस भक्त पर जो उस मुस्कान को रूचि पूर्वक लख रहा है— भगवान की उस मधुर मुस्कान का केवट ने कितना सुन्दर पान किया। प्रभु वन-गमन में भागीरथी के परम पावन-कूल पर खड़े-खड़े केवट से नाव मांग रहे हैं, परन्तु आज केवल उसे नाव ही नहीं देनी है। उसे तो भगवान के मधुर हास्य का पान करना है—

मांगी नाव न केवटु आना।
कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥

और प्रभु से उसने हठ ठाना—

जों प्रभु पार अवसि गा चहहू।
मोहि पद पदुमपखारन कहहू॥

उनसे हठ करने में आज भक्तराज के भाग्योदय का स्वर्णिम अवसर है। कहीं प्रभु रुष्ट न हो जांय, इससे चतुर केवट बात बनाकर कहते हैं—

रावरे दोष न पायन को,
पगधूरि को मूरि प्रभाउ महा है॥
पाहन ते बन-बाहन काठ को,
कोमल है, जल खाइ रहा है॥
पावन पाय पखारिकै नाव,
चढाइहौं, आयसु होत कहा है॥
'तुलसी' सुनि केवट के बर बैन,
हँसे प्रभु जानकी ओर हहा है॥

नाथ आपके चरण तो परम-पावन हैं। इनमें कोई दोष भी नहीं है। परन्तु आपके चरण कमल में लगी रज ही महान है। इसलिये—चतुर केवट ने भगवान से ऊपर संकेत पूर्ण बातें प्रगट में न कहकर केवल उसका गुप्त स्वरूप ही कह दिया। परम कृपालु भगवान केवट को प्रेमी मान श्री जानकी जी की ओर निहार ठहाका मारकर हँसे। इस हँसी ने केवट को माया में गूंथ लिया। भक्त केवट तन्मय हो गये। पा गये वे अपने प्रभु की मधुर मुस्कान का मंत्र। भगवान केवट के वश में होकर कहते हैं—

कृपासिन्धु बोले मुसुकाई।
सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥

भाई कुछ भी करो। वही करो जिसमें तुम्हारी नाव न जाय।

केवट बड़भागी और चतुर है। बड़ी (पुण्याई) से तो भगवान आये, और चरण-कमल धोने का भी आनंद न रहे? केवट प्रभु के चरण धोते हैं। उस समय भगवान की कृपा के पात्र केवट—

प्रभु रुख पाइ के, बोलाइ बाल घरनिहिं,
बंदि कै चरन चहुं दिसि बैठे घेरि घेरि॥
छोटो सो कठौता भारि आनि पानी गंगा जू को,
धोइ पांय पिअत पुनीत बारि फेरि फेरि॥

ऐसे अवसर पर गोस्वामी जी और सुरगण केवट के भाग्य की सराहना करते हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जासु नाम सुमिरत एक बारा,
उतरहि नर भवसिंधु अपारा ॥
सोइ कृपालु केवटहिं निहोरा।

और—

तुलसी सराहैं ताको भागु, सानुराग सुर।
बरसैं सुमन, जय जय कहैं टेरि टेरि ॥

अभी तक भगवान हँस रहे और हँसा रहे हैं—

बिबिध सनेह-सानी बानी असयानी सुनि,
हंसे राघौ जानकी लखन तन हेरि-हेरि ॥

भगवान की यह मधुर हँसी कितनी अनुराग-पूर्ण है। प्रभु का हँसना, भक्त को सुध बुध से वंचित कर देता है। केवट के भाग्य ने भगवान की मुस्कान का मधुर पान किया। धन्य है केवट की चातुरी।

प्रभु की मँद मुस्कान मायावी है। जिसने उन्हें साक्षात-रूप में निहार लिया प्रभु मोहित कर लेते हैं उस भक्त को। हँसी मुस्कान से एक समय माता श्री कौशल्या भी भ्रम में पड़ गईं थीं—

एक बार जननी अन्हवाये।
करि सिंगार पलना पौढ़ाये ॥
निजकुल इष्ठ देव भगवाना।
पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥
करि पूजा नेवैद्य चढ़ावा।
आपु गइ जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहँवा चलि आई।
भोजन करत देख सुत जाई ॥
गै जननी सिसु पहि भयभीता।
देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥

परन्तु भगवान की बाल लीला ने माता को भ्रमित कर दिया। उसे विश्वास न हुआ—

बहुरि आइ देखा सुत सोई।
हृदय कंप मन धीर न होई ॥

चकित माता ने स्वयं को भ्रमित कह दिया—

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा।
मति भ्रम मेरि कि आन बिसेषा ॥

अन्त में भगवान को अपनी माता की व्याकुलता ने परास्त कर दिया। वही माधुरी, वही मुस्कान भगवान ने माता की ओर निहारकर

देखि राम जननी अकुलानी।
प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥

धन्य है प्रभु आपकी अद्भुत लीला। अपने भक्त के भोले हृदय को विस्मय में देख मधुर मुस्कान से उसे तन्मयता दे दी। भगवान की चतुराई देख परम गोस्वामी जी ने भ्रम में न पड़कर अपने प्रभु को प्रथम ही—

बन्दउँ बाल रूप सोइ रामू।

भगवान जब बाल लीला में भी भक्त को मोहित कर लेते हैं, तो प्रत्यक्ष में तो भक्त भगवान की मुस्कान छवि निहार सुध खो बैठते हैं।

भगवान चतुर भी कम नहीं हैं। अवसर पाकर ही वे हँसे और मुस्कान से मुग्ध किया अपने भक्तों को। तनिक भगवान की एक चतुराई तो निहारिये—

रावण की भगिनी सूर्पणखा भगवान के निकट मनोकामना लेकर आई प्रभु ने उसे टाल दिया यह कहकर—

अहइ कुमार मोर लघु भ्राता।

भगवान ने केवल लक्ष्मण को इंगित कर उसे टाल दिया। परन्तु न तो भगवान हँसे न मुस्कान ली। करते भी क्या? खेल जो बिगड़ जाता सारा। ऐसे है प्रभु चतुर।

भगवान की मधुरतम मुस्कान का पान केवट राज तथा माता ने अत्यन्त ही सुस्वादु रूप से किया। आप भी उस मुस्कान की मधुरता का पान करने के हेतु भगवान की छवि निहार लें, निहारते रहें, सौभाग्य से आप भी मधुररस पान कर सकें।

वसन्तोत्सव मेला—प्रति वर्ष के अनुसार इस वर्ष भी रामवन में वसन्तोत्सव का मेला होगा। माघ शुक्ल ४, ५, ६ तारीख २४, २५, २६ जनवरी शुक्रवार, शनिवार तथा रविवार, ३ दिन का यह मेला होगा। नवनिर्मित साहित्यिक भवन में प्रदर्शिनी होगी। कथाओं आदि का आयोजन रहेगा ही। ठहरने की व्यवस्था है प्रेमी जन आने की कृपा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

नवम्बर मास में संघ के ७० सदस्य बने तथा दो नई शाखायें स्थापित हुईं जिनका विवरण इस प्रकार है :—

शाखा संख्या २००५ रामनगर [चम्पारन] सदस्य १७ मंत्री बाबू श्री जयनारायण जी अग्रवाल

शा० सं० २००६ डेहरीसराय [बार] स० १८ मंत्री श्री हरीशंकर जी कोठारी।

विविध समाचार

नयागांव:—श्री गुमास्ता भोपतसिंह जी के यहां मानस अखंड पाठ ज्योति जलाकर कार्तिक पूर्णिमा को हुआ। समाप्ति पर गायन एवं प्रसाद वितरण हुआ। —हेमराज पाण्डेय

तलवाड़ा:—श्री प्रभाशंकर जी 'पाठक' के बगीचे में कार्तिक शुक्ला ५ से १२ तक श्री भैरव-प्रसाद जी व्यास द्वारा श्री वाल्मीकीय रामायण का पाठ व प्रवचन हुआ। बाद में ब्राह्मण भोजन करवाया गया। —प्रेमदास पुजारी

सफीपुर:—सदस्यों द्वारा नवाह पाठ व ३ सज्जनों के यहां अखण्ड पाठ हुआ। आसोज शुक्ल पूनम को शिवालय में सामूहिक किष्किन्धा-कान्ड का पाठ, हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —बैजनाथ सेठ

बघोरा:—श्री बजरंगबली के चबूतरा में कार्तिक शुक्ल ११ को २४ घंटे की रामधुन, तथा रामायण का अखण्ड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन, होकर प्रसाद वितरण हुआ। —प्रहलादसिंह

कुटरा :—ता० ७-११-५७ से १३-११-५७ तक विकासखण्ड आयोजन में सांकर निवासी पं० श्री भुवनलाल पांडेय कथा वाचक द्वारा मानस से ग्रामीणों के उद्धार प्रसंग पर प्रवचन हुआ। —डा० त्रिभुवनलाल

कटारी:—आश्विन में नवाह पाठ और कार्तिक में अखण्ड पाठ हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन हुआ। —रामदास मिश्र

फुलियावाँधा :—शरद पूर्णिमा में कार्तिक पूर्णिमा तक प्रति संध्या को रामायण पाठ हुआ। पूर्णिमा चन्द्रग्रहण मोक्ष में स्नान, पूजन, पठन, कीर्तन आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —धनराजसिंह

डेहरी :—श्री नावीशंकर चंपालालजी के मकान पर ५ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक नवाह पाठ हुआ। श्री कन्हैयालाल जी ने मासिक पाठ किया। समाप्ति पर आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —शाखा मन्त्री

डगांवा :—श्री स्वामी रामानन्दजी ब्रह्मचारी की सदप्रेरणा से ता: २१-११-५७ को श्री पंढरीनाथ पद कीर्तन, श्री मानस का अखंड पाठ, सुन्दरकांड सम्पुटित पाठ २४ घंटे तक ज्योति जलाकर हुआ। पूर्णाहुति, पूजन एवं काकड़ा आरती करके प्रसाद वितरण हुआ। गांव में जलूस निकाला गया, ब्राह्मण भोजन हुआ। —रामेश्वरदास

नौगाँव :—श्री ठाकुर भीकमसिंह जी सरपंच के मकान में ता० १८-११-५७ को ७३ घण्टे का श्री मानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, आरती, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —पं० सालिगराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाटापाराः—सती मंदिर में ता० ३०-१०-५७ से ५-११-५७ तक श्री सोहनलाल जी शास्त्री द्वारा विविध विषयों पर सारगर्भित व विद्वता पूर्ण प्रवचन हुआ। —ईश्वरप्रसाद धुरंधर

बंदेमऊः—कार्तिक कृष्ण १४ को श्री हनुमान चालीसा के पाठ व पूर्णिमा को सामूहिक पाठ, हरेराम मंत्र, श्री हनुमान चालीसा के पाठ हुए।
—छोटेलाल गुप्त

रावटीः—श्री बसंतीलाल ठाकुर के यहां ता० ६-११-५७ से ८-११-५७ तक अखंड रामायण अर्थ सहित हुई समाप्ति पर सुन्दरकांड पाठ से यज्ञ पूर्णाहुति, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। महिलाओं तथा कन्याओं ने भी भाग लिया। —संवाददाता

कुंडलपुरः—वशिष्ठा नदी के किनारे चंद्रग्रहण के उपलक्ष में १२ पाठ किष्किन्धा कांड के तथा नाम जप, कीर्तन भजन, दीप धूप अर्चना के पश्चात पन्च भोज हुआ। सन्ध्या समय राष्ट्रसंत श्री तुकड़ो जी के भाषण, भजन हुए। २५ हजार लोगों ने सामूहिक रूप से राम धुन किया। श्री महादेव जी के मंदिर में सामूहिक रूप से मानस के पाठ, भजन, कीर्तन हुआ। —मंत्री

बनारीः—बरम्बाबा के पास नवधा रामायण हुई। समाप्ति पर हवन, विष्णुसहस्रनाम, सुन्दरकांड के पाठ, राममंत्र का एक माला जप, तर्पण, मार्जन हुआ। श्रोता बहुत आते थे।
—बृजमोहन लाल

सालेचौकारोडः—श्री शिवराम जी स्वर्णकार के यहां ता० २९-९-५७ को तथा ता० २६-१०-५७ को श्री शर्मा जी के यहाँ श्री मानस का अखंड पाठ, हवन, आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। ता० ३-११-५७ को सर्व श्री डा० रामस्वरूप जी व मङ्गल ड्राइवर के यहां श्री दुर्गाप्रसाद जी के द्वारा भावपूर्ण प्रवचन, मानस गायन हुआ। श्री मल्लू-मिस्त्री तथा श्री तेजराम मिस्त्री के यहां भी उपरोक्त कार्य हुए। —लालचन्द्र बमनोतिया

रेड़ाः—पूरे कार्तिक मास हरेक गलियों में प्रभात कीर्तन गाजे बाजे के साथ हुआ।
—बनेश्वरप्रसाद

कोटमीः—अक्षयनवमी के उपलक्ष में आंवला वृक्ष के नीचे मानस का एक अखंड पाठ, ब्राह्मण भोजन, कीर्तन आदि हुआ।
—रामानुज वैष्णव 'दास'

छिबौराः—व्यक्तिगत नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर प्रसाद वितरण हुआ। —"खिन्न"

हुसारीः—२२ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक नवाह पाठ तथा २५ व्यक्तिगत पाठ हुए।
—गोपीलाल चौधरी

देवराकलाँः—चन्द्रग्रहण पर श्री हनुमान जी के सामने रामायण का पाठ और कीर्तन हुआ। हर शनिवार व मङ्गलवार को रामायण होती है।
—हेतराम

तिरोड़ाः—शहीद मिश्रा हाई स्कूल में ता० ४-११-५७ से ८-११-५७ तक श्रीमान पं० रामरक्षित जी रामायणी द्वारा मानस पर सरस एवं भक्तिपूर्ण प्रवचन हुआ। चन्द्रग्रहण के अवसर पर सुन्दर कांड का सामूहिक पाठ हुआ।
—श्यामसुन्दर

प्रयागः—ता० २३, २५, २७ और २९ अक्टूबर को क्रमशः श्रीडाक्टरदास, श्री कमिश्नर साहब, इन्चार्ज ए० जी० आफिस और श्री बंगाली बाबू शासन विभाग दिल्ली के बंगले में भारत प्रसिद्ध रामायणी कविरत्न पं० भैरवप्रसाद जी द्वारा कथा हुई। बड़े उच्चअधिकारी व साहित्यकार आते थे।
—लक्ष्मीचन्द्र शुक्ल

चोरभट्ठीः—कार्तिक शुक्ल ६ से १४ तक श्री राधाकृष्ण रासलीला हुई जिसमें प्रतिदिन एक हजार की संख्या में दर्शकगण आते थे।
—आनन्दसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरई डवरी:—नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, होकर प्रसाद वितरण हुआ। जलूस भी निकला गया।
—राम

सिवनी:—श्रावण व मार्गशीर्ष में दो नवाह पाठ हुए। २४ घण्टे का अखंड पाठ भी हुआ।
—सुगनचन्द्र

जबलपुर :—कार्तिक वदी १४ को बड़े महावीर फुहारा पर और सिरसा में श्री हनुमज्जयती का उत्सव में मानस अखंड पाठ, सुन्दरकांड क पाठ तथा विद्वानों के प्रवचन हुए। बाद में प्रसाद वितरण हुआ।

हरिहरपुर :—कार्तिक सुदी ११ को मानस का अखण्ड पाठ, कीर्तन, प्रवचन होकर प्रसाद बितरण हुआ। ता० १६, १७--११--५७ को श्रीराम जन्म एवं धनुष यज्ञ लीला हुई!

सिरसा: —में देवकुमारी देवी के स्थान पर ता० ११-११-५७ से १५-११--५७ तक प्रसिद्ध रामायणी आशुकवि श्री भैरवप्रसाद जी द्विवेदी का मानस पर प्रवचन हुआ। श्री भैरवप्रसाद जी की अध्यक्षता में कन्या पाठशाला में ८ घण्टे का अखंड कीर्तन हुआ।
—अमरनाथ मिश्र

रामवन समाचार

श्री मारुति सेवा —:नवम्बर मास में मानस का एक अखंड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में ८२७.७७ की आय हुई और खर्च ५६४.५२ हुआ। बचत २३३.२५ की हुई। पिछली बचत ६२०.७८ सहित अब ११५४.०३ जमा रहे।

१-११-५७

१.२५ श्री हरगोबिन्द श्रीवास्तव, जवारथा
१.२५ ,, सूरजनाथ सहाय, रेडिया
१.२५ ,, पं० तरुणेन्दु शेखर जी, माधवगढ़
५.०० ,, शम्भूदयाल जी अवस्थी, सतना

२-११-५७

५.०० श्री सी० पी० शर्मा, नरसिंहपुर

५-११-५७

५.०० श्री लक्ष्मणगोपाल जी काकड़े, खरोरा
११.२५ ,, रामधनदास लक्ष्मीनारायण, बम्हनीबाजार
११.२५ ,, जौहरीमल बंशीधर सिंघानिया ,,
१०.०० ,, मूलचन्द्र जी सोंथलिया, फगुरम

८-११-५७

५.०० श्री प्रेमनारायण सोनी, तामिया
६.२५ श्री नन्दकुमार पाठक, मुरी
१.२५ ,, सुरेन्द्रप्रसाद साहू, ,,
२.५० ,, शिवचरण विश्वकर्मा ,,
५.०० ,, नरेन्द्रसिंह, अछल्दा
१.२५ ,, शिवप्रसादलाल, औरंगाबाद
७.०० ,, सहदेवप्रसाद जी, वेतिया
३.७५ ,, दिनेश्वरप्रसाद जी, औरंगाबाद
१०२.०० ,, जैकिशन मांगीलाल जी, गोंदिया
५.०० ,, शम्भूदयाल अवस्थी, सतना
१.२५ ,, गणेशप्रसाद 'खिन्न', छिबौरा
१.५० ,, रामसुन्दर त्रिपाठी, रामबोला

११-११-५७

५.०० श्री जी० डी० कौशिक, सिकन्दराबाद
१०.०० ,, टोपीलाल जैतराम, मालखरोदा
१.२५ ,, दशरथ शर्मा, हमीरपुर
१.२५ ,, सत्यनाम मिश्र, शेषपुर
१.२५ ,, श्यामधर प्रसाद ,,
२.०० ,, कृष्णादत्त ,,
२.०० ,, पं० रामेश्वर प्रसाद ,,
२.०० ,, पं० रामपाल दुबे ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१.२५ ,, माताप्रसाद शेषपुर
१.२५ ,, पुरुषोत्तमशरण ,,
२१.०० ,, ओंमप्रकाश जी, दिल्ली
६.२५ ,, दयाराम शर्मा, काचरी
१.२५ ,, मकरूराम पटेल, ,,
१.२५ ,, छोटूराम ,,
१.२५ ,, रामप्रसाद ,,
१.२५ श्रीमती कौशिल्या बाई ,,
५.०० श्री डा० वृन्दावन भारद्वाज, आदिलाबाद

१३-११-५७

८०.०० श्री रामगोपाल वया, सतना

१४-११-५७

७.०० श्री रामायण प्रेमी तिरोड़ा,
श्री पं० रामरक्षित जी रामायणी द्वारा
५५.०० ,, कृष्णकुमार अग्रवाल, भाटापारा

१५-११-५७

५.०० श्री सर्वेश्वर कम्पनी, सेंधवा
१२.०० ,, नारायणप्रसाद शर्मा, डंगनिया
१२.०० ,, रामकृष्ण शर्मा, ,,
१६.०० ,, सेठ विरदीचन्द्र जी पोद्दार, नागपुर
५.०० ,, शंकरलाल जी, जुन्नारदेव
०.५० ,, हरप्रसाद जी, मोंछ
२.५० ,, पं० जगन्नाथप्रसाद जी पांडे रामपुर
१.२५ ,, पं० बलदाऊप्रसाद जी, ,,
१.२५ श्रीमती शिवकुमारी बाई, ,,
५.२५ ,, राजोबाई पांडे, धरमपुरा
१.२५ ,, रामकली बाई ,,
१.२५ ,, रामकुमारी बाई ,,
५.२५ श्री परमानन्द जी, ,,
१.२५ श्रीमती गयावती बाई, खोखरा

१६-११-५७

४.०० श्री आत्माराम जी, भाटापारा

१८-११-५७

१.२५ श्री सीताराम अग्रवाल, पोखराया
१.२५ ,, गजाननसिंह, मड़वा
१.२५ ,, छक्केलाल हलवाई, मड़वा
१.२५ ,, साधूराम सिन्धी ,,
१.२५ ,, फिरंतराम जी कुम्भकार अतरिया
१.२५ ,, रामरतन शर्मा, झांसी
१.२५ ,, बाबू आनन्दस्वरूप, भटनागर झांसी
११.२५ ,, धनीराम जायसवाल, कन्देली
३.७५ ,, धनराजसिंह ठाकुर, कुलिवाबांधा
५.०० ,, बालदन साव, गुतुकमा
२.०० ,, लक्ष्मणप्रसाद साव, गोबरी कोदवा
१०.०० ,, मदनलाल गुप्ता, मुरार
१२.२५ ,, तुलसीराम सुरैया, सिहोरा
२०.०० ,, बनारसीलाल गोयनका, कलकत्ता
७.५० ,, पीलाराम सिरमौर, घेरकापुर

२०-११-५७

२.५० श्री जुगुललाल देवांगन, जरवाय
५.०० ,, अयोध्याप्रसाद वाजपेयी, कलकत्ता
५.०० ,, निरंजनसिंह साहू, दहदहा
२.५० ,, रामा यादव, बिरगहनी
२.०० ,, महेत्तरलाल साव ,,
१.२५ ,, भइयाराम साव ,,
१.२५ ,, रामदास वैष्णव ,,
१.२५ ,, भुवनप्रसाद पटेल ,,
१.२५ ,, पीलनप्रसाद पटेल ,,
१.५० ,, झाडूराम महन्त ,,
१.२५ ,, कपिलनाथ साव ,,
१.२५ ,, मदनलाल साव ,,
१.२५ ,, श्यामलाल साव ,,
१.२५ ,, कन्हैयादास महंत ,,
१.२५ ,, बुद्धूदास सतनामी ,,
१.०० ,, दादूराम साव ,,
१.०० ,, डमरूदास वैष्णव ,,
१.२५ ,, महेत्तरलाल परगनिहा ,,
१.०० ,, लहाराम साव ,,
१.२५ श्रीमती उत्तराकुमारी ,,
१.२५ ,, गौरीबाई ,,
१.०० श्री वेन्दकोवर यादव ,,
०.५० ,, फुटकर
१०.०० ,, रोहनदास वैष्णव ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१-११-५७

७.०० श्री मांगीलाल गौरीशंकर, नौगाँव
५.०० ,, चन्द्रिकाप्रसाद राय, सारन

२३-११-५७

१०.०० श्री सीताराम भार्गव, घेगाँव
५.०० ,, बच्चूनारायण जी, लोदीपुर
१.२५ ,, कल्लीराम वर्मा, भरुवाडीह
२.५० श्रीमती दयावती बाई नेमा, अमरवाड़ा
२.०० ,, प्रभाबाई ,,
१.२५ श्री कोईसिंह ठाकुर ,,
१.२५ ,, हरीराम जी काछी ,,
१.२५ ,, गणेशप्रसाद जी शर्मा ,,
३.०२ फुटकर प्राप्त
१००.०० गुप्तदान

२५-११-५७

१.२५ श्री उदिया जी गेहलोत, तलवाड़ा
१.२५ ,, प्रेमदास जी पुजारी ,,
२.०० ,, बालाराम चौकसे, कामती
१.२५ ,, पुरुषोत्तम सिंह, जगन्नाथपुर
२.०० श्रीमती उमाबाई सिरोठिया, सागर
५.०० श्री जगदीशप्रसाद भोपाल, कनवासा कैनाल
१०.०० ,, प्रेमलाल जी शर्मा, तिल्दा
३३.१३ ,, सी० एम० बुच, नैरोबी

२६-११-५७

५.०० श्री ठा० दुर्गाप्रसाद मुख्तार, देवरिया
१.२५ ,, फकीरराम जी देवांगन, उरमाल

२७-११-५७

५.२५ गुप्तदान

३०-११-५७

१.८७ श्री ज्वालाप्रसाद जी, सतना
१७.२५ चढ़ोत्री

८२७.७७ कुल। दाताओं को धन्यवाद

श्री तुलसी संग्रहालय भवन:—

इस मास में ७०५.७० खर्च हुए और आय २९९.०० की हुई। कमी ४०६.७० की हुई। पिछली कमी २३५८.६४ सहित अब २७६५.३४ की पूर्ति करना बाकी रहा।

५ - ११ - ५७

३.०० श्री बी० सी०, तुमसर

१३ - ११ - ५७

५१.०० श्री मंगोमल हसमत राय, सतना

१५ - ११ - ५७

१२५.०० श्री दरबारीलाल घासीराम, सतना

२० - ११ - ५७

६०.०० श्री बिशनदास प्रकाशचन्द्र, सतना

३० - ११ - ५७

४०.०० मे० जे० एन० खन्ना, सतना
२०-०० श्री रामदास गुप्ता, सतना

२९९.००

मानस प्रचार:—इस मास में सदस्य शुल्क से ३३.५० और शाखाओं से १६.०० कुल ४९.५० की आय हुई। खर्च कार्यालय में ८.४५ और पत्र-व्यवहार में ३७.८६ कुल ४६.३१ हुआ। बचत ३.१९ की हुई। पिछली कमी १११८.५० में से यह घटाने पर अब १११५.३१ की पूर्ति करना बाकी रहा।

२ - ११ - ५७

५.०० श्री दगपालसिंह ठाकुर, घुमका

८ - ११ - ५७

५.०० श्री लक्ष्मणकरण मेहता, बाँदा
५.०० ,, गोपीलाल जी बोंदरजी, सुसारी

११ - ११ - ५७

१.०० श्री मुन्नालाल जी देवासे, आर्वी

१६.००

नई कुटिया:—पूर्ववत् १४३६.२८ की पूर्ति करना बाकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी संस्कृति

आचार्य श्री बल्देव उपाध्याय ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "आर्य संस्कृतिके मूलाधार" में लिखा है। "हमारी वैदिक संस्कृति अपनी विजय-वैजयन्ती फहराती हुई, विश्व के मानवों पर अपनी प्रभुता जमाती हुई अपनी जीवन सत्ता से सबको चुनौती देती हुई मैदान में डटी खड़ी है।" "भारतीय संस्कृति की विशेषाता को हम तीन शब्दों में अभिव्यक्त कर सकते हैं—त्याग तपस्या तथा तपोवन"

"(१) त्याग—मानव जीवन की सफलता त्याग के द्वारा हो सकती है. भोग के द्वारा नहीं। पश्चिमी सभ्यता दूसरों के भाग को भी छीन लेने का आग्रह करती है, भारत की सभ्यता अपने स्वार्थ को परार्थ के लिये छोड़ने को उद्धत रहती है। त्याग एक महा मन्त्र है।

(२) तप—त्याग के लिये आवश्यक है तपस्या। तप की अग्नि में बिना तपाये मानव जीवन निर्मल नहीं होता, उसके मल जलकर राख नहीं हो पाते। तपस्या ही हमारी समग्र कामनाओं की सिद्धि का मुख्य साधन है।

(३) तपोवन—तपस्या के लिये उपयुक्त स्थान है तपोवन। कोलाहल पूर्ण नगर के अशान्त वातावरण में, नागरिक जीवन के रात्रिदिव सङ्घर्ष में, तपस्या की साधना क्या कथमपि सिद्ध हो सकती है? उसके लिये तो चाहिये जन कोलाहल से दूर शान्त, रमणीय स्थान में निवास, जहां स्वभाव से ही चित्त प्रपञ्चों से दूर हटकर आत्मचिन्तन में संलग्न हो जाता है। इसलिये तपोवन भारतीय संस्कृति का जन्म स्थान है। तपोवन के शान्त तथा सुन्दर, उपादेय तथा कमनीय, शान्तिमय तथा सौन्दर्य मय क्रोड़ में लालिता तथा पालिता हमारी संस्कृति स्वार्थ तथा परमार्थ के, स्वजीवन तथा परजीवन के सामञ्जस्य की सर्वतोभावेन पोषिका है।

भारतीय संस्कृति का मूल मन्त्र धर्म है। भारतवर्ष तीन सम्प्रदायों का लीलानिकेतन रहा है। ये सम्प्रदाय हैं—वैदिक, बौद्ध तथा जैन। "जैन तथा बौद्ध धर्म और दर्शन में वेद की प्रामाणिकता मान्य नहीं हैं तथापि इन दोनों मतावलम्बियों की संस्कृति वैदिक धर्मानुयायियों की संस्कृति से भिन्न नहीं है।"

मानस मणि के प्रेमी पाठकों से इस तथ्य को हृदयङ्गम करने की हम प्रार्थना करेंगे। हमारी संस्कृति के मूलाधार हैं वेद, वेदाङ्ग, ब्राह्मण, इतिहास, पुराण, दर्शन शास्त्र, धर्मशास्त्र तन्त्र, बौद्ध धार्मिक साहित्य तथा जैन धर्म ग्रन्थ। इन सबकी सुरक्षा, अध्ययन तथा इन पर आचरण के द्वारा ही हम अपनी सभ्यता तथा संस्कृति की रक्षा कर सकते हैं। सनातन आर्य धर्म के प्रतिपादन और रक्षण में गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित मानस का स्थान आपसे छिपा नहीं है।

रामवन तपोवन है। तप के लिये सर्वथा उपयुक्त है। भोग भाव वालों का तो यहाँ मन ही नहीं लगता। भारतीय संस्कृति का सुन्दर रूप आप रामवन में देख सकते हैं। पर अभी यह सर्वथा पूर्ण नहीं है। इसमें कमी है मूलाधार साहित्य की।

इसकी पूर्ति के लिये ही आश्रम में तुलसी संग्रहालय स्थापित किया गया है। इसका भवन निर्माण हो रहा है। इसके लिये पुस्तकों का संग्रह प्रारम्भ कर दिया गया है। मुख्य प्रश्न है उपरोक्त मूलाधार ग्रन्थों के संग्रह का। आपके थोड़े त्याग से यह कार्य पूरा हो सकता है। आप एक एक ग्रंथ प्रदान करें तो भी कुछ हो ही जायगा। प्रत्येक ग्राहक से औसत पाँच पुस्तकें मिलें तो पूरा नहीं तो अधिकांश साहित्य संग्रह हो जाय। हमारा ध्येय यह कदापि नहीं है कि प्रत्येक ग्राहक तुलसी संग्रहालय को ५ पुस्तकें प्रदान करें। जो जितनी कर सकें वे उतनी भेजें। जो अधिक भेज सकें वे अधिक भेजें, जो कम भेज सकें वे कम भेजें, जो न भेज सकें वे न भेजें। पुस्तकों सम्बन्धी सुझाव हम दे सकेंगे। आशा है आप हमसे पत्र व्यवहार करेंगे।

—शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं०—एन १०१

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरित मानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ॥) है। जहाँ नौ सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के ३६५०६ सदस्य हैं और २००६ शाखायें हैं।

२—रामचरित मानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस - मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से कुल ६३ ग्रन्थ छप चुके हैं।

४—श्रीरामचरितमानस - पत्र - व्यवहार विद्यालय द्वारा मानस संघ घर बैठे श्रीरामचरितमानस की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य विषय तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क १०) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में साधन भजन करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमारुति जी को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

*** हर विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है ***

'मानस-मणि'

पो०—रामवन (सतना)

ग्राहक संख्या—

श्री सम्पादकजी / मुकुन्द कोठारी

मुकुन्द कोठारी / बिहारी दास बनिया

मुकुन्द कोठारी

सम्पादक—पं० तरुणेन्दु शेखर तिवारी। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)
मुद्रक—नीरज जैन, सुषमा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसमणि

राम निकेत (५)

मंत्रराजु नित जपहिं तुम्हारा ।
पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा ॥
तरपन होम करहिं बिधि नाना ।
बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना ॥
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी ।
सकल भायँ सेवहिं सनमानी ॥
सबु कर मागहिं एक फलु
राम चरन रति होउ ।
तिन्ह कें मन मंदिर बसहु
सिय रघुनंदन दोउ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

	नाम		लेखक		पृष्ठ
	श्री राघवेन्द्र का आदेश	....	(श्री सूरदास)	....	३३
२.	मानस का सुन्दर सोपान	....	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	....	३४
३.	सन्त समागम (४)	....	(श्री शारदाप्रसाद जी)	....	३६
४.	श्रीराम की श्यामता का रहस्य	....	(गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री)	....	४०
५.	राक्षसराज (२) [धारावाहिक उपन्यास]	....	(श्री सुदर्शनसिंह जी)	...	४२
६.	दिव्य तीर्थ	....	(श्री भैरवप्रसाद जी द्विवेदी रामायणी)	....	४५
७.	'जिय संसय कछु फिरती बारा'	....	(श्री रघुवीर सहाय जी इञ्जीनियर)	....	४८
८.	मानस में मानव	....	(श्री भैयाराम जी वर्मा "साहित्यरत्न")	...	५१
९.	तुलसी की नारी-निन्दा	....	(श्री रामचन्द्र जी शर्मा छांगाणी)	....	५३
१०.	शंका समाधान	....	(श्री पं० रामकुमारदास जी रामायणी)	....	५६
११.	संघ समाचार — विविध समाचार	....	....	....	५९
१२.	पूर्वी अफ्रिका में धार्मिक प्रवृत्ति	....	....	....	६१
१३.	रामवन समाचार	....	....	....	६३

सक्रिय सदस्य

"मानसमणि" के सन् १९५८ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य—

पाँच ग्राहक बनाने वाले— १—श्री पं० भैरवप्रसाद जी रामायणी। २—श्री शारदाप्रसाद जी, रामवन (पूर्व प्रकाशित ३ नये २ कुल) ५। ३—श्री नाथूराम जी खरे, समनापुरकलां। ४—श्री रामचन्द्र जी शर्मा आर्वी।

चार ग्राहक बनाने वाले— १—श्री धनेश्वरप्रसाद जी 'धन्ने', रेड़ा (पूर्व प्रकाशित ३ नये १ कुल) ४। २—श्री ठा० रंजीतसिंह जी, धुरकोट। ३—श्री बलरामदास जी वैष्णव, तेन्दुआ। ४—श्री ए. ए. मनफोड़ी, अंजार। ५—श्री हीरालाल जी मिश्र, गोरखपुर। ६—श्री शंकरलाल जी चाँदावत, महू।

तीन ग्राहक बनाने वाले— १—श्री नन्दकुमार जी पाठक, मुरी। २—श्री दयाराम जी गर्ग, कटनी। ३—श्री फूलचन्द जी निगम, चरखारी। ४—अयोध्याप्रसाद जी वैष्णव, चोरिया। ५—श्री गोविंदप्रसाद जी शर्मा, बलौदी। ६—श्री महन्त रोशनपुरी जी गोस्वामी, कोहड़िया।

दो ग्राहक बनाने वाले— १—श्री राधाकृष्ण रामेश्वरलाल जी अग्रवाल, बलवाड़ा। २—श्री गरुड़ध्वजप्रसाद जी उपाध्याय, गोपालपुर। ३—श्री रामदीन जी दुबे, कटनी। ४—श्री ठा० रामप्रतापसिंह जी, गोशन्देपुर। ५—श्री डा० बी. एल. कोटी, मगरूलपीर। ६—श्री धनीराम जी नायक, सुखरापारा। ७—श्री सूर्यनारायणजी चौधरी, लहेरिया सराय। ८—श्री हरीराम गुरुदयाल जी ताम्रकार, मेलसा। ९—श्री हरिहरप्रसाद जी सिन्हा, देवरिया। १०—श्री तीरथराम जी, बुन्देली। ११—श्री विरेशनारायण जी अग्रवाल, तरेंगा। १२—श्री बालमुकुन्द जी चतुरहा, पाली बिरसिंहपुर। १३—श्री मोतीराम जी श्रामण पाटिल, बड़ीखेड़ा। १४—श्री रामबालक जी झा, नरबोधी। १५—श्री शिवदयाल जी शुक्ल, शाहपुर। १६—श्री शालिग्राम जी दुबे, बीना। १७—श्री पं० रामकुमार जी उपाध्याय "कुश", काशीपुर। १८—श्री ए. डी. पड़वार, लच्छनपुर। १९—श्री मातादीन अशोक कुमार जी कथावाचक, राठ। २०—श्री रामदीन जी तिवारी, गुर्जीकला। २१—श्री पं० करनसिंह जी शर्मा, आगरा। २२—श्री गोपालकुमार जी कुम्भकार, चक्रधरपुर। २३—श्री शिवरामप्रसाद जी स्वर्णकार, दुरपा। २४—श्री प्रेमलाल जी शर्मा, तिल्दा।

नोट—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे उनकी नामावली अगले मास दी जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १७ | रामवन—माघ, मानस सम्वत् ३८४—फरवरी १९५८ ई० | आलोक २

श्री राघवेन्द्र का आदेश

बन्धू, करियो राज सँभारे।
राजनीति अरु गुरु की सेवा, गाइ-विप्र प्रति पारे॥
कौसल्या-केकई-सुमित्रा दरसन साँझ-सकारे।
गुरु बसिष्ठ अरु मिलि सुमंत सों परजा-हेतु विचारे॥
भरत-गात सीतल ह्वै आयो नैन उमँगि जल ढारे।
सूरदास प्रभु दई पाँवरी, अवधपुरी पग धारे॥

—सूरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, एम. ए. डी. लिट्]

पूँछ हीन बानर तहँ जाइहिं ।
तब सठ निज नाथहिं लेइ आइहिं ॥
जिन्ह कै कीन्हेसि बहुत बड़ाई ।
देखउँ मैं तिन्ह कै प्रभुताई ॥
बचन सुनत कपि मन मुसुकाना ।
भइ सहाय सारद मैं जाना ॥
जातु धान सुनि रावन बचना ।
लागे रचइ मूढ़ सोइ रचना ॥
रहा न नगर बसन घृत तेला ।
बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपि खेला ॥
कौतुक कहँ आये पुरबासी ।
मारहिं चरन करहिं बहु हांसी ॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी ।
नगर फेरि पुनि पूँछ पजारी ॥
पावक जरत देखि हनुमंता ।
भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारी ।
भईं सभीत निसाचर—नारी ॥

दो०—हरि प्रेरित तेहि अवसर चले मरुत उनचास।
अट्टहास करि गर्जा कपि बढ़ि लाग आकास ॥२५॥

"पूँछ हीन (पूँछ कटा—अनादृत) बानर वहां जायगा और तब यह शठ अपने नाथ को लेकर (यहां) आवेगा। जिनकी बहुत बड़ाई की, मैं उनकी प्रभुता भी तो देखूं।" यह वचन सुनते ही कपि मन ही मन मुसकुराने लगे। (मन ही मन उन्होंने कहा) "मैं समझ गया (निश्चय ही इन वचनों के लिए) शारदा (ही हमारी) सहायक हुई हैं। [मानों सरस्वती ने ही रावण के मुख से लंका के लिये ऐसे दुष्ट परिणाम पूर्ण वचन कहलाये हैं।] मूढ़ यातुधान लोग रावण के वचन सुनकर वैसी ही रचना रचने लगे। नगर में कपड़ा घी और तेल बाकी न रह गया। कपि ने ऐसा खेल किया कि पूँछ (अधा धुन्ध) बढ़ गई [और लंका का घी, तेल, बचा-खुचा कपड़ा सब उसी में समाप्त हो गया।] पुरवासी लोग तमाशा देखने पहुँच गये। (कोई) पैरों की ठोकर लगाते थे (कोई) विविध प्रकार का हँसी मजाक उड़ाते थे। ढोलें बजने लगीं और सब कोई तालियाँ देने लगे। (उसी स्थिति में हनुमानजी) नगर भर में घुमाये गये और फिर उनकी पूंछ प्रज्वलित कर दी गई। [अच्छा ही हुआ कि इस हो हल्ले में नगर के सर्व साधारण जन बाहर निकल आये होंगे नहीं तो बेचारे अपने भवनों के साथ ही धोखे धोखे ही में जल मरते।]

हनुमन्त ने पावक जलते देख कर तुरन्त ही परम लघु रूप धारण कर लिया (और इस तरह नागपाश के फंदे से) निकल बाहर होकर वह (लघुरूप धारी) कपि सोने की बनी अटारियों पर चढ़ गया। (उसे इस तरह देख) निशाचर नारियाँ सभीत हो गईं। उस अवसर पर हरि से प्रेरित होकर [चाहे आप उसे राम या विष्णु की प्रेरणा माने अथवा इन्द्र की क्यों कि हरि शब्द से तीनों का अर्थ लिया जा सकता है] उन्चासों पवन चलने लगे [सात को सात से गुणित करके अंधड़ों के प्रकार भेद उनचास बताये गये हैं] कपि अट्टहास करता हुआ गर्जा और आकाश तक लग गया (अर्थात तुरन्त ही अपना विशाल रूप बना लिया)।

देह बिसाल परम हरुआई ।
मन्दिर तें मन्दिर चढ़ धाई ॥
जरइ नगर भा लोग बिहाला ।
झपट लपट बहु कोटि कराला ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तातु मातु हा सुनिय पुकारा ।
एहि अवसर को हमहिं उबारा ॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई ।
बानर रूप धरे सुर कोई ॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा ।
जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं ।
एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
ताकर दूत अनल जेहिं सिरिजा ।
जरा न सो तेहिं कारन गिरिजा ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी ।
कूदि परा पुनि सिन्धु मझारी ॥

दो०-पूँछि बुझाइ खोइ स्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनक सुता के आगे ठाढ़ भयेउ कर जोरि ॥२६॥

(कपि की) देह (तो) विशाल थी (परन्तु वजन में वह) बहुत हलकी थी। (इस लिये बहुत सरलता के साथ) वे मंदिर से मंदिर तक (एक भव्य भवन से दूसरे भव्य भवन तक) चढ़ दौड़े। (समूचा) नगर जलने लगा। लोग बेहाल हो गये। लपटों के झपट्टे कई करोड़ (की संख्या में पहुँच गये)। यही पुकार सुनाई पड़ने लगी कि "बाप रे! मैया रे! इस अवसर पर हमें कौन उबारेगा? हमने जो कहा था कि यह कपि नहीं है (किन्तु) वानर रूप धरे हुए कोई (हमारा शत्रु) देवता है, उस सच्ची राय की अवज्ञा का (साधु अवज्ञा का) ऐसा फल हुआ कि (यह) नगर अनाथ का जैसा नगर होकर जला जा रहा है।" [मानों इसका कोई मालिक या रक्षक ही नहीं रह गया।]

(हनुमान जी ने) एक निमेष में (अर्थात बहुत ही थोड़ी देर में) (पूरा) नगर जला दिया। केवल एक विभीषण का घर नहीं जलाया गया। वह (कपि) तो उस (प्रभु का) दूत था जिसने अनल की सृष्टि की है। अतः इस कारण हे गिरिजा! वह (किसी भी प्रकार) न जला स्वतः उसको किसी भी प्रकार की आंच नहीं आई। उलट पलट कर (उसने) सब लंका जला दी और फिर समुद्र में कूद पड़ा। पूँछ (की आग) बुझा कर (तथा अपना) श्रम खोकर (दूर कर) फिर से लघुरूप धारण करके (श्री हनुमान जी) जनक सुता के आगे हाथ जोड़ कर खड़े हो गये।

मातु मोहिं दीजे कछु चीन्हा ।
जैसे रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ ।
हरष समेत पवन सुत लयऊ ॥
कहेउ तात अस मोर प्रनामा ।
सब प्रकार प्रभु पूरन कामा ॥
दीन — दयालु बिरदु — संभारी ।
हरहु नाथ मम संकट भारी ॥
तात सक्र - सुत -- कथा सुनायेहु ।
बान प्रताप प्रभुहि समुझायेहु ॥
मास दिवस महुँ नाथ न आवा ।
तौ पुनि मोहि जियत नहिं पावा ॥
कहु कपि केहि बिधि राखउँ प्राना ।
तुम्हहूं तात कहत अब जाना ॥
तोहिं देखि सीतल भइ छाती ।
पुनि मो कहुं सोइ दिन सोइ राती ॥

दो०-जनक सुतहिं समुझाइ करि बहुबिधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिर नाइ कपि गवँनु रामपहिं कीन्ह ॥२७॥

उन्होंने कहा "हे माता! मुझे कोई चिन्ह दीजिये जैसा (श्री) रघुनाथ जी ने मुझको दिया था।" तब (सीता जी ने) चूड़ामणि उतार कर दी (जिसे) पवनसुत ने हर्ष समेत लिया। (फिर सीता जी बोलीं) "हे तात! मेरा इस प्रकार प्रणाम निवेदन करना कि 'हे प्रभु! आप सब प्रकार पूर्ण काम हैं (किन्तु) हे नाथ! (आप अपने) दीन-दयाल विरद का विचार करके मेरा यह भारी संकट हर लीजिये' [भाव यह कि आप सर्व समर्थ प्रभु होते हुए भी पूर्ण काम हैं, अतः स्वतः की इच्छा से भले ही इधर दृष्टिपात न करें परन्तु दीनों पर दया करना तो आपकी खास बात है अतएव इस बान की साज संभाल के लिये आप मुझ परम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त-समागम

[श्री शारदाप्रसाद जी]

(४)

सुना था कि श्री हाफिज जी पूर्व आश्रम में विहार प्रान्त के कोई बड़े अफसर थे। नौकरी का समय पूरा करके फकीर हो गये थे। फकीर रूप में ही वे मऊगंज में आये और वहीं रहने लगे। बहुत दिन से मऊगंज में रहते थे। मैं किसी सन्त का इतिहास जानने का उद्योग कभी नहीं करता। हाफिज जी से भी मैंने कभी पूँछ ताँछ नहीं की। सतना के इन्कम टैक्स अफसर श्री अग्निहोत्री जी कहते थे कि उन्होंने पता लगाया है और हाफिज जी की उम्र १३५ से ऊपर ज्ञात हुई है। जो भी हो इतना अनुमान अवश्य है कि वे ५०-६० वर्ष से मऊगंज में रहते थे।

मिर्जापुर से रीवा आने वाली सड़क पर मऊगंज है। सड़क के दोनों ओर बस्ती है। रीवा से जाने पर बाईं ओर सबसे अंतिम कुटिया में ही वे रहते थे। सड़क के उस पार कुटिया के लगभग सामने ही एक मुसलमान का छोटा सा घर है। कहते हैं कि उसके बच्चे हो हो कर मर जाते थे। एक बार बच्चा हुआ तो उसकी स्त्री ने छटी के दिन ही बच्चे को ले जाकर हाफिज जी की कुटिया में रख दिया। हाफिज जी ने उसे आशीर्वाद दिया और वह जीवित रहा। हाफिज जी को वह बाबा कहता था, उनकी सेवा करता था और कृपा का पात्र था, उसी का नाम चिड्डा है। मैं जब कभी जाता था तो वह आस पास खेलता हुआ मिलता था और दौड़कर जाकर हाफिज जी से कहता था बब्बा रे मोटर आई है।

एक दिन हाफिज जी का मेरे पास हुक्म आया कि अमुक तारीख को प्रातःकाल मोटर लेकर रीवा आऊँ। मैं वहाँ पहुँचा तो मालुम हुआकि चिड्डा का विवाह है और हाफिज जी चिड्डा को लेकर मेरी मोटर पर विवाह कराने जांयगे। रीवा से बरात ब्योहारी गई। वहां की बाजार में हम लोग उतरे। शाम होने पर सज धज के साथ बरात निकली और कचहरी के बरामदे में जनवासा मिल गया। कचहरी के चपरासी की कन्या से ही विवाह होना था। मैं सोच रहा था कि और सब तो ठीक है पर मैं उस चपरासी के लिये भार ही सिद्ध होऊँगा।

दीना का यह भारी संकट कृपया दूर करदें और आकर शीघ्र मेरा उद्धार करें] हे तात ! (तुम) शक्र सुत की कथा का भी उल्लेख करना [जयन्त की घटना उस समय तक सर्व साधारण को शायद ही विदित रही हो अतएव यह उल्लेख प्रभु के मन में प्रतीत उत्पन्न करा देगा कि हनुमान जी ने सीता के दर्शन निश्चय ही किये हैं। साथ ही वह सीता जी की ओर से यह भी संकेत देगा कि रावण के निग्रह के लिये उन्हें किसी बाहरी साधन—विशेष की आवश्यकता न होगी, जैसे जयन्त के निग्रह के लिये उन्हें एक तिनका ही पर्याप्त हो गया था।] (और) प्रभु को उनके बाण का प्रताप समझाना। [सींक को भी वे अपने चाप पर संधान लें तो बड़े बड़ों का निग्रह हो जाये।] यदि नाथ एक महीने में न आवेंगे तो फिर मुझे जीवित न पावेंगे। हे कपि ! कहो मैं प्राणों को किस प्रकार रखूँ ? हे तात ! (हे वत्स !) तुम भी अब जाने की (बात) कह रहे हो। तुम्हें देख हृदय (कुछ) शीतल हुआ था। (तुम्हारे चले जाने पर) मुझको फिर उसी प्रकार का दिन और उसी प्रकार की रात हो जायगी।" कपि ने जनक सुता को समझा कर बहुत प्रकार का धीरज दिया और चरण-कमलों में सिर झुका कर राम के पास प्रस्थान किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाकी सब बराती तो मुसलमान ही थे और उनकी बिरादरी के अनुसार व्यवस्था थी ही, पर मेरा क्या होगा। पर वहाँ पहुँचते ही तहसीलदार साहब लाल अनुरुद्धसिंह से भेंट हुई और मैं उनके यहां ठहर गया। उनके यहां भोजन की व्यवस्था भी हो गई। कुछ रात गये हाफिज जी मेरे पास आये और पूँछने लगे तेरे लिये खाना क्या बनवाएँ। मैंने कहा मेरा खाना तहसीलदार साहब के यहां बन रहा है। आप फिक्र न करें। मैंने अनुभव किया कि इससे उन्हें सन्तोष हुआ। फिर पूँछा कि व्याह देखेगा कि सोयेगा। मैंने कहा कि दोनों ही काम करूँगा। रीवा नगर के प्रधान काजी मौलवी अइयाजअली साहब ने विवाह कराया। ऊपरी कृत्य मैं देखता रहा। खास निकाह पढ़ाने के समय मैं चपरासी के घर नहीं गया। दूसरे दिन बरात वापस आई। हाफिजजी और चिड्डा शाह सपत्नीक मेरी मोटर में बैठकर रीवा तक वापस आये।

मऊगंज में चिड्डा की छोटी सी मनिहारी बाने की दुकान थी। पर रुपये पैसे की सन्दूकची हाफिज जी के पास रहती थी और उसकी चाभी भी स्वयं वे ही रखते थे। रीवा आकर सौदा ले जाते थे। बिक्री चिड्डा के माता पिता करते थे। उन्हीं के यहां हाफिज जी का भोजन भी बनता था। एक बार यह मालुम होने पर कि मैं कलकत्ते जाने वाला हूँ उन्होंने मुझे एक सूची दे दी हमारी दुकान का सामान ले आना। कलकत्ते से मोटर पर लौटते समय मैंने उनका सामान मऊगंज में ही उतार दिया और सन्दूकची खोल कर मुझे हाफिज जी ने रुपये दे दिये। फिर तो क्रम बँध गया। महीने दो महीने में मैं मोटर लेने कलकत्ते जाता था और हर बार हाफिज जी के दुकान का सामान लाता था। एक बार मेरे मन में आई कि इतने बड़े सन्त होकर हाफिज जी दुकान क्यों करते हैं। मन की बात जान लेना उनके लिये अत्यन्त सहज था। वे बोल उठे "पेट के लिये किसी के सामने हाथ फैलाने से रोजगार कर लेना बहुत अच्छा है"। मैं उन व्यक्तियों से सहमत हूँ कि जो यह कहते थे कि हाफिज जी का यह व्यवहार अपने महत्व को छिपाने के लिये था। इस क्रम में खेती करना, भैंस पालना, आदि सभी कुछ सम्मिलित था। मैं जब दर्शन करने जाता था तब कुछ फल आदि भेंट में ले जाता था। कुछ वे प्रसाद रूप में लोगों को दे देते थे बाकी सब चिड्डा के यहां भेज देते थे।

× × ×

एक बार मैं रामनगर गया था। मार्ग में मुझे हल्की लू लग गई। रात में लौटकर आया दूसरे दिन मुझे दस्त आने लगे। १५-१५ मिनट पर जाना होता था। लगभग ३ बजे नौकर ने घरपर कहा कि हाफिज जी आये हैं। मैं तुरन्त उठकर गया वे दुकान में बैठे थे। मैं ने अन्दर से तरबूज मँगवाया। हाफिज जी ने थोड़ा सा खाया, मैंने भी एक दो फांक खा ली। कुछ देर बात होती रही। मैंने कहा कि हुजूर मैं परसमनिया पहाड़ पर गया था। एक महात्मा के दर्शन कर आया हूँ। कुछ देर चुप रहने पर हाफिज जी ने कहा अच्छे शख्स हैं मगर शोहरत हो गई है। शारदा फकीर के लिये शोहरत अच्छी नहीं। उसदिन मेरे समझ में आया कि हाफिज जी का दृढ़ मत है कि सन्तों को मान बड़ाई, प्रतिष्ठा से दूर रहना चाहिये। कुछ देर बाद उन्होंने कहा कि अब हम महमूद के यहां जायेंगे। उनके थोड़े से सहवास का लोभ मैं संवरण न कर सका और उनके साथ ही चला गया। थोड़ी देर महमूद के पास बैठ कर वे लारीखाने गये। मैं भी साथ चला गया! वहाँ लगभग १ घंटा प्रतीक्षा करने पर उनकी लारी छूटी। मुझे महान् शारीरिक कष्ट था पर उसे सहन करते हुए मैं बैठा ही रहा। पास में कल्याणसिंह की शरबत की दुकान थी। वह कई गिलास शरबत बना कर ले आया और सब लोगों को जो हाफिज जी के साथ में थे उसने शरबत पिलाया। पहला गिलास हाफिज जी ने लिया। इसके बाद तश्तरी उसने मेरे सामने की मैंने कहा न पिऊँगा। हाफिज जी ने कहा पी ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कहा कि आप कह दीजिये कि दबा है तो पीलूंगा। उन्होंने मुस्कुराकर पुनः कहा पी ले, मैंने पी लिया। लारी छूटने पर मैं किसी प्रकार घर पहुँचा और शौचालय तक गया पर वहां क्या था, मैं अच्छा हो चुका था। बगीचे में पिताजी के मित्र राय साहब लाला राधाकिशन बैठे हुए थे, उनसे जाकर मैंने हाल बतलाया और कहा कि बड़ी जोर की भूख लगी है। उन्होंने कहा कि हाफिज जी के आशिर्वाद से तुम सर्वथा स्वस्थ हो गये हो। उसी समय उन्होंने नौकर को भेज दिया बगीचे में ही थाली मंगवाली और मैंने डटकर पूड़ी साग खाया निरोग तो मैं हो ही गया था।

× × ×

मालुम हुआ कि हाफिज जी रीवा आये हैं। सोचा चलकर दर्शन कर आऊँ। जाने लगा तो मेरी कन्या ने कहा कि हम भी चलेंगे। उसकी भाभी भी साथ हो ली। सतना से प्रायः डेढ़ मील गया होऊँगा कि मोटर का अगला स्प्रिंग टूट गया बेकाबू होकर मोटर दाहिनी ओर मुड़ गई। मालुम हुआ कि एक पेड़ में टक्कर लगेगी। यह तो मैं बचा ले सका, पर मोटर सड़क के किनारे गड्ढे गुड्ढे में उतर ही गई। रोकते २ भी प्रायः १०० गज निकल गई। भयभीत होकर लड़की ने दरवाजे का हैन्डिल पकड़ लिया। झटके में दरवाजा खुल गया और लड़की बाहर गिर गई। खुले दरवाजे में से उसकी भाभी भी बाहर गिर गई। मोटर रोकने पर मैंने देखा कि लड़की, बहू कोई भी मोटर में नहीं हैं। साथ में क्लीनर विश्वनाथ था। उसने उतर कर पीछे देखा और कहा कि दोनों वह पड़ी हैं। मै वहाँ गया तो लड़की बैठी थी और बहू पड़ी थी। पहिले लड़की गिरी थी और उठकर मोटर के पीछे दौड़ी थी। आगे जो उसे उसकी भाभी पड़ी मिली तो वहीं वह भी बैठ गई थी। गिरते समय लड़की का ऊनी चद्दरा उसके सिर में लिपट गया था। इससे गिरने पर उसे चोट नहीं लगी। घसिटने के कारण थोड़ा पैर छिल गया था। सतना खबर दूभेजकर सरी मोटर मंगाकर मैं वापस आगया। मन में दुखी था कि सन्त दर्शन से बंचित रह गया। यह घटना लग भग १० बजे की है दो बजे हाफिज जी दुकान पर आ उपस्थित हुए मैं आश्चर्य में पड़ गया। कहने लगे मालिक ने बड़ी खैर की। उन्हें रीवा में बैठे २ स्वतः घटना ज्ञात हो गई थी और वे सांत्वना देने चले आये थे।

× × ×

नित्य सन्ध्या समय पावरहाउस के इंजीनियर राव साहब के यहां मैं बैठने जाया करता था। एक दिन अचानक मन उचाट हुआ तो मैं बहुत जल्दी लौट आया। दुकान के सामने सड़क पर था कि नौकर ने कहा हाफिजजी आये हैं पन्नालाल के यहां बैठे हैं आपको बुलाया है, मैं सीधे वहाँ चला गया। आ बैठ, तो उन्होंने कहा ही, साथ ही पास वालों से यह कहा देखो आ गया न। हमने कह दिया था ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है खुद आ-जायेगा। इसका सन्दर्भ यह मालुम हुआ कि सतना पहुँचते ही उन्होंने मुझे बुलवाने के लिये आदमी भेजा था, उसने लौट कर कहा कि दुकान पर नही हैं, तब किसी ने कहा था कि ढूढ़ने को आदमी भेजे जाँय क्या, तो उन्होंने कह दिया था कि ढूढ़ने की जरूरत नहीं है खुद आ जायगा।

पन्नालाल ने कई बार अनुरोध किया कि हाफिज जी भोजन करें। पहिले वे कहते रहे कि नहीं खायेंगे, अन्त में यह कह ही दिया कि हम तेरी लड़की की शादी में आये हैं तेरे यहां खाना नहीं खांयगे। प्रायः १ घन्टे तक मैं चुप चाप बैठा रहा, इसके बाद मैंने कहा उठिये चलिये, तो पूंछा कि कहां चलें, मैंने कहा कि घर, यह सुनकर उठे और चल दिये। आकर दुकानके सामने के चबूतरे पर बैठे, मैंने पूँछा कि कुछ खाना है तो कहा कि आज भूख नहीं है। मैने पूँछा सोना तो है तो कहा कि बगीचे में बिछवा, अपने कमरे में सोंयेगे। मैंने व्यवस्था करदी और उन्हें वहांतक पहुँचा कर स्वयं सोने चला गया।

रात में मेरी स्त्री ने मुझसे कहा कि हाफिज जी से कहियेगा कि भोजन यहीं करेंगे। इस पर मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा कि हम तो नहीं कहेंगे। तुम्हें बड़ी श्रद्धा है खुद जाकर कहना। मैं बड़े सबेरे उठकर बगीचे पहुँच गया। हाफिज जी सो रहे थे। कुछ देर बाद "या वारिस" कह कर वे उठ बैठे। मैंने सोचा कि जैसे हम लोग राम नाम लेकर उठते हैं वैसे ही ये भी नाम लेकर उठे हैं पर या खुदा अथवा या रसूल कहकर नहीं उठे या वारिस कहकर उठे इसमें कुछ रहस्य अवश्य होगा। बादमें पता चला कि मुसलमानों में वारिस सम्प्रदाय भी है और उनका भारतीय केन्द्र लखनऊ के समीप देवाशरीफ में है। एक बार मैंने हाफिज जी से पूंछा कि क्या हजूर देवा शरीफ भी जाते हैं तो उन्होंने कहा था हां वहाँ हम जाया करते हैं।

उठ कर हाफिज जी अंगूरलता के नीचे बैठ गये। मैं भी पास ही बैठा था इतने में मेरी स्त्री आकर सामने बैठ गई सब लोग चुप चाप बैठे थे। हाफिज जी ने मुझसे पूँछा यह क्या कहती है। मैंने कहा कहने आई है कि हजूर खाना यहीं खायेंगे। इस पर उन्होंने कहा घर में नहीं खायेंगे तो कहाँ खायेंगे। कह दो जाय घरमें ही खायेंगे। यह सुन कर वे चलीं गईं। कह दो जाय यह भी सार्थक था मियां महमूद बक्स जो आ रहे थे। वे यही प्रार्थना करने आ रहे थे कि हाफिज जी उनके यहां खाना खांय। हाफिज जी ने उत्तर दिया नहीं खायेगा, हमारा पतोह बनावेगा वह खायगा तुम्हारे यहां नहीं खायेगा। इस पर उन्होंने कहा कि चलिये चाय पीलीजिये तो उसपर वे चले गये। हाफिज जी बहुधा मेरे यहां ही ठहरने लगे थे पर उनके हुक्के की सेवा का भार सदैव महमूद भाई पर ही रहता था। हाफिज जी का भोजन २४ घंटे में प्रायः एक बार होता था और मुश्किल से छटांक डेढ़ छटांक खाते रहे होंगे। पर फुर्ती इतनी थी कि उनके साथ पैदल चलने में मुझे कठिनाई अनुभव होती थी। पन्नालाल के यहां कन्या का विवाह हो जाने पर जब हाफिज जी वापस जाने लगे तब दुकान पर मुझसे उन्होंने कहा तुझे तकलीफ हो गई थी और तूने हमसे नहीं कहा एक पोष्ट कार्ड तो डाल देता। इस पर मैंने कहा क्या हुजूर से रुपये मांगता और हजूर की मेहरबानी है तो क्या मेरे कहने पर ही वह असर करेगी। यह सुन कर हँसे और कहने लगे घबड़ाना मत, इंशा अल्लाह सब ठीक हो जायगा। मैंने कहा उम्मीद तो ऐसीही थी अब बात बिलकुल पक्की हो गई यह सुनकर हँस कर चले गये। बात यह थी कि व्यापारी क्रम में मेरी भूलों के कारण मुझ पर बहुत बड़ा ऋण हो गया था। सन्तों की कृपा से वास्तव में सब ठीक हो गया। पर मैंने किसी भी सन्त से स्वयं उसकी चर्चा नहीं की। हाफिजजी ने अवश्य स्वयं उपरोक्त चर्चा की।

इस सम्बन्ध में मेरी मान्यता का वर्तमान रूप कुछ भिन्न ही है। मुझ पर बहुत बड़ा ऋण हो जाना प्रभु की कृपा का एक खेल मात्र था। साधारण परिस्थिति में तो उतने बड़े ऋण होने के बाद मेरा दिवाला निकलना और भिखारी हो जाना ही उपयुक्त था। पर वह कुछ भी नहीं हुआ और मैं यथावत अपने स्थान पर रह गया। प्रभु मुझे संसारी झंझटों से छुड़ाकर अपनी रामवन की सेवा में लेना चाहते थे। उस खेल के द्वारा उन्होंने मेरी नियुक्ति रामवन में कर दी। मैं यही मानता हूँ।

मानस मणि के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर
इसे स्वावलम्बी बनाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीराम की श्यामता का रहस्य"

[गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री]

रोशन आशहिं घट रहे, समय आयु अरु देह ।
तेल कान में डाल कर, प्रभु सोए हैं गेह ॥

प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद गोस्वामी तुलसी दास जी का लेख केवल लेख नहीं है, वरन वह एक विद्युत उत्पादन करने वाला यंत्र (डाइनेमो) है जो विद्युत शक्ति से ओत प्रोत है। अब हमें यह चाहिए कि उस विद्युत शक्ति के प्रकाश को हृदय गृह में फैलाने के लिए निगेटिव (स्नेह-रूपी) और पाजेटिव (बुद्धि रूपी) वायर को मानस रूपी डाइनेमो में संलग्न कर दें। वहां फिर उसकी सहायता से हम अनेकों बल्ब जला कर गृह के बाहर (चर्म चक्षु) तथा गृह के भीतर (हृदय चक्षु) प्रकाश कर सकते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा विरचित मानस का कोई भी प्रसंग आप देखें, वह अत्यन्त चमकदार तथा गुह्य गुप्त रहस्यों से ओत प्रोत है। आवश्यकता केवल सूझ की है।

जिस तरह वर्तमान काल के विज्ञान वेत्ता विद्युत शक्ति के एक करेन्ट की सहायता से अन्यवायर जोड़ जोड़कर कई रङ्गो के प्रकाश का उत्पादन कर लेते हैं, जैसे— लाल हरा नीला पीला इत्यादि इसी तरह हमारे भूतपूर्व विज्ञान वेत्ता पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राघवेन्द्र सरकार के एक श्याम रंग रूपी मेन वायर में अन्य वायर जोड़ कर श्री सरकार के एक श्याम रंग से अनेकों श्याम रंगों का उत्पादन कर दिया है।

नील सरोरुह नील मनि नील नीर घर श्याम ॥

अब यह देखिए कि एक ही स्थल पर भिन्न भिन्न प्रकारों की श्यामता को दर्शाने में क्या रहस्य है? मनु जी को याचना ही यही है कि वे श्री सरकार के स्वरूप को तीन प्रकारों से देखें जैसे—

[१] जो स्वरूप बस सिव मन माहीं ।
[२] जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
[३] जो भुसुंडि मन मानस हंसा ।
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन ।
कृपा करहु प्रनतारति मोचन ॥

[१] मानस से यह स्पष्ट है कि नील सरोरुह वाला श्याम रंग श्री शंकर जी के हृदय में बसता है। जैसे:—

शशि शेषर भगवान शंकर जी कथा कहने की लय में माता पारवती से बतला रहे हैं।

औरउ एक कहउँ निज चोरी ।
सुनु गिरजा अति दृढ़ मति तोरी ॥
काग भुसुन्डि संग हम दोऊ ।
मनुज रूप जानै नहिं कोऊ ॥

की व्याख्या कर जिस श्यामता के वे स्नेही थे और जिसका दर्शन पाये थे उस श्यामता का बखान इस तरह करते हैं—

काम कोटि छबि स्याम सरीरा ।
नील कंज.....॥

आगे श्री राम के अंग प्रत्यंग का वर्णन करते हुए कहते हैं कि श्री राम इस नील सरोरुह श्याम रंग पर पीली झँगुली पहने हुए जब घुटुनों के बल चलते हैं वह मुझे बहुत भाता है।

पीत झगुलिया तनु पहराई ।
जानु पानि बिचरनि मोहिं भाई ॥

अतः सिद्ध है कि नील सरोरुह कह कर कवि ने यह बता दिया है कि यह श्यामता श्री शंकर जी के प्रभु को श्यामता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२] श्री काक ऋषि के हृदय में नील मणि के समान प्रभु का श्याम रंग बसता है अतः गोस्वामी जी ने नील मणि लिखा है।

गरुड़ जी को श्री राम कथा सुनाने की लय में काक जी कह रहे हैं:—

इष्ट देव मम बालक रामा।
सोभा बपुष कोटि सत कामा॥
निज प्रभु बदन निहारि निहारी।
लोचन सुफल करउँ उरगारी॥
लघु बायस बपु धरि हरि संगा।
देखउँ बाल चरित बहु रंगा॥
लरिकाई जहं जहं फिरहि, तहँ तहँ संग उड़ाउँ।
जूठनि परइ अजिर महं, सो उठाइ करि खाउँ॥

तत्पश्चात प्रभु की श्यामता की उपमा देते हुए (जिस श्यामता पर वे मुग्ध थे) कहते हैं:—

मरकत मृदुल कलेवर स्यामा।

अतः सिद्ध है कि नीलमणि कहकर कवि ने यह बता दिया है कि यह श्यामता श्री काकभुसुन्डि जी के प्रभु की श्यामता है।

[३] वेद, पुरान, श्रुति, संत, प्रभु—नीर धर श्याम की झांकी का गान करते हैं अतः गोस्वामी जी ने नील नीरधर श्याम लिखा है। ध्यान दीजिये प्रभु माता कौशिल्या के समक्ष प्रगट हुये तब वे घनश्याम (नील नीरधर श्याम) के रंग में थे।

लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा,
निज आयुध भुज चारी।
करुना सुख सागर सब गुन आगर,
जेहि गावहि श्रुति संता।

अतः सिद्ध है कि नील नीर धर श्याम कह कर कवि ने यह बता दिया है कि यह श्यामता वही है जिसके लिये मुनि जतन करते हैं तथा जिसे श्रुति गाती है। इस तरह गोस्वामी जी ने श्री राम की श्यामता रूपी मेन वायर में और भी वायर जोड़ कर श्री सरकार की अन्य अन्य श्यामता का भान करा यह बता दिया कि भक्त रुचि पालक श्री सरकार ने मनु की याचनानुसार तीन प्रकार के श्याम रंग में प्रगट हो मनु सतरूपा के गृह पुत्र रूप में उत्पन्न होने का बरदान दिया। इसी हेतु गोस्वामी जी को एक ही स्थान पर उक्त तीनों प्रकार की श्यामता का समावेश करना पड़ा। यही तो उनकी काव्य पटुता है।

जाना मरम नहात प्रयागा

[पं० श्री रामरक्षित जी शुक्ल रामायणी]

सुरसरि मध्य श्री रघुवीर नहात ससीय सहानुज ठाढ़े।
तीर खड़े भरद्वाज महामुनि पावत पुण्य प्रयाग प्रगाढ़े॥
स्नान समै संकल्प पढ़्यो मुख ते ध्वनि भारतखण्ड की काढ़े।
बन्धु को नाम सुने रघुनाथ अधीर भये जल लोचन बाढ़े॥

('मानस हिलोर' से)

लेखक बन्धु ध्यान दें!

१—कृपया 'मानस मणि' के लिये कोई कविता मत भेजिये। आधुनिक कविता, पद आदि देना प्रायः बन्द कर दिया गया है।

२—लेख कागज के एक ओर हाशिया छोड़कर आप लिखेंगे तो उसे छपने को देने में सुविधा होगी।

३—उद्धरण के श्लोक, चौपाई, दोहे, पद्य को गद्य से पृथक पंक्तिबद्ध लिखने की कृपा करें। —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राक्षसराज

[श्री सुदर्शनसिंह जी]

(२) महामुनि विश्रवा

'तात !' बद्धाञ्जलि नतमस्तक कुमार जैसे शील एवं सौजन्य की मूर्ति हों। कपिश केशराशि जटायें बनने लगी थी। कटि में मौञ्जी मेखला वल्कल कौपीन से भूषित थी। इस समय ऐणेयाजिन समेट कर समीप के शिलाखण्ड पर रख दिया गया था।

'क्या चाहते हो वत्स !' महर्षि पुलस्त्य ने दृष्टि उठाई। उनके गौरव के अनुरूप यह उनका तपस्वी कुमार स्वर्ण की सुडौल प्रतिमा मानो उनके सम्मुख खड़ी हो।

'आज्ञा हो तो जाह्नवी एवं कलिन्द नन्दिनी के पावन संगम पर स्नान कर आऊँ।' कुमार ने विनम्र शब्दों में अपनी अभिलाषा व्यक्त की। ब्राह्मण के चित्त में तीर्थाटन की कामना को छोड़ अन्य कामना ने प्रवेश करना उस युग में अभी सीखा ही नहीं था।

'तुम तीर्थराज की यात्रा करोगे' महर्षि ने अपने नेत्र एक क्षण को बन्द किये और सहसा मन्दस्मित आभा उनके अधरों पर 'भविष्य तुम्हें प्रेरित करता है वत्स ! माता की आज्ञा लेकर प्रस्थान करो।'

'तुम्हारी यात्रा निर्विघ्न हो !' सतयुग की माता ने कहाँ सत्कर्म में बाधा देना जाना न था।

❀ ❀ ❀

जिसकी भृकुटि पर बल पड़ते न पड़ते अमरावती के अधीश्वर की सत्ता भी संशयास्पद हो सकती थी, उसके सम्मुख विघ्न-विघ्न आते हैं देव कोप से और देवता इतने मूर्ख नहीं कि एक ऋषि कुमार के पथ में विघ्न उपस्थित करके स्वयं उसके कोप-भाजन बनने का साहस करें।

सघन कानन, स्वच्छन्द विचरते वन पशु; किन्तु आज यह आपको भयानक लगता है। मुनि कुमारों के लिये कानन माता की क्रोड़ी के समान था और केशरी भी उनका क्रीड़ा सहचर ही हो सकता था।

लताओं ने सुमन वृष्टि की बार बार। तरु श्रेणियों से सुपक्व फल उन्हें देखते ही टपक पड़े। जब उन्होंने कहीं शयन किया, केशरी चरणों के समीप आ बैठा प्रहरी बनकर। अवश्य ही मृग शावक, शशक आदि को अधिकार था वे अपनी सुकोमल देह उनके पावन शरीर से सटाकर सो जायँ या अपने मस्तकों से उन्हें धीरे से खुजला लें। सम्पूर्ण प्रकृति सावधानी पूर्वक आतिथ्य करने में संलग्न थी।

'भगवन् ! पौलस्त्य विश्रवा श्री चरणों में प्रणिपात करता है।' त्रिवेणी के स्नान से परिपूत होकर वे महर्षि भरद्वाज के आश्रम में पधारे और साष्टांग प्रणिपात करते भूमि पर लेट गये।

'मुनि विश्रवा !' महर्षि ने देखा नहीं था इस युवक अतिथि को। वे आत्मलीन महर्षि—उन्हें तो यह भी पता नहीं लगता कि कब उनके स्कन्ध पर कपोत आ बैठा है। अभिवादन के स्वर ने उन्हें आकृष्ट किया था। शीघ्रता पूर्वक वे उठे आसन से और मुनि कुमार को उठाकर उन्होंने हृदय से लगा लिया।

'वत्से !' उटज की ओर देखकर उन्होंने पुकारा 'अतिथि पधारे हैं।'

'उपस्थित हुई तात !' वीणा विनिन्दक ध्वनि आई उटज से। सहसा उधर दृष्टि उठ गई विश्रवा जी की। जैसे सचल स्वर्ण वल्लरी दो प्रफुल्ल पद्मों के सहारे पात्र सम्हाले चली आ रही हो।

'पादयोः पाद्यं' कन्या के हाथों से जल पात्र लेकर महर्षि ने अतिथि के चरण धुलाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हस्तयोः अर्घ्यं' दूसरे पात्र के जल से हाथ धुलाकर महर्षि ने तीसरा जलपात्र उठाया हाथों में 'मुखे आचमनीयं।'

'आप मेरे वन्दनीय है।' युवक अतिथि ने संकुचित होकर कहा—'मैं आपके आशीर्वाद की ही आकांक्षा रखता हूँ।'

'अतिथि नित्य पूज्य है। आप तो मेरे ज्येष्ठ भी हैं। भगवान् ब्रह्मा के पौत्र के चरणों से मेरा आश्रम पवित्र हुआ; यह मेरा सौभाग्य।' महर्षि भरद्वाज ने सरल भाव से कहा—'लेकिन सेव्य को संकोच न हो, सेवा का वही प्रकार सुष्ठु होता है। वत्से! अतिथि की अर्चा तुम सम्पन्न करो।' अपनी पुत्री की ओर देखकर महर्षि आश्रम में एक ओर चले गये कुछ क्षणों के लिये।

'शुभे! मैं अभी मध्याह्न कृत्य सम्पन्न करूँगा।' चन्दन, पुष्पमाल्य, धूप, दीप के अनन्तर जब मुनि कन्या ने नैवेद्य का आयोजन प्रारम्भ किया, फल मूलादि को प्रक्षालित करते देख युवक अतिथि ने उसे रोक दिया।

'वत्से! मेरा वल्कल' महर्षि भरद्वाज उसी क्षण वहाँ पधारे।

'तात!' मुनि कन्या ने पिता के करों में वल्कल देते हुए कहा—'अतिथि आपके साथ ही मध्याह्न संध्या करने पधार रहे हैं। नैवेद्य वे आपके साथ ही ग्रहण करना चाहते हैं।'

'अतिथि को अग्रपूजा स्वीकार करनी चाहिये' महर्षि ने विश्रवा की ओर देखा।

'मैं आज्ञाका उल्लंघन नहीं करूंगा।' अतिथि ने समझ लिया कि उन्हें तृप्त किये बिना महर्षि प्रसाद नहीं लेंगे और यह उचित आग्रह उपेक्षणीय नहीं था। अतिथि तृप्त होकर विश्राम करने लगे तभी गृहपति भोजन करे, इस शिष्ट परम्परा को भंग करने की इच्छा कोई कैसे कर सकता है।

❀ ❀ ❀

'महर्षि पुलस्त्य मेरे वन्दनीय हैं।' महर्षि भरद्वाज ने विश्रवा से उस समय यह चर्चा प्रारम्भ की, जब कई दिन उनका आतिथ्य ग्रहण करने के अनन्तर वे मुनि कुमार अपने पिता के आश्रम पर जाने को प्रस्तुत हुए। 'आपके यहां पधारने से मैं गौरवान्वित हुआ। अब यदि एक अनुरोध आप मेरा स्वीकार करलें!'

'मेरे लिये आप भी पितृ तुल्य हैं।' विश्रवा के स्वर सरल भाव शुद्ध थे। 'मैं आज्ञानुवर्ती हूँ।'

'मेरी यह कन्या देववर्षिनी' महर्षि ने समीप स्थित पुत्री की ओर देखा– 'आपके प्रस्थान का अनुमान करते ही व्याकुल हो उठी है। आप मेरी यह भिक्षा स्वीकार करके मुझे उपकृत करें।'

मुनिकुमार विश्रवा ने उस अवाङ्मुखी, नमित लोचना, ऋषि कन्या की ओर देखा। उन्हें अपने पूज्य पिता के वे वचन स्मरण आये 'वत्स! तुम्हें भविष्य आकृष्ट कर रहा है।' उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी– 'आपके आदेश से मैं गृही बनता हूँ।'

❀ ❀ ❀

'देव! पुत्रवधू यदि अपने ही उटज में रहे।' महर्षि पुलस्त्य ने देखा कि उनकी धर्मपत्नी विनम्र भाव से उनसे अनुरोध करती सम्मुख उपस्थित हुई हैं।

'नारी है हो ममतामयी।' महर्षि को यह मोह रुचिकर नहीं हुआ था। प्रयाग से उनके पुत्र मुनि विश्रवा जब सपत्नीक लौटे थे, उन्होंने पिता के आदेश से अपना नवीन आश्रम पिता के आश्रम के समीप ही बना लिया था। उस समय भी महर्षि की पत्नी यही चाहती थीं कि पुत्र तथा पुत्र वधू समीप एक ही कुटीर में रहें।

'इस समय उसे मेरी सेवा की आवश्यकता है।' महर्षि कहीं प्रार्थना अस्वीकार न कर दें, इस भय से ऋषि पत्नी ने अपनी बात स्पष्ट कर दी—'वह माता बनने जा रही है।'

'सृष्टि' अपने जगत्स्रष्टा पिता का आदेश स्मरण आया महर्षि को। उन सत्य सङ्कल्प का सङ्कल्प ही तो चरितार्थ हो रहा है। लेकिन मोह ने उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्त भूमि को स्पर्श नहीं किया था। 'तुम पुत्र के उटज में ही पुत्र वधू की सुश्रूषा करो।'

'श्री चरण वहाँ नहीं पधारेंगे।' ऋषि पत्नी के नेत्र भर आये। अन्ततः उनके पुत्र ने विवाह करके ऐसा क्या अपराध किया था कि पिता होकर भी महर्षि उसके उटज पर—इतने समीप के उटज पर भी कभी नहीं गये हैं। इस समय जबकि पौत्र प्राप्ति का शुभ अवसर आया है वे इतने तटस्थ क्यों हैं?

बड़ा स्नेह है ऋषि पत्नी का अपने पुत्र तथा पुत्र वधू पर। सहज स्वाभाविक स्नेह—नितान्त विनम्र एवं सेवा परायणा पुत्र वधू पर उनका अनुराग भला क्यों न होता। पिता का आदेश मानकर विश्रवा ने अपनी प्रथक कुटीर बना ली—बना ही मात्र ली थी। वे दम्पति उसमें कितनी देर रहे थे। उपासना एवं रात्रि के एक प्रहर का विश्राम इतने के लिये था उनका उटज।

'वत्स! अब तुम गृहस्थ हो।' महर्षि पुलस्त्य अनेक बार पुत्र से कहते थे—'तुम्हारा कर्तव्य अब पितृ सेवा की अपेक्षा तप एवं ध्यान अधिक हो गया है।'

'श्री चरणों की सेवा ही मेरी आराधना है। विश्रवा ने पिता को ही आराध्य मान लिया था। वे अब भी एक अन्तेवासी के समान एकान्त निष्ठा से महर्षि की सेवा में दत्तचित्त थे। रात्रि में द्वितीय प्रहर व्यतीत हो जाने पर वे अपने उटज में जाते थे और प्रातः कृत्य समाप्त होते ही पुनः पितृ सेवा में उपस्थित हो जाते थे।

'वत्से!' महर्षि पत्नी तो अपनी पुत्र वधू की सेवा से द्रवित ही रहती थीं। 'तू दो दो आश्रमों की स्वच्छता एवं व्यवस्था का श्रम करके श्रान्त होती रहती है।'

'मुझसे कोई अपराध हुआ मातः?' ऋषि कन्या जब अञ्जलि बाँधकर भरे नेत्र देखने लगती, 'सेविका को सेवा वञ्चिता करने का सङ्कल्प आपके मानस में कैसे उठा?' क्या कहें उस स्नेहमयी से वे।

'तू तन्वी है एवं कुसुम कोमला!' महर्षि पत्नी हँस पड़ती थीं— 'मैं अपनी इस निधि को श्रान्त होते नहीं देखना चाहती।'

'इसे सेवा के पुण्यार्जन में सार्थक होने का सौभाग्य मिला है मातः!' पुत्र वधू मस्तक धर दिया करती है उनके चरणों पर। यह भी कोई सोचने की बात है कि पुत्र नित्य महर्षि के फलाहार के पश्चात् माता के स्नेहाग्रह से वहीं भोजन करते हैं और पुत्र वधू को भोजन कराये बिना महर्षि पत्नी का हृदय मान कैसे सकता है। वही पुत्र वधू आसन्नप्रसवा है और महर्षि उसे इस उटज में आने की आज्ञा नहीं दे रहे हैं। वे अपने पौत्र को प्रथम आशीर्वाद देने पधारेंगे; इसकी सम्भावना भी स्पष्ट नहीं दीख रही है।

'भद्रे!' महर्षि ने पत्नी के अवसाद को लक्षित कर लिया 'पिता ने मुझे सृष्टि का आदेश दिया; किन्तु पता नहीं क्यों मेरे चित्त में उल्लास नहीं आया। एक अज्ञात आशंका मुझे यदा कदा अभिभूत कर लेती है।'

'आशंका!' ऋषि पत्नी भयभीत हो उठीं।

'मैं तामस जनोंका कुल पुरुष बनने को उत्पन्न हुआ हूँ।' महर्षि ने खेद पूर्वक क्षितिज पर नेत्र स्थिर कर लिये थे।

'हमारा पौत्र .....' महर्षि पत्नी भय के कारण वाक्य पूरा नहीं कर सकीं।

'हमारे पौत्र' लेकिन महर्षि ने भी अपना वाक्य पूरा नहीं किया। उन्होंने विषय परिवर्तित किया—'तुम अन्यथा आशंका मत करो। मैं तुम्हारे इस पौत्र को आशीर्वाद दूँगा।'

❀ ❀ ❀

'देव!' महर्षि पुलस्त्य पौत्र के जन्म का समाचार पाकर पुत्र के आश्रम में पधारे थे। उनके चरणों के समीप महर्षि पत्नी ने जात कर्म के लिये शिशु को अपनी अञ्जलि में ही रखा।

'यह तो धनाध्यक्ष होगा।' महर्षि ने बालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य तीर्थ

[श्री भैरवप्रसाद जी द्विवेदी रामायणी]

आवत एहिंसर अति कठिनाई।
राम कृपा बिनु आइ न जाई॥

मैंने अपने जीवन में कभी तीर्थयात्रा नहीं की थी तो फिर क्या जानता तीर्थ का महत्व। एक समय की बात है कि मेरे पास पड़ोस के कुछ लोग तीर्थयात्रा की तैयारी में लगे थे, भगवत्कृपा! मेरे मन में भी उत्साह हो गया कि मैं भी तीर्थ कर आऊं। मैं अन्ध विश्वासी तो था नहीं कि बिना कुछ सोचे समझे सब यात्रियों के साथ यों ही चल पड़ता। अतः मैंने यह जानना चाहा कि उस तीर्थ की जानकारी यहां किसी को है? अन्ततोगत्वा खोज करने पर उस दिव्य तीर्थ के मर्मज्ञ एक सन्त मिल गये। मैंने विनम्र भाव से अपनी सारी जिज्ञासा उन्हें सुना दी। उन्होंने कहा कि बेटा तुम बड़े भाग्यवान हो जो उस दिव्य तीर्थ की यात्रा सोच रहे हो। जाओ तुम्हारा मार्ग मंगल मय हो। मैंने उन अधिकारी सन्त से कुछ प्रश्न कर लिये।

मैं—महाराज! तीर्थ-यात्रा में कोई कठिनाई तो नहीं है।

सन्त—है क्यों नहीं बेटा! कठिनाइयां न होतीं तो सभी लोग तीर्थ-यात्रा कर लेते।

मैं—महाराज! वह कौन-सी कठिनाई है?

सन्त—बेटा! पहली कठिनाई तो यह है कि तीर्थ-यात्रा का मार्ग बड़ा भयंकर है।

मैं—महाराज! कुछ भी हो अब तो मुझे वहाँ जाना ही है। बस यही कठिनाई है?

सन्त—एक कठिनाई और है बेटा!

मैं—वह क्या है?

सन्त—बेटा! इस भयंकर मार्ग में व्याघ्र, सिंह और सर्पों से बचकर जाना पड़ता है।

सज्जनों! महात्मा की यह बात सुनकर तो मेरे प्राण सूख गये, किन्तु मैंने बड़े धैर्य से काम लिया।

मैं—महाराज! अब इसे छोड़कर कोई और विघ्न तो नहीं है?

सन्त—एक कठिनाई अभी और है बेटा!

मैं—वह क्या है महाराज?

सन्त—बेटा! एक बहुत बड़ा पहाड़ चढ़ना पड़ेगा।

मैं—(धैर्य से) बस हो गया। अब जाऊँ?

सन्त—बेटा! एक विघ्न और है।

पर दृष्टि पड़ते ही उसके उन्नत भाल को देखकर संकोच पूर्वक नीचे मुख किये समीप स्थित अपने पुत्र विश्रवा की ओर देखा— 'तुम्हारा यह पुत्र लोकपाल निधि पति होकर आया है।'

जात कर्म के लिये देवर्षि—महर्षि वृन्द एकत्र हो चुके थे। महर्षि पुलस्त्य पौत्र को देखकर उल्लसित थे—'विश्रवा! तुम्हारा यह पुत्र वैश्रवण नाम से विख्यात होगा—भुवन विख्यात होगा यह और समस्त यज्ञों में स्तुत होगा।'

'मेरा पौत्र!' महर्षि पत्नी का उल्लास सीमा में नहीं था। बालक को माता के अङ्क में रखते हुए वे कह रही थीं— 'ले देख ले मेरे इस लोकपाल पौत्र को। तेरे उदर में यह निधि पति आ गया है।'

'आपका आशीर्वाद!' शिशु की ओर देखकर माता ने भाव भरे शिथिल कण्ठ से कहा।

'मेरा आशीर्वाद बत्से!' महर्षि पत्नी आनन्द मग्न थीं, 'तू माता भले बन गई, है अभी शिशु ही। अरे मैं अपने को भी आशीर्वाद नहीं दूंगी।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं—उसे भी कहिये,

सन्त—मार्ग में बहुत बड़े-बड़े जङ्गल पड़ेंगे !

मैं—बस हो गया, अब जाऊँ।

सन्त—एक विघ्न और है बेटा !

मैं—महाराज ! मैंने आपसे प्रश्न क्या कर लिया यह तो एक बहुत बड़ी झंझट तैयार हो गयी। कहिये अब क्या है ?

सन्त—(हंसकर) बेटा ! मार्ग में बड़ी भयंकर नदियाँ पड़ेंगी।

मैं—अब तो आप सब कुछ बता चुके ?

सन्त—हाँ बेटा ! अभी कुछ और कहना है।

मैं—कृपया उसे भी कह दीजिये।

सन्त—वह यह कि पथ के लिये पाथेय और साथी का होना भी अत्यावश्यक है।

मैं—(कुछ रोष में) महाराज ! जो कुछ अभी कोर कसर हो वह भी कह डालिये।

सन्त—बेटा ! यह सब साधन सम्पन्न होकर उस तीर्थ के देवता को प्रेम से स्मरण करते जाना। नहीं तो तीर्थ में पहुँच कर भी न पहुँच पाओगे।

सज्जनों ! मैंने झुंझलाहट से कहा कि इसीलिये तो सब लोग तीर्थों में नहीं जाते। कौन पड़े इस बखेड़े में।

मैं—महाराज ! मैंने आपसे सब कुछ सुन लिया। जो पड़ेगा, उसे देखूंगा अब जाऊं ?

सन्त—एक बात और सुनलो बेटा !

मैं—(कड़े स्वर में) हाँ हाँ उसे क्यों भूल रहे हैं ?

सन्त—बेटा ! उस तीर्थ में पहुँचकर बहुत से लोग बिना स्नान किये ही वापस चले आते हैं। देखो कहीं तुम भी.....

मैं—महाराज ! लोग जब इतने कष्ट से तीर्थ में पहुँचते हैं तो स्नान क्यों नहीं करते ?

सन्त—बेटा ! तीर्थ स्थान में लोगों को प्रायः शीतज्वर हो जाता है। अतः स्नान कैसे करें ? तीर्थ में जो अन्तःकरण का मल धोने गये थे उसे बिना धोये ही वापस आये। वापस आने पर जिस किसी ने तीर्थ के विषय में कुछ पूछा तो उन्होंने तीर्थ की निन्दा करके अपने अन्तःकरण पर और भी मल जमा कर लिया।

मैं—महाराज ! कोई ऐसा उपाय नहीं है जिससे लूले, लंगड़े, अन्धे, नर, नारी, बच्चे, समर्थ, असमर्थ सभी जन सुगमता पूर्वक उस तीर्थ में स्नान कर लेते।

सन्त—एक उपाय है बेटा !

मैं—(परम प्रसन्न होकर) धन्य है देव ! धन्य है ! फिर वही कहिये।

सन्त—बेटा ! वह उपाय है उस तीर्थ के देवता की कृपा। यदि उस देव की कृपा हो जाय तो जितने विघ्नों का वर्णन मैंने किया है वे एक भी न हों। और तीर्थ में बड़ी सुगमता से पहुंच कर स्नान कर सकोगे।

मैं—(आनन्द विभोर होकर) महाराज ! तो फिर तीर्थ स्नान का फल क्या होता है।

सन्त—अहा, हा ! कुछ न पूछो बेटा ! इस अनंत जीवन की जलन अर्थात घोर त्रिताप से मुक्ति।

मैं—महाराज ! यदि एक बार तीर्थ के देवता की कृपा हो गयी तो कब तक तीर्थ स्नान प्राप्त होता रहेगा ?

सन्त—बेटा ! केवल एक बार उन देव की कृपा हो जाय तो बस फिर क्या ? वह दिव्य तीर्थ सदा के लिये प्राप्त हो गया।

मैं—महाराज ! उन तीर्थ देव की कृपा कैसे होगी ?

सन्त—[गम्भीर मुद्रा में] वत्स ! यदि इस दिव्य तीर्थ में स्नान करने के लिये तीर्थ देव की कृपा चाहते हो तो फिर वह है सन्तों का सत्संग।

सज्जनो ! बस, क्या कहना था, मैं तो प्रेम-विभोर, विमुग्ध हो गया और तब से उस दिव्य तीर्थ का अवगाहन मुझे सदा के लिये प्राप्त हो गया। धन्य है सन्त सत्संग तथा दिव्य तीर्थ, जिससे मेरी बुद्धि निर्मल होकर सत्काव्य कला कवयित्री हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाँ पाठक जन ! इस पूरी कथा को श्री मानस जी में क्रमशः देखें—

तीर्थ—[मानस] *अस मानस मानस चख चाही।*
भइ कवि बुद्धि बिमल अवगाही॥

कुपंथ—[कुसंग] *कठिन कुसंग कुपंथ कराला।*
व्याघ्र, सिंह, सर्प—[दुर्जन वचन]
तिनके बचन व्याघ हरि व्याला।

जंगल—[मोहादि] *बन बहु बिषम मोह मद माना।*
नदी—[कुतर्क] *नदी कुतर्क भयंकर नाना।*
पाथेय—[श्रद्धा] *जे श्रद्धा सम्बल रहित,*
साथी—[सन्त] *नहिं सन्तन कर साथ।*

तीर्थ देव—[राम] *तिन कहं मानस अगम अति,*
जिनहिं न प्रिय रघुनाथ॥

शीतज्वर—[नीद, जड़ता] *जातहिं नींद जुड़ाई होई।*
जड़ता जाड़ बिषम उर लागा।
मल—[अभिमानादि] *फिरि आवइ समेत अभिमाना।*
विघ्न विनाश—[राम कृपा]
सकल विघ्न व्यापइ नहि तेही।
राम सु कृपा बिलोकहि जेही।
फल—[ताप नाश] *सोइ सादर सर मज्जन करई।*
महा घोर त्रय ताप न जरई।
उपाय—[सत्संग] *जो नहाइ चह यहि सर भाई।*
सो सत्संग करउ मन लाई।
फल—[निर्मलता] *अस मानस मानस चख चाही।*
भइ कवि बुद्धि बिमल अवगाही।
भयहु हृदय आनन्द उछाहू।
उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रवाहू।

श्री शिव नामावली

अ से अखिलेश्वर प्रभु आ से आशुतोष कहु,
इ से इन्दुमौलि शम्भु सदा ध्यान धरु रे।
ई से ईशनाथ जपु उ से उमानाथ भजु,
ऊ से श्री ऊर्ध्वशाय बारबार जपु रे॥
ऋ से ऋषीश्वर नाथ ए से एकादस रुद्र,
ऐ से ऐश्वर्य दानी महादानी कहु रे।
ओ से ओंकार रूप औ से औढर दानी,
अं से अंबिकेश्वर हृदय माहिं धरु रे॥
अः से अहिवरधारी क से कैलाश वासी,
ख से खगहारी नाथ विश्वव्यापी कहु रे।
ग से गंगाधर घ से घनश्याम भक्त,
ङ से अरधंग गौरी वृषभेश्वर कहु रे॥
च से चतुरानन भजु छ से छविधारी प्रभु,
ज से जगदाधार जगत पिता कहु रे।
झ से झट दुःखहारी ञ से ञगेश्वर कहु,
ट से टंकारी शिव धनदानी कहु रे॥
ठ से ठंढवासी प्रभु ड से डमरू धारी,
ढ से ढिग आदि शक्ति ध्यान सदा धरु रे।
ण से अन्नदानी नाथ त से तपस्वी शिव,
थ से थलधारी प्रभु जग पोषण भजु रे॥
द से दारिद्र दमन ध से धनुधारी दास,
न से नंदीश्वर स्वामी सदा मनन करु रे।
प से पिनाक धारी फ से फणीन्द्र नाथ,
ब से बलधारी रुद्र नीलकंठ कहु रे॥
भ से भवहारी शिव म से मुंड माली प्रभु,
य से योगेश्वर नाथ भस्मधारी कहु रे।
र से राम प्रिय ल से लोकपाल प्रभु,
व से वरदायी शम्भु महादानी कहु रे॥
श से श्मसान वासी ष से षष्टि भागाय,
स से सदाशिव जपु विश्वनाथ कहु रे।
ह से हुतास नाथ क्ष से क्षमदा चरनाथ,
त्र से त्रिशूल धारी लोक विजयी कहु रे॥
ज्ञ से ज्ञानेश्वर नाथ सदा ध्यान धरु,
शंभू शिव विश्वनाथ बार बार जपु रे॥

याही सब अक्षर को विश्व रूप मान मन, बार बार ध्यान धर नमः शिवाय कहु रे।
दास लघु विद्याभ्यासी 'मुकुन्द' को विश्वास सदा, विद्या बहु देंगे रे मन शंभु शरण गहु रे॥

—बालमुकुन्दलाल बालगोविन्दलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जिय संसय कछु फिरती बारा'

[श्री रघुवीर सहाय जी इञ्जीनियर]

यह चौपाई रामचरित मानस में भांति भांति के भावों का विषय बनगई है-टीकाकारों ने इसके अनेकों भाव व अर्थ लिखे हैं परन्तु अधिकतर अर्थ प्रमाण रहित अथवा क्लिष्ट उड़ान ही दिखाई देते हैं- उनमें से कुछ अर्थ यहां दिये जाते हैं—

१—लंका रूपवती स्त्रियोंसे भरी है, ऐसा न हो कि वहीं मैं रह जाऊँ। (अङ्गद की कायरता तथा प्रभु में विश्वास की कमी ज्ञात होती है।

२—रावण और बालि मित्र थे--इस कारण से कहीं रुकना न पड़े। (अंगद के विचारों से इस भाव की समानता नहीं होती है।)

३—दूसरी ओर कूदने के लिये पहाड़ इत्यादि न हों अथवा वहां राक्षसों से युद्ध करने के पश्चात लौटने की शक्ति न रह जावे। (अंगद से बलवान के लिये यह कठिनाई कहना संगत नहीं है)

४—आज्ञा हनुमानजी को दी है-हमारा जाना उचित नहीं है—इस लिये न जाने का बहाना कर दिया। (इसमें छिपाने की कोई बात नहीं थी, साफ साफ कह सकते थे। दूसरे प्रभु ने अंगूठी हनुमान जी को सब के चले जाने पर ही दी थी। अंगद उस समय नहीं थे।)

५—मन्दोदरी मौसी है, कहीं रोक न ले। (यह कारण राम भक्त के लिये असम्भव है।)

६—अक्षयकुमार से अंगद को मृत्यु का भय था। (कोई प्रमाण नहीं है।)

७—जाने के समय शक्ति सामने है लौटने पर शक्ति पीछे होगी, इस लिये सन्देह है। (यह समस्या हनुमान जी पर भी लागू थी।).

८—केवल अपने बल का ठीक ठीक बखान कर रहे हैं। (परन्तु अंगद का बल बाली के समान था, अतएव पार जाने व लौटने में बल की कोई कमी नहीं थी।)

इत्यादि अनेक भाव इस चौपाई के विषय में दिये जाते हैं परन्तु कोई भी प्रसंगानुकूल, अथवा संगत प्रतीत नहीं होता है।

यह प्रसंग उस समय का है जब सबके सामने चार समस्यायें थीं। वह ही समुद्र पार जाने के योग्य समझा जा सकता था जो कि—

१—समुद्र को लाँघने में समर्थ हों।

२—यह कार्य शीघ्रता से कर सके; क्योंकि समय बीत चुका था और देर करने से सुग्रीव के हाथ से मारे जाने का भय था।

३—जो कि रावण की लंका में बड़े बड़े वीरों को परास्त कर सके।

४—जिसमें कि बुद्धि, विवेक, विज्ञान का समावेश हो। इन सब गुणों की आवश्यकता सीता का लंका में अनुसन्धान करने में पड़ सकती है।

अब तक सबने अपने अपने बल का ही बखान किया क्यों कि सम्पाती ने प्रभु के कार्य करने के लिये यही कहा था—

'जो नाघे सत जोजन सागर।
करै सो राम काज मति आगर॥'

अब अंगद ने इसके अतिरिक्त एक नये पहलू पर विचार आरम्भ कर दिया। उन्होंने कहा कि केवल लांघने की शक्ति ही इस कार्य को करने के लिये पर्याप्त नहीं है- इसके अतिरिक्त इस कार्य को करने के लिये वह भी योग्य होगा जो इस कार्य को शीघ्रता से पूरा कर सके- जामवन्त ने तीसरे और चौथे विषय को सामने रखकर कहा कि आप इन सब विषयों में पूरे हैं, परन्तु आप मुखिया हैं, अतएव आपको भेजना ठीक नहीं है।

'बारा' शब्द रामचरित मानस में दो अर्थों में आया है- एक अर्थ 'समय' के हैं, परन्तु जहां 'बारा' का यह अर्थ है वहां 'बारा' के साथ 'एक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा-'बार बार' का प्रयोग हुआ है—

बालकाण्ड— एक बार भरि मकर नहाये ।
सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाये ॥

अयोध्याकांड—जासु नाम सुमिरत इक बारा ।
उतरहिं नर भव सिन्धु अपारा ॥

किष्किंधाकांड—मंत्रिन सहित यहाँ एक बारा ।
बैठ रहेऊं मै करत बिचारा ॥

आरण्यकांड—एक बार प्रभु सुख आसीना ।
लछिमन बचन कहे छलहीना ॥

उत्तरकांड— भ्रातन सहित राम एक बारा ।
संग परम प्रिय पवन कुमारा ॥

अथवा

बालकाण्ड— करहिं आरती बारहि बारा ।
प्रेम प्रमोद कहै को पारा ॥

अयोध्याकांड—सोक बिबस कछु कहै न पारा ।
हृदय लगावत बारहि बारा ॥

किष्किन्धाकांड—सिंहनाद करि बारहि बारा ।
लीलहि नाघऊ जलनिधि खारा ॥

सुन्दरकांड— बार बार रघुबीर सम्हारी ।
तरकेउ पवन तनय बलभारी ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा ।
अनुज गहे पद बारहि बारा ॥
बन्दि राम पद बारहि बारा ।
मुनि निज आश्रम कहं पगु धारा ॥

उत्तरकांड— हृदय बिचारति बाराह बारा ।
कवन भांति लंकापति मारा ॥

इन सब स्थलों पर 'बारा' शब्द एक बार अथवा बारहि बार के साथ आया है 'बारा' शब्द अकेला जहां प्रयोग हुआ है वहाँ उसका अर्थ भिन्न है उसका अर्थ 'देर' है

अयोध्याकांड—कालि लगन भलि केतिक बारा ।
पूजिहि बिधि अभिलाष हमारा ॥
दिवस जात नहि लागिहि बारा ।
सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा ॥
जग मंगल भल काज बिचारा ।
बेगिअ नाथ न लाइअ बारा ॥

लंका कांड— यह लघु जलधि तरत कति बारा ।
अस सुनि पुनि कह पवन कुमारा ॥
मैं बानर फल खात न बारा ।
आयसु दीन्ह न राम उदारा ॥

उत्तरकांड— ज्ञान कै पंथ कृपान की धारा ।
परत खगेस होइ नहि बारा ॥

मानस में यह शब्द एक जगह और फिरती बार के साथ आया है परन्तु वहां 'बारा' न लिख कर 'बार' शब्द है। इस शब्द का इस स्थल पर 'देर' अर्थ प्रसंग के अनुकूल भी है।

अंगद जी कहते हैं कि जहां तक पार जाने का विषय है मैं पार जा सकता हूँ; परन्तु मेरे हृदय में लौटन में देर का संशय है। मैं शीघ्र न लौट सकूंगा; क्यों कि मैं इतना शीघ्रगामी नहीं हूँ। मुझको देर लग जायगी। वहां जाने को ऐसा व्यक्ति चाहिये जो कि न तो केवल पार ही जा सके बल्कि शीघ्र लौट भी सके। जामवन्त ने कहा कि हे अंगद तुम सब योग्य हो परन्तु हमारे नायक हो, अतएव तुमको भेजा नहीं जा सकता है।

अब यह समस्या पैदा हो गई कि ऐसा व्यक्ति छाँटा जावे जो कि शीघ्रता से जा सके और बुद्धि, बल, विज्ञान से कार्य सम्पादन कर सके। श्रीजामवन्त ने श्री हनुमान जी से कहा—

पवन तनय बल पवन समाना ।
बुधि बिबेक, बिज्ञान निधाना ॥

कवि शिरोमणि तुलसीदास ने जिस प्रकार प्रभु के नाम भिन्न भिन्न स्थलों पर भिन्न भिन्न लिखे हैं उसी प्रकार श्री हनुमान जी के भी नाम भिन्न भिन्न स्थलों पर भिन्न भिन्न लिखे हैं और उनमें गूढ अर्थ छिपे हैं—

हनुमान—बल, बुद्धि, सामर्थ्य और अद्भुत कृत्य करने के लिये।

प्रभंजनसुत—जहाँ वायु के समान विनाश आदि का कार्य सूचित करना है।

अनिलसुत—प्राणों के समान भाव दरसाने को

पवनसुत—वायु समान शीघ्रता का भाव हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहां कवि ने दो शब्दों का प्रयोग किया है।

१—हनुमान–जिससे - बुद्धि, बल, सामर्थ्य का बोध होता है।

२—पवनसुत–शीघ्र कार्य करने वाले का बोध होता है।

जामवन्त ने कहा कि हे हनुमान अर्थात अत्यन्त बलवान, बुद्धिमान, विवेकमय तथा विज्ञानमय तुम कैसे चुप हो, तुम्हारा बल अथवा शीघ्र कार्य करने की शक्ति तो पवन के समान है। ऐसा ही प्रयोग जहां जहां शीघ्रता का बोधक है हनुमान जी के लिए हुआ है। हनुमान जी के भिन्न भिन्न नामों का प्रयोग लक्ष्मण को शक्ति लगने पर पाया जाता है।

जब भगवान ने सुषेन को लाने की आज्ञा दी तो लंका में जाकर यह कार्य करने के लिये बुद्धि, विवेक, बल की आवश्यकता थी अतएव हनुमान नाम दिया—

'धरि लघु रूप गयउ हनुमन्ता।
आनेउ भवन समेत तुरन्ता॥

फिर औषधि लाने के लिये शीघ्रता की आवश्यकता है, कवि ने इस कारण से हनुमान न लिखकर पवन-सुत लिखा—

दोहा—*'राम पदारविन्द सिर नायउ आइ सुषेन।*
कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन॥

फिर कवि वायु के वेग के साथ वायु का विध्वंस का ही गुण भी दिखाना चाहते हैं, जिसकी कालनेमि के नाश करने में आवश्यकता है।

अतएव प्रभंजन सुत लिखा—

'राम चरन सरसिज उर राखी।
चलेउ प्रभंजन सुत बल भाखी॥

अतएव इस समय जामवन्त ने पवन तनय का सम्बोधन करके इस विषय को और भी स्पष्ट कर दिया है। जामवन्त को श्री हनुमान जी की याद अंगद जी के 'जिय संसय कछु फिरती बारा' सुनकर ही आई। श्री हनुमान जी–हनुमान (बल, बुद्धि, विवेक के निधान) होते हुये पवन तनय भी हैं, अतएव कोई कार्य ऐसा नहीं है जो वे न कर सकें। इतना सुनने पर भी श्री हनुमान जी में उत्साह पैदा नही हुआ, क्यों कि राम भक्त अपनी प्रशंसा सुन कर प्रसन्न नही होते हैं; परन्तु जब श्री जामवन्त जी ने प्रभु के काज की याद दिलाई तब उनका उत्साह जाग्रत हो गया और वह पर्वताकार हो गये; फिर भी नम्रता रही और श्रीजामवन्त से पूछा कि मुझे उचित शिक्षा दो कि क्या करना चाहिये। जामवन्त ने कहा कि प्रभु अपनी भुजाओं के बल से महारानी जी को ले आयेंगे तुम तो केवल सीता जी की सुधि ले आओ।

अतएव मेरे विचार में अंगद का संशय लौटने में देर हो जायगी इस विषय में है और यह प्रसंगानुकूल भी है और पवन सुत नाम जो हनुमान जी को दिया गया है उस से भी यही सूचित होता है।

—: श्री 'चक्र' जी की कहानी की पुस्तकें :—

मानस मंदाकिनी (प्रथम हिलोर)	पृष्ठ संख्या ४८	मूल्य ।)॥
मानस मंदाकिनी (द्वितीय हिलोर)	,, ,, ४८	,, ।–)
मानस मंदाकिनी (तृतीय हिलोर)	,, ,, ४८	,, ।–)

प्राप्ति स्थान—**मानस संघ रामवन (सतना)**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस में मानव

[श्री भैयाराम जी वर्मा "साहित्यरत्न"]

विश्व साहित्य की अनुपम निधियों में रामचरित मानस को निर्विवाद रूप से श्रेष्ठतम स्थान उपलब्ध हो चुका है। कविकुल चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास के इस महाकाव्य ने जगत की उत्पीड़ित आत्मा पर अनन्त शांति सुधा का जो लेप लगाया है, वह अन्यत्र ढूँढ़े नहीं मिलता। तुलसी के मानस में प्रपंच पंक में डूबे हुए मानव मानस को उबारने तथा उसे मुक्त करने का अद्भुत बल है। उसमें भारतीय संस्कृति का पूर्ण सामञ्जस्य है। निर्गुण ब्रह्मवाद से लेकर भगवान राम के कल्याणकारी आदर्श मानववाद, गीता के कर्मवाद, भगवान महावीर के अहिंसावाद, ईसा के प्रेमतत्व पैगम्बर के सहिष्णुतावाद तथा युग पुरुष गांधी के विश्व बन्धुत्व तक का अनुपम संमिश्रण है। तुलसी ने आराध्य देव राम के आदर्श चरित्र में तथा उनके लोक रञ्जनकारी कृत्यों की कथा में ही संसार के नेत्रों पर बंधी पट्टी खोलने की कला दिखलाई है। वे "पर उपदेश कुशल बहुतेरे" व्यक्तियों की सूची में अपना नाम नहीं लिखाना चाहते थे। अतः

कवि न होउँ नहि चतुर कहावौं।
मति अनुरूप राम गुन गावौं॥

कहकर रामचरित मानस के अन्तर्गत ही उन्होंने इस 'जड़ चेतन गुन दोष मय' विश्व का सर्वाङ्गपूर्ण, स्पष्ट एवं सफल दिग्दर्शन कर दिया है।

मानस का मानव केवल रामराज्य के जन का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता और न उसमें केवल उसी युग के मनुष्य का छायाभास है, जिस युग में स्वयं तुलसी का अवतार हुआ था। उसमें निहित है, उस मानव का दिग्दर्शन, जो युगों पहले था आज है और शताब्दियों बाद भी रहेगा।

यों तो राम कथा प्रसंग में आयोजित प्रत्येक पात्र मानव के विभिन्न प्रतीकों का स्वरूप है। तुलसी ने चरित्र गठन के व्यापक सिद्धान्तों का आदर्श प्रस्थापित करते हुए विश्व मानव मानस को 'संत असंत' में विभक्त करके मानस में उन चरित्रों का समावेश भी कर दिया है। इस प्रसंग में उन्होंने इस 'सीय राम मय' जग को

दुख सुख पाप पुन्य दिन राती।
साधु असाधु सुजाति कुजाती॥

प्रवृत्तियों से पूर्ण बतलाते हुए मनुष्य को साधु तथा असाधु की जिन दो श्रेणियों में विभक्त किया है, उसमें यदि जन्मजात कोई भेद नहीं है, भौतिक जीवन की समता यद्यपि उनमें जन्म से मृत्यु पर्यंत व्याप्त है, तथापि उनके गुणों में कोई साम्य नहीं है। आध्यात्मिक तुला पर उनके मूल्यांकन में उतना ही अन्तर हो जाता है, जितना आकाश और पृथ्वी में, जैसा कि निम्न पंक्ति से स्पष्ट है—

एक पिता के विपुल कुमारा।
होहि पृथक गुन सील अचारा॥

एक ही सृष्टि नियन्ता की इन दो संतानों में गुण शील और आचार का भेद कोई सामान्य भेद नहीं है। जिस प्रकार एक ही समुद्र से उत्पन्न सुधा और सुरा दो ध्रुवों के समान विपरीत गुण युक्त हैं—उसी प्रकार—

सुधा सुरा सम साधु असाधू।
जनक एक जल जलधि अगाधू॥

की स्पष्टोक्ति द्वारा तुलसी संत और असंतों के बीच एक अमिट रेखा खींच देते हैं। अमृत की प्राप्ति अमरत्व प्रदान करता है और उसका विछोह मनुष्य को मरणोन्मुख बना देता है।

गुसाईं जी ने अपनी संत असंत महिमा में संतों की स्तुति करते हुये उनके समाज को—

मुद मंगल मय संत समाजू।
जो जग जंगम तीरथ राजू॥

कहकर उनके चरित्र की महत्ता प्रस्थापित की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। सज्जनों की चरित्र की चादर कलंक रहित होती है, उसमें दूसरों के चरित्र की कालिमा को, उनके छिद्रों को अस्तित्व हीन कर देने की क्षमता होती है। उनका चरित्र कपास के समान निर्विकार रहकर—

साधु चरित सुभ चरित कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू॥
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा।
बंदनीय जेहि जग जस पावा॥

के तत्व से युक्त केवल बंदनीय ही नहीं होती, पर छिद्र दुराव के गुण के कारण जग की कलुषित काया को निर्मल दीप्तिमय बना डालती है। संतों की यह परमार्थ वृत्ति इतनी अक्षुण्ण तथा अडिग होती है कि विपरीत प्रवृत्तियों द्वारा पत्थर के पर्वत खड़े कर देने पर भी वह कुण्ठित नहीं होती। संतों को आमवृक्ष की उपमा देते हुये तुलसी ने कहा है—

तुलसी संत सुअंब तरु, फूलहिं फलहिं पर हेत।
इतते जग पाहन हनत, उतते वे फल देत॥

इतना ही नहीं दुर्गुणों के भीतर गुणों की सृष्टि कर देना उनके बांये हाथ का खेल है। पंक में रहकर भी पंकज की भांति वे विश्व से परे हैं। विश्वोपवन के ये संत सुमन जग के कंटकमय वातावरण में पलते हुये स्वयं सुगंधित तो होते ही हैं, अपनी सुगन्धि से संतप्त भूमंडल में आनंदोल्लास का निर्माण भी करते हैं। और स्वमुक्ति के साथ ही उन कंटकों को भी, जिन्होंने उन्हें आजीवन विद्ध किया है, मुक्ति-द्वार का दर्शन करा देते हैं। इसीलिये जनमन उनके चरणों में पुष्प बिखेरता हुआ तुलसी की निम्न श्रद्धांजलि का प्रतिपादन करता है।

बंदौं संत समान चित, हित अनहित नहिं कोउ।
अंजुलिगत सुभ सुमन जिमि, सम सुगंध करि दोउ॥

संतों के साथ ही असंतों की भी व्याख्या तुलसी ने की है। पर प्रशंसा पर विश्वास करना, पर विपत्ति पर घी के दिये जलाना, मुख में राम बगल में छुरी लेकर चलना इसकी परिभाषा की परिधि में सम्मिलित है।

परहित हानि लाभ जिन्ह केरे।
उजरे हरष बिषाद बसेरे॥
जे पर दोष लखहिं सह साखी।
पर हित घृत जिन्ह के मन माखी॥

लोक व्यवहार में कुशल इन असंतों के मन, वचन और कर्म में कभी सामञ्जस्य नहीं पाया जाता। उनका जीवन 'झूठइ लेना झूठइ देना। झूठइ भोजन झूठ चबेना॥' पर पलता रहता है। उनके काष्ठसम शरीर में यौवनोत्पन्न वासनाओं का घुन लग जाता है। सदाचार, सदव्यवहार नाम की कोई वस्तु उनके पास नहीं रहती। वे तो

स्वारथ रत परिवार बिरोधी।
लंपट काम क्रोध अति लोभी॥
मातु पिता अरु बिप्र न मानहिं।
आपु गये अरु घालहि आनहि॥

अतः तुलसी ने उन्हें—

पर द्रोही पर दार रत, पर धन पर अपवाद।
ते नर पाँवर पापमय, देह धरे मनुजाद॥

की संज्ञा देकर विश्व को—

"बरु भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देइ बिधाता॥

का उपदेश दिया है। आधुनिक युग कुप्रवृत्तियों का भंडार है। सहस्रों नरों में एक धर्मव्रत धारी के दर्शन होते हैं। तुलसी ने 'कलियुग' की व्यंजना करते समय 'सत और असत' के बदले हुये दृष्टि कोण को स्पष्ट किया है। तुलसी इस अमृत विषमय विश्व में अमरत्व और जरत्व, स्वर्ग और नरक को स्पष्ट करते हुये माया जाल में भटकते हुये जगत को अपने कर्तव्य की प्रेरणा देते हैं। उनका विश्वास है कि यदि मनुष्य अपने पावन कर्तव्य का निष्काम प्रेरणा युक्त निर्वाह करता जाये, तो पतित भी पवित्र बन सकता है। नरक भी स्वर्ग में परिणित हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी की नारी-निन्दा

[श्री रामचन्द्र जी शर्मा, छाँगाणी]

मानव जीवन बड़ा ही विचित्र है। क्षण क्षण में उसकी बुद्धि में मतान्तर होते ही रहते हैं। ये मतान्तर ही उसकी बुद्धि में नाना प्रकार के जाल फैलाकर उसे विचलित कर देते हैं।

परमादरणीय गोस्वामी जी महाराज के बारे में भी कुछ विद्वानों की धारणा बन गई है कि वे "नारी-निन्दक" थे। उन्होंने नारी जाति पर लांछन लगाकर उन्हें अपमानित किया है। यही एक कुविचार का भूत अभी तक मानव जाति के सिर पर सवार होकर उन्हें विचलित कर रहा है।

प्रथम तो हमें गोस्वामी जी की नारी-निन्दा के विषयानुसार काल निर्णय करना अनुचित न होगा। क्योंकि युग की पुकार ही कवि और साहित्यकार के विचारों को पोषकता प्रदान करती है।

जब वन्दनीय गोस्वामी जी का आविर्भाव हुआ, उस समय परम-पावन-भूमि भारत पर महमूद गजनवी आदि अनेक राजाओं ने भारत की पावनता को नष्ट करने के हेतु हाथ बढ़ाये थे। धर्म की पताका जीर्ण होकर चिथड़ों का स्वरूप ले चुकी थी। आपसी वैमनस्य ने श्रद्धा से पूजी जाने वाली भगवत् मूर्तियों को क्षत विक्षत कर भारतीय मानव की आत्मा को गहन ठेस पहुँचाई थी। क्या नर क्या नारी सभी धर्म प्रतिष्ठा से विचलित हो उठे थे। अनाचारों के घोर युग ने कलुषित-विचारों को जन्म दिया और धर्म के शांतिमय विचारों की होली मचा दी। ऐसे ही समय.....

एक लोक मंगलकारी भावनाओं का असाधारण मानव हाथ में धर्म पताका लेकर पापाचार के पुञ्ज को नष्ट करने के लिये आगे बढ़ा। वे थे महाराज गोस्वामी जी!

उनकी अलौकिक प्रतिभा ने देश की पावनता को स्थिर रखने की ठानी। उन्होंने उस युग को राम मय बना दिया। ऐसे ही समय 'श्री राम चरित मानस' की रचना से धर्म मर्यादाओं का पालन होने लगा। भारतीयता के धर्म, आचार, विचार, जाति, श्रद्धा, प्रतिष्ठा पर जो कलंक की कालिख लगी थी, एक महान आत्मा ने उसे धोकर मंगलमय बना दिया।

आज उसी आत्मा पर विद्वान लोग नारी-निंदा का दोष मढ़ देते हैं। यदि हमें कोई विषय खटकता हो तो उस पर एकदम लांछन न लगाकर तनिक उसकी विशद विवेचना कर, उसमें पाई जानेवाली कमजोरी का सूक्ष्मतम दृष्टि से अवलोकन कर लेना चाहिये। स्मरण रखना चाहिये कि मानस में जो अच्छाई हम पाते हैं, उनसे उसमें दिखाई देने वाली बुराइयां प्रायः लुप्त सी हो जाती हैं।

जब हम उस विषय को लेकर उसकी गहराई में उतरेंगे, तो हमें यही मालुम होगा कि जो मनुष्य लोक मंगलकारी भावना को लेकर मानव जाति का उद्धार कर उन्हें लौकिक और पारलौकिक सुधार करने को पृथ्वी पर आया, वह एक नारी जाति को निन्दा का रूप कैसे दे सकता है? और हम जो भ्रम के भूत की बाँहों में जकड़ गये हैं, यह कहाँ तक सार्थक है?

जहाँ जहाँ हम नारी निन्दा के स्वरूप को पाते हैं, वह गोस्वामी जी की आत्मा की कसक है, जो वे अपनी आत्मा से निहार रहे थे। उनका हृदय नारी-जाति के पतन को देखने में असमर्थ था। जिस भारतीय-नारी का गौरव तो रघुवंश में वर्णित है—

दया, करुणा, क्षमा, उदारता के भाव भारतीय नारी जीवन के भूषण है। सहिष्णुता की वह मूर्ति शरीर की अपेक्षा हृदय से कहीं अधिक कोमल होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितना पवित्र आदर्श है हमारी भारतीय नारी का। उन्ही विचारों का पोषक मनस्वी नारी जाति में चेतना का संचार करने और उसमें सजगता का भाव भरने को आगे बढ़ा, ताकि वही देवी रूप नारी अपने उत्तम स्वरूप को पुनः पा सके। जो पुरुष लौकिक सुधार के लिये आगे आता है, वह नारी निंदा करेगा, यह कदापि नहीं हो सकता।

अब हमें तुलसी की उन पंक्तियों की ओर आना चाहिये जिन पर नारी निंदा का विचार हमारे तथा कथित विद्वान लोग पाते हैं।

(१) *ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।*
सकल ताड़ना के अधिकारी॥
(सुन्दरकांड समुद्र प्रकरण)

(२) *महावृष्टि चलि फूटि किआरीं।*
जिमि सुतन्त्र भएँ बिगरहि नारी॥
(किष्किन्धाकांड)

(३) *नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं।*
अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥
साहस अनृत चपलता माया।
भय अबिबेक असौच अदाया॥
(लंकाकांड)

उपरोक्त पंक्तियों के आधार पर गोस्वामी जी नारी निन्दा के दोषी हैं, यह मत है। जो लोग भारतीय नारी को उकसाकर मानस और तुलसी के प्रति घृणित भावनाओं को जन्म देने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन्हें इन बातों पर ही ध्यान न देकर केवल नारी के आदर्श को उच्च रखनेवाली बातों पर ही ध्यान देना चाहिये। कोई भी चरित्र उस नारी का भूषण है, जो उसके उच्च विचारों की देन है। हमारे महापुरुष यह बात सदैव कहते हैं कि हजार दिनों का यश केवल एक दिन के चरित्र पर निर्भर रहता है। जिन गोस्वामी जी पर नारी निन्दा का दोषारोपण किया गया है उन्हीं ने नारी की महानता सती अनुसुइया, शबरी, कौशल्या और सुमित्रा सी धर्माचारी नारियों से दर्शायी है। अतएव उन्हें हर समय उनसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥

कहने वाले पुरुष के मर्म को देख लेना नितान्त आवश्यक है। प्रभु समुद्र से विनय पूर्वक मार्ग माँग रहे हैं। प्रभु के समस्त कार्य पूर्ण नहीं हो पाये। परन्तु समुद्र ने धृष्टतापूर्वक हठ ठाना। समुद्र ने भगवान के आत्म-स्वरूप का ज्ञान नहीं किया, जो नारी जाति की आदर्श मूर्ति शबरी ने किया। भगवान से उसने स्वयं कह दिया—

अधम ते अधम अधम अति नारी।
तिन्ह महँ मैं मति मंद अघारी॥

परन्तु भगवान ने नारी जाति में तनिक भी भेद भाव न रखते हुए शबरी से कहा—

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता॥

प्रभु ने नारी के आदर्श में अमिय की वर्षा कर दी। शबरी को भगवान ने आत्म स्वरूप दे दिया। कितना आदर्श है, नारी का। श्रीराम जी को हम मानस में हास्य मुद्रा में अधिक पाते हैं। उग्ररूप तो उन्होंने जलधि के हठ पर किया। परन्तु भगवान को हास्य मुद्रा में अवलोकन करनेवाला समुद्र क्रोध में नहीं देख सका अतएव समुद्र ने उन्हें मार्ग दे दिया—

ढोल गँवार सूद्र पसु नारी।

कहने वाला समुद्र भगवान के ब्रह्म रूप को निहार-स्वयं नम्र बन गया—

प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई॥

जिस प्रकार समुद्र नम्र बन गया उसी प्रकार अन्य प्राणी भी यदि नम्रता धारण कर लें, तो ताड़ना का प्रश्न ही नहीं रहेगा। सो तो केवल तुलनात्मक दृष्टि है, कवि की। फिर जिसे वाणी ने बुद्धि दी वही उसने सोचा। यह एक सूक्ति का रूप भी हो सकता है। ताड़ना का प्रश्न बाद में है।

दूसरी जो पंक्ति आक्षेप मय है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिमि सुतन्त्र भये बिगरहि नारी।

हम कह चुके हैं कि किसी भी बात को समझ लेना चाहिये। गोस्वामी जी के एक एक शब्द में गूढ रहस्य भरा है। गोस्वामी जी ने अनाचार के ताप में नारी जाति को दग्ध होते देखा। देवी के पावन स्वरूप नारी को पाप और अत्याचार की ज्वाला में वे दहकते न देख सके। अतएव—

महावृष्टि चलि फुटि किआरी।
जिमि सुतन्त्र भये बिगरहि नारी॥

के इन शब्दों में उन्होंने नारी के देवी स्वरूप को बनाकर उन्हें सजग कर दिया। यदि वे अपनी नारी जाति को यह प्रेरणा न देते तो कदापि उनका यश अक्षुण्ण न रहता।

अब हमें तीसरी दोष मय पंक्ति को अवलोकन करना है—

नारि सुभाउ सत्य सब कहहीं।
अवगुन आठ सदा उर रहहीं॥

मर्म की पराकाष्ठा पर पहुँचने के बाद हम इन पंक्तियों में भी नारी निंदा नहीं पाते। मन्दोदरी ने रावण को सत्य पथ पर लाने का प्रयत्न किया, कि वे भगवान से हठ छोड़ दें। परन्तु प्रभु पद के निकट आश्रय पाने का इच्छुक रावण—

तौ मैं जाइ बयर हठि करऊँ।
प्रभु सर प्रान तजे भव तरऊँ॥

मन्दोदरी को टालने का कोई मार्ग न देख नारी की अवहेलना न करता तो शायद नारी मन्दोदरी से रावण पिण्ड न छुड़ा पाता। केवल उसे समझाने का एक मात्र उपाय रावण ने वही जाना तथा कह भी दिया। सो शायद हम उसमें नारी निंदा न पाकर केवल रावण के पराक्रम और गर्व का आभास ही पाते हैं।

मुझे इस लेख द्वारा केवल अपनी नारी जाति को यही कहना है, कि वे लोगों के द्वारा बताये जाने वाले अनुचित मार्ग का अनुसरण न करें। मानस में नारी निंदा के भावों को समझें कि वे किस आशय को लेकर लिखे गये हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि उसका विशद विचार करें, तो हम उनसे कुछ पालेंगे।

भारतीय नारी मानस से अनुसुइया, सुमित्रा, कौशल्या और भक्ति मती शबरी से योग्य शिक्षा ग्रहण करें। नारी आदर्श को समझें। भारतीय नारी के गौरव को यदि वे मानस में ढूढ़ेंगी तो उन्हें पूर्ण सन्तोष मिलेगा। पश्चात् उनकी ये तरंगे कभी न उठ सकेंगी। इस लेख से उन्हें कुछ मिलेगा नहीं, परन्तु यदि इसे पढ़कर मानस में श्रद्धा रख विचार करेंगी, तो शायद सदाचारों में उठने वाला विप्लव हमेशा के लिये शान्त हो जायगा।

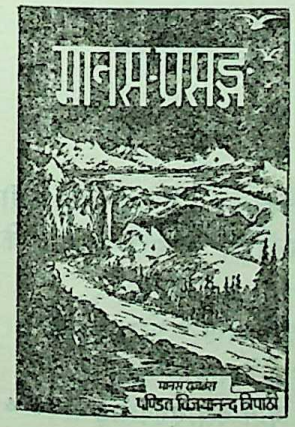

मानस प्रसङ्ग—लेखक श्री मानस राजहंस पंडित विजयानन्द त्रिपाठी,
प्रकाशक—मानस सङ्घ रामवन (सतना)

पृष्ठ संख्या ४६४ मूल्य ३॥)

श्री राम चरित मानस के बालकान्ड में गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री राम चरित मानस का वर्णन मानसरोवर तथा उससे निकली परम पावन सरयूजी के रूपक द्वारा किया है। सच पूछिये तो यह रूपकही पूरे ग्रन्थ की कुञ्जी है। बिना इसे ठीक ठीक समझे 'मानस' का स्वरूप समझ में नहीं आता। इस पुस्तक में बड़े मार्मिक ढंग से भली प्रकार ग्रन्थ कर्ता ने इस रूपक का रहस्य स्पष्ट किया है।

शीघ्र मँगालें। कुछ ही प्रतियां शेष बची हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

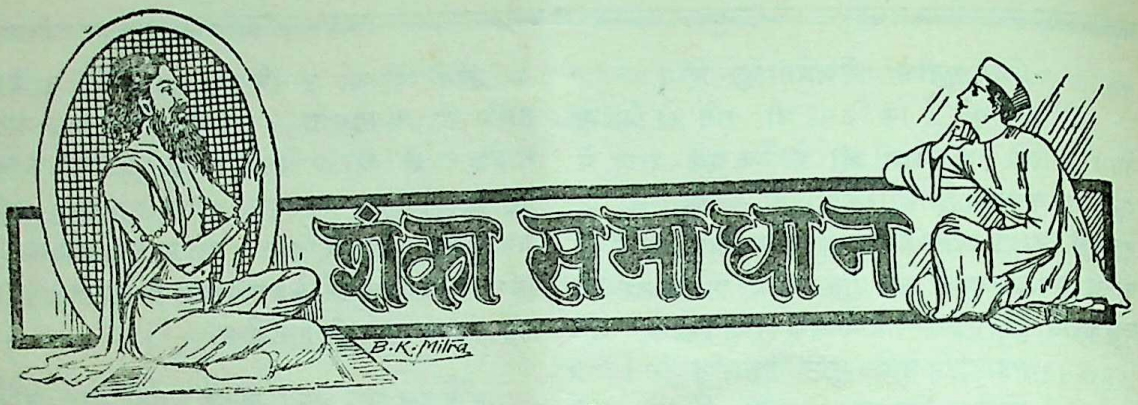

शंकायें

(१) श्री भरत जी ने शृंगवेरपुर में—

कनक बिंदु दुइ चारिक देखे।
राखे सीस सीय सम लेखे॥

कैसे जबकि—

"बलकल बसन जटिल तनु स्यामा।
जुनु मुनि बेष कीन रति कामा॥"
"तापस वेष जनक सिय देखी।"

मुनि-तापस वेष में 'कनक बिंदु' कैसे?

—हेमराज पाण्डेय नयागाँव (नरसिंहपुर)

(२) श्री लक्ष्मण जी ने कुटिया छोड़ने पर किस मंत्र से रेखा खींचकर माता सीता जी को छोड़ा था जिसको रावण जैसा महापंडित न लांघ सका?

(३) मानस चौपाइयों द्वारा हवन हो सकता है या नहीं, यदि हो सकता है तो क्या प्रमाण है?

—दलाल भँवरलाल लढ़ा, भूपालगंज (भीलवाड़ा)

समाधान

[मानस तत्वान्वेषी पं. श्री रामकुमारदासजी रामायणी,
वेदान्त भूषण, साहित्यरत्न, मणि पर्वत श्री अयोध्याजी]

कमलालया कमला,
प्रभूपद कमल आलय ह्वै रहीं।
प्रभु पद कमल से गंग जल,
जब कमल जल से सब कहीं॥
पद कमल ध्याये ज्ञान,
रवि-विकसै-कमल रवि जगत में।
प्रभु श्याम रूप 'कुमार'
नाशत श्यामता जो भगत में॥

(१)

श्रीराम जी ने वन जाते समय जब कोप भवन में मझली माता कैकेयी जी के दिये हुए कटि वस्त्र और उत्तरीय दोनों मुनि वस्त्रों को धारण कर लिया तो उस समय श्री सीता जी मुनि वस्त्रों का पहिनना (पंचा और ब्रह्मगांती बाँधना) नहीं जानती थीं इसलिये वे हाथ में तापसी वस्त्रों को लेकर लज्जित एवं अवाङ्मुखी खड़ी रह गईं, तब श्रीरामजी ने सीता जी के रेशमी वस्त्रों के ऊपर तपस्विनी के काषाय वस्त्रों को बाँध दिया।

देखिये बाल्मीकीय रामायण अयोध्याकांड—

स चीरे पुरुषव्याघ्रः कैकेय्याप्रति गृह्यते।
सूक्ष्म वस्त्रमवक्षिप्य मुनि वस्त्रायवस्तह॥३७।०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथात्म परिधानार्थं सीता कौशेय वासिनी ।
संप्रेक्ष्य चीरं संत्रस्ता पृषती वागुराभिव ॥९

साव्यपत्रपमाणेन प्रगृह्य च सुदुर्मनाः ।
कैकेय्याः कुश चीरे ते जानकी शुभलक्षणा ॥१०
अश्रुसम्पूर्णनेत्रा च धर्मज्ञा धर्मदर्शिनी ।
गन्धर्वराजप्रतिमं भर्तारमिदमब्रवीत् ॥११

कथं नु चीरं बध्नन्ति मुनयो वनवासिनः ।
इति ह्यकुशला सीता सा मुमोह मुहुर्मुहुः ॥१२

कृत्वा कण्ठेस्म साचीरमेकमादायपाणिना ।
तस्थौ ह्यकुशला तत्रबीणिता जनकात्मजा ॥१३

तस्यास्तत्क्षप्रमागत्य रामोधर्मभृतांवरः ।
चीरंबबंध सीतायाः कौशेयस्योपरि स्वयम् ॥१४

इस पर सभी उपस्थित नर नारी रोने लगे और वशिष्ठ तथा दशरथ जी ने तो कैकेयी जी को बहुत ही फटकारा और गालियां दी। अन्त में दशरथजी ने कोशाध्यक्ष को आज्ञा दिया कि वैदेही के लिये चौदह वर्ष तक के लिये बहुमूल्य अच्छे-अच्छे कपड़े और बहुमूल्य भूषण लावो। तब कोशाध्यक्ष ने लाकर दिया और श्री सीताजी ने उन्हें वहीं धारण किया अर्थात् उन्हीं मुनि वस्त्रो के ऊपर से ही राज-प्रदत्त वस्त्राभूषणों को पहिन लिया--

राजा सत्वरमाहूय व्यापृतं वित्तसंचये ।
उवाचदेशकालज्ञो निश्चितं सर्वतः शुचिः ॥३६।१४
वासांसिचवरार्हाणि भूषणानिमहान्तिच ।
वर्षाण्येतानि संख्यायवैदेह्याः क्षिप्रमानय ॥१५
नरेन्द्रेणैवमुक्तस्तु गत्वकोशगृहंततः ।
प्रायच्छत्सर्वमाहृत्य सीतायै क्षिप्रमेवतत् ॥१६

सा सुजाता सुजातानिवैदेही प्रस्थितावनम् ।
भूषयामास गात्राणि तैर्विचित्रैर्विभूषणैः ॥१७
व्यराजयत वैदेही वेश्म तत्सुविभूषिता ।
उद्यतोंऽशुमतः कालेस्वं प्रभेवविषस्वतः ॥१८

इसी कारण शृंगवेरपुर में जब कुश की साथरी (स्तरण-बिछावन) पर श्री जानकी जी रात में सोईं तो वस्त्र में टँके हुये अनेको स्वर्ण बिन्दु कुश की रगड़ से वस्त्र में से टूटकर गिर गये थे, उन्हीं को भरत जी ने देखा था।

प्रातः काल जब श्रीराम जी ने वटचीर मगाकर सबंधु जटा बनाया तो उपलक्षण से सिद्ध है कि सीताजी उसी समय राजकीय वस्त्राभूषण में त्याग कर काषायम्बर धारण करके तपस्विनी बन गईं थीं। इसीलिये सुमन्त जी जब लौटकर अयोध्या पहुँचे तो महाराज दशरथ जी से बार बार तपस्विनी तपस्विनी कहकर सीताजी की बात कही—

जानकी तुमहाराजनिः श्वसन्ती तपस्विनी ॥५८।३४
तथैव सीता रुदती तपस्विनी..... ...॥३७

यही कारण है कि शृंगवेरपुर में कनक बिन्दु गिरे थे और चित्रकूट में—

तापस वेष जनक सिय देखी।

और चित्रकूट से आगे बढ़ने से तो परम सिद्धा तपस्विनी श्री अनुसुइया जी ने जो—

दिव्य बसन भूषण पहिरावे।

उन्हीं वस्त्र भूषणों में से हरण काल में कुछ भूषण वस्त्र खन्ड में बांधकर सुग्रीव के पास प्रक्षेप किया था।

(२)

अथर्व वेद में वर्णित है कि श्री लक्ष्मण जी ने जो रेखा खींची थी उसका प्रभाव था कि—

सर्वो वै यत्र जीवति गौरश्वः पुरुषः पशुः ।
यत्रेदं ब्रह्म क्रियते परिधिर्जीवनायकम् ॥

अथर्व वेद कांड ८ सूक्त २ मंत्र २५

अर्थ—

यत्र (यथा) परिधिः ब्रह्म — जैसे यज्ञ में अग्नि के चारों ओर रेखा खींची जाती है उसी प्रकार ब्रह्म के कलांशावतार श्री लक्ष्मण जी ने (श्री सीता जी की कुटिया के चारों तरफ।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिधिः क्रियते जीव नायकम् } राक्षस पिशाचादादि निवारक रेखा खींच दिया, वह परिधि समस्त जीव मात्र की रक्षक थी।

तत्र— उस परिधि के भीतर
वै— निश्चय ही
गौः— गाय और
अश्वः— घोड़ा आदि
पशुः— सभी पशु तथा
पुरुषः— मनुष्य आदि सभी
जीवति— सुरक्षित रहते।

रेखा खींचते समय लक्ष्मण जी ने निम्नोक्त मंत्र उच्चारण करते हुये रेखा खींचा था, अर्थात् इस मंत्र से रेखा को अभिमंत्रित किया था—

परि त्वा पातु समानेभ्योऽभिचारात्सबन्धुभ्यः।
अमम्रिभिर्वाऽमृतोऽति जीवो मातेहासिषुरसवः शरीरम्॥
(अथर्व ८।२।२६)

अर्थ—
त्वा (त्वाम्)—आपको
परि— यह परिधि (लघु रेखा)
अमम्रिभिः—प्रबल मंत्र शक्ति द्वारा
सबन्धुभ्यः—सपरिवार
समानेभ्यः—हमारे शत्रुओं के समस्त
अभिचारात्—हानिकर प्रयोगों (उपायों) से
पातु— रक्षा करै।
ते असवः—आपके प्राण
अतिजीव—बहुत काल तक जीवित रहें।
वा अमृतः—अथवा कभी मरैं ही नहीं अर्थात्
शरीरम्—शरीर को कभी भी
मा हासिषुः—न छोड़ने वाले हों। अर्थात् परिधि के भीतर किसी प्रकार का भय न रहेगा।

महा पंडित रावण वेद मंत्र का माहात्म्य शक्ति को सुपरीक्षित रूप से जानता था इसी से उस मंत्रित रेखाके लांघने का दुस्साहस उसने नहीं किया था।

(३)

श्री सम्वत् १८८४ वि० तक वर्तमान रहने वाले पं० श्री रामगुलाम जी द्विवेदी भारत के प्रसिद्ध विद्वान रामायणी थे। उन्होंने बृहदब्रह्म रामायण और महाकाल संहिता से 'श्रीमद्रामचरित मानस रामायण माहात्म्य' तथा "नवाह्न पारायण श्रवण विधि" को संग्रह किया था, जो अब सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द बुकसेलर अयोध्या के यहाँ से साकेत-वासी पूज्य रामायणी श्री रामबालकदास जी महाराज द्वारा टिप्पणी से अलंकृत मानस के साथ छपी हुई प्राप्त है।

उस बृहद्ब्रह्म रामायणान्तर्गत मानस पारायण विधि के दूसरे अध्याय में वर्णित है कि जब शिष्य ने पूछा कि—

यद्होमं भोजनं योग्यं सर्वं ह मुनीश्वर॥२

तब समस्त बिधिओं को विस्तार से बताते हुए आचार्य ने बताया कि—

अवसाने पुनः कार्यं जय रामेत्ययं ध्वनिः।
सम्पूर्णे दिवसे विप्र होमः कार्यो विधानतः॥३२
रामायणोक्त मंत्रेण (पद्येन) पंचांगने यथाविधिः॥३३

श्री रामचरित मानस के सभी पद्य मंत्र हैं और इस दिव्यतर ग्रन्थ के पद्यों के पांच अंग हैं—

(१) श्लोक, (२) सोरठा, (३) दोहा, (४) चौपाई (५) और छन्द।

अतः केवल चौपाई ही से नहीं अपितु सभी पद्यों से हवन करना चाहिये।

बाल्मीकि तुलसी भये (नाटक)—लेखक- डा० भगतानदास जी सफड़िया, प्रकाशक-मानस प्रकाशन लिमिटेड रामवन (सतना). पृष्ठ संख्या ११६ मूल्य ।।।)

महर्षि बाल्मीकि को क्यों तुलसीदास जी के रूप में प्रगट होना पड़ा इसकी बड़ी ही मार्मिक एवम् भव्य कल्पना लेखक ने प्रस्तुत की है। अवश्य पढ़िये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

दिसम्बर मास में संघ के १२१ नये सदस्य बने तथा ५ नई शाखायें स्थापित हुईं जिनका विवरण इस प्रकार है:—

शाखा संख्या २००७ करगा [दुर्ग] सदस्य ६ मंत्री श्री मंशाराम जी रामायणी। शा० सं० २००८ नीमच छावनी [म०प्र०] स० ११ मं० श्री मदनलाल जी गोयल। शा० सं० २००९ नासरीगंज [शाहाबाद] स० १० मं० श्री शिवनन्दनसिंह जी। शाखा संख्या २०१० नाहरगाँव [रायपुर] सदस्य १३ मंत्री श्री आत्माराम जी। शाखा संख्या २०११ कटंगी [दुर्ग] सदस्य २४ मंत्री श्री पीलाराम जी।

विविध समाचार

मझौवां :—श्री हनुमानजी के चबूतरे के पास ता: १० से २० दिसम्बर तक मानस मार्तण्ड पं० केशरीकिशोर शरण जी रामायणी का साहित्यिक तथा सामाजिक विषय पर मानस का पूर्ण रूप से प्रवचन हुआ अन्त में कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —हरिमोहनसिंह

पिपरिया :—अषाढ़ मास से अगहन मास तक प्रत्येक मास के शुक्ल पक्ष ११ को क्रमश: सर्व श्री छवलाल जी पटैल, सियाराम जी कौरव, गेंदालाल जी कौरव, बोहरसिंह पटैल, शंकरलाल जी, नन्हेंलाल के यहाँ श्री रामचरित मानस का अखण्ड पाठ, अखण्ड ज्योति जलाकर हुआ। समाप्ति पर सुन्दरकांड का सम्पुटित पाठ हुआ। बाद में हवन, पूजन, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —ओंकारप्रसाद

करमनडीह :—नवधा रामायण की कथा के समय अर्थ करते हुए श्री परशराम जी श्रीवास का प्राणान्त हो गया। उस समय एक परम ज्योति और सुन्दर आवाज हुई। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें। —धनसाय साहू

जलालपुर :—प्रदोषमंडल द्वारा कार्तिक मास में मानस पाठ, दीपकदान, धात्री पूजन, तुलसी पूजन आदि होकर भोजन हुआ। ग्रहण के समय हवन, दान, स्नान हुआ। —शिवनारायण त्रिपाठी

चित्तौड़गढ़ :—मगसर सुदी पूर्णिमा को एक नवाह पाठ पूर्ण हुआ। बाद में १२५ मूर्तियों को भोजन कराया गया। —श्यामसुन्दरदास

नहला :—६ सदस्यों द्वारा मानस का सामूहिक पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —शीतलसिंह

जुरलाकलां :—हर बुधवार को श्री शंकर जी के मन्दिर में आरती, नैवेद्य हवन करके रामायण होती है। —मन्नूराम साहू

वाराद्वारबस्ती :—मार्गशीर्ष पूर्णिमा को श्री छेदीलाल जी वैष्णव की ओर से सदस्यों द्वारा अखण्ड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन हुआ। —धनसाय साहू

विहिया ठाकुरवाड़ी :— श्री धर्मोपदेशक पं० उमाकान्त जी पाठक द्वारा पौष शुक्ल चतुर्दशी से दो हफ्ते तक श्री मानस पर प्रवचन हुआ। जनता काफी तादाद में सुनने के लिये आती थी। पौष शुक्ल ११ को मानस का सामूहिक पाठ हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्त में आरती, कीर्तन, प्रवचन होकर प्रसाद वितरण किया गया। बिहार सरकार से शाखा विहिया को ३ रामायण, २ ढोल, १८ जोड़ी झाल प्राप्त हुई। —बशिष्ठनारायण

सफीपुर :— ता: १०, ११, १२ दिसम्बर को श्री देवी सम्पद् महामंडल का वार्षिक सत्संग समारोह मनाया गया जिसमें मानस मराल श्री पं० अमरनाथ जी शास्त्री रामायणी तथा अन्य विद्वानों के द्वारा श्री मानस पर बड़ा सुन्दर प्रवचन हुए। —बैजनाथ सेठ

गंधवानी :—शिवालय में मानस के २५ पाठ, सुन्दरकांड पाठ से हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —नन्दलाल वैश्य

चाईबासा :—ता० ८-१२-५७ से १५-१२-५७ तक रामायणी कवि रत्न श्री पं० भैरवप्रसाद जी द्वारा मानस पर सरस हृदयस्पर्शी सारगर्भित प्रवचन हुआ। श्रोतागण प्रवचन से मुग्ध थे। अंत में रामायणी जी द्वारा मानसमणि के १२ ग्राहक बनें। —रामलाल साहू

मुजफ्फरनगर :—ता० ३-१२-५७ को श्री सनातन धर्म सभा के हाल में प्रेमियों द्वारा गीता का पाठ हुआ सन्ध्या समय सभा हुई जिसमें गीता के ऊपर प्रवचन आदि हुए। —संवाददाता

डेहरीसरांय :—श्री हरिशंकर जी कोठारी के मकान पर श्रीमानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। शाखा में प्रतिमास की शुक्लपक्ष एकादशी को अखंडपाठ, शाखा का जन्मदिवस वार्षिक उत्सव, तुलसी जयन्ती, श्रीरामजन्म, श्रीहनुमान जयन्ती तथा समयानुसार धार्मिक उत्सव मनाये जाँयगे। — हरीशंकर

ढाँवा :—श्री पं. हरप्रसाद जी "सनेही" द्वारा मानस के भरत चरित्र पर एक हप्ता प्रवचन हुआ। २ मानस संघ की शाखा स्थापित हुई। ग्राम गीधवा में २ दिन तक विवाह प्रसंग पर कथा हुई! — संवाददाता

बड़िगाँव :—संगीत सहित रामायण गान हमेशा होता है। —विनायकप्रसाद

मंगरूलपीर :—ता० ४-१२-५७ से ६-१२-५७ तक श्री डा० कोटी मेडिकल आफिसर के स्थान पर तथा ७-१२-५७ से ८-१२-५७ तक श्री दत्तमंदिर में सुविख्यात रामायणी पं. श्री रामरक्षित जी शुक्ल द्वारा मानस पर बहुत ही सारगर्भित प्रवचन हुआ। जनता ने मुक्त कंठ से प्रभावी प्रवचनों की भूरि भूरि प्रसंशा की। हिन्दी, मराठी सभी भाषा प्रेमी कथा से मुग्ध थे। —एक जानकार

मुकुन्दपुर :—आश्विन नवरात्र में नवाह पाठ तथा अखंड पाठ श्री संकट मोचन के मंदिर में हुआ। कार्तिक कृष्ण १४ को श्रीहनुमान जयन्ती मनाई गई। —रामसुन्दर द्विवेदी

बन्देमऊ :— भाद्रपद कृष्ण ८ को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया गया। भाद्रपद शुक्ल १० को श्री सरदार कुं० अमरसिंह जी कीर्तन भवन में २४ घंटे का कीर्तन, हनुमत पताका पूजन तथा हवन हुआ। श्रावण कृष्ण ८ को मेरे गृह में पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। मूल के कारण मैं उसका दर्शन न कर सका। ६ ठी के दिन वह वी॰ार हुआ। मूल शान्ति हुई। भाद्रपद शुक्ल ३ सायं अचानक शीतांग व नाड़ी क्षीण हो गई, दवा की गई, सफलता न हो सकी। प्रात: काल ४ बजे वह मुक्तिधाम पधार चुके थे। १ माह १० दिन के जीवन में उनके ऐसे लक्षण प्राप्त हुए जिसमें हम उन्हें महापुरुष की ही उपाधि देकर उनका अभिवादन करते हैं। प्राणान्त समय हम वहीं पर थे सभी लोग राम राम कह रहे थे उनके भी मुख से दो वार राम राम शब्द स्पष्ट दीर्घ स्वांस के साथ निकला और आंखे बन्द थी नाड़ी छूट चुकी थी। मुख मुद्रा नहीं बिगड़ी थी। क्या १ माह १० दिन का बालक राम शब्द उच्चारण कर सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है वह भी अंतिम समय में। गोस्वामी जी ने कहा है कि "मरती बार जासु मुख आवा, अधमहु मुक्ति होय श्रुति गावा"। अतः इस प्रकार मृत्यु होने पर भी मुक्ति होने में शंका तो हो ही नहीं सकती है। यही तो महापुरुष हैं जो अपना योग भ्रष्ट समय इस प्रकार व्यतीत करके परमधाम प्राप्त हो जाते हैं।

—राजाराम श्रीवास्तव

नरसिंहपुर:—में श्रीराम चरितमानस यज्ञ सम्मेलन ता० २६--११--५७ से ७--१२--५७ तक श्री 'कंजजी' रामायणी के तत्वावधान में हुआ। नित्य विद्वानों के मानस पर प्रवचन होते थे। जिनमें प्रमुख व्यास श्री ११०८ श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी, श्री ११०८ श्री हरे राम बाबा होशंगाबाद, श्री गिरनारी बाबा अहमदाबाद, श्री प्रेमदास जी रामायणी, श्री बिन्दुजी, श्री प्यारेलाल जी व्यास, श्री श्यामाचरण जी एम. ए., श्री श्रीनाथ जी कलकत्ता, श्री श्यामनारायण जी अजयगढ़, श्री रघुवरानंद ब्रह्मचारी प्रयाग, श्री शारदाप्रसाद जी प्रयाग, श्री हनुमानप्रसाद जी पाठक कर्मकांडी प्रयाग थे। नित्य अपार भीड़ होती थी। पूर्णाहुति के दिन ५० हजार जनता ने भाग लिया। दो हजार ब्राह्मणों को भोजन कराया गया। श्री ११०८ श्री प्रभुदत्त जी ब्रह्मचारी के करकमलों द्वारा पूर्णाहुति हुई। यज्ञ सफल रहा। —संवाददाता

पूर्वी अफ्रिका में धार्मिक प्रवृत्ति

भारतीय संस्कृति की ज्योति पूर्वी अफ्रिका में भारतीय लोगों ने जागृत रखा है और वहाँ धर्म प्रचार चल रहा है। विशेषतः रामायण का प्रचार बहुत ही अधिक हो रहा है। यह प्रवृत्ति प्रशंसनीय है।

१—मोम्बासा में सत्संग-भजन-मंडल है। सत्संगी भाइयों के सहयोग से यहाँ के 'हिन्दू यूनियन गीता भवन' के हाल में भगवान शंकर के सम्मुख श्री रामचरित मानस का नवाह्न-पारायण श्रावण में किया गया था। उस समय सैकड़ों स्त्री-पुरुष प्रतिदिन पाठ में भाग लेते रहे थे।

२—पाठ करने के लिये मंडल के पास लगभग ४०० रामायण की प्रतियाँ हैं। प्रत्येक पाठ करने वाले को ये प्रतियाँ दी जाती हैं। श्रावण में पाठ के समय मंगलाचरण, हनुमान चालीसा, श्रीराम चालीसा का पाठ तथा विधि पूर्वक पूजन भी किया गया।

३—हाल के भीतर सुविस्तृत मंडप बनाया गया था। उसे पुष्प पत्र से सजाया गया था। मंडप में श्रीराम, लक्ष्मण, जानकी जी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित की गई थीं। इनके साथ भगवान शंकर, श्री हनुमान जी, गणेश जी आदि के चित्र लगाये गये थे। सविधि पूजन पंडितों ने कराया और तब पाठ प्रारम्भ हुआ।

४—इस प्रकार का नवाह्न पारायण प्रतिवर्ष श्रावण एवं चैत्र में यहाँ होता है।

५—महोत्सव के अतिरिक्त विशेष प्रेमी बन्धुओं के घरों पर भाद्रपद तथा वर्ष में दूसरे समय ३, ४ बार सामूहिक पारायण होता है।

६—मोम्बासा के समान ही पूर्वी अफ्रिका के अन्य छोटे-बड़े केन्द्रों (भारतीय लोगों के स्थानों) में उत्सव तथा श्री रामायण पाठ धूमधाम से होता है।

७—पूर्वी अफ्रिका के प्रत्येक केन्द्र में प्रत्येक मंडल की ओर से 'सीताराम' यह नाम लिखा जाता है। जप लिखने के लिये कापी दी जाती है। प्रतिवर्ष लगभग २५ करोड़ नाम इस प्रकार लिखे जाते हैं। पूर्वी अफ्रिका के अलग अलग स्थानों में लगभग २५ 'संत्सग-भजन-मंडल' स्थापित किये गये हैं। इस प्रकार प्रत्येक केन्द्रों में नवाह्न पारायण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं रामनाम जप का प्रचार व्यापक रूप में हो रहा है।

८—पूर्वी अफ्रिका में लगभग १० वर्ष पूर्व यह प्रवृत्ति प्रारम्भ हुई। अब तक १ अरब ५० लाख भगवन्नाम लिखा गया है। इसमें से ९६ करोड़ लिखित मंत्र श्रीराम मन्दिर के भूगर्भ में वैदिक विधि पूर्वक तीन दिन की अखण्ड नाम-संकीर्तन-धुन के साथ प्रतिष्ठित किये गये। यह स्थापना नकुरु ग्राम में अगस्त १९५६ को हुई।

विशेष ज्ञातव्य

पूर्वी अफ्रिका में श्री रामायण एवं अनेक धार्मिक प्रवृत्तियों के कार्य को गति देने में यहाँ नकुरु (केनियां) के धर्म धुरंधर भक्तराज श्री हीरजी घेला भाई ने बहुत अधिक प्रयास किया है। उनकी ही प्रेरणा से ये कार्य आगे बढ़े हैं। वे स्वयं रामायण के प्रखर वक्ता हैं। ६५ वर्ष की सुपक्व वयहोते हुए भी वे अपना निजी व्यय करके पूर्वी अफ्रिका के गाँवों में घूम घूमकर श्री रामायण का प्रचार कर रहे हैं तथा श्री रामनाम जप लेखन का सन्देश दे रहे हैं।

प्रतिवर्ष एक बार किसी बड़े केन्द्र में नाम-संकीर्तन-सम्मेलन किया जाता है। उसमें हजारों भाई सम्मिलित होते हैं।

यहाँ मोम्बासा में सत्संगी भाइयों की ओर से ३, ४ स्थानों में रात्रि को डेढ़ घन्टे रामायण की कथा प्रतिदिन होती है। जिनके यहाँ कथा होती है वे ही भाई अन्य कथा प्रेमियों को अपने वाहनों से ले आने तथा पुनः भेजने की व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार उनका निःस्वार्थ सत्संग की सेवा धन्यवाद के योग्य है।

इस प्रकार पूर्वी अफ्रिका में जो श्री रामचरित मानस का प्रचार भली प्रकार हो रहा है, वह भगवान श्रीराम एवं उनके परम भक्त श्री हनुमान जी की ही प्रेरणा एवं कृपा का परिणाम है।

—श्री चुन्नीलाल जेठाभाई भगाणी

तुलसी संग्रहालय में ग्रन्थ संग्रह प्रगति

पहिले जो पुस्तकें संग्रह हुई हैं उनका वर्गीकरण हो रहा है। हो जाने पर विवरण-प्रकाशित होगा। अब नया क्रम प्रारम्भ किया गया है। इसमें हम चाहते हैं कि १००० दाता हमें ५ या अधिक पुस्तकें प्रदान करें। आशा है मानस मणि के ग्राहकों, मानस संघ की शाखाओं तथा अन्य प्रेमियों द्वारा यह संख्या शीघ्र पूर्ण होगी। दाताओं के शुभ नाम इस स्तम्भ में प्रकाशित हुआ करेंगे। प्रथम सूची इस प्रकार है—

१-	श्री पं० रामकुमार पाण्डेय, सतना	३९
२-	,, गौड़ोजी जैन टेम्पल एंड चैरिटीज बंबई	२०
३-	,, जगदीशचन्द जोशी एम. एल. ए. रीवा	८
४-	,, कामतासिंह वकील, सतना	२१
५-	,, बान्धवेश महाराजा साहब, रीवा	१८
६-	,, पं० रामस्वरूप जी पुजारी, जैतहरी	६
७-	,, ठाकुरदीन हीरालाल अग्रवाल, जैतहरी	५
८-	,, निरंजनलाल खंडेलवाल, सतना	८
९-	,, सुदर्शनसिंह जी 'चक्र' रामवन	७

नोट—१—श्री पं० रामकुमार पाण्डेय ने अपने छोटे भाई गत पं० रामस्वरूप शर्मा की स्मृतिमें एक आलमारी श्री जगदीशचन्द जोशी ने अपने पिता पं० भवानी-दत्त जी जोशी की स्मृति में एक आलमारी और श्री कामतासिंह जी वकील ने अपने पिता गत श्री छोटकूसिंह जी की स्मृति में एक आलमारी पुस्तकें प्रदान करने का संकल्प किया है। गौड़ी जी जैन टेम्पल एण्ड चैरिटीज बम्बई की पुस्तकें जैन कक्ष के लिये आई हैं। श्री बान्धवेश महाराजा साहब रीवा की पुस्तकों से रघुराज कक्ष का श्रीगणेश हुआ है।

२—कृपया गीता प्रेस गोरखपुर तथा स्वाध्याय मंडल, पारडी की पुस्तकें न भेजें, इनकी व्यवस्था हो गई है। कल्याण के अंक वर्ष १६ के पूर्व के ही भेजें, इधर के आ गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन समाचार

श्रीमारुति सेवा:—दिसम्बर मास में मानस का एक अखण्ड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में ७०५.६८ की आय हुई और व्यय ४१८.९६ हुआ। नई कुटिया में बहुत दिनों से १४३६.२८ की पूर्ति करना बाकी है इसके लिये अलग से चन्दा होने की कोई आशा नहीं है। अतः इसका जमा खर्च भी इस मास में श्री मारुति सेवा विभाग में कर दिया गया है। इस प्रकार कुल खर्च १८५५.२४ नाम पड़ा हैं। कमी ११४९.५६ की रही। जो पिछली बचत ११५४.०३ में से घटाने पर अब इस विभाग में ४.४७ जमा रहे।

२-१२-५७

२.०० श्री शिवप्रसाद कपूर, पलासूर
३३.०० ,, गोविन्दलाल जायसवाल, कटोरी
५.०० ,, शम्भूदयाल अवस्थी सतना

६-१२-५७

१.२५ श्री एस० पी० लाल, औरंगाबाद
५.०० ,, चन्द्रबहादुरसिंह, सागर

७-१२-५७

२.०० श्री शिवबहादुर, लखनऊ
५.०० ,, ओंमप्रकाश जी, दिल्ली
५.०० ,, सी० पी० शर्मा, खण्डवा

९-१२-५७

५.०० श्री जगन्नाथप्रसाद, मसकनवां
१०.०० ,, राममूर्ति अग्रवाल, भाटापारा
३३०.०० ,, विष्णुलार्ड कं०, नकरू

११-१२-५७

२.०० श्री बालकृष्णदास जाजोदिया, इन्दौर
१.२५ ,, रामरतन शर्मा, झांसी
१.२५ ,, बाबू आनन्द स्वरूप भटनागर, झांसी
१.२५ ,, रामसुन्दर त्रिपाठी, वोविनपल्ली
५.०० ,, हरनारायण जायसवाल, पिपरिया
१६.५६ ,, विष्णु लार्ड कं०, नैरोबी
६६.९४ श्री रामदास सत्संग मंडल मोम्बासा द्वारा सर्व श्री जगजीवनदास विठलानी १५ शि०, चुन्नीभाई भगानी १० शि०, एक भाठिया सज्जन २० शि०, दो बहिन १६ शि०, रामदास भाई २५ शि०, दगंल जी भाई १० शि०, नारायण भाई ५ शि०,

१२-१२-५७

७.०० श्री मातादीन शर्मा, भिण्ड
५.०० ,, अमृतलाल, मेड़ीकोनी

१३-१२-५७

११.०० श्री लखेश्वरप्रसाद सुल्तानियां, खरसिया
७.०० ,, नन्दलाल गुप्ता, गन्धवानी

१६-१२-५७

७.०० श्री सुन्दरलाल तिवारी, इन्दौर
२.०० ,, कल्याणप्रसाद, मनोहरथाना
२.०० ,, रघुवरदयाल सक्सेना, कोटा
५.०० ,, पंचमसिंह, देवरी
१.२५ ,, मनीसिंह, देवरी
२.५० ,, वीरेन्द्रकुमार पाण्डे, वालोद
१.२५ ,, विनायकप्रसाद भट्ट, सिहाउमरिया
१६.०० ,, वृजमोहनलाल पाण्डेय, वनारी

१७-१२-५७

१०.०० श्री महाराज उदयसिंह जी, उदयपुर
११.०० ,, राजकुमार सत्यनारायण चरणशरण-सिंह, उदयपुर
५.०० ,, रानी रतनकुमारी, उदयपुर

१९-१२-५७

५.०० श्री डा० सूरजपालसिंह, ववेरूँ
११.२५ ,, रामकुमार अग्रवाल, कोमाखान
५.०० ,, के० रेणुगोपालन, जबलपुर

२४-१२-५७

१.२५ श्री प्रशान्त, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३.२५ ,, हिरऊराम पटैल, अटंग
१०.०० ,, नारायणप्रसाद शर्मा, डंगनिया
२६-१२-५७
१.२५ श्री बाबूलाल नेमा, नरसिंहपुर
७.२५ ,, गुप्तदान
२७-१२-५७
१२.०० श्री मान राजासाहब, सोहावल
५.०० ,, गनेशप्रसाद व्यास, कटनी
२८-१२-५७
१.२५ श्री प्रेमदास पुजारी, तलवाड़ा
१.२५ ,, उदियाजी गेहलोत, तलवाड़ा
२.२५ ,, गन्नूराम साहू, धीरी
३०-१२-५७
१.२५ श्री सेठ छुट्टनलाल जी, शाहपुर
५.०० ,, मुन्नीलालजी, शाहपुर
१.२५ ,, गोवर्धनप्रसाद, पिसीद
११.२५ ,, शिवप्रसाद कपूर, पलासूर
३१-१२-५७
१.२५ श्री देवगुन साव, पहरिया
५.२५ ,, शाखा तेवर श्री नाथूरा व्यास
१.२५ ,, बालकृष्ण व्यास, शिवराजपुर
१०.०० ,, काकीजी, विलासपुर
१२.९३ ,, चढ़ोत्री

७०५.६८ कुल दाताओं को धन्यवाद

तुलसी संग्रहालय भवन :—इस मास में मध्यप्रदेश सरकार से ६०००.०० तथा प्रेमियों से १२७.२५ कुल ६१२७.२५ रु० प्राप्त हुए। खर्च २३८८.३५ रु० हुआ। बचत ३७३८.९० रु० की रही। इसमें से पिछली कमी २७६५.३४ घटाने पर अब ९७३.५६ जमा रहे।

७-१२-५७
५१.०० श्री रेलूमल नानिकराम, सतना
१५.२५ ,, आरतमल जगतराम, सतना
११.०० ,, श्री परियलदास दानचन्द, सतना
११-१२-५७
५०.०० गुप्तदान

१२७.२५

मानस प्रचार :—इस मास में सदस्य शुल्क से ४४.०० शाखाओं और प्रेमियों से २५.०० और श्री रामनाम लड्डू विभाग से ६२.०५ रुपया कुल १३१.०५ रु० की आय हुई। खर्च पत्रव्यवहार में ६५.२५, कार्यालय में ३.२५ और छपाई में २५७.६२ कुल ३२६.१२ हुआ। कमी १९५.०७ की रही। पिछली कमी १११५.३१ रु० सहित अब १३१०.३८ की पूर्ति करना बाकी रहा। श्री राम नाम लड्डू कुल छपकर आ गये हैं और उनका रुपया भी दिया जा चुका है।

२.०० श्री घनश्यामदास सातूवाला, पेण्ड्रा
१.०० ,, धरमसिंह दानी, अमेठी
५.०० ,, अमेठी शाखा ,,
१.०० ,, पं० उद्धोप्रसाद, ,,
१.०० ,, हीरालाल, ,,
१.०० ,, गोपालसिंह, ,,
१.०० ,, अमानसिंह, ,,
०.७५ फुटकर ,,
५.०० ,, रामनाथ तिवारी, द्वारा शाखा बीना
४.०० ,, जगन्नाथप्रसाद वर्मा, बेलतरा
३.२५ ,, शिवशंकर रामचन्द्र, मसकनवाँ

२५.००

श्री रामनाम लड्डू

दिसम्बर मास में ५९८ लड्डू तैयार हुए। दैनिक क्रम में १५५ लड्डू समर्पण हुए। शेष श्री-रामनाम नौका के लिय रखे गये। केन्द्रों की स्थिति इस प्रकार है :—

सेंधवा ४५१, मोतीहारी ४४४ (१) भाटापारा ३२५, परौंख ३००, जुहिला २०९ (२) महू १६५ (३) डगनिया १५६ (४) हंसुबा २५ (५) नौगाँव ५३ (६) गोरखपुर १६३, (७) जलालखेड़ी ५० (८) बाड़ा (गुल्लू) (९) तलवाड़ा (१०) मण्डी अटेली (११) वाराद्वार (१२) रीवा ३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्तमान परिस्थिति

मानस प्रचार के लिये ही मानस संघ स्थापित हुआ। इसके लिये एक केन्द्र के रूप में रामवन का निर्माण हुआ। रामवन का प्रथम रूप धार्मिक रहा और अब वह सांस्कृतिक और साहित्यिक भी हो गया है।

जो कुछ भी हुआ है वह किसी व्यक्ति या समूह की योजना का परिणाम नहीं है। कहना तो यह भी अनुचित न होगा कि व्यक्तियों और समूहों ने यंत्रवत् ही काम किया है। परिस्थितियाँ उत्पन्न होती गईं और तदनुसार काम होता गया। प्रश्न यह नहीं है कि यह परिस्थितियाँ किसने उत्पन्न कीं। तथ्य यह है कि परिस्थितियाँ उत्पन्न हुईं और हमने इनके अनुकूल ही काम किया और आज भी करते हैं।

वर्तमान परिस्थिति क्या है? रामवन निर्माण क्रम में अनेक विभाग स्थापित हुए और अपना काम पूरा करके रंगमंच से हट गये। अब तीन विभागों में हमारा काम सीमित हो गया है। आज ऐसा मालुम होता है कि यह स्थायी हैं। कल क्या होगा, कैसे कहा जाय।

(१) रामवन की बागडोर श्री मारुति भगवान के हाथ में हैं। उनकी सेवा हमारा कर्त्तव्य है। श्री मारुति रागभोग, अखण्ड पाठ, प्रेमियों की ओर के विविध पाठ, श्री रामनाम समर्पण व विविध उत्सवों द्वारा यह सेवा होती है। इस सेवा तथा आश्रम में रहकर भजन करने वाले साधकों की व्यवस्था आदि का भार श्री मारुति सेवा विभाग पर है।

(२) देश की सांस्कृतिक और साहित्यक-प्रगति में एक बड़ा भाग रामवन लेगा यदि हम तुलसी संग्रहालय की यथेष्ठ उन्नति करें। भवन सम्बन्धी व्यवस्था अभी सर्वथा पूरी नहीं हुई है पर लक्षण ऐसे हैं कि अब हो जायगी। पुस्तकों तथा अन्य सामग्री से इसे परिपूर्ण होना चाहिये।

(३) मानस प्रचार विभाग की स्थिति सन्तोष जनक नहीं है। श्री रामचरित मानस पत्र-व्यवहार विद्यालय भी अब इसका ही अंग है और श्री रामनाम लड्डू की आर्थिक व्यवस्था भी अब इसके ही अन्तर्गत है। 'मानसमणि' तो मानस प्रचार में सहायक है ही।

ये हैं हमारे वर्तमान तीन विभाग। इस वर्ष यह क्षेत्र अकाल ग्रस्त है इससे श्री मारुति सेवा विभाग का भार विशेष बढ़ गया है। मानस प्रचार विभाग को ऋणमुक्त और प्रगतिशील करना है। तुलसी-संग्रहालय के लिये पुस्तक संग्रह का क्रम चल रहा है। वर्तमान कठिनाइयों से हमें मुक्त करने को श्री हनुमान जी ने किन भक्तों को चुना है यह वे ही जानते हैं। हम तो इतना ही जानते हैं कि उन्होंने चुना है अवश्य। दो चार बड़े आदमी तथा बहुसंख्यक छोटी रकम भेजने वाले भक्तों को ही चुना होगा।

—शारदाप्रसाद

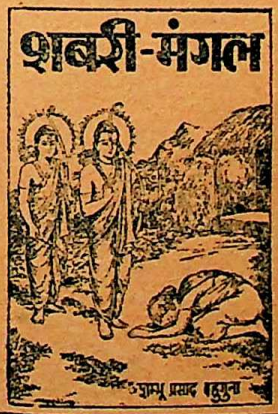

शबरी-मंगल—लेखक- श्री शम्भूप्रसाद जी बहुगुना, एम.ए.डिप-साई

प्राप्ति स्थान—मानस संघ रामवन (सतना) मूल्य ।।।)

बाल्मीकीय रामायण, अध्यात्म रामायण आदि संस्कृत ग्रन्थों में श्री शबरी जी का वर्णन हुआ है, विद्वान लेखक ने सबको इस पुस्तक में एकत्र कर दिया है। साथ ही शबरी चरित की लेखक ने बड़ी मार्मिक व्याख्या की है। शीघ्र मंगा लें।

वार्षिक मूल्य तीन रुपया] विदेश में ६ शिलिङ्ग [वी० पी० से तीन रु० ६५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन के विविध कार्य

१—वर्ष में श्रीरामचरित मानस के दो पाठ करने की प्रतिज्ञा करने वाले सज्जन मानस संघ के सदस्य बनाये जाते हैं। आजीवन शुल्क ॥) है। जहाँ नौ सदस्य हो जाते हैं, वहाँ शाखा बन जाती है। इस समय देश में मानस संघ के ३६५०६ सदस्य हैं और २००६ शाखायें हैं।

२—रामचरित मानस का प्रचार एवं अध्ययन व्यापक करने के लिये यह 'मानस-मणि' मासिक पत्र सोलह वर्ष से निकल रहा है। इसका वार्षिक मूल्य ३) है।

३—तुलसी साहित्य का प्रकाशन मानस प्रकाशन लिमिटेड द्वारा होता है। संस्था २६ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुकी है। स्थायी ग्राहक शुल्क २) है। स्थायी ग्राहकों को प्रकाशित ग्रन्थों पर २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है। यहाँ से कुल ६३ ग्रन्थ छप चुके हैं।

४—श्रीरामचरितमानस - पत्र - व्यवहार विद्यालय द्वारा मानस संघ घर बैठे श्रीरामचरितमानस की शिक्षा देता है। विद्यालय का पाठ्य विषय तीन वर्षों का है और प्रथम वर्ष का शुल्क [illegible]) है।

५—मानस आश्रम में नित्य अखण्ड मानस पाठ होता है। यहाँ रह कर साधक एकान्त में भजन-ध्यान करते हैं।

६—तुलसी संग्रहालय भी रामवन में है।

७—मानस संघ राम नाम लड्डू लिखने का प्रचार करता है। ये लिखित रामनाम श्रीमाताजी को अर्पण किये जाते हैं। ७० करोड़ अर्पित हो चुके हैं।

* हर विभाग में आपका सहयोग अपेक्षित है *

'मानस-मणि'
पो०—रामवन (सतना)

ग्राहक संख्या—७

श्रीमान [illegible]
पो० [illegible]
जिला [illegible]

सम्पादक—पं० तारा शंकर त्रिपाठी। प्रकाशक—श्री दाऊसाहब, मंत्री, मानस संघ, रामवन (सतना)
मुद्रक—नीरज जैन, सुषमा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसमणि

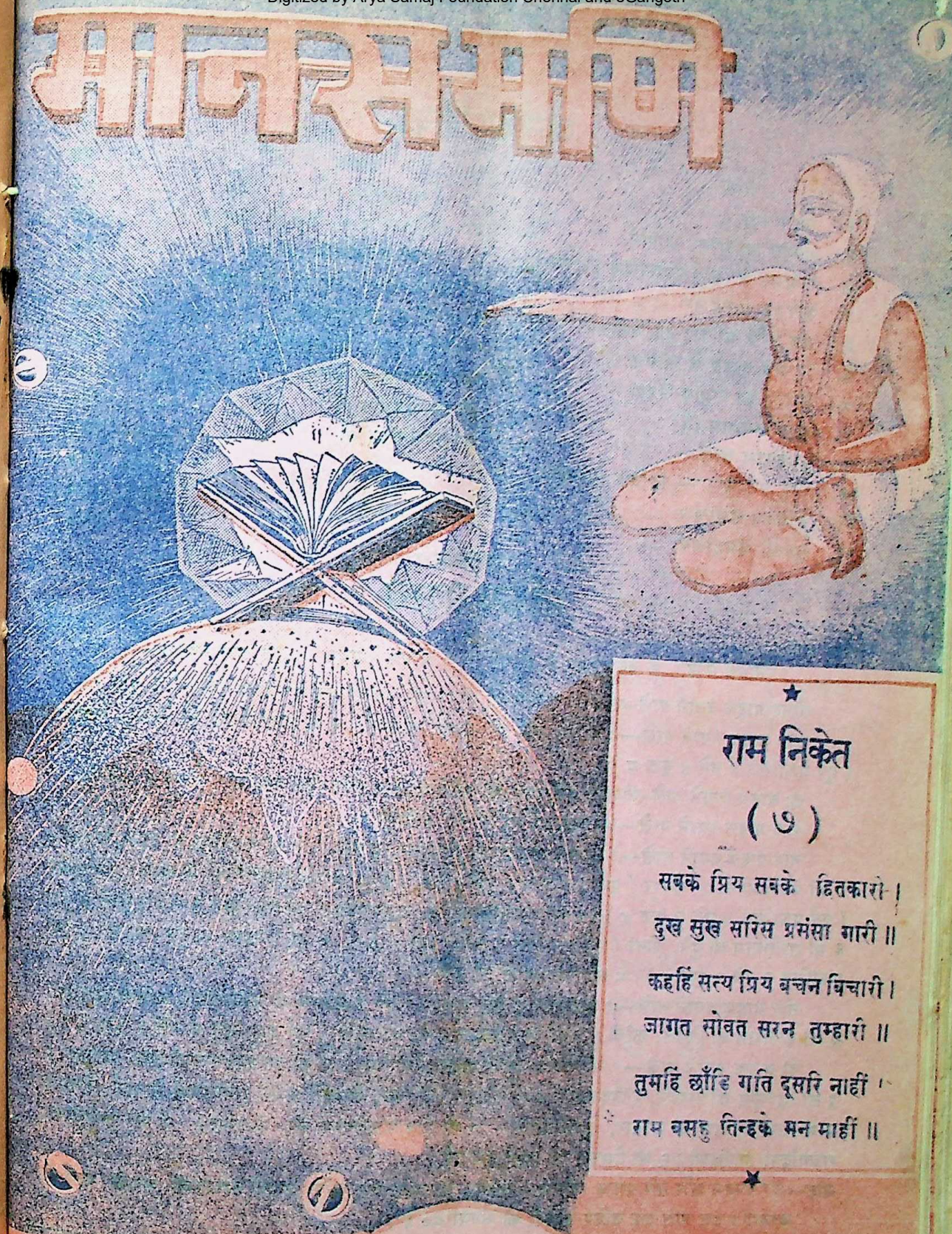

★

राम निकेत

(७)

सबके प्रिय सबके हितकारी।
दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी।
जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
तुमहिं छाँड़ि गति दूसरि नाहीं।
राम बसहु तिन्हके मन माहीं॥

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

नाम	लेखक	पृष्ठ
१. धनुष भङ्ग	(श्री सूरदास जी)	९३
२. मानस का सुन्दर सोपान	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	९४
३. राक्षसराज (४) [धारावाहिक उपन्यास]....	(श्री सुदर्शनसिंह जी) ...	९७
४. हरिहर मनोरंजन	(गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री)	१०१
५. मंत्र शक्ति का अद्भुत चमत्कार	(भक्त श्री रामशरणदास जी)	१०३
६. 'ए सब ताड़न के अधिकारी'	(श्री रघुवीरसहाय जी इंजीनियर)	१०४
७. श्रीराम का राष्ट्रीय संदेश	(श्री मुन्नालाल जी देवासे)	१०७
८. सन्त समागम (६)....	(श्री शारदाप्रसाद जी)	११०
९. पुरुषोत्तम मास	(श्री सुदर्शनसिंह जी)	११३
१०. संघ समाचार — विविध समाचार ...	....	११५
११. रामवन समाचार	....	११८
१२. तुलसी संग्रहालय	....	१२०

सक्रिय सदस्य

"मानस मणि" के सन् १९५८ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य—

सोलह ग्राहक बनाने वाले—श्री पं०रामरक्षित जी रामायणी, बनारी (पूर्व प्रकाशित १३ नये ३ कुल १६)।

आठ ग्राहक बनाने वाले—१ श्री धनाराम जी रघुवंशी, सांकरा। २ श्री बलरायदास जी वैष्णव, तेन्दुवा (पूर्व प्रकाशित ४ नये ४ कुल ८)।

छः ग्राहक बनाने वाले—श्रीमहन्त रोशनपुरी जी गोस्वामी, कोहड़िया (पूर्व प्रकाशित ३ नये ३ कुल ६)।

पाँच ग्राहक बनाने वाले—श्री हरप्रसाद जी त्रिपाठी, सीतापुर।

चार ग्राहक बनाने वाले—१ श्री श्यामलाल जी श्रीवास्तव, ढेरली। २ श्री धरमसिंह जी दानी, अमेठी। ३ श्री पंचम जी साव, चैनपुर (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल ४)। ४ श्री रामदीन जी तिवारी, गुर्जीकला (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल ४)। ५ श्री गोपालकुमार जी, चक्रधरपुर (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल ४)। ६ श्री शालिग्राम जी दुबे, बीना (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल ४)। ७ श्री रामदीन जी दुबे कटनी (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल ४)। ८ श्री दरबारीलाल जी मुंगेर।

तीन ग्राहक बनाने वाले—१ श्री मंशाराम जी, करगा। २ श्री लालचन्द जी वनमोतिया, सालेचौका रोड। ३ श्री सीताराम जी मित्तल, झाँसी। ४ श्री बलदाऊप्रसाद जी, बाराद्वार (पूर्व प्रकाशित २ नये १ कुल ३)।

दो ग्राहक बनाने वाले—१ श्री गोपालदासजी शास्त्री, रायपुरवा। २ श्री द्वारकाप्रसाद जी ब्रा० जितल्दर। ३ श्री शिवमूर्ति जी पाण्डेय, दाऊदनगर। ४ श्री रामदुलारेजी मिश्र, खेरवा। ५ श्री परसरामजी तिवारी, बीना। ६ श्री मातादीनलाल जी मुख्तार, डुमरियागंज। ७ श्री डा० कालीचरण जी, टीटागढ़। ८ श्री गंगासागर राजगढ़िया, मोतीहारी। ९ श्री प्रेमचन्द जी गुप्ता, हमीरपुर।

नोट—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे उनकी नामावली अगले मास दी जायगी। इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ८७ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १७ | रामवन—चैत्र, मानस सम्वत् ३८५—अप्रैल १९५८ ई० | आलोक ४

धनुष-भङ्ग

चितै रघुनाथ बदन की ओर।
रघुपति सों अब नेम हमारौ, बिधि सों करति निहोर॥
यह अति दुसह पिनाक, पिता-प्रन, राघव-बयस किसोर।
इन पै दीरघ धनुष चढ़ै क्यों, सखि! यह संसय मोर॥
सिय-अन्देस जानि 'सूरज' प्रभु, लियौ करज की कोर।
टूटत धनु नृप लुके जहाँ-तहँ, ज्यौं तारा गन भोर॥

—सूरदास जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, एम. ए. डी. लिट्]

चलत मोंहि चूड़ामनि दीन्ही। रघुपति हृदय लाइ सोइ लीन्ही ॥
नाथ जुगललोचन भरि बारी। बचन कहे कछु जनक कुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभु चरना। दीनबन्धु प्रनतारतिहरना ॥
मन क्रम बचन चरन अनुरागी। केहि अपराध नाथ हौं त्यागी ॥
अवगुन एक मोरि मैं माना। बिछुरत प्रान न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन्हि कर अपराधा। निसरत प्रान करहिं हठि बाधा ॥
बिरह अगिनि तनु तूल समीरा। स्वास जरइ छन माहँ सरीरा ॥
नयन स्रवहिं जलु निजहित लागी। जरइ न पाव देह बिरहागी ॥
सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहि कहे भलि दीनदयाला ॥

दो०—निमिष निमिष करुना निधि जाहिं कलपसम बीति।
बेगि चलिय प्रभु आनिय भुजबल खलदल जीति ॥३१॥

"मुझे (माता सीता ने) चलते समय (सहिदानी स्वरूपा यह) चूड़ामणि दी है।"❀ रघुपति ने उसे (अर्थात उस चूड़ामणि को) हृदय से लगा लिया। (हनुमान जी ने आगे कहा) "हे नाथ! दोनो लोचनों में जल भरकर जनक कुमारी ने कुछ वचन भी कहे हैं। (उन्होंने कहा है कि) अनुज के समेत प्रभु के चरण पकड़ना (और कहना कि) हे दीन-बन्धु! हे प्रणतार्तिहरण! मैं तो मन वचन और कर्म से चरणों की अनुरागिनी थी, (फिर) हे नाथ! किस अपराध से मैं त्याग दी गई। मेरा एक अवगुण (अवश्य हुआ है जिसे) मैं मान लेती हूँ (वह यह कि) आपसे बिछुड़ते ही प्राणों ने प्रस्थान नहीं कर दिया। (परन्तु) हे नाथ! वह (इन) नयनों का अपराध है, जो प्राणों के निकल जाने में- उड़ भागने में-हठ पूर्वक बाधा पहुँचा रहे हैं। मेरी देह (सूख कर) रुई बन गई है, स्वास प्रस्वास समीर की तरह-आँधी के झकोरों की तरह-चल रहे हैं, फिर विरह की अग्नि से यह शरीर तो क्षण भर में जल जाता है परन्तु ये नयन अपने हित के लिये-दर्शन लालसा के लिये-जल गिराया करते हैं जिससे यह देह विरहाग्नि में जल नहीं पाती। सीता की अति विशाल विपत्ति (अब आगे) न कही जाय यही ठीक है। आप दीनदयाल हैं (वह दारुण विपत्ति कैसे सुन सकेंगे) हे करुणानिधि! (सीता जी के) पल-पल कल्प (कल्प) की तरह बीत रहे हैं। हे प्रभु! (आप सर्व समर्थ हैं) शीघ्र चलिये और खलदल को भुजबल से जीत कर (माता सीता जी को) ले आइये।"

सुनि सीता दुख प्रभु सुखअयना। भरि आये जल राजिव नयना ॥
बचन काय मन मम गति जाही। सपनेहुँ बूझिय बिपति कि ताही ॥

❀ अँगूठी के संकेतों का जवाब चूड़ामणि के संकेतों में निहित है। (१) यदि प्रभु राम का हाथ उद्धार के लिये बढ़ा है तो वह सीता के सिर माथे है। (२) विरह निवेदन मे चूड़ामणि मानों कह रही है कि सीता जी वियोग वह्नि में दग्ध होकर कोयला और फिर निखर कर हीरा हो गई हैं। (३) विरहिणी के पास अब चूड़ामणि का क्या काम। इसलिये वह अपने सौभाग्य प्रदाता के पास भेजी जा रही है ताकि वह सर्वस्व स्वामी आकर फिर इसे यथा स्थान स्थापित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह हनुमंत विपति प्रभु सोई। जब तव सुमिरन भजनु न होई॥
केतिक बात प्रभु जातुधान की। रिपुहि जीति आनिबी जानकी॥
सुनु कपि तोहि समान उपकारी। नहिं कोउ सुर नर मुनि तनु धारी॥
प्रति उपकार करउँ का तोरा। सनमुख होइ न सकत मन मोरा॥
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं। देखेउँ कर बिचार मन माहीं॥
पुनि पुनि कपिहिं चितव सुरत्राता। लोचन नीर पुलक अति गाता॥
दो०—सुनि प्रभु बचन बिलोकि मुख गात हरषि हनुमंत।
चरन परेउ प्रेमाकुल त्राहि त्राहि भगवंत ॥३२॥

(श्री राम) प्रभु थे और सुख के अयन-घर-भी थे परन्तु सीता का दुँख सुनकर उनके राजीव-नयनों में भी जल भर आया। वह कह उठे "मनसा, वाचा कर्मणा जिसे मेरी ही गति है—(जिसका मुझ में सम्पूर्ण आत्म समर्पण हो चुका है) क्या स्वप्न में भी (उसे) विपत्ति की कल्पना होनी चाहिये।" (वाक चतुर) हनुमान ने कहा "हे प्रभु! (असली) विपत्ति तो वह है जब आपका स्मरण और भजन न हो [इस दृष्टि से तो इस वियोग को असली विपत्ति कहा ही नहीं जा सकता क्योंकि इसमें तो आपका स्मरण और भजन तीव्र हो उठता है। परन्तु हाँ, कर्मणा आत्म समर्पण की जो बात है उसमें कुछ बाधा अवश्य हो रही है। क्योंकि सीता जी रावण के बन्धन में हैं। सो] हे प्रभु! राक्षस की बात ही कितनी है; रिपु को जीतकर जानकी जी को ले आवें।" *

(भगवान् राम कहने लगे) "हे कपि! तुम्हारे समान उपकारी न तो कोई सुर है, न नर है, न मुनि है, न अन्य कोई तनुधारी है। अथवा तनुधारी सुर, नर, मुनियों में से कोई भी तुम्हारे समान उपकारी नहीं हुआ [क्योंकि तुमने बिना किसी प्रतिफल की आशा के इतना दुःसाध्य सेवा कार्य इस खूबी के साथ कर दिखाया।] मैं तुम्हारा क्या प्रत्युपकार करूँ। मेरा तो मन भी तुम्हारे सन्मुख नहीं हो सकता; यह मैंने मन में (अच्छी तरह) विचार कर देख लिया है।" [जिसे कोई कामना ही नहीं है उसे प्रत्युपकार में दिया भी क्या जाय? उसका तो सदैव ऋणी बनकर रहने ही में शोभा है।] सुरत्राता (भगवान राम) कपि को (परम कृतज्ञता भरी दृष्टि से) बार-बार देखने लगे। उनकी आँखों में जल भर आया, शरीर, अत्यंत पुलकायमान हो गया। [भगवान भी अपने भक्त के प्रति मनसा, वाचा, कर्मणा परम कृतज्ञ हो गये।] प्रभु के वचन सुनकर और उनकी मुख मुद्रा तथा गात्र दशा देखकर हनुमान जी हर्ष से गदगद हो गये और प्रेमाकुल होकर "त्राहि-त्राहि भगवन्त" कहते हुए उनके चरणों पर गिर पड़े-लेट गये।

बार बार प्रभु चहहि उठावा। प्रेममगन तेहि उठब न भावा॥
प्रभु-कर-पंकज कपि कै सीसा। सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा॥
सावधान मन करि पुनि संकर। लागे कहन कथा अति सुन्दर॥
कपि उठाइ प्रभु हृदय लगावा। कर गहि परम निकट बैठावा॥
कहु कपि रावनपालित लंका। केहि बिधि दहेहु दुर्ग अतिबंका॥

* स्थल-स्थल पर हनुमान जी के वाक्कौशल की प्रशंसा करनी पड़ती है। बात को कहाँ बढ़ाकर कहना, कहाँ घटाकर कहना, कहाँ घुमाकर कहना यह वे खूब जानते थे। कब कहना और क्या कहना यह एक ऐसी कला है जिसमें निष्णात रहना व्यवहार-कुशल जीव के लिये परम उपयोगी है। हनुमान जी के संभाषणों में यह कला कूट-कूटकर भरी हुई है। 'विपत्ति' की बात को उन्होंने जिस प्रकार घुमाया है वह देखने लायक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना। बोला बचन विगत-अभिमाना ॥
साखामृग कै बड़ि मनुसाई। साखा तें साखा पर जाई ॥
नाँघि सिन्धु हाटकपुर जारा। निसिचर-गन बधि बिपिन उजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछु मोरी प्रभुताई ॥

दो०—ता कहुँ प्रभु कछु अगम नहिं जा पर तुम्ह अनुकूल।
तव प्रभाव बड़वान लहि जारि सकइ खलु तूल ॥३३॥

प्रभु बार-बार (हनुमान जी को) उठाना चाहते हैं परन्तु (हनुमान जी इतने) प्रेम मग्न हैं कि उन्हें उठना पसन्द ही नहीं। प्रभु का कर-पंकज कपि के शीश पर (विराजमान) था। उस दशा का स्मरण करके (पार्वती जी को कथा सुनाने वाले) गौरीश (भी) मग्न हो गये। [कुछ देर के लिये कथा का क्रम स्थगित हो गया होगा। मारुति ठहरे शंकरावतार और शंकरजी ठहरे राम के परम भक्त। प्रभु का कृतज्ञता-विभोर वरदहस्त सिर पर रखा हुआ है, भक्त के लिये इससे बढ़कर अह्लाददायिनी दशा अथवा झाँकी और कौन सी हो सकती है?] फिर मन को सावधान करके शंकर जी अति सुन्दर कथा कहने लगे। [संभव है कथा की इस परम सुन्दरता के कारण भी काण्ड का नाम सुन्दर काण्ड हो गया हो। जिस कथा में भगवान की परम कृतज्ञता और भक्त की परम कृतकृत्यता हो वह परम सुन्दर न हो तो क्या होगी।] कपि को उठाकर प्रभु ने हृदय से लगाया और हाथ पकड़कर अपने परम निकट बैठाया। उन्होंने पूछा "हे कपि! कहो उस लंका को जिसे (स्वतः) रावण पाल रहा था और जो (परम) दुर्गम तथा अत्यंत विकट है अथवा जिसका किला बाँका है—तुमने किस प्रकार जला दिया।" हनुमान ने जाना कि (प्रभु) प्रसन्न हैं—प्रसन्नता पूर्वक पूछ रहे हैं—(इस परिस्थिति में कुछ उत्तर दिये बिना काम न चलेगा अतएव) बिलकुल अभिमान हीन होकर वे बोले—"शाखा-मृग-बन्दर-की सबसे बड़ी बहादुरी इसी में है कि वह एक शाखा से दूसरी शाखा पर (उछल) जाय। (उस शाखामृग ने) जो समुद्र लाँघकर सोने की नगरी जला दी और निशाचरों के समूह को मारकर अशोक वन उजाड़ दिया, वह सब हे रघुराज! आपका प्रताप है। हे नाथ! (उसमें) मेरी कोई प्रभुता नहीं है। हे प्रभु! जिस पर आप अनुकूल हैं उसके लिये कुछ भी अगम नहीं है। यह निश्चित सत्य है कि आपके प्रभाव से रुई (जैसी शीघ्र जल जाने वाली वस्तु भी) बड़वानल (सरीखी उस प्रभावशालिनी अग्नि) को (जो कि समुद्र में रहकर भी नहीं बुझ सकती और समुद्र के जल को ही जलाती है) जला सकती है।†

† हनुमान जी ने अपने कृत्य की सब बातें एक पंक्ति में कह दीं और वह भी इस सामान्यता के साथ कि प्रसंग का कोई विचार न रखा और उसे अपनी निराभिमानता की भावना से एकदम संपुटित कर दिया।

—: श्री 'चक्र' जी की कहानी की पुस्तकें :—

मानस मंदाकिनी (प्रथम हिलोर)	पृष्ठ संख्या ४८	मूल्य ।)॥
मानस मंदाकिनी (द्वितीय हिलोर)	,, ,, ४८	,, ।-)
मानस मंदाकिनी (तृतीय हिलोर)	,, ,, ४८	,, ।-)

प्राप्ति स्थान— मानस संघ रामवन (सतना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राक्षसराज

[श्री सुदर्शनसिंह जी]

(४) दशग्रीव

'कौन-कौन है यह ?' राक्षस श्रेष्ठ सुकेश का मध्यमपुत्र सुमाली आज दीर्घकाल के पश्चात् रसातल से अपनी कन्या कैकसी के साथ पृथ्वी पर निकल आया था। वह नीलाञ्जन पर्वताकार राक्षस अपनी वज्रमुष्टि बांधे प्रज्वलित नेत्रों से गगन की ओर चौंककर देखने लगा था।

'यह प्रदीप्तअग्नि शिखा के समान रत्नजटित विमान और उसकी यह विद्युद्गति !' प्रकाश की रेखा के समान विमान आकाश में एक ओर से आया और दूसरी ओर एक शिखर पर उतर गया। 'हूं—तो यह ऋषि पुलस्त्य का पौत्र है और अपने पिता-पितामह की वन्दना करने आया है।'

'तात ! विमान के तेजसे उसके आरोही का तेज द्विगुण था।' राक्षस कन्या ने इतने शीघ्रगामी विमान में भी उसके आरोही को देख लिया था।

'निकषे ! चलो ! चलो, भवन लौट चलना है।' राक्षस कुमारी कैकसी निकष कृष्णवर्णा थी और इसीलिये उसे प्रायः लोग निकषा कहते थे। उस कन्या ने देख लिया कि उसके महान पिता गम्भीर हो उठे हैं और इस समय वे किसी की कोई बात सुन नहीं सकेंगे। चुपचाप रसातल लौटते पिता का अनुगमन करना था उसे।

❀ ❀ ❀

'एक समय था जब प्रहेति तथा हेति के वंशज पृथ्वीपर स्वच्छन्द विचरण कर सकते थे।' सुमाली रसातल पहुंचकर अपने सौध में सिंहासन पर चिन्तामग्न बैठ गया था। वह अपने आप कुछ कह रहा था—'देवरस भी हम तीनों भाइयों से काँपते थे; किन्तु विष्णु ने सुरों को संरक्षण दिया। विष्णु का चक्र—उस चक्र का कहाँ किसी के पास प्रतिकार है ! हमें पराजित होना पड़ा। विश्वकर्मा निर्मित एवं दानवेश्वर मय द्वारा सज्जित राजधानी लङ्का का त्याग करना पड़ा हमें। विष्णु का चक्र···।' वह इस प्रकार कम्पित हो उठा जैसे अब भी उस ज्वालमालावृत चक्र को प्रत्यक्ष देख रहा हो।

'हमारा रसातल अमरावती से अधिक वैभव-पूर्ण एवं रम्य है तात !' मूर्ति के समान पिता के पार्श्व में स्थित कैकसी अब बोल पड़ी।

'लेकिन हम चोरों की भाँति यहां छिपे रहने को विवश हैं !' सुमाली ने कन्या की ओर दृष्टि उठाई—'तस्करों की माँद में रत्न राशि भी हो तो उसका क्या गौरव ? वत्से ! कर्म भूमि का स्वातन्त्र्य महान है। शक्ति की उद्गम स्थली धरा ही है। हमारे लोक तथा अमरावती भी उपभोग का आवासमात्र हैं। उद्योग का अनुपम आनन्द यहाँ कहीं नहीं है !'

'तात····' लेकिन वह कन्या कुछ कह नहीं सकी। उसके महान पिता ने उसे बोलने नहीं दिया।

'तू नहीं समझेगी वत्से !' वे कह रहे थे—

'कल्पायुषां स्थान नयात्पुनर्भवात् क्षणायुषां भारत भूजयो वरम्' कही यह बात ऋषियों ने है; किन्तु तू जानती है न कि ऋषि वाणी कभी मिथ्या को अङ्गीकार नहीं करती।'

'तब हम भारत में अपना आवास बनावेंगे।' कन्या ने उल्लास पूर्वक कहा।

'विष्णु का चक्र' सुमाली पुनः काँप गया। 'तू उसे भूल जाती है निकषे !'

'तूने उस विमानारूढ़ वैश्रवण को देखा था ?' दो क्षण मौन रहकर राक्षस ने इस प्रकार नेत्र उठाये जैसे उसे कोई मार्ग मिल गया हो। उसका मुख ओजोदीप्त हो उठा था। 'वह तुझे प्रिय लगा ?'

'वह अपने विमान से अधिक तेजस्वी था !'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैकसी ने बिना किसी उल्लास के सूचित किया— 'लेकिन वह देवता जान पड़ता था।' स्वरमें स्पष्ट अमर्ष था।

'केशिनी !' बड़े प्यार का नाम था यह कैकसी का। उसके केश पादतल चुम्बी सुमनोहर थे। माता पिता और दूसरे भी उसे जब बहुत स्नेह से पुकारना होता तो इसी नाम से पुकारते थे। पिता को इस सम्बोधन से ही उसने समझ लिया कि वे उसे अब कोई प्रेम भरी बात कहेंगे। सुमाली ने सचमुच स्नेह पूर्वक कहा—'तू वैसे तेजस्वी पुत्र की आकांक्षा नहीं करती वत्से ?'

'तात !' लज्जा से अरुण हो उठा मुख उस कुमारी का। उसने पिता को उलाहना देती दृष्टि से देखा।

'छिः ! वत्से !' राक्षस खुलकर हँसा—'क्षुद्र मानवों की यह दुर्बलता कहाँ से आई तुझमें ! हम राक्षस सत्य को स्पष्ट स्वीकार करने में न झिझकते और न लज्जा करते। स्त्री के लिये पति के सहयोग की आकांक्षा और पुत्र की प्राप्ति की कामना तो निसर्ग सत्य है। उसमें लज्जा क्या !'

'देख बेटी ! तू अब वयस्का हो गई है। विवाह तेरे लिये अनिवार्य है।' सुमाली ने स्नेह मृदुल स्वर में कन्या के स्कन्ध पर करतल रखकर कहा— 'मैं राक्षस कुलका नायक हूँ। कोई कुलीन युवा मुझसे तेरी याचना का इसलिए साहस नहीं करता कि मैं अस्वीकार कर दूँगा तो उसकी अवमानना मानी जायगी। तू जानती है कि मेरी कन्या का हरण करने का साहस न सुर कर सकते और न असुर।'

कैकसी ने मस्तक झुका लिया था। वह कुछ कहने की स्थिति में नहीं थी। उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आज उसके पिता उससे यह सब क्यों कह रहे हैं।

'तू भारत में रह सकती है। तू उस विमानारोही वैश्रवा के समान तेजस्वी पुत्र पा सकती है। तू अपने पितृ कुल को धरा पर पुनः स्वच्छन्द आवास का अवसर दे सकती है' राक्षस सुमाली ने कन्या की ओर गम्भीर दृष्टि से देखा— 'यदि तू महर्षि पुलस्त्य के पुत्र विश्रवामुनि को वरण करले। वह धनाध्यक्ष कुबेर विश्रवा का ही पुत्र है।'

'मैं आज्ञा पालन करूँगी।' कैकसी ने संकोच पूर्वक कहा। 'देख वत्से ! मैं प्रार्थना नहीं करूँगा। तू जानती है कि किसी से याचना, किसी की प्रार्थना मेरे स्वभाव में नहीं।' सुमाली ने अपनी बात स्पष्ट की— 'मुझे सन्देह है कि मुझे सन्मुख देखकर वे मुनि मेरी कन्या को स्वीकार करेंगे।'

कैकसी ने पिता की ओर देखा। उसके नेत्र पूंछ रहे थे कि उसे क्या करने की आज्ञा है।

'तू स्वयं उनके समीप जा ! तू स्वयं उन्हें वरण कर !' सुमाली ने कन्या का कन्धा हंस कर थपथपा दिया— 'हमारे राक्षस कुल में किसी व्यर्थ आडम्बर या संकोच को सम्मान नहीं दिया जाता।'

'आज्ञा पालन करूँगी तात !' कैकसी शीघ्रता पूर्वक वहां से मुड़ पड़ी।

'बुद्धिमान है मेरी पुत्री !' राक्षस खुल कर हँस पड़ा।

❀ ❀ ❀

गोधूलि की पावन वेला, पक्षियों के कलरव से आकुल तरु शाखायें, मृग अब वृक्षों के नीचे तथा उटज के समीप एकत्र हो चुके थे। दिशा यें यज्ञीय कुण्ड के सुरभित धूम्र से धूसर हुई जा रही थीं।

मृण्मय वेदिका पर आसीन थे महामुनि विश्रवा। क्रोड़ी में पड़े थे विकच पद्म पाणि। पीतान्न जटा यें अब भी स्नानार्द्र थीं। सायं सन्ध्या समाप्त हो चुकी थी। भगवान हव्यवाह आहुति प्राप्त कर चुके थे। मुनिके सुदीर्घ दृग शाम्भवी मुद्रा में ऐसे प्रतीत होते थे जैसे प्रसुप्तोन्मुखपद्म में भ्रमर बन्दी हुये स्थिर हो गये हों।

'भद्रे ! कौन हो तुम ?' पता नहीं कब एक निकष कृष्णा, कमललोचना, सर्वाङ्ग सुन्दरी किशोरी महामुनि के वामपार्श्व में समीप आकर खड़ी हो गई थी आगत रजनी की अधिदेवता के समान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यानोन्मीलित दृग उन्निद्र हुये और उस अवाङ्मुखी बाला को देखकर मुनि ने पूंछा—'इस कानन में तुम रात्रिमुख में कैसे उपस्थित हुई।'

'आप सर्वज्ञ हैं स्वामी!' स्वर ने कोकिल की काकली को लज्जित कर दिया था—'मैं पिता की आज्ञा से श्री चरणों में उपस्थित हुई हूँ और मेरा नाम कैकसी है। शेष ज्ञात कर लेने में आप समर्थ हैं।' वह अपने मृदुल पदाङ्गुष्ठ से अवनि कुरेद रही थी।

'अनवसर में आई शुभे!' मुनिके दृग दो क्षण के लिये पलकों के आवरण में रहे और पुनः उस नभिताननना बाला से वे तपोधन बोले—'तुम संतान की कामना से मेरे समीप आई; किन्तु यह घोर प्रदोषकाल है। मैं तुम्हारी वाञ्छा तो पूर्ण करदूँगा, किन्तु तुम्हारे पुत्र प्राणियों को पीड़ित करने वाले उग्रस्वभाव के होंगे।'

'नाथ!' कैकसी के नेत्रों में भय के भाव थे।

'प्रदोष भगवान रुद्र का काल है और वे विनाश के अधिदेवता हैं।' मुनिने समझाया—'तुम इस घोर काल में आई हो। नियति को अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। तुम्हारी सन्तान सृष्टि में भय एवं विनाश का विस्तार करने वाली होगी।'

'आप जैसे लोक वंद्य स्वामी से ऐसी सन्तति' वह कुमारी अत्यन्त आकुल हो उठी थी—'मैं आपकी शरणापन्ना हूँ। मुझपर अनुग्रह करें नाथ!'

'तुम्हारे पितृकुल को मैं तीन दैहित्र दे सकूँगा।' मुनि ने आश्वासन दिया—'उनमें एक भगवद् भक्त, साधुशील, लोक नमस्कृत होगा।'

'मैं कृत कृत्य हुई!' कैकसी ने मुनि के चरणों पर मस्तक रख दिया।

❀ ❀ ❀

'कैकसी कहाँ है मातः?' सुमाली की दूसरी कन्या ने अपनी बहिन को बहुत ढूंढ़ा। जब वह कहीं नहीं मिली तो उसने अपनी माता से प्रश्न किया।

'मुझे ज्ञात नहीं वत्से!' राक्षसों की महारानी केतुमती ने अपनी कन्या को बताया—'तू अपने पितृपदों से पृच्छा कर।'

'तात! निकषा कहाँ है?' वह राक्षस कन्या चपलता पूर्वक पिता के समीप पहुँच गई।

'उसे अब इस नाम से मत पुकार! केशिनी कह उसे।' सुमाली ने पुत्रीको तनिक झिड़कते कहा—'वह राक्षस कुल को विपत्ति से त्राण देगी।'

'लेकिन वह है कहां?' सुबक्षा का कौतूहल बढ़ गया था।

'भगवान मरीचिमाली के समान तेजस्वी विश्रवा मुनि को उसने वरण कर लिया है।' सुमाली ने कुछ सोचकर स्नेह पूर्वक कहा—'तू भी यदि उसकी सपत्नी बन सकती।'

'सेविका तो बन ही सकती हूँ।' सुबक्षा सहसा गम्भीर हो गई। वह वहां से धरा के मार्ग की ओर चल पड़ी।

'कृतार्थ हो कन्यके!' सुमाली ने हृदय से आशीर्वाद दिया।

❀ ❀ ❀

'शुभे! शयन नहीं किया तुमने?' महामुनि विश्रवा निद्रा से जागृत हो गये। उन्हें आश्चर्य हुआ कि उनकी अन्तर्वर्त्नी पत्नी इतनी रात्रि गए उनकी चरण सेवा क्यों कर रही है।

'मैं उनकी अनुजा हूँ स्वामी!' मन्द एवं विनम्र स्वर सुनाई पड़ा—'निद्रा में व्याघात का अपराध क्षमा करें!'

'साधुशील, भगवद् भक्त पुत्र तुमने अपना भाग बना लिया।' मुनि ने अब जानलिया था कि यह उनकी पत्नी नहीं; किन्तु पत्नी बनने ही आई पत्नी की अनुजा है। वे उसकी विनम्रता एवं सेवा से सन्तुष्ट हो गये थे।

'यह रोदन ध्वनि!' अल्पकाल पश्चात् उटज से किसी के रुदन का उच्चस्वर सुनाई पड़ा। मुनि अपने आसन पर उठ बैठे। सुबक्षा दौड़ती हुई उटज में पहुँची।

'आपको पुत्र प्राप्ति हुई!' दो क्षण में ही मुनि विश्रवा उटज में पहुंच गये। उन्होंने सुबक्षा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार देकर शीघ्रता पूर्वक उटज में जाते देख लिया था।

नीलाञ्जनघन, बिंशतिबाहु, दसमस्तक-अद्भुत शिशु था वह। अत्यन्त रौद्र, बड़ा भयानक और घोर स्वर में वह रुदन कर रहा था। रात्रि में भी दिशायें उस समय प्राणियों के आर्तनाद से पूर्ण हो गई थीं।

'दशग्रीव' महर्षि ने उस बालक को देखकर उसका नाम करण कर दिया।

'यह कुम्भकर्ण!' चतुर्थ प्रहर से पूर्व ही कैकसी के गर्भ से एक और पुत्र हुआ। इतना दीर्घ काय पुत्र कि सृष्टि में उसकी समता नहीं थी। उसके कुम्भाकार कर्णों को देखकर विश्रवा जी ने उसका नाम करण किया था। कैकसी के एक कन्या भी हुई सूर्पणखा।

आप भूलेंगे नहीं कि राक्षस उपदेव जाति है। राक्षसियाँ गर्भ धारण करते ही सन्तान को जन्म दे देती हैं और भगवती उमा ने बरदान दे रखा है कि उनके पुत्र उत्पन्न होते ही माता की अवस्था प्राप्त कर लें। उसी रात्रि ब्राह्ममुहुर्त में सुबक्षा को भी एक पुत्र प्राप्त हुआ। वे ही थे महाभागवत विभीषण। ❀

❀ 'भयउ विमात्र बन्धु लघु तासू।'

प्रतिष्ठा दशाब्दि

रामवन के श्री मारुति भगवान की प्रतिष्ठा अक्षय तृतीया सं० २००५ को हुई थी। आगामी अक्षय तृतीया मंगलवार तारीख २२-४-५८ को दस वर्ष पूरे हो जाँयगे। इस उपलक्ष में कुछ विशेष सेवा पूजा करना उपयुक्त होगा. प्रति वर्ष श्री रामार्चा होती आई है वह तो होगी ही. प्राण प्रतिष्ठा के समय नौ करोड़ श्री रामनाम समर्पण किये गये थे. इस वर्ष इससे कम न समर्पण होने चाहिये. ९०९०९९०९ नाम की नौका म १६५०५ लड्डू लगते हैं. इस समय यहाँ ६५७९ संग्रहीत हैं. प्रायः १०,००० की कमी है. केन्द्रों तथा व्यक्तिगत लेखकों को मिलकर यह संख्या पूर्ण करनी चाहिये.

प्रतिष्ठा के समय १०८ पाठ श्री हनुमान चालीसा के हुये थे. हमारा सुझाव है कि दशाब्दि में ४० माला पाठ हो. उद्योग किया जाय कि १२ घण्टे अखण्ड पाठ भी हो. उस बार मानस का एक एकाह पाठ हुआ था. इस बार १० एकाह पाठ हों और सौ सौ पाठ सुन्दरकाण्ड तथा किष्किन्धा काण्ड के भी हों. १२ घन्टे का अखण्ड संकीर्तन भी किया जाय. शृंगार तथा प्रसाद की विशेष व्यवस्था तो करनी ही चाहिये.

प्रेमियों के पूर्ण सहयोग बिना यह सब कार्य सम्पन्न नहीं किये जा सकते हैं. सुविधा इसमें ही होगी कि हम वैशाख शुक्ल १ रविवार तारीख २०-४-५८ को उत्सव प्रारंभ करें और श्री जानकी नवमी २८-४-५८ को पूर्ण करें. हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक प्रेमी जन आकर इस उत्सव में भाग लें. जो प्रेमी आवेंगे उनकी भोजन आदि की सेवा आश्रम करेगा ही.

अक्षय तृतीया को किये गये पुण्य दान आदि का फल अक्षय तो होता ही है इस बार रोहिणी योग के कारण वह अधिक भी होगा. परशुराम जयन्ती तो उसदिन है ही.

—शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरि हर मनोरंजन

[गोस्वामी महन्त रोशनपुरी वैद्य शास्त्री कोहड़िया मुंगेली]

गीध अजामिल केवट व्याध, जो कीन्ही न प्रेम से भक्ति तिहारे।
बात सुनाई यही पड़ती कि, इन्हें भवसागर आप उबारे॥
क्या यह बात है सत्यहरे, या प्रचार ही मिथ्या हुआ है तुम्हारे।
'रोशन' द्वारहिं द्वार फिरै, तुम सोवत शेष पै पैर पसारे॥

अन्तु बाष्छति शाम्भवो गणपते, राखुं क्षुधार्ता फणी।
तं च स्कन्ध शिखी तथा गिरिसुता, सिंहोपि नागाननम्॥
गौरी जह्नु सुता मसूयति कलौं, दोषो ललाटेऽनलः,।
निर्वीण सः पपौ कुटुम्ब कलहा, दीशोऽपि हालाहलम्॥

एकः पुत्रस्त्रिभुवन विजयी, मन्मथो दुर्निवारः।
एकाभार्या प्रकृति चपला, चंचला सा द्वितिया॥
शेषो शय्या गृह मुदधो, वाहनं पन्नगारिः।
स्मारं स्मारं स्वगृह चरितं, दारु भूतो मुरारिः॥

उपरोक्त श्लोक मुझे श्री श्री १०८ श्री उत्तराखण्ड निवासी पं० पूर्णानन्द जी ज्योतिर्विद से प्राप्त हुआ है। इसी का भावार्थ कवित्त सवैया की तुकबन्दियों में करने का साहस यह सेवक करता है।

बात एक समय की है कि श्री विष्णु भगवान गरुड़ पर सवार हो भगवान शंकर के दर्शनार्थ कैलाश पर्वत पर पधारे। आदर स्वागत तथा योग्य शिष्टाचार के पश्चात भगवान विष्णु, शंकर जी के दुबले पतले शरीर को देख [जो समाधि लगाने के कारण हो जाया करता था] बोले—

एक बार हर सो मिलन हेतु श्री हरि,
बैठ पन्नगारी पै कैलास को पधारे हैं।
अतिक्षीण शंभु को शरीर देख पूछे हरि,
नाथ कृशता का क्या कारण बिचारे हैं॥
कुटुम्ब कलह नाथ कृश कियो मेरो देह,
जिसे दूर करने में आप भी लचारे हैं।
हरि हँस उठे सुन हर की विनोद वाणी,
कहो कौन कारज जो कठिन विचारे हैं॥

तब श्री शंकर जी अपना कुटुम्ब कलह इस प्रकार सुनाने लगे—

बाहन सिंह जो पारवती,
मम बाहन बैल को चाहत खावन।
मोरहिं सर्प औ सर्पहिं मूषक,
आपुस में चहैं बैर सघावन॥
अग्नि जो मस्तक मेरे प्रभू,
अति शीघ्रहिं चाहत चन्द्र नसावन।
जन्हु सुता अरु पारवती,
नित सौत के रार पड़ो समझावन॥
दिन रात इसी दुविधा में प्रभो,
है मैंने हलाहल पान किया।
पर भाग्य ही मेरा था फूटा हुआ,
विष ने भी मुझे नहिं मृत्यु दिया॥
करो कष्ट निवारण शक्ति लगा,
तुम और करो न मुझे दुखिया।
सुन शम्भु दशा हरि बोले हरे,
अब कष्ट हमारो भी धारो हिया॥

श्री शंकर जी बोले! प्रभु सबसे प्रथम दुख तो मुझे यह है कि पार्वती जी का वाहन सिंह मेरे बैल को भोग लगाना चाहता है। तब तो मैं बाहन विहीन हो जाऊँगा। यही नहीं वह सिंह हाथी समझ कर गणेश को भी खाना चाहता है।

दूसरा दुख मुझे यह है कि गणेशजी के बाहन चूहे को मेरे गले का सर्प भक्षण करना चाहता है। तो बताइये प्रभु? बिना वाहन वह मोटा स्थूल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर वाला चल फिर कैसे सकेगा। तीसरा दुख मुझे यह है कि मेरे गले के सर्प को स्वामिकार्तिक का वाहन मयूर खाना चाहता है। प्रभु मैं तो भूषणहीन हो जाऊँगा। मेरा तो यही भूषण है।

चौथा दुख मुझे यह है कि मेरे मस्तक की अग्नि चन्द्रमा को नष्ट करना चाहती है। और चन्द्रमा के नष्ट होने से मैं हलाहल की उष्णता से व्यथित हो जाऊँगा।

पाँचवां दुख तो अवर्णनीय है प्रभु ! गौरी और गंगा के झगड़ों का निर्णय (फैसला) दिन में कई बार करना पड़ता है।

इन्हीं दुखों के कारण मैंने हलाहल का पान किया था। परन्तु तकदीर फूटी निकली; उससे भी मृत्यु नहीं हुई। कहिये क्या आप मेरे इन कष्टों को दूर कर सकते हैं ?

श्री शंकर जी का कष्ट दूर करना तो दूर रहा श्री विष्णु जी शंकर जी से कई गुनी अधिक दुख की मुद्रा प्रदर्शित करते हुये बोले—

क्या बताऊँ शंकर जी ? मेरा कष्ट तो आप से कहीं बड़ा है।

प्रद्युम्न पुत्र से त्राण नहीं,
वह चाहत विश्व विजय करने।
स्त्री दशा अति चंचल है,
जिसे नित्यहिं वानि पड़ी फिरने ॥
बास समुद्र के भीतर हैं,
वह चाहत नित्य मुझे बहने।
वाहन हाल सुनो हर जी,
मुझे दुखहिं होत जिसे कहने ॥
बीचहि में खुजली उठी कहूँ गरुड़ की देह।
खुजलाने कहुँ भिड़ गया सहित नेम अरु नेह ॥
पके आम सम गिर पड़ूं 'रोशन' भेष कुभेष।
काष्ठ रूप धारण करूं रहूं उड़ीसा देश ॥

पुत्र प्रद्युम्न जो कामदेव का अवतार है वह अपने पुष्पों के धनुष बाण से विश्व-विजय करने की कामना रखता है। कहाँ तक कहा जाय वह अपने धनुष बाण का शिकार (आखेट) मुझे भी बना लेता है। स्त्री की दशा अति चंचल है। कभी चार दिन ब्राह्मण गृह, कभी चार दिन भंगी गृह, तो बताइये प्रभु ? जिसकी स्त्री घर घर घूमनेवाली हो उसकी प्रतिष्ठा ही क्या है ? वास स्थान तो अति दुखदायी समुद्र के अन्दर है जो अपने तीव्र वेगों से मुझे नित्य बहाने का प्रयास करता रहता है।

वाहन का हाल तो अवर्णनीय है। कहीं गरुड़ पर सवार हो कर चला और बीच रास्ते में गरुड़ को खुजली उठी तब वह अपने नियमानुसार पंख समेट कर चोंच एवं पैर द्वारा खुजलाना प्रारम्भ करेगा। तब अपने राम तो पके आम के सदृश नीचे टपक पड़ेंगे।

मैं इन कष्टों से उकता गया हूँ। अतः गृहस्थी त्याग कर उड़ीसा में काष्ठरूप धारण करूंगा।

भक्त और उनके भगवान की जय

बाल्मीकि तुलसी भये (नाटक)— लेखक- डा० भगवानदास सफड़िया, प्रकाशक-मानस प्रकाशन लिमिटेड रामवन (सतना). पृष्ठ संख्या ११६ मूल्य ।।।)

महर्षि बाल्मीकि को क्यों तुलसीदास जी के रूप में प्रगट होना पड़ा इसकी बड़ी ही मार्मिक एवम् भव्य कल्पना लेखक ने प्रस्तुत की है। अवश्य पढ़िये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र-शक्ति का अद्भुत चमत्कार

(एक दंडी सन्यासी की जबानी अपनी आँखों देखी सत्य कहानी)

[प्रेषक—भक्त श्री रामशरणदास जी]

अभी कुछ दिन की बात है कि हमारे स्थान पर परमपूज्य दंडी सन्यासी श्री स्वामी श्री सनातन देवाश्रम जी महाराज पधारे थे और कृपाकर दो तीन दिन ठहरे थे। एक दिन स्वामी जी महाराज से सत्संग के बीच में श्री रामायण जी में श्री राम नाम महिमा, [मंत्र शक्ति] के सम्बन्ध में प्रसंग चल पड़ा और प्रश्न किया गया अपने जीवन में अपनी आंखो से मंत्र शक्ति का कोई चमत्कार देखा है जिस से श्री नाम महिमा सत्य सिद्ध हो ?

स्वामी जी–हाँ हाँ हमने देखा है और हजारों मनुष्यों ने देखा है।

प्रश्न–कैसे देखा है महाराज ?

स्वामी जी महाराज ने कृपा कर अपने आँखो देखी बिल्कुल सत्य घटना सुनाते हुये कहा–

यह सन् १९२७–२८ की बात होगी। हम उन दिनों जिला उन्नाव में ही रहा करते थे। उन्नाव के बाबूगंज मोहल्ले में एक मुसलमान रहा करता था। एक दिन उस मुसलमान को एक काले बिषैले सर्प ने काट लिया जिससे उसकी तत्काल मृत्यु होगई। उस मुसलमान के घर वालों ने बड़े बड़े डाक्टरों हकीमों से उसका इलाज कराया पर उसे कोई लाभ नहीं हुआ और वह बच नहीं सका। अंतमें उसके घर वालों ने बिल्कुल निराश होकर उसे मुसलमनी प्रथा के अनुसार कब्रिस्तान में लेजा कर दफना दिया। दो तीन दिनों के पश्चात् यकाएक एक बंगाल का हिन्दू बंगाली साधु विचरता हुआ उन्नाव में आ निकला। वह बंगाली हिन्दू साधु मंत्र शक्ति में बड़ा प्रवीण था। वह साधु बड़ा त्यागी, तपस्वी और निर्लोभी था। अकस्मात् जिधर सर्प से डसे हुये मुसलमान की कब्र थी उधर वह भी जा पहुँचा और उसने जो बिल्कुल ताजी कब्र देखी तो किसी से पूछा कि यह किसकी कब्र है और यह कैसे मरा है ? उसने बताया कि महाराज! यह जिस मुसलमान की कब्र है उसे अभी दो तीन दिन हुये सर्प ने डस लिया था इसी से यह मरगया। बंगाली साधु ने कहा कि यदि इसे सर्प ने काटा है तो हम इसे जिला देंगे तुम हमारे पास इसके घर वालों को बुला कर लाओ। वह आदमी गया और उसके घर वालों को अपने साथ बुलाकर ले आया। जब घर वालों ने साधु के मुख से यह सुना कि वे इसे जिन्दा कर देंगे तो उन्हे बड़ी प्रसन्नता हुई। साधु ने घर वालों को आज्ञा दी कि तुम कब्र खोद कर मुर्दे को हमारे सामने लावो। आज्ञा की देर थी। झटसे घर वालों ने कब्र खोदा और मुर्दे को निकाल कर ले आये और लाकर साधू के सामने लिटा दिया। अब तो दर्शकों का तांता लग गया और जिस किसी ने भी सुना वही इस अद्भुत आश्चर्यजनक चमत्कार को देखने के लिये दौड़ पड़ा। बड़ी भीड़ होगई। किसी को भी यह विश्वास नहीं होता था कि तीन दिन का मरा हुआ मुर्दा जीवित हो जायगा। बंगाली साधु ने उस सर्प से काटे हुये मुसलमान की लाश को देखा तो उसकी पीठ में तीन दिन मिट्टी में दबे रहने के कारण दीमक लग गई थी। उसका शेष सारा शरीर बिल्कुल ठीक था! उन्होंने मुसलमान की लाश को अपने सामने रक्खा और मिट्टी की डलियाँ अपने हाथों में लेकर मंत्र पढ़ना प्रारम्भ किया। और मंत्र पढ़ पढ़कर उन डलियों को शव के ऊपर फेकने लगे। सब लोगों ने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि कुछ देर पश्चात् ही वह मुसलमान जीवित हो गया. यह आश्चर्य जनक घटना देखकर सभी दंग रह गये.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ए सब ताडन के अधिकारी'

[श्री रघुवीर सहाय जी इञ्जीनियर]

यह चौपाई रामचरित मानस में एक बहुत आक्षेप का विषय बन गई है-स्त्री समाज में इसको एक बहुत ही बड़ा लांछन माना गया है। श्री तुलसीदास जी के ऊपर इस चौपाई को लिखने के कारण स्त्री समाज का विशेष कोप है। यहां तक कह डाला गया है कि तुलसीदास जी ने कभी अच्छी स्त्रियों का सत्संग नहीं किया, इसी से उनके विचार स्त्री समाज के लिये बहुत ही कटु हैं। अतएव इस विषय पर यह विचार आवश्यक है कि भक्त शिरोमणि श्री तुलसीदास जी ने जहां सीता, कौशल्या, सुमित्रा तथा मन्दोदरी आदि महान स्त्रियों के चरित्र इतनी सुन्दरता से वर्णन किये हैं और उनको इतना महान और अनुकरणीय अंकित किया है, वह सब स्त्री समाज के लिये ऐसा विचार कैसे लिख सकते थे।

मैं इस चौपाई को कविवर तुलसीदास की एक अनुपम देन मानता हूँ- जिस विषय को संसार के महान से महान कवि सूक्ष्म दृष्टि से नहीं देख सके हैं श्री तुलसीदास ने उस विषय को इस एक छोटी सी चौपाई में रख कर स्त्री समाज को एक बहुत बड़ी शक्ति प्रदान करदी है। आशा है कि इस चौपाई को एक नवीन दृष्टि कोण से देख कर स्त्री समाज की कविवर तुलसीदास के विषय में जो भ्रान्ति फैली हुई है चली जायगी।

यह चौपाई समुद्र ने श्री राघवेन्द्र से कही है। श्री राघवेन्द्र जब तीन दिन तक समुद्र से विनय करके हार गये और समुद्र ने उनको जानेका मार्ग नहीं दिया तो उन्होंने लक्ष्मण जी से धनुष बाण मांगा और धनुष पर बाण को चढ़ा लिया। तब भयभीत होकर समुद्र ने प्रभु के चरण पकड़ लिये और कहा—

समय सिंधु गहि पद प्रभु केरे।
छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥
गगन समीर अनल जल धरनी।
इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी॥
तव प्रेरित माया उपजाए।
सृष्टि हेतु सब ग्रन्थनि गाए॥
प्रभु आयसु जेहि कहँ जस अहई।
सो तेहि भाँति रहे सुख लहई॥
प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही।
मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्ही॥
ढोल गंवार सूद्र पसु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥

पहिले समुद्र अपने आपको 'जड़' में गिनती कराता है क्योंकि गगन समीर अनल जल धरनी इन सब की करनी जड़वत है; परन्तु प्रभु की माया से प्रेरित होकर यह सब सृष्टि के हेतु बन जाते हैं अथवा 'जड़' भी प्रभु की कृपा से कुछ कार्य करने में समर्थ हो जाता है। किसको क्या करना है; क्या किसका कर्त्तव्य है, क्या मर्यादा है, क्या अधिकार है, यह सब हर पदार्थ के चाहे वह जड़ ही क्यों न हो प्रभु ने नियत कर रखे हैं। अतएव प्रभु ने ही समुद्र की मर्यादा, समुद्र का कर्त्तव्य, समुद्र का अधिकार नियत किया है। अब समुद्र अपने अधिकार की विवेचना करता है—

इस विषय को समझने के लिये कर्त्तव्य और अधिकार का भेद जानना आवश्यक है। यह दोनों शब्द बड़े महत्व के हैं। दूसरे के कर्त्तव्य को अपना अधिकार समझ लेना और दूसरेके अधिकार को अपना अधिकार मान लेने में ही संसार का सारा संघर्ष छिपा हुआ है। उदाहरण के लिये मान लीजिये कोई मेरे घर आता है, मेरा कर्त्तव्य है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिष्टता के नाते उसका खड़े होकर स्वागत करूं; परन्तु यदि आने वाला इसको अपना अधिकार मान ले और यदि मेरे खड़े होकर स्वागत न करने पर वह अपने आपको अपमानित समझे तो यह उसकी भूल है और वह मेरे कर्त्तव्य को अपना अधिकार समझने लगता है यही भ्रम है। इसी प्रकार यदि मैं दूसरे के घर जाता हूं वह मुझ को पान इलायची देकर मेरा स्वागत करता है तो वह अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है। इस पान इलायची को अपना अधिकार मान कर यदि मैं सर्वदा यह आशा करूँ कि मुझको वह पान इलायची देकर मेरा स्वागत करेगा क्योंकि यह मेरा अधिकार है तो यह भ्रम है। मैंने उसके कर्त्तव्य को अपना अधिकार मान लिया है।

मां बाप का कर्त्तव्य बच्चों को ताड़ना (शिक्षा) देना अथवा ठीक रास्ते पर लाने का है यह उनका कर्तव्य है अधिकार नहीं है। जो मां बाप बच्चों को मारने, डाटने को अपना अधिकार मान लेते हैं वह भूल करते हैं। यदि वह बच्चों को बुरे रास्ते पर चलने से नहीं रोकते वे अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते हैं। पर यह शिक्षा पाने का अधिकार बच्चों का है। यदि मां बाप बच्चों को उलटे रास्ते पर चलने से नहीं रोकते हैं तो बच्चा कह सकता है कि मुझको मेरा अधिकार नहीं दे रहे हैं। एक कहानी है कि एक मनुष्य को उसकी माँ ने बचपन में चोरी करने से नहीं रोका था। जब बड़ा होकर वह जेल में गया और मां उससे मिलने गई उसने मां का कान काट लिया और कहा कि यदि तू ने मुझको बचपन में रोका होता तो मेरी बुरी आदत न पड़ती। माँ ने अपने कर्तव्य का पालन न करके बच्चों को उसका अधिकार नहीं दिया।

ठीक इसी प्रकार राज्य तथा नागरिक का सम्बन्ध है जहां राज्य के नागरिक के ऊपर कुछ अधिकार हैं, वहां उसके कुछ कर्तव्य भी हैं। नागरिक राज्य से कह सकता है, जहां मेरे नागरिक होने के नाते कुछ कर्तव्य है वहां मेरे कुछ अधिकार भी हैं। मैं राज्य से कह सकता हूँ कि मेरी रक्षा का, मेरी शिक्षा का, मेरे स्वास्थ्य का उत्तरदायित्व राज्य के ऊपर है फिर यदि मैं कुमार्ग की ओर जा रहा हूँ मुझको सन्मार्ग की ओर लाना भी राज्य का कर्तव्य है। यदि राज्य इनका प्रबन्ध नहीं करता है तो नागरिक कह सकता है कि मुझ को मेरा अधिकार प्राप्त नहीं हो रहा है।

इसी प्रकार एक पशु जिसकी बागडोर चलाने वाले के हाथ में है और वह पशु अपने कर्तव्य का पालन करता हुआ चल रहा है, यदि आगे एक गड्ढा आता है और पशु के उसमें गिरने का भय है परन्तु पशु सावधान नहीं है, वह उसी ओर जाना चाहता है तब यदि चलाने वाला बागडोर खींच कर अथवा बल प्रयोग करके पशु को उस ओर जाने से नहीं रोकता तो वह अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता और पशु को उसका अधिकार नहीं देता है।

परन्तु यह सब अधिकार उस समय ही प्राप्त होते हैं जब कोई अपने आपको पूर्णतया समर्पित कर दूसरे के अनुशासन पर छोड़ देता है। एक बच्चे को ताड़ना अथवा शिक्षा पानेका माता पिता से अधिकार उस समय ही प्राप्त होता है जब वह माता पिता के अनुशासन में रहना स्वीकार करता है। एक उद्दंड बालक को जिसके हृदय में माता-पिता के प्रति कोई श्रद्धा नहीं है; कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। इस प्रकार एक नागरिक को राज्य के प्रति अधिकार उस समय ही प्राप्त होते हैं जब वह राज्य के विधान को और राज्य के नियमों को पालन करता है एक चोर को अथवा डाकू को कोई राज्य के ऊपर अधिकार नहीं है क्योंकि उसने अपने आपको राज्य के नियमों पर समर्पण नहीं कर रखा है और उनकी अवहेलना की है।

इन सब अनुशासन मानने और कर्त्तव्य और अधिकारों का सुचारु रूप से पालन करने से एक बड़ा लाभ होता है। बच्चा यदि अनुशासन मान कर चलता है और मां बाप उसको उसका अधि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार दे देते हैं तो बच्चे के गुण, उसकी छिपी हुई शक्तियों का पूर्ण विकास हो जाता है। इसी प्रकार एक गँवार की छिपी हुई शक्ति का सद्उपयोग भी उसके समर्पण करने पर हो जाता है। पशु को भी अपने आपको मनुष्य को समर्पण करने से उसकी शक्ति का अच्छा प्रयोग होता है। ढोल की सुन्दर आवाज भी ताड़ना से ही प्राप्त होती है।

अतएव संसार में कर्तव्य और अधिकार मिले जुले हैं। दूसरों के कर्त्तव्य को अपना अधिकार मान लेने अथवा दूसरे के अधिकार को अपना अपना अधिकार मान लेने से ही जीवन की जटिल समस्या खड़ी हो जाती है। हम प्रायः दूसरों को उपदेश देते समय उनके कर्त्तव्य ही का बखान करते हैं उनके अधिकारों का ध्यान नहीं रखते हैं यही सब दुःख का कारण है।

शक्तिमान स्वामी का कर्तव्य अपने आपको समर्पण करने वाले का अधिकार होता है और इसके फलस्वरूप अनुशासन मानने वाले के गुणों का विकास होता है। इस पृष्ठि भूमि से इस चौपाई का विवेचन करना उचित है। समुद्र कहता है कि ढोल, शूद्र, पशु, नारी इन सबको अपने स्वामी से ताड़ना पाने का अधिकार प्राप्त है यह अधिकार इनका है 'यह सब ताड़न के अधिकारी' पुरुष को ताड़ना देने का अधिकार नहीं है पुरुष का कर्त्तव्य है ताड़ना देना। जो पुरुष अपना अधिकार समझकर स्त्री को सदा ताड़ना देते रहते हैं, उनको कभी सुख शाँति प्राप्त नहीं होती है वे स्त्री के अधिकार को अपना अधिकार समझ लेते हैं। एक स्त्री को जिस ने अपने आप को अपने स्वामी के अनुशासन पर छोड़ दिया है उसको यह अधिकार प्राप्त हो गया है कि वह स्वामी से सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा पाती रहे। यदि पुरुष स्त्री को यह कह कर छोड़ देना चाहे कि तुमको खाना, कपड़ा मिलता रहेगा तो स्त्री कह सकती है कि मेरा आपके साथ रहने का अधिकार है। महारानी सीता को पहिले श्री राघवेन्द्र कर्त्तव्य समझाते रहे, महारानी जी सुनती रहीं; फिर उन्होंने अपने अधिकार की मांग की भगवान को उनको चलने की अनुमति देना पड़ी।

कवि इस चौपाई में स्त्रियों के अधिकार की विवेचना कर रहा है न कि पुरुषों के अधिकार की। स्त्रियाँ (असन्मार्ग पर चलने पर शिक्षा के लिये) ताड़ना की अधिकारी हैं यह कवि बता रहा है, न कि पुरुष ताड़ना देने के। स्त्रियों के अधिकार को पुरुष अपना अधिकार समझने लगते हैं यह भूल है। ताड़ना देना पुरुषों का कर्त्तव्य तथा ताड़ना पाना स्त्रियों का अधिकार है। संसार के सब कवियों ने स्त्रियों के कर्त्तव्य की व्याख्या गाई है। कविवर तुलसीदास ने उनके अधिकारों की व्याख्या करके स्त्रियों का स्थान बहुत ऊपर कर दिया है। इस अधिकार को पाकर स्त्रियों के सब छिपे हुये गुण निखर सकते हैं और वह एक सद्-गृहिणी बन सकती है। उनको उनका अधिकार न देने से उनके बुरे मार्ग पर जाने का भय रहता। 'जस स्वतंत्र होइ बिगरहिं नारी' स्त्री को पुरुष के साथ रहने का उससे सन्मार्ग की ओर जाने का और बुरे मार्ग से बचने की प्रेरणा पाने का अधिकार कविवर इस चौपाई में बता रहे हैं, जिसकी ओर संसार के किसी कवि का ध्यान नहीं गया है।

समुद्र प्रभु से कहता है कि मैं जड़ हूँ, मेरा अधिकार आपसे आज्ञा पाने का है, न कि विनय सुनने का। एक गंवार को यदि आप डांटकर आज्ञा दें. वह तत्काल पालन कर देगा; परन्तु यदि आप उससे विनय करने लग जायें तो सम्भव है वह कार्य न करे। समुद्र प्रभु से कहता है कि आपने मुझ को मेरा अधिकार नहीं दिया तो उसमें भूल आपकी है, न कि मेरी। अतएव राघवेन्द्र को उसकी बात माननी पड़ी और फिर उन्होंने पूछा कि तुमको कोई दुख तो नहीं है। समुद्र का यह भी अधिकार है कि वह प्रभु से कह सके कि जब मैं अपनी मर्यादा पर हूँ तो मेरी रक्षा का भार आप पर है-प्रभु ने उसकी प्रार्थना पर राक्षसों को मार दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीराम का राष्ट्रीय संदेश

[श्री मुन्नालाल जी देवासे]

परिस्थिति का पट परिवर्तन हुआ। आरत प्रजा को त्राण और विभीषण को लंका का राज्य मिला। सीता को राम, राम को प्राणेश्वरी। वन की अवधि और सीताराम के वियोग का अंत हुआ। वानरराज सुग्रीव और लंकाधीश विभीषण मंत्रियों के सहित श्रीराम को पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या पहुँचाने आये। विरह व्याकुल अयोध्या नगरी में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। लक्ष्मण-राम और सीता से मिलने के लिये सम्पूर्ण अयोध्या की प्रजा उत्साह एवं उमंग से उमड़ पड़ी। इस पुनीत मिलन प्रसंग की महिमा असीम है। तदनंतर सब ने राम से राज्य भार सम्हालने का अनुरोध किया। प्रिय-परिवार-प्रजा के अत्याग्रह से राम ने राज्य पद स्वीकार कर सबको और भी प्रसन्न किया। वनवासी राम सम्राट रामचन्द्र हो गये। उनके नेतृत्व में सारा राज्य-शासन व्यवस्थित चलने लगा। आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, नैतिक, व्यावसायिक और शारीरिक अर्थात राष्ट्र का बहुमुखी-सर्वांगीण विकास हुआ। किसी प्रकार का अभाव नहीं था। सुख और शांति की बहुलता हो गई। अधिक सम्पन्नता से आलस्य और विलास होने की सम्भावना रहती है। अतएव ऐसे समय में सजग-प्रहरी-कर्तव्य नितांत बांछनीय है। उच्च स्तरीय व्यक्ति का कर्तव्य है कि समय समय पर प्रजा को योग्य मार्ग की प्रेरणा दे। उसके समयानुकूल प्रेरणादायक तथा स्फूर्तिप्रद संदेशों से प्रजा में आनेवाली बाधाओं के नष्ट होने में संदेह नहीं। अपने उन्नतिशील राष्ट्र की सुसंस्कृत प्रजा में श्रीराम ने अपने राष्ट्रीय संदेश का उद्बोधन किया। उसी संदेश के अनुशीलन का यह छोटा-सा प्रयास है।

गोस्वामी तुलसीदास ने मानस में लिखा है कि एक बार राघवेन्द्र सम्राट राम ने गुरु, विप्र, प्रतिष्ठित नागरिक एवं छोटे-बड़े नगर के सभी व्यक्तियों को राज्य सभा में बुलवाया। परिवार के भी सभी सदस्य आये। सभी उपस्थित व्यक्ति मर्यादानुकूल अभिदान के पश्चात् यथा योग्य स्थान पर विराजे। सब शिष्ट, मर्यादित एवं स्वयमेव अनुशासित थे। श्री राम राजसिंहासन से उठ खड़े हुये। सम्मुख विशाल जन समूह था। प्रजा जनों को सम्बोधित करते हुये श्री राम ने अपना संदेश अभिव्यक्त किया—

"सुनिये नगर वासियो! मैं आप लोगों से जो भी कुछ कह रहा हूं वह भावावेश में आकर नहीं कह रहा हूँ। मैं अनीति की बात भी कहने नहीं जा रहा और मेरे कथन में राजकी प्रभुता किंचित नहीं है। इसीलिए प्रथम मेरे कथन को सुनिये, तत्पश्चात् आपको जो अच्छा लगे वही कीजियेगा।

अतएव इस चौपाई में स्त्रियों के अधिकार की व्याख्या कर के कवि ने स्त्री समाज के साथ परम उपकार किया है—ताड़ना का अर्थ शिक्षा देना है, जहाँ ढोल के साथ मारने का है, गंवार के साथ फटकारने का है, पशु के साथ बागडोर खींचने का है, स्त्रियों के साथ उसका अर्थ शिक्षा देने का है। ढोल का शब्द पहिले रखा है अतएव ताड़ना शब्द दिया गया है।

मैं तो इस चौपाई के द्वारा स्त्री समाज को कविवर तुलसीदास का आभारी होने का विषय मानता हूं। उन्होंने ऐसे विषय की ओर ध्यान दिलाया है, जिसकी ओर से हमारे सब ग्रन्थ, तथा सन्सार के सब कवि चुप थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे आदेशानुसार आचरण करने वाला ही मेरा अर्थात राज्य का सच्चा सेवक है। यह अवश्य ध्यान रखियेगा कि यदि मैं कुछ अनीतिपूर्ण अथवा नियम-विपरीत बात कहने लगूँ अथवा कह जाऊँ तो आप लोग भय छोड़कर अर्थात निर्भीक होकर मुझे टोक दीजियेगा, रोक दीजियेगा।

हमें यह मानव शरीर बड़े भाग्य से मिला है। सब ग्रंथों ने यह बात कही है कि मनुष्य शरीर देवताओं के लिए दुर्लभ है। इस शरीर के द्वारा ही नाना प्रकार की साधनाऐं की जाती हैं। इसके द्वारा ही मानव प्रगति के पथ पर बढ़ता है और उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ता है। इसी के द्वारा लौकिक और पारलौकिक विकास किया जाता है। यह मानव शरीर वास्तव में साधना का सुरम्य क्षेत्र एवम् मोक्ष का सुनहरा द्वार है। इतने श्रेष्ठतम् शरीर को पाकर जो आलस्य एवं अहंकार के वशीभूत होता है वह अपना लोक और परलोक दोनों नहीं सुधार पाता। बल्कि वह संसार में प्रत्यक्ष दुःख पाता है और शारीरिक और मानसिक कष्टों से सदा पीड़ित रहता है। फिर मोक्ष प्राप्ति की बात उसके लिए गगन के तारे तोड़ने के समान व्यर्थ है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक दुःख से व्याकुल होकर काल, कर्म और ईश्वर पर मिथ्यारोप करता है और सिर धुन धुनकर पश्चात्ताप की भीषण अग्नि में जलता रहता है। उसके हाथों रुदन और प्रायश्चित ही लगता है।

बन्धुओ! यह शरीर केवल विषय भोग तथा ऐशो-आराम के लिए नहीं मिला है। सांसारिक विलासिता का कहना ही क्या वह तो स्वर्ग ऐश्वर्य के सामने तुच्छ है। स्वर्ग-सुख भी क्षणिक या स्वल्प है। ऐश्वर्य एवम् विलासिता का परिणाम दुःखदाई है चाहे स्वर्ग हो या विश्व एक ही बात है। मानव शरीर पाकर जो प्राणी विषय-वासना में रमते हैं, विलासिता में डूबते हैं वे मूर्ख हैं। वे दुष्ट अमृत के बदले विष ग्रहण करते हैं। पारस मणि को छोड़कर घुँघची लेने वाले दुर्बुद्धि को कोई भी भला नहीं कहता। यह मानव शरीर संसार सागर से पार उतरने के लिए जलयान है और प्रभु कृपा ही अनुकूल वायु है। इस सुदृढ़ जलयान के कर्णधार एकमात्र आदर्श सद्गुरू रूप महापुरुष हैं। इस प्रकार ये समस्त सामग्री मनुष्य को आसानी से प्राप्त है। फिर भी जो अवसर का लाभ उठाकर विश्व के रंगमंच पर सफलता प्राप्त नहीं करते वे "सो कृत निंदक मंद मति, आतमा हन गति जाइ।" वह कृतघ्न मतिमंद निंदा का पात्र है, वह आत्मघाती की दशा को प्राप्त होता है। आत्म हत्यारे की स्थिति का उल्लेख ईशावास्य उपनिषद् में इस प्रकार आया है:—

"असुर्या नाम ते लोका
अन्धेन तमसावृताः।
तांस ते प्रेत्याभि गच्छन्ति
ये के चात्महनोजनाः॥"

"आत्मघातकी लोग शरीरान्त के पश्चात् अज्ञान एवं दुःख क्लेश से आच्छादित या घिरी हुई आसुरी योनी को बार-बार प्राप्त होते हैं।" अतएव इस संसार में सुख चाहते हो तो मेरी बात को सुन्दर हृदय में दृढ़ता पूर्वक धारण करो। ज्ञान दुर्गम है। उसे प्राप्त करने में अनेक कठिनाई और विघ्न-बाधाऐं हैं। साधना दुस्तर है तथा ज्ञान के लिए कोई अवलम्ब नहीं है। विशद ज्ञान को अनेक कष्टोपराँत कोई विरला ही प्राप्त कर पाता है किन्तु उसमें भक्ति और श्रद्धा का पुट नहीं होने से वह मुझे प्रिय नहीं। अखिल विश्व का यह नैसर्गिक नियम है कि मानव हृदय निश्चित रूप से भक्त होता है। मनुष्य संसार के किसी भी भू भाग में क्यों नहीं रहता हो, वह किसी भी जाति का क्यों नहीं हो उसके हृदय मंदिर में भक्ति देवी का निवास अवश्य रहता है। सुविधानुसार आचार्यों द्वारा भक्ति के अंग-उपांग निर्धारित किये गये हैं। यथाः—ईश्वर, मातृ, पितृ, भ्रातृ, गुरु और राष्ट्र भक्ति आदि। अतः यह स्वयं सिद्ध है कि मनुष्य जन्म से ही भक्त होता है। उसे भक्ति का प्रशिक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ट्रेनिंग) ट्रेनिंग देने की आवश्यकता नहीं है। अपितु उसके अन्तस्तल में अवस्थित भक्ति भावना को जागृत किंवा विकसित करने की नितांत आवश्यकता है। भक्ति वास्तव में समस्त सुख का असीम भण्डार है। इस अमूल्य कोष को बिना सतसंग के कोई भी प्राणी नहीं पा सकता। सत्संगति में संसारिक क्लेशों का अंत करने की अपूर्व क्षमता है। अतएव सब को सत्कर्म द्वारा सज्जनों की सतसंगति प्राप्त कर सम्पूर्ण दुःखों से छुटकारा पाने का निरंतर प्रयास करना चाहिये। सत्कर्मों के बिना सज्जन कदापि नहीं मिलते, यह बात नहीं भूलना चाहिये। स्वभाव में शिशु-सा सारल्य और मन में कुटिलता का अभाव होना ही सब प्रकार की भक्ति का मूलाधार है।

मुझे दास्य-भाव अथवा गुलामी वृत्ति किंचित पसंद नहीं। जो स्वयं को मेरा दास समझता है भला उसपर कौन विश्वास करेगा ? मैं अधिक बढ़ा चढ़ा क्या कहूँ, मैं तो इसी आचरण के वशीभूत हूँ। मैं दासता नहीं पौरुषता प्रेमी हूँ। मैं सभी से अपेक्षा करता हूँ कि—

बयरु न बिग्रह आस न त्रासा।
सुखमय ताहि सदा सब आसा॥
अनारंभ अनिकेत अमानी।
अनघ अरोष दच्छ बिग्यानी॥
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा।
तृन सम बिषय स्वर्ग अपबर्गा॥
भगति पच्छ हठ नहिं सठताई।
दुष्ट तर्क सब दूरि बहाई॥

जो किसी से शत्रुता और वैमनस्य नहीं करता किसी से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं करता और किसी को कुछ भी कष्ट नहीं देता उसकी समस्त अभिलाषाऐं सदैव सुखप्रद होती हैं। जिसने प्रारंभिक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर लिया है, जो निष्कामी है, और जिसे केवल अपने ही घर में ममत्व नहीं बल्कि वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना है, मान-प्रतिष्ठा की किंचित आकांक्षा नहीं, हृदय शुद्ध-पवित्र तथा प्रेममय, कभी क्रोध नहीं आता, सत्य पारखी अर्थात कुशल वैज्ञानिक, सदैव सज्जनों के संसर्ग में रुचि और आस्था रखता है, समस्त विषय विकार ही नहीं बल्कि जिसे स्वर्ग और मुक्ति का प्रलोभन भी तृण सदृश है, जो ईश्वरीय, वैयक्तिक, सामाजिक, और राष्ट्रीय भक्ति में तनिक भी पक्षपात-पूर्ण हठ और धृष्टता नहीं करता वरन् सम्पूर्ण कुतर्कों को अपने मस्तिष्क से निकाल बाहर करता है, वह सच्चा सुखी है। वह वस्तुतः परमानंद राशि को प्राप्त करता है। प्रत्येक मनुष्य को इन गुणों को प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास कर सामूहिक रूप से राष्ट्रीय अभ्युत्थान में अपना योग प्रदान करना चाहिये यही अपेक्षा है

सक्रिय सदस्य

मानस संघ के नये १० या अधिक सदस्य बनाने वालों की सूची :—

(जनवरी तथा फरवरी का विवरण)

१—श्री पं० रामरक्षित जी रामायणी	बनारी	४४	सदस्य
२—श्री गंगाप्रसाद जी	कांटी	२२	,,
३—श्री पुनाराम जी नापित	खजरी	१०	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त-समागम

[श्री शारदाप्रसाद जी]

(६)

नागौद के श्रीमान् लाल साहब भार्गवेन्द्र सिंह जी ने मेरे पिता से कानून पढ़ा था। इस नाते वे मुझे अपना गुरु भाई मानते हैं। मानते ही नहीं हैं-वैसा प्रेम भी करते हैं। उन दिनों वे नागौद राज्य के दीवान थे। मेरे पुरातत्व प्रेम का परिचय उन्हें पूरा पूरा था। अपनी शिकार यात्राओं में जङ्गलों में भटकते हुए उन्होंने अनेक स्थल ऐसे देखे थे जो उनके विचार में पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण थे। उनकी चर्चा उन्होंने मुझसे कर रखी थी और मैं उन स्थानों को देखना चाहता था। उन्होंने ही कृपा कर व्यवस्था करदी और मैं गणेश अहीर बनरखा (बनरक्षक) के साथ उचेहरा के जङ्गलों में दिन भर घूमा। लगभग ४ बजे मैं एक ओर जा रहा था कि जंगल में खड़े एक व्यक्ति ने मेरी ओर उंगली करके कहा कि तुमतो लालबिहारी के बेटवा हो न। मैं हूँ छोटा काछी खोखर्रा का, फक्कड़ का लड़का जो जगदेव मन्दिर में रहता था। तुम छोटे थे तब मैं तुम्हारी गाड़ी ढकेलता था। मैंने कहा "हां मैं बाबू-लालबिहारी का लड़का हूँ और आगे चला गया। प्रायः घन्टे भर बाद लौटने पर देखा तो छोटा वहीं खड़ा है। इस बार उसने कहा कि कछिया के घर नहीं चलोगे। मैंने कहा जरूर चलेंगे और उसके साथ हो लिया। वह मुझे अपने कछिअउरे ले गया और पूछा कि पानी पिओगे। मैंने कहा कि जरूर पियेंगे। बड़ी प्यास लगी है इसीसे यहां आये हैं। छोटा के पास बर्तनों में एक लोटा और एक थाली मात्र थे। और लोटे में दूध रखा था। उसने दूध थाली में उड़ेल लिया, ढिकुरी डोल और लोटा माँजा और मुझसे कान में पूछा "गुड़ खाओगे। मैंने कहा नहीं केवल पानी पियेंगे।" पानी पीकर मैंने छोटा से विदा ली और वह मुझे वहाँ तक पहुँचाने आया जहां मेरी मोटर खड़ी थी। उसे बहुत आश्चर्य हुआ कि मेरे पास मोटर है। मैंने उससे कहा कि "छोटा! सतना आना।" उसने कहा कि आऊगाँ।

छोटा जब मेरी गाड़ी ढकेलता था तब मैं ५-७ वर्ष का छोटा बालक रहा होऊँगा। मुझे न गाड़ी की याद थी न छोटा की और छोटा ने भी मुझे लगभग ३० वर्ष बाद देखा था फिर भी उसे पहिचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई। इसका आश्चर्य मुझे अब तक है।

❀ ❀ ❀

कई मास बाद छोटा सतना आये। सिर पर विविध सागों की टोकरी थी जिसे अपनी बाड़ी से वे मेरे लिये भेंट स्वरूप लाये थे। मैंने पूछा "छोटा क्या खाओगे।" उन्होंने कहा "तुम्हारे यहाँ आये हैं। जो खिलाओगे वह खायेंगे।" मैंने कहा कि मैं चाहता हूँ कि जो खाने का मन हो वह खिलाऊँ। छोटा ने कहा कि रसगुल्ला खायेंगे, बीस वर्ष से नहीं खाया है। मैंने पूछा कि सफेद खाओगे कि लाल। इस पर छोटा ने कहा कि सफेद तो हमने देखा ही नहीं है। मैंने दोनों प्रकार के रसगुल्ले मगाकर छोटा को खिलाया। छोटा ने बियारी (रात्रि का भोजन) नहीं किया। दोपहर के रस-गुल्ले पर्याप्त थे। दूसरे दिन मैंने फिर पूछा "आज भी रसगुल्ला खाओगे।" छोटा ने कहा कि नहीं, अब रसगुल्ला कभी नहीं खायेंगे। मैंने पूछा क्यों? तो उन्होंने उत्तर दिया कि हमने रसगुल्ला खा लिया तो रात को हमारा भगवान नहीं आया। अब हम रसगुल्ला कभी नहीं खायेंगे। हमें आटा दिलादो, हम रोटी बनाकर खायेंगे। मैंने पूछा कि रोज भगवान तुम्हारे पास आते हैं? उन्होंने कहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि रोज आते हैं। एक दिन रसगुल्ला खा लिया तो नहीं आये। छोटा ने उस दिन नमक रोटी खाई। दूसरे दिन फिर पूछने पर छोटा ने बताया कि उनका भगवान आया था।

मेरी बुद्धि चक्कर में पड़ गई कि छोटा के भगवान एक बार रसगुल्ला खाने से नहीं आये तो नित्य खीर मालपुआ खाने वालों के लिये क्या आशा की जाय ? इस प्रश्न का हल मुझे अब तक मिला नहीं हैं।

लौटते समय मैंने टिकट कटा दिया और छोटा रेल द्वारा उचेहरा चले गये।

❀ ❀ ❀

छोटा के दो तीन दिन के सत्संग का मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा। मैं उनके यहाँ जाने आने लगा और उन्हें सतना बुलाने लगा। एक बार वे ऐसे समय में आये, जब कुटुम्ब के सब लोग रीवा चले गये थे। साधारणतया छोटा दुकान के बरामदे में सो रहा करते थे। इस बार उन्होंने कहा—"हम तुम्हारे पास सोयेंगे।" मुझे कोई आपत्ति न थी। मैं तखत पर सो गया और नीचे भूमि पर छोटा थे। अर्धरात में मैंने देखा कि उत्तर के द्वार से एक छोटा सा गेंद कमरे में आया अधर में ठहर गया। इतना तेज प्रकाश था कि उतना मैंने जाग्रत अवस्था में कभी नहीं देखा है। कुछ देर बाद उसी द्वार से गोला वापस चला गया। प्रातः काल मैंने छोटा से पूछा—"रात को तुम्हारा भगवान आया था कि नहीं ? "छोटा ने कहा कि आया था। मैंने पूंछा—"किस द्वार से आया था ?" छोटा ने उत्तर का द्वार बतलाया और यह भी बतलाया कि उसी द्वार से वापस गया था। मैं सोच में पड़ गया। इस सन्त के सान्निध्य से भगवान के प्रकाश की एक झलक मिली। यदि मेरी वृत्ति भी छोटा ऐसी सात्विक होती तो सम्भव था कि स्वरूप के दर्शन भी मिल जाते। पर तामसी आहार और तामसी वृत्ति में सत्संग भी कहाँ तक सहायक हो। छोटा की अत्युच्च स्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण तो मुझे मिल ही गया, यही क्या थोड़ा था।

❀ ❀ ❀

परसमनिया पहाड़ी पर रामपुर गाँव से संलग्न वन में महात्मा नारायणदास जी का स्थान है। उनके दर्शन को जाते समय खोखरा में मैं छोटा के घर गया। उन्हें साथ ले जाने का विचार था। मालुम हुआ छोटा मैहर गये हैं। आते ही होंगे। मैंने उनकी प्रतीक्षा नहीं की और चला गया। आश्रम में पहुँचा तो छोटा को वहाँ पाया। मैंने कहा कि तुम तो मैहर गये थे इस पर उन्होंने कहा तुम्हारी मोटर चली जाने के बाद हम घर आये वहां मालुम हुआ कि तुम यहाँ आये हो तो हम भी यहाँ चले आये। मोटर के कुछ देर बाद छोटा ने प्रस्थान किया और मोटर के पहिले पहुँच गये। वे सीधे मार्ग से गये थे और मोटर का मार्ग घूमकर था। पर चाल में भी तो बहुत बड़ा अन्तर था। लौटते समय तो छोटा मोटर पर ही आये। उन्हें घर पहुँचाकर मैं चला आया।

❀ ❀ ❀

कई बार छोटा रामवन आये थे। गर्मियों में मैं एक ऊँचे मंच पर सोया करता था। नीचे छोटा लेटा हुआ था। रात में नींद खुली तो देखा छोटा पड़े हैं और 'रामा रामा रामा रामा' कर रहे हैं। सबेरे पूँछा—"तुमतो खूब रामा रामा करते रहे।" तो उन्होंने कहा कि नहीं तो हम तो सोये हैं तो सबेरे नींद खुली है। मैंने अनुभव किया कि छोटा सोते हुए भी नाम जप करते रहते हैं।

छोटा को श्री महाराज रामप्रसाद जी और स्वामी बालकदास जी के सत्संग में भी भाग लेने का अवसर दो तीन बार मिल गया था। छोटा अपने दैन्य भाव में भूमि पर बैठे रहा करते थे और बोलते भी बहुत कम थे पर जब बोलते थे तब पते की कहते थे। एक बार महाराज रामप्रसाद-जी ने मुझसे कहा देखो बाबू कभी कभी ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी के मुँह से भी परावाणी निकल जाती है। इसपर मैंने कहा हाँ महाराज बोला तो छोटा परा में ही है। अब मैं समझता हूँ कि श्री महाराज जी भी नहीं समझ पाये थे कि छोटा छिपे सन्त हैं।

❀ ❀ ❀

छोटा ने कभी अपने लिये कुछ नहीं माँगा। जब मैं उनके गांव जाता था तब कभी कभी किसी गरीब का संकेत करके उसे कुछ दिलवा दिया करते थे। कभी मतना में भी कह देते तो धोती आदि उन्हें गरीबों के लिये दिलवा दी जाती थी। अपने लिये तो उन्होंने ऋण अवश्य मांगा और सदा ही मैंने उनकी मांग के अनुसार रुपये दे दिये। मेरे मुनीम नाराज होते थे कि बिना लिखा पढ़ी कराये मैं छोटा को ऋण दे देता हूँ। मैं कह देता था, मैं वापसी की आशा से नहीं देता हूँ।

घर के सब बच्चों से छोटा का गहरा प्रेम था। उनके आने पर घर में बिजली दौड़ जाती थी 'छोटा आ गया' 'छोटा आ गया' का हल्ला मच जाता था। कोई उनसे बांसुरी बजवाता था, कोई उनसे फूल मगवाता था, कोई भगावन की कथा सुनता था। वे घर के से व्यक्ति बन गये थे। बेरोक टोक अन्दर भी चले जाते थे। सरल स्वभाव इतना था कि एक बार दुकान पर श्रीमान महाराजा सहाब नागौद आये तो उन्हें देखकर छोटा बिगड़ गये, कहने लगे -"तैं यहां कहां आया है?" इसपर श्रीमान महाराजा साहब ने वैसा ही उत्तर दिया—कि "तैं कहां आया है?" छोटा ने मेरी ओर संकेत करके कहा कि मैं इनके यहाँ आया हूँ। तो राजा साहब ने कह दिया कि हम भी इनके यहां आये हैं। छोटा ने डांटकर कहा—"तैं यहां वहां घूमता फिरता है हम तेरी मम्मा (माता) से कह देंगे।" छोटा के समझ में राजा साहब घूम फिरकर बहुत बुरा काम कर रहे थे और उनकी मां से शिकायत करके उन्हें डँटवाना उचित था।

मेरी कन्या नन्हीं के विवाह की व्यवस्था में छोटा को बहुत बड़ा भाग लेना था। पर इसके कुछ मास पूर्व ही वे चल बसे। उन्होंने गृह त्याग नहीं किया। बाल बच्चों में रहते हुए भी पूरा समय भजन में व्यतीत करते थे और बांसुरी तो इतनी बढ़िया बजाते थे कि कहा क्या जाय। प्रातः ४ बजे उठकर जागो ब्रह्मा, जागो विष्णू आदि मालुम नहीं कितने देवताओं के नाम वे जगाने के लिये लेते थे। इसके बाद उतनी ही बात बांसुरी में कह जाते थे और फिर स्वयं सो जाते थे। बांसुरी ही बजाकर भगवान को भोग लगाते थे और जो भी वस्तु उन्हें मिले वह अर्पण करते थे। सबेरे एक दो फूल लाकर दुकान के आलमारी में रख देते थे और कहते थे कि हमारा भगवान यहाँ बैठा रहेगा। उनके कलिअउरे में शेर आता था। छोटा अपने मचान से बैठे २ उसे देखते रहते थे, कहते थे कि रात में नृसिंह भगवान आया था। मेरे आग्रह पर एक बार वे रेल से उचेहरा गये थे इसके बाद सदा ही पैदल आते जाते थे। कहते थे कि रेल बहुत तेज चलती है इससे राम नाम कहने को कमही मिलता है पैदल चलने पर पग पग पर राम कहता जाता हूँ।

छोटा कोई चमत्कारी महात्मा नहीं थे। पर उन्होंने अपना मनुष्य जीवन सफल कर लिया था, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

मानस मणि के अधिक से अधिक ग्राहक बनाकर इसे स्वावलम्बी बनाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषोत्तम मास—

[श्री सुदर्शनसिंह]

आप जिसे अधिक मास, मलमास या पुरुषोत्तम मास कहते हैं, वह है क्या ? क्यों यह अधिक मास होता है ? कब होता है ? इसमें क्या करना चाहिये ? इन प्रश्नों का विचार इसलिये भी इस समय आवश्यक है, क्योंकि इसी वर्ष यह पुरुषोत्तम मास आ रहा है।

ज्योतिष की दृष्टि से तो चान्द्रमास तथा सौर मासों का समन्वय बनाये रखने की यह एक उत्तम व्यवस्था है। मुसलमान केवल चान्द्रमास मानते हैं इसका फल यह होता है कि उनका रोजा (रमजान महीना) कभी गर्मी में, कभी वर्षा में और कभी जाड़ों में पड़ा करता है। लेकिन पुरुषोत्तम मास की व्यवस्था के कारण हमारा माघ सदा सर्दी में और ज्येष्ठ सदा गर्मी में ही पड़ता है।

प्रत्येक चान्द्रमास (कृष्ण तथा शुक्ल पक्ष) में सूर्य की एक संक्रान्ति प्रायः पड़ जाया करती है। यदि किसी महीने में कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से लेकर शुक्लपक्ष की पूर्णिमा के बीच में सूर्य की संक्रान्ति न पड़े तो वह महीना अधिक मास हो जायगा। उसमें पहिले पन्द्रह दिन कृष्णपक्ष के शुद्ध महीने के माने जांयगे और उसके पश्चात् १५ दिन शुक्लपक्ष तथा १५ दिन कृष्णपक्ष ये अधिक मास के होंगे। अन्तिम १५ दिन शुक्ल पक्ष के फिर शुद्ध मास के माने जांयगे। इस प्रकार शुद्ध महीने का कृष्णपक्ष पहिले और शुक्लपक्ष मलमास के बाद पड़ता है। दोनों के बीच में मलमास होता है और उसमें पहिले शुक्लपक्ष तथा पीछे कृष्णपक्ष पड़ा करता है।

इस वर्ष श्रावण का महीना अधिक मास हो रहा है। ता: २ जुलाई से १६ जुलाई तक शुद्ध श्रावण कृष्णपक्ष और १६ अगस्त से २६ अगस्त तक शुद्ध श्रावण शुक्लपक्ष है। इनके मध्य में १७ जुलाई से १५ अगस्त तक श्रावण अधिक मास पुरुषोत्तम मास है।

श्रावण भगवान् शंकर का महीना है और अधिक मास भगवान नारायण का मास है। इसलिये जब श्रावण अधिक मास होता है तो उसे 'हरिहरात्मक अधिकमास' कहा जाता है। सामान्य अधिक मास से उसका पुण्यफल अधिक होता है।

गृहस्थ को अधिक मास में क्षौर (बाल बनवाना तथा मुण्डन संस्कार) मौञ्जी (यज्ञोपवीत-संस्कार) विवाह, व्रत तथा सकाम उपवास का त्याग करदेना चाहिये। ❀

भगवान नारायण ने स्वयं लक्ष्मी जी से पुरुषोत्तम मास के सम्बन्ध में कहा है—

अधिमासस्य देवोऽहं पुरुषोत्तम संज्ञकः ।
स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम् ॥
देवार्चनमथान्यच्च ये कुर्वन्ति मनुष्यजाः ।
अक्षयं तद् भवेत् सर्वं ममोद्देशेन यत्कृतम् ॥
मलमासो गतः शून्यो मेषां देवि प्रमादतः ।
दारिद्र्यं पुत्र शोकं च पापपङ्कविगर्हितम् ॥
मर्त्यलोके भवेज्जन्म तेषां देवि न संशयः ॥

'पुरुषोत्तम नामक मैं अधिकमास का अधिष्ठाता देवता हूँ। अतः (इस महीने में) मेरे उद्देश्य से जो मनुष्य तीर्थ स्नान, दान, जप, हवन, पाठ, पितृ तर्पण, देव पूजन तथा अन्य पुण्य कर्म करते हैं, (उनका) वह (पुण्यकर्म) अक्षय (फल देने वाला) हो जाता है।

हे देवि ! असावधानी के कारण जिन लोगों का अधिक मास (जप, पाठ, दान आदि के बिना) शून्य बीत जाता है वे मरने पर पाप की निन्दनीय कीच से भरे नरकों में जाते हैं और नरक भोगकर

❀ क्षौर मौञ्जी विवाहश्च व्रतं काम्योपवासकम् ।
मलिम्लुचे सदा त्याज्यं गृहस्थेन विशेषतः ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब संसार में जन्म लेते हैं तब उन्हें दरिद्रता, पुत्र शोक भोगना पड़ता है।'

इस प्रकार स्वयं भगवान ने पुरुषोत्तम मास का महात्म्य तथा उसमें करने योग्य कर्मोंका वर्णन किया है। इस मास में पुण्य कार्य न करने के दोष भी उन्होंने सूचित कर दिये हैं।

श्रावण मास के अधिष्ठाता देवता शंकर जी हैं और पुरुषोत्तम मास के भगवान नारायण। अतः श्रावण अधिक मास होने पर 'हरिहरात्मक' मास हो जाता है और इस वर्ष श्रावण में ऐसा ही हो रहा है।

इस 'हरिहरात्मक' पुरुषोत्तममास में भगवान नारायण तथा भगवान शंकर दोनों का ही पूजन, दोनों के पाठ, दोनों के निमित्य जप, दान आदि कर्म किये जाने चाहिये। साधारण समय में इन पुण्य कर्मों का जो फल होता है- इस मास में उन्हें करने पर उनका फल अत्यधिक-अक्षय हो जाता है।

रामायण का पाठ, रामनाम लेखन, जप तथा अपनी शक्ति, सुविधा के अनुसार शिवार्चन, शालिग्रामार्चन एवं दान इस महीने में सभी को करना चाहिये।

आलोचना

वेदों में रामकथा—ले०-मानसतत्वान्वेषी पं. श्रीरामकुमारदास जी रामायणी, वेदांतभूषण,साहित्यरत्न
प्रकाशक- सेठ श्री व्रजमोहनदास जी विजय शुजालपुर (म० प्र०)

पृष्ठ संख्या- २२० मूल्य- ४)

'मानस मणि' के पाठक श्री रामायणी जी से भली प्रकार परचित हैं। 'शंका-समाधान' स्तम्भ उनकी कृपा से 'मणि' के प्रारम्भ से ही चल रहा है। वे 'मानस' के गूढ़ रहस्यों के मर्मज्ञ तो हैं हीं, श्री राम कथा के अन्वेषक भ्रमर हैं।

'वेदों में अवतार चर्चा नहीं है' यह रोग आज के कुतर्क प्रधान युग में नव-शिक्षा प्राप्त युवकों को ही नहीं, बहुतेरे वृद्धों को भी हो गया है; किन्तु इस रोग की औषधि प्राचीन-काल से प्रस्तुत होकर भी अप्राप्य हो गई थी। 'वेदों में राम कथा' के रूप में श्री रामायणी जी ने उसे सुप्राप्य ही नहीं किया- सरल हिन्दी टीका के द्वारा सुग्राह्य (सुगर कोटेड) भी बना दिया- इसके लिये सभी सनातन धर्मी उनके आभारी होंगे।

लगभग ४०० वर्ष पूर्व श्रीनीलकन्ठ जी ने 'मंत्र रामायण' नाम से एक संकलन वेद मन्त्रों का किया था और उन मंत्रों का संस्कृत भाष्य भी किया था। उस पुस्तक में १५० मन्त्र थे। लेकिन उस ग्रन्थ में कौनसा मन्त्र कहां का है, यह निर्दिष्ट नहीं था। श्रीरामायणी जी ने श्रम करके उन मंत्रों को मूल वेद संहिताओं में ढूँढ़ा। उनके अतिरिक्त भी जो रामकथा के मन्त्र मिले, उनका संकलन किया और उन्हें फिर से क्रम दिया। इस प्रकार 'मन्त्र-रामायण' के १५० मन्त्रों के अतिरिक्त और भी मंत्र उनकी इस पुस्तक में आये। इस पुस्तक में कुल २८७ मन्त्र हैं। उन मन्त्रों का पूरा पता दिया हुआ है। उनकी सरल सुबोध हिन्दी टीका है और पुस्तक के अंत में मन्त्रानुक्रमणिका देकर उसे और उपयोगी बना दिया गया है।

राम भक्तों को तो इस पुस्तक को पाकर अपार हर्ष होगा ही-जो वेदों में देखे बिना कोई बात नहीं मानना चाहते, उनका मनोमल भी इससे स्वच्छ हो जायगा।

इस पुनीत प्रयास के लिये श्री रामायणी जी का बार बार अभिनन्दन!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ समाचार

फरवरी मास में संघ के २६ नये सदस्य बने तथा २ नई शाखायें स्थापित हुईं जिनका विवरण इसका प्रकार है :—

शाखा संख्या २०२० मोहरेंगा [दुर्ग] सदस्य १० मंत्री श्री मेघराम जी नापित। शा० सं० २०२१ कटिहार [पूर्णिया] स० ६ मंत्री श्री काशीप्रसाद जी चौधरी।

विविध समाचार

पिपरिया :—में ता० २४-१-५८ से १-२-५८ तक श्री राम चरित मानस यज्ञ; मानस नवाह पारायण एवं मानस सम्मेलन श्री कंज जी रामायणी, काशी की अध्यक्षता में हुआ। प्रतिदिन श्रेष्ठ विद्वानों के प्रवचन होते थे जिनमें प्रमुख व्यास सर्वश्री वल्लभानन्दनी महाराज, सीताशरण जी महाराज, पं० शिवनारायण व्यास, सिद्धनाथ मानस, इन्दुभूषण जी, श्रीमती प्रेमादेवी, सुश्री कुमारी विजयलक्ष्मी मानस सरस्वती आदि थे। समाप्ति पर ब्राह्मण भोजन हुआ। सम्मेलन सफल रहा।
—संवाददाता

पचमढ़ी :—श्रीराम चरितमानस के प्रचारार्थ और जनकल्याण के हेतु शिवमंडल और श्रीनवयुवक रामायण मंडल स्थापित किया गया। नवयुवक मंडल में ४ सदस्य और शिवमंडल में २० सदस्य हैं। मंडल के पास बाजा, ढोलक, मजीरा, रामायण तथा गैस है। एक किराये के मकान में श्री रामचन्द्र जी की पूजा आरती तथा प्रति शनिवार को रामायण, पाठ कीर्तन अन्ताक्षरी आदि होती है। इसका श्रेय श्री भगवतीदीन जी गुप्ता और श्री रामसींग जी को है।
—कुन्दन मंत्री

बाराद्वारबस्ती:—वसन्तपंचमी को वसन्तोत्सव और सरस्वती जी की पूजा होकर प्रसाद वितरण हुआ। गणतंत्र दिवस को विद्यार्थियों द्वारा प्रभात-फेरी, गानवाद्य सहित रामायण होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—घनसाय

मोतीगंज :—श्री रामसमुझ वैश्य के यहाँ ११ फरवरी को मानस का गायन कीर्तन हुआ। इस अवसर पर अयोध्या से श्री पं० अम्बिकेश्वरपति त्रिपाठी भी पधारे थे। अन्त में आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—संवाददाता

बाँदा :—श्री हाटकेश्वर जी के मंदिर में १६-२-५८ को किष्किन्ध्या कान्ड व सुन्दर कान्ड के ११ पाठ हुए। कीर्तन, आरती के पश्चात प्रसाद वितरण हुआ।
—लक्ष्मणकरण वि. मेहता

फर्रुखाबाद :—एक साल से प्रत्येक रविवार को श्री शंकरजी के मंदिर में मानस का पाठ तथा कीर्तन हो रहा है। २६ जनवरी को वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में अखंड पाठ राज्यतिलक होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—रामजीलाल

कन्नौद :—एक साल से प्रत्येक मास में मानस का पाठ हो रहा है। शिवरात्रि को श्रीराम मंदिर में मानस पाठ हुआ। श्री मूलचन्द जी पंडा के मंदिर में नित्य हरिकीर्तन हो रहा है। गीता का १ पाठ प्रत्येक माह में प्रत्येक सदस्य के यहाँ होता हैं।
—बाबूलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैंसगारा :—महाशिवरात्रि को ६ व्यक्तियों द्वारा सुन्दर कान्ड का पाठ श्री भुवनलाल जी के घर पर हुआ। शिवजी के मंदिर में सत्यनारायण की कथा हुई। समाप्ति पर कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

कमालपुरा :—ता० ३०; ३१ जनवरी को श्री मानस धर्म प्रचार मंडल का वार्षिकोत्सव श्रीराम लक्ष्मणाचार्य जी की अध्यक्षता में हुआ जिसमें सामूहिक सुन्दर कांड का पाठ, कीर्तन, प्रवचन, हवन, तथा ब्राह्मण भोजन हुआ। बाद में जलूस निकाला गया। —बजरङ्गप्रसाद

इलाहाबाद :—प्रत्येक मंगलवार को श्रीमती सुशीला देवी सक्सेना के गृह पर हनुमान चालीसा, संकट मोचन का पाठ और कीर्तन होता है। माघ मास में, सदस्याओं द्वारा अखंड कीर्तन, सत्यनारायण की कथा ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। पूर्णमासी को हनुमान चालीसा पाठ से हवन हुआ। श्रीमती निर्मला देवी जी के यहाँ १ फरवरी को अखंड कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

बीना :—श्री छतरपाल की टपरिया में अखंड कीर्तन ६ दिन तक हुआ बाद में हवन हुआ। रेलवे कालौनी के श्री हनुमान जी के मंदिर में श्री मानस के पाँच अखंड पाठ, तथा अखंड कीर्तन हुआ। बाद में हवन, कन्या व ब्राह्मण भोजन हुआ। श्रीराम मन्दिर में मानस के ३ अखंड पाठ और अखंड कीर्तन हुआ। बाद में हवन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —परशुराम

बन्देमऊ :—माघ कृष्ण ११ को श्रीमद्भागवत सप्ताह, माघशुक्ल ५ को वसन्तोत्सव, श्री हनुमान चालीसा पाठ, मूल रामायण का सामूहिक पाठ हुआ। ग्राम रिहुनी में माघ शुक्ल ८ को राजगद्दी समारोह, कीर्तन हुआ। माघ शुक्ल ११ को सत्संगाश्रम में मानस का अखंड पाठ हवन, सत्यनारायण की कथा, ब्राह्मण भोजन हुआ। —छोटेलाल गुप्त

विहटा :—महाशिवरात्रि को शिवजी का विवाह उत्सव बड़े धूम धाम से विवाह पद्धति द्वारा मनया गया। बाद में प्रसाद वितरण हुआ। —वासुदेवराय

हीरापुर :—हरि मन्दिर में ता० ४ से ६ फरवरी तक अखंड धुन हुई। बाद में ब्राह्मण व गरीबों को भोजन कराया गया। श्री योगेश्वरप्रसाद एवं श्री रामनाथप्रसाद जी के द्वारा नव निर्मित मंदिर में श्रीराम जी, हनुमान जी, गणेशजी एवं शंकर जी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा फाल्गुन कृष्ण ४ को हुई। बाद में कीर्तन, भाषण, हुआ। श्री बालगोविन्द जी मिश्र की मृत्यु रामनाम कहते हुए हुई। महाशिवरात्रि को आठ पहर कीर्तन हुआ। —रामरक्षासिंह

झिरौनी :—शीतला के प्रकोप की शान्ति के लिये दुर्गा पाठ, स्तुति, हवन, कन्या क्वाँरी भोजन, वस्त्रदान तथा ब्राह्मण भोजन आदि हुआ। नित्य प्रभात फेरी होती है। —रामावतार गुप्ता

मन्दरौद :—ता० ४-२-५८ को श्रीसत्यनारायण की कथा हुई। ता० ७-२-५८ को श्री पं० नरसिंह नारायण त्रिपाठी परसुरामपुर के तत्वाधान में मानस का प्रवचन हुआ। —प्रद्युम्नसिंह

प्रयाग :—श्री १००८ स्वामी विद्यानंद जी की अध्यक्षता में ता० २४ से २६ जनवरी तक ज्ञानवृक्ष कम्पनीबाग का १६ वाँ वार्षिक महाधिवेशन संपन्न हुआ। प्रतिदिन विद्वानों के प्रवचन होते थे। —मोतीलाल साहु

लेदरी :—श्री शंकर जी के स्थान पर ता० १४ दिसम्बर तथा ता० २०–२१ जनवरी को सन्त रामायणी श्री सुरेन्द्रकुमार जी द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। ता० १३ जनवरी से नित्य प्रातः रामायण का पाठ तथा रात्रि में रामायण की कथा होती है और बाद में प्रसाद वितरण होता है। —यमुनाप्रसादसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढेगापाली:—ता० २३-१-५८ से श्रीरामचरित मानस यज्ञ ता० २-२-५८ तक हुआ। ता० २४-१-५८ से १-२-५८ तक नित्य सुबह प्रसिद्ध रामायणी श्री पं० रामरक्षित जी शुक्ल के आचार्यत्व में १०८ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक पाठ तथा ११ व्यक्तियों द्वारा हवन होता था। दोपहर में नित्य मंडलियों द्वारा रामायण गान, कीर्तन, भजन, अर्थ विचार विमर्श होता था। रात्रि में सर्व श्री पं० माधोप्रसाद जी दुबे, पं. हुवलालजी रामायणी पं. श्यामाचरणजी त्रिपाठी रामायणी, एवं पं० रामरक्षितजी रामायणी द्वारा मानस पर महत्व पूर्ण प्रवचन होता था। ता० १-२-५८ को श्रीराम राज्याभिषेक उत्सव मनाया गया। पाठ कर्त्ताओं द्वारा अलग अलग आरती की गई। ता० २-२-५८ को मूल रामायण का पाठ होकर आचार्य द्वारा पूर्णाहुति हुई। श्री-राघवेन्द्र भगवान की शोभा यात्रा निकाली गई। बाद में भाषण, धन्यवाद आदि होकर प्रसाद वितरण हुआ। श्रोताओं की काफी भीड़ होती थी। यज्ञ सफल रहा। —श्यामलाल थवाइत

मर्रा:—उच्च माध्यमिक शाला में प्रीति सम्मेलन मनाया गया। रात्रि को श्री मंशाराम शर्मा द्वारा रामायण प्रवचन हुआ।

करगा:—श्री हरीराम आडिल के यहां ता० २१-३-५८ से २६-३-५८ तक १८ सदस्यों द्वारा मानस का रात दिन पाठ होगा। सायंकाल ३ बजे से ६ बजे एवं रात्रि ८ बजे से १० बजे तक श्री मंशाराम शर्मा द्वारा रामायण प्रवचन होगा। पाठ समाप्ति पर दशाँश हवन, रामधुन होगा।
—नाथूराम आडिल

रामवन:—में वसन्तोत्सव बड़े धूम धाम से तारीख २४ से २६ जनवरी ५८ तक मनाया गया। श्री हनुमान जी का वसन्ती शृंगार हुआ। एक रुद्राभिषेक हुआ। श्री सुदर्शनसिंह जी चक्र, तथा श्रीरामसुपालजी भट्ट के मानस पर प्रवचन हुए। तीन दिन का मेला लगा। लगभग १० हजार जनता इकट्ठा हुई थी। शिवरात्रि को भगवान शंकर की पचीस उपचार से २४ घन्टे की अखण्ड पूजा की गई। कीर्तन हुआ। दो रुद्राभिषेक हुए। दोनों उत्सवों में भण्डारा हुआ। —शारदाप्रसाद

चौबेवेल:— डा० श्रीमहावीरसिंहजी के भव्य कोटि पर ता० १२-२-५८ से २८-२-५८ तक श्रीराम-लीला हुई। समाप्ति के दिन भगवान श्रीराम लक्ष्मण की झांकी पालकी में सजाकर बाजे गाजे के साथ निकाली गई। —मंत्री

नयागाँव:—ता० १८-२-५८ को श्रीराम चरित मानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर सुन्दर-काण्ड का सामूहिक पाठ एवं हवन होकर प्रसाद वितरण किया गया। —हेमराज

खम्हरिया:— ता० २४-२-५८ से ता० २-३-५८ तक रात्रि में ८ से १० बजे तक नित्य श्री पं० भैरवप्रसाद जी द्विवेदी रामायणी का मानस पर सुन्दर प्रवचन हुआ। श्रोताओं की काफी भीड़ होती थी। —जमुनाप्रसाद

गोपालगंज:—ता० ६-२-५८ से २८-२-५८ तक ब्रह्मविद्या मन्दिर में सुप्रसिद्ध व्यास श्री पं० केशरी-किशोर शरण जी रामायणी द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। मानस मणि के १२ ग्राहक बने। समाप्ति पर आरती, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —जोगेन्द्रप्रसाद

बीना:— शिव मन्दिर बजरिया में ता० १५-२-८५ तथा ता० १६-२-५८ को श्री भगवतीदीन के घर पर ७२ घन्टे का मानस का अखण्ड पाठ हुआ। ४ दिन तक अखंड रामधुनि भी हुई। समाप्ति पर हवन, आरती ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —शालिग्राम दुबे

लच्छनपुर:— श्री जानकीनाथ जी तपस्वी के मन्दिर में शिवरात्रि को श्री आर० एल० पाठक द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। —ए. डी. पड़वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामवन समाचार

श्रीमारुति सेवाः—फरवरी मास में मानस का एक अखंड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में खर्च १३३०.४२ हुआ और आय ९८३.२० हुई कमी ३४७.२२ की रही। इसमें से पिछली बचत १०६.२९ घटाने पर अब २४०.९३ की पूर्त्ति करना बाकी है।

नैरोबी के श्री जे० सी० भट्ट ने मानस सर के शंकर घाट के लिये श्री शंकर भगवान और पार्वती जी की मूर्त्ति प्रदान करना स्वीकार करके रुपये यहां भेज दिये थे। वे पिछले मासों में विभाग में जमा हो गये थे। इस मास में मूर्तियां आगईं और उनका दाम चुका दिया गया। वह खर्च नाम पड़ने के कारण ही इस मास विभाग में अधिक खर्च हुआ है। खेद के साथ लिखना पड़ता है कि भगवान शंकर की मूर्त्ति की एक अंगुली मार्ग में भंग हो गई इससे वह मूर्ति रेलवे से ली नहीं गई है। मूर्ति बीमा की हुई थी अतः लागत का दावा किया जा रहा है। दूसरी मूर्ति बनवाई जायगी। हमें दुख है इस कारण मूर्तियों के मंदिर में रखने में विलम्ब होगा। श्री पार्वती जी की बहुत सुन्दर दर्शनीय मूर्त्ति ठीक दशा में रामवन पहुँच गई है।

३-२-५८

५.०० श्री रामलाल साहनी, बीजापुर
१.२५ ,, शिवप्रसाद लाल, औरंगाबाद
१२.५० श्रीमती विजया कानोड़िया, कलकत्ता
५.०० श्री नन्दकुमार पाठक, मुरी
५.०० ,, शिवरामजी गुप्ता, हमीरपुर
२७.०० ,, दीवान श्रीकेशवदास सोनी, पटियाला
२५१.०० ,, लालाशिवनाथराय टीवरेवाल, सतना

५-२-५८

५.०० श्री सी० पी० शर्मा, खंडवा
५.०० ,, रामरक्षा सिंह, धनबाद
५.०० ,, रविराव जाधव, भेलसा

७-२-५८

१.०० श्री रामेश्वरप्रसाद लोहार, परौंख
११.०० ,, रामचन्द्र शर्मा, तितलागढ़
१.५० ,, रामसुन्दर त्रिपाठी, बावनपल्ली
१.२५ ,, अधिपाठकशाला, झिझरी
५.०० ,, कन्हैयालाल घनश्यामदास, बम्बई
५१.२५ ,, मती बतासाबाई, लेवाई गांव

१०-२-५८

५.०० श्री ओमप्रकाश जी, दिल्ली
५.०० ,, सीतारामजी शान्त, वाराणसी
२.५० ,, मालिकराम पटवारी, गोविन्दपुर

११-२-५८

१.२५ श्री नर्वदाप्रसाद तिवारी, जबलपुर

१२-२-५८

.५० श्री हरप्रसाद दुबे, मोंछ
२.०० ,, घासीराम हे० क्लर्क, मनमांड़
१.०० ,, एम० एन० ,,
२.५० गुप्तदान
५.०० धर्मपत्नी श्रीश्यामाचरण सोनी, छिंदवाड़ा
५.०० श्रीमती गंगाबाई, ,, ,,
१.२५ ,, सावित्रीबाई, ,,
१.२५ ,, मालतीबाई, ,,
२.०० श्री द्वारिकाप्रसाद व्यास वकील, ,,
१.०० ,, वंशीलाल जायसवाल, पचमढ़ी
३००.०० ,, बजरंगदासजी, सिरसा

१४-२-५८

११.०० श्री लाला शिवनाथराय टीवरेवाला, सतना

१५-२-५८

१.२५ श्री रामरतन शर्मा, झांसी
१.२५ ,, बाबू आनन्द स्वरूप भटनागर, झांसी
२.५० ,, शिवबहादुर, लखनऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७-२-८५

६.०० श्री हरीराम ब्राह्मण, मोहभट्टा
२.०० ,, विश्रामसिंह, चैतमा
५०.०० गुप्तदान

१८-२-५८

२.५० श्री पं० अम्बिकेश्वरपति त्रिपाठी, अयोध्या
२१.०० ,, सेठ भीमराज ज्वालाप्रसाद, सतना

१९-२-५८

५.०० ,, गनपत साव, राजिम
३.०० ,, चतुरभुज गुप्ता, हरनावदा

२०-२-५८

५.०० श्रीमती बाई शर्मा, भिण्ड
२.०० श्री रघुवीरदास जी, सोहन

२२-२-५८

२.२५ श्री मुकुटसिंह भदौरिया, सेंथरी
१.२५ ,, उदिया जी गेहलोत, तलवाड़ा
१.२५ ,, प्रेमदास जी पुजारी, ,,
११.०० ,, मथुराप्रसाद तिवारी, दर्री

२४-२-५८

५.०० श्रीभाई घेलाभानजी, अमलीपारा
५.०० ,, नत्थूलाल थवाइत, सारंगढ़

२५-२-५८

५.०० श्री महन्त रोशनपुरी गोस्वामी, कोहड़िया
५.०० ,, महेन्द्रपाल सिंह, गभाना
१.२५ ,, भागवत सिंह, अरी

२६-२-५८

१३.२५ श्री ओ० एच० विटलानी, काकामेगा

२७-२-५८

७.२५ गुप्तदान
१०.०० श्री दयाराम गर्ग, कटनी
५.०० ,, रामदीन दुबे, ,,
१.२५ ,, गरीबदास ,,
१.२५ ,, रामखेलावन ,,
१.२५ ,, मोहनलाल विश्वकर्मा ,,
१.२५ ,, मोहनसिंह ,,
१.२५ ,, तेजीलाल ,,

२८-२-५८

५०.०० श्री जी० पी० जायसवाल, इलाहाबाद
१३.६५ चढ़ोत्री

६८३.२० कुल। दाताओं को धन्यवाद।

मानसप्रचारः—इस मास में सदस्य शुल्क से ३८.५०, शाखा से २.००, श्री रामनाम लड्डू विभाग से २८.६३ और पत्रव्यवहार विद्यालय से १०.०० कुल ७६.१३ की आय हुई। चिट्ठी खर्च में ११६.७२ और कार्यालय में २५.०५ कुल १४१.७७ खर्च हुआ। ६२.६४ की कमी रही। पिछली कमी १२७४.१६ सहित अब १३३६,८३ की पूर्ति करना बाकी रहा।

श्री रामनाम लड्डूः—फरवरी मास में ५८० लड्डू तैयार हुए। दैनिक क्रम में १४० लड्डू श्री मारुति भगवान को समर्पण हुए। शेष श्रीरामनाम नौका के लिये रखे गये। केन्द्रों की स्थिति :—

[१] भाटापारा ६४३, मोतीहारी ४६४, सेंधवा ४५१, परौंख ३४६, [२] गोरखपुर २५०, झींझक २३२, [३] डगनिया २५८, [४] महू १६५, [५] जलालखेड़ी ११२, [६] नौगाँव ७४, [७] बाड़ा-गुल्लू ६४, [८] पहरिया ११३, [९] रीवा ४०, [१०] बाराद्वारबस्ती ३३, [११] हसुवा २५, [१२] तलवाड़ा, [१३] मन्डी अटेली।

इस मास में श्रीमती राजोबाई धरमपुरा ने आश्रम के लिये एक बोरा चावल भेजने की कृपा की है और श्री गुरुदयाल जी ताम्रकार भेलसा ने एक बोरा गेहूँ और एक बोरा चना। हम दोनों दाताओं के आभारी हैं। सूखा के कारण श्री-हनुमान जी की भूमि में अन्न बोया ही नहीं जा सका है। अतः पूरे वर्ष भर के लिये हम बाहर से आने वाले अन्न पर ही निर्भर हैं। इस कारण उपरोक्त अन्न का महत्व और भी बढ़ जाता है। हमें समाचार मिला है कि कुछ अन्य प्रेमी भी अन्न भेजने का विचार कर रहे हैं। श्री बजरंगदास जी एडवोकेट सिरसा ने अन्न के लिये २००) भेजने की कृपा की है उनके भी हम विशेष आभारी हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुलसी संग्रहालय

इस मास में १८४१.२४ खर्च हुआ और आय १२४.६२ की हुई। कमी १७१६.६२ की रही। पिछली कमी २६७५.०८ सहित अब ४६६१.७० की पूर्ति करना बाकी है। १२४.६२ पुस्तकों के लिए प्राप्त हुए हैं। इनसे पुस्तकें मंगा ली गई हैं।

ग्रन्थ संग्रह

संग्रहालय को ५ या अधिक पुस्तकें प्रदान करने वाले १० महानुभावों के शुभ नाम प्रकाशित करने में हमें हर्ष होता है। अब पूर्ण संख्या २४ हो गई है।

१-	श्री बलराम चटर्जी,	सतना	५
२-	,, एन० सी० मजुमदार,	,,	१०
३-	आचार्य श्रीलक्ष्मण सूरिजी,	बम्बई	१०
४-	श्री पं० केदारनाथ जी,	सतना	३०
५-	,, माधोलाल जी,	,,	६
६-	,, महेन्द्रप्रतापसिंह जी,	रीवा	५६
७-	,, बजरंगदास जी एडवोकेट,	सिरसा	२२
८-	,, जमुनाप्रसाद नर्वदाप्रसाद,	सतना	१३
९-	,, शंकरसहाय सक्सेना,	नवलगढ़	६
१०	,, सेठ मनसुखराय जी मोर,	,,	१२

श्री गोड़ी जी जैन मंदिर बम्बई से पुनः १६ पुस्तकें आई हैं। इनके अतिरिक्त उपरोक्त आचार्य श्री लक्ष्मण सूरि जी की पुस्तकों से भी श्वेताम्बर जैन साहित्य की अभिवृद्धि हुई है। श्रीबजरंगदास जी से महत्व पूर्ण वैदिक साहित्य तथा श्री सेठ-मनसुखराय जी मोर से श्रेष्ठ वैदिक तथा पौराणिक साहित्य प्राप्त हुआ है। हम सब दाताओं के आभारी हैं।

विगत मास में मैंने अपना व्यक्तिगत संग्रह आश्रम को भेटकर दिया है। इससे चार आलमारी परिपूर्ण हो गई हैं। यह मेरे पूज्य पिताजी के नाम पर लालबिहारी स्मारक संग्रह कहा जायगा। इनके अतिरिक्त सतना नगर से व्यक्तिगत संग्रहों में ११ आलमारी पुस्तकों के वचन मिले हैं और बाहर से ३ के। भवन की दीवालों मे कुल ३६ आलमारियां हैं। आशा है भवन निर्माण होते होते सबके लिये यथेष्ट पुस्तकें संग्रह हो जाँयगी। पूरी आलमारी प्रदान करने के इच्छुक महानुभाव शीघ्र पत्र-व्यवहार करने की कृपा करें।

श्री जी० एस० आगोसिया जी ने नवलगढ़ से एक प्राचीन कला वस्तु भेजने की कृपा की है। धातु का एक छोटा कच्छप है। उस पर एक कील से कमल लग जाता है। बन्द दशा में यह मंदराचल या बन्द कमल का रूप धारण करता है। खुले रूप में दर्शनीय विकसित कमल हो जाता है। कर्णिका में शिवलिंग या शालिग्राम की छोटी मूर्त्ति रखने योग्य स्थान है। अतः इसे कच्छप पर कमलासन कहना उचित होगा। यह कलापूर्ण तो है ही पुराना भी है। श्री अगोसिया जी ने प्राचीन पार्षद् संग्रह का श्री गणेश कर दिया इसके लिये हम विशेष आभारी हैं। —शारदाप्रसाद

ज्यों ज्यों सुरझावन चहत, त्यों त्यों ही उरझात।

रामवन की जलसमस्या हल होगई थी। आशा थी एक बार तुलसी ताल भरने पर फिर इसकी चर्चा मानस मणि में करनी न होगी। पर अनावृष्टि के कारण वह भरा नहीं। उतना जल भी उसमें नहीं आया जितना प्रति वर्ष आता था। मानस सर भी इस वर्ष नहीं भरा और आश्रम के कूप भी खाली ही रह गये। यह पंक्तियां लिखसे समय स्थिति गम्भीर है।

कुटियों के पास वाला कूप सूख गया है। २७-२-५८ से उसे गहरा कराना प्रारम्भ कराया जा चुका है। अब तक स्रोत नहीं मिला है। यदि कहीं दूसरा कूप भी सूखने पाया तब क्या होगा यह भय उपस्थित है और ऐसा हो इसके पूर्व स्रोत प्राप्त करने का उद्योग किया जा रहा है। आप वरुण देवता से रामवन आश्रम के लिये प्रार्थना करने की कृपा करें। —शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसनीय छत्तीसगढ़

सरकार ने हमसे मानस मणि के ग्राहकों की जिलेवार संख्या माँगी। यह संकलित करने पर हमें बहुत आश्चर्य हुआ कि होशंगाबाद जिले में मानस मणि के कुल ६७ ग्राहक हैं जबकि बिलासपुर में २६२ हैं। श्रीकंज जी के उद्योग से होशंगाबाद जिले में मानस संघ की शाखायें तो बढ़ी थीं पर मानस मणि के ग्राहक नहीं बढ़े। फल यह हुआ कि सतत सम्पर्क न रहने के कारण उनमें से अधिकांश अकर्मण्य हो गई हैं।

मानस मणि की ग्राहक संख्या क्रम में मध्य प्रदेश के निम्नलिखित जिले अन्यों से आगे हैं।

(१) बिलासपुर २६२, (२) दुर्ग १८२, (३) रायपुर १४३, (४) जबलपुर ७६, (५) होशंगाबाद ६७, (६) रायगढ़ ६५, (७) सागर ६४, (८) सतना ६२,

इस समय होशंगाबाद पाँचवें स्थान पर है। श्री कंजजी ने संकल्प किया है कि उसे प्रथम स्थान पर पहुँचायेंगे। जिले के मानस मणि के पाठक हाथ बँटायें तो काम कठिन नहीं है। १६५ का अन्तर है। प्रत्येक ग्राहक ३ नये ग्राहक बनाने की कृपा करें तो अन्तर होशंगाबाद के पक्ष में आजाय।

खास बात यह है कि इस समय छत्तीसगढ़ का प्रचार विशेष प्रशंसनीय है। प्रथम ३ स्थानों पर उनके ही जिले बिलासपुर, दुर्ग तथा रायपुर हैं। रायगढ़ में होशंगाबाद से दो ही ग्राहक कम हैं। आशा है कि इन सब जिलों में अभी और भी विशेष प्रगति होगी।

—शारदाप्रसाद

श्री रामचरित मानस में वेदान्त दर्शन :—

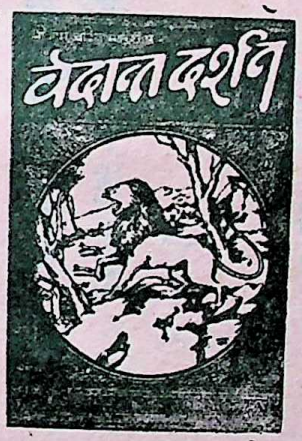

पृष्ठ संख्या १४२ मूल्य १।) लेखक की आस्था अद्वैतमत के शाङ्कर सिद्धान्त में है और उन्होंने अपने इस ग्रन्थ में प्रतिपादित किया है कि यही सिद्धान्त श्री रामचरित मानस में सुपुष्ट हुआ है। लेखक ने अपने विवरण सप्रमाण एवं गम्भीर ढंग से उपस्थित किये हैं। जो 'मानस' के सिद्धान्त को समझना चाहते हैं, उन्हें 'श्री मानस-सिद्धान्त' तथा यह ग्रन्थ भी अवश्य देखना चाहिये। जिससे वे दोनों दृष्टिकोणों को समझकर ग्रन्थ का ठीक तात्पर्य निकाल सकें।

लेखक :—
श्री हीरालालजी वर्मा
(नागपुर)

श्री रामचरित मानस में स्व स्वरूप दर्शन :—

पृष्ठ संख्या ११४ मूल्य १) लेखक अध्ययनशील हैं। उनके गम्भीर चिंतन ने उनकी विचार धारा को परिमार्जित कर दिया है। उन्होंने श्रीरामचरित मानस के अध्ययन से जीव को अपने स्वरूप का किस प्रकार एवं कैसा बोध होता है, यह अपने इस ग्रन्थ में निरूपण किया है। प्रत्येक तत्त्वजिज्ञासु के लिये यह पुस्तक मार्ग-दर्शन दे सकती है।

मिलने का पता—मानस संघ रामवन (जिला सतना) म० प्र०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर बैठे रामायण पढ़िये !

१—रामवन में 'श्री रामचरित मानस-पत्र-व्यवहार विद्यालय' है। यह आपको घर बैठे पत्र-व्यवहार द्वारा रामायण पढ़ा सकता है।

२—इस विद्यालय का पाठ्य-क्रम तीन वर्षों का है; किन्तु एक वर्ष का अर्थ ३६० या ३६५ दिन नहीं है। जब आप यहाँ से भेजे २५ पाठ पूरे कर लेते हैं तो एक वर्ष पूरा हुआ मान लिया जाता है।

३—इस विद्यालय के प्रथम वर्ष का प्रवेश-शुल्क १०) है।

४—प्रवेश-शुल्क देकर जब आप विद्यार्थी बन जायँगे, तब आपको एक पाठ भेजा जायगा। उस पाठ को पढ़ कर उसमें लगे प्रश्न पत्र को भर कर आप यहाँ भेजेंगे। प्रश्न पत्र की भूलें सुधार कर वह लौटा दिया जायगा तथा अगला पाठ भेजा जायगा। इसी क्रम से आपकी शिक्षा चलेगी।

५—इस विद्यालय में प्रथम वर्ष से ही छात्र लिये जाते हैं। भलेही उनकी शिक्षा-योग्यता कितनी भी कम हो।

६—प्रथम वर्ष का पाठ पूर्ण होने पर 'मानस-रसिक' द्वितीय वर्ष का पूर्ण होने पर 'मानस-मराल' तथा तृतीय वर्ष का पाठ पूर्ण होने पर 'मानस-मर्मज्ञ' की उपाधियाँ विद्यालय देता है। इनके प्रमाण पत्र भी दिये जाते हैं।

७—यह विद्यालय श्री रामचरित मानस की अर्थ-व्याख्या, आलोचना, इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र तथा दर्शन की शिक्षा तीन वर्ष के पाठ्य-क्रम में देता है।

* इसके छात्र बनकर आप भी लाभ उठावें। *

'मानस-मणि'
पो०—रामवन (सतना)

ग्राहक संख्या—७

सम्पादक जी 'मानस-मणि'
मानस-कार्यालय, रामवन, सतना

पो० गुरुकुल कांगड़ी
(सहारनपुर)

सम्पादक—भगवानदास सफड़िया। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)
मुद्रक—नीरज जैन, सुषमा प्रेस, सतना (म० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस मोती

राम निकेत

(८)

जननी सम जानहिं परनारी ।
धनु पराव विष ते विष भारी ॥

जे हरषहिं पर सम्पति देखी ।
दुखित होहिं पर विपति विसेषी ॥

जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपियारे ।
तिन्ह के मन सुभसदन तुम्हारे ॥

मूर्ति १७ अलोक ५
ई १९ ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुक्रमणिका

नाम	लेखक	पृष्ठ
१. श्रीराम विवाह	(श्री सूरदास जी)	१२१
२. मानस का सुन्दर सोपान	(डा० बल्देवप्रसाद जी मिश्र डी. लिट्)	१२२
३. वर की खोज	(श्री पं० रामकुमारदास जी रामायणी) ...	१२५
४. राक्षस राज(२)[धारावाहिक उपन्यास]....	(श्री सुदर्शनसिंह जी)	१३२
५. कलियुग में ब्रह्म का अवतार	(श्री भैरवप्रसाद जी द्विवेदी)	१३५
६. रामायण की प्रस्तावना	(श्री मनीराम जी द्विवेदी)	१३७
७. अनुराग	(श्री रामसुपाल जी भट्ट)	१४०
८. 'निज आयुध भुजचारी'	(श्री जगन्नाथ सिंह जी मुख्तार)	१४२
९. संघ समाचार—रामवन समाचार	....	१४५
१०. विविध समाचार ... ---	....	१४८
११. चैत्र पारायण समाचार	....	१५०

सक्रिय सदस्य

"मानस मणि" के सन् १९५८ के दो या दो से अधिक ग्राहक बनाने वाले सदस्य—

अठारह ग्राहक बनाने वाले— श्री पं० रामरक्षितजी रामायणी, बनारी (पूर्व प्रकाशित १६ नये २ कुल) १८।

दस ग्राहक बनाने वाले— श्री पं० केशरी किशोर शरण जी रामायणी, चौबेबेल। २— श्री महन्त रोशनपुरी जी गोस्वामी, कोहड़िया (पूर्व प्रकाशित ६ नये ४ कुल) १०।

नौ ग्राहक बनाने वाले— श्री पचकौड़राम जी, खपरीकलां (पूर्व प्रकाशित ६ नये ३ कुल) ९।

सात ग्राहक बनाने वाले— श्री मनशाराम जी, करगा (पूर्व प्रकाशित ३ नये ४ कुल) ७।

छः ग्राहक बनाने वाले— १— श्री पंचमसाव जी, चैनपुर (पूर्व प्रकाशित ४ नये २ कुल) ६। २— श्री रामदीन जी तिवारी, गुर्जीकलां (पूर्व प्रकाशित ४ नये २ कुल) ६। ३— श्री शालिग्राम जी, बीना (पूर्व प्रकाशित ४ नये २ कुल) ६।

चार ग्राहक बनाने वाले— १—श्री लालचन्दजी बमनोतिया, सालेचौकारोड (पूर्व प्रकाशित ३ नये १ कुल) ४। २— श्री डा० कालीचरण जी, टीटागढ़ (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल) ४। ३— श्री गोपालदास जी वैष्णव, रायपुरवा (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल) ४। ४— श्री गरुड़ध्वजप्रसाद जी उपाध्याय, गोपालपुर (पूर्व प्रकाशित २ नये २ कुल) ४।

तीन ग्राहक बनाने वाले— श्री हुवलाल जी रामायणी, श्रीपट्टी।

दो ग्राहक बनाने वाले— श्री बालमुकुन्दलाल जी विद्यार्थी, आरंग। २— श्री नन्दनप्रसाद जी, होसिर। ३— श्री भगवतलाल जी शर्मा, गंगापुर। ४— श्री सीताराम जी ब्रा०, मुरता। ५— श्री शिवदयालसिंह जी, कवर्धा। ६— श्री पन्नालाल जी, पचोखरा। ७— श्री सीताराम जी सुरेका, वेहरामपुर। ८— श्री अच्युतानन्द जी, झां हसनपुर रोड। ९— श्री ईश्वरीप्रसाद जी धुरंधर, भाटापारा।

नोट—जो सज्जन और नये ग्राहक बनाकर सक्रिय सदस्यता प्राप्त करेंगे; उनकी नामावली अगले मास दी जायगी। इस मास तक सक्रिय सदस्यों की संख्या ९८ है।

वार्षिक मूल्य तीन रुपया] विदेश में ६ शिलिङ्ग [वी० पी० से तीन रु० ६५ नये पैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्री सीताराम ॥

राम भगति मनि उर बस जाके। दुख लवलेस न सपनेहु ताके॥
चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं॥

मणि १७ | रामवन—बैशाख, मानस सम्वत् ३८५—मई १९५८ ई० | आलोक ५

श्रीराम विवाह

महाराज दसरथ तहँ आये।
बैठे जाइ जनक मंदिर महँ, मोतिन चौक पुराये॥
बिप्र लगे धुनि वेद उचारन, जुवतिन मंगल गाये।
सुर–गन्धर्वगन कोटिक आये, गगन बिमाननि छाये॥
राम-लखन अरु भरत-सत्रुहन, ब्याह निरखि सुख पाये।
'सूर' भयौ आनन्द नृपति मन, दिवि दुंदुभी बजाये॥

—श्री सूरदास जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का सुन्दर सोपान

[डा० बल्देवप्रसाद मिश्र, एम. ए. डी. लिट्]

नाथ भगति अति--सुख-दायिनी । देहु कृपा करि अनपायिनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा रामसुभाव जेहि जाना । ताहि भजनु तजि भावन आना ॥
यह संबाद जासु उर आवा । रघुपति-चरन-भगति सोइ पावा ॥
सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिवृन्दा । जय जय जय कृपाल सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपिपतिहिं बोलावा । कहा चलइ कर करहु बनावा ॥
अब बिलंबु केहि कारन कीजै । तुरत कपिन्ह कहुँ आयसु दीजै ॥
कौतुक देखि सुमन बहु बरषी । नभ तें भवन चले सुर हरषी ॥

दो०—कपिपति बेगि बोलाये आये जूथप जूथ ।
नाना बरन अतुल बल बानर भालु बरूथ ॥३४॥

"हे नाथ ! (मैं तो प्रचण्ड शक्ति का नहीं किन्तु आपकी कृपा और आपकी भक्ति का याचक हूँ। अतएव) कृपा करके अति सुखदायिनी अनपायिनी (अर्थात जिसमें कभी कोई उपाय या क्लेश हो हो नहीं सकता ऐसी) भक्ति दीजिये।" हे पार्वती जी ! प्रभु ने कपि की परम सरल वाणी सुनकर तब 'एवमस्तु' (अर्थात ऐसा ही हो— मतलब यह कि तुम्हें हमारी भक्ति पूरे आनन्द सहित मिल जाय ऐसा) कहा। हे उमा ! जिसने राम के इस स्वाभाव को जान लिया उसको भजन छोड़कर और कोई वस्तु भा ही नहीं सकती। यह संवाद जिसके हृदय में अंकित हो जाय (मतलब यह कि जो इस संवाद के तत्व को हृदयंगम करले) वह भी रघुपति के चरणों की भक्ति पा जाता है। [फिर हनुमान जी का तो कहना ही क्या था।] प्रभु के वचन सुनकर कपियों ने "जय जय जय कृपालु सुखकंद" कहा (और यही नारे लगाते रहे।) ध्यान देने की बात है कि 'कहहिं' वर्तमान कालिक क्रिया है जिसका अर्थ होगा कि वह क्रिया सहज ही समाप्त नहीं हुई। वह चलती ही रही।]

तब रघुपति ने कपिपति को बुलाया और कहा "चलने की तैयारी करलो। अब किस कारण विलम्ब किया जाय। कपियों को तुरन्त आदेश दीजिये।" यह कौतुक देखकर देवताओं ने बहुत से फूल बरसाये और हर्षित होकर आकाश छोड़ (वे) अपने अपने भवन की ओर चले। ❀ कपिपति ने शीघ्र आमंत्रित किया (और उनके आमंत्रण पर) यूथकों-सेना नायकों-के यूथ (के यूथ झुण्ड-के झुण्ड) आ गये। वानर भालुओं का वह सैन्य समूह अनेक वर्णों वाला और अतुल बल वाला था।

❀ राम और हनुमान की उस भेंट में लंका पर चढ़ाई करने का महत्वपूर्ण निर्णय होने वाला था अतएव परम उत्सुकता से देवगण विमान ले लेकर नभ पर छा गये थे। निर्णय होते ही उन्होंने अपरिमित फूल बरसाये और अपने अपने शरीरों में जाकर प्रविष्ट हो गये क्योंकि इस समय वे शरीर ही तो उनके भवन हो गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु--पद--पंकज नावहिं सीसा । गर्जहिं भालु महाबल कीसा ॥
देखी राम सकल कपिसयना । चितइ कृपा करि राजिवनयना ॥
राम--कृपा--बलु पाइ कपिंदा । भये पच्छजुत मनहुं गिरिंदा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भये सुन्दर सुभनाना ॥
जासु सकल मंगलमय कीती । तासु पयान सगुन यह नीती ॥
प्रभुपयान जाना बैदेही । फरकि बामअंग जनु कहि देही ॥
जोइ जोइ सगुन जानकिहिं होई । असगुन भयेउ रावनहिं सोई ॥
चला कटकु को बरनइ पारा । गर्जहिं बानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि-पादप-धारी । चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरि नाद भालु कपि करहीं । डगमगाहि दिग्गज चिक्करहीं ॥

छंद—चिक्करहिं दिग्गज डोल महि गिरि लोल सागर खरभरे ।
मन हरष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुखटरे ॥
कटकटहिं मर्कट बिकट भट बहु कोटि कोटिन्ह धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोसलनाथ गुनगन गावहीं ॥

सह सकि न भार उदार अहिपति बारहिं मोहई । गहि दसन पुनि पुनि कमठपृष्ठ कठोर सो किमि सोहई ॥
रघुबीर-रुचिर-प्रयान-प्रस्थिति जानि परम सुहावनी । जनु कमठखर्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥

दो०—एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर ।
जँह तँह लागे खान फल भालु बिपुल कपिबीर ॥३५॥

महाबली वानर और भालु लोग प्रभु-पद-पंकजों पर अपने अपने सिर झुका रहे थे और गर्जना कर रहे थे। ‡ राम ने सकल कपि सेना देखी और कृपा करके (उनकी ओर अपने)

‡ कुछ लोग बाल्मीकीय रामायण का एक साँकेतिक प्रमाण देकर कहते हैं कि वानर और भालू भी वन्य मनुष्य ही थे जो अन्य मानवों की तरह सुसंस्कृत भी थे। वानराकार तो उनका युद्ध के समय का गणवेश था जिससे उनकी अलग पहिचान हो जाय। परन्तु हमारा निवेदन है कि रामकथा को केवल आधिभौतिक इतिहास की दृष्टि से ही देखने का प्रयत्न क्यों किया जाता है। भावुक भक्तों तथा विचारशील तत्वदर्शियों ने उसमें आधिदैविक और आध्यात्मिक सत्य की भी बातें जोड़ दी हैं। उन्हें उसी दृष्टि से समझा जाय। आधिदैविक सत्य के क्षेत्र में वानर भालु गण उसी देवयोनि के जीव हैं जिस कोटि में अन्य देवताओं और राक्षसों का समावेश होता है। [देवयोनि के जीवों के दो विशिष्ट गुण थे—एक तो काम रूपता (अर्थात मन चाहा रूप धर लेना) और दूसरा कामचारिता (अर्थात मन चाहे मार्ग से मनचाही जगह पहुँच जाना) तीसरा एक गुण विशेषतः सुरों और असुरों में था मायाचार। योग के बल से सामान्य मनुष्य भी ये तीनों शक्तियाँ प्राप्त कर सकता है] राम कथा के वानर भालु पशु-योनि के जीव थे या अर्ध-सभ्य मनुष्य (वा-नर) थे यह तो उस समय का आधिभौतिक इतिहास ही जाने परन्तु राम कथा के प्रवक्तागणों ने जब लिख दिया कि देवगण ने ब्रह्मा के पूर्वादेश के अनुसार वानर शरीरों में प्रवेश किया था तो हमें उन्हें अमानवीय शक्ति सम्पन्न मानकर ही कथा रस-पान करना होगा। यह आधि-भौतिक जगत का सत्य हो या न हो किन्तु आधि-दैविक जगत का-भावना जगत का-सत्य तो है ही। राम आधिभौतिक जगत के राम ही नहीं किन्तु आधिदैविक जगत के विष्णु अथवा महाविष्णु भी तो थे। कथाकार का दावा तो यही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव नयन फेरे। राम की उस कृपा-कोमल (दृष्टि का) बल पाकर कपीन्द्र लोग मानों पक्ष युक्त गिरीन्द्र बन गये। [गिरीन्द्रों की तरह वे ऊंचे पूरे और अडिग तो थे ही भगवत कृपा का पक्ष उनकी ओर हुआ तो मानो उनके नये पक्ष-नये पंख-निकल आये और वे आगे उड़ चलने के लिये पूरे सक्षम हो गये।] राम ने तब हर्षित होकर प्रस्थान किया (उस समय) अनेक प्रकार के शुभ और सुन्दर शकुन हुए [जो सहज ही भावी कार्य-सिद्धि के द्योतक थे।] जिसकी कीर्ति ही (है कि वह) सकल मंगलमय है उस प्रभु राम के प्रयाण में शुभ शकुनों (का उदित होना व्यवहारिक) नीति की रक्षा के लिये ही समझिये। [शकुन स्वतः अपनी प्रतिष्ठा-सिद्धि की रक्षा के लिये उस समय प्रगट हो गये।] बैदेही को (जिन्हें वियोगावस्था में अपनी देह तक की सुधि नहीं थी) प्रभु का प्रस्थान विदित हो गया। वामअंगो ने फड़क कर मानों यह घोषणा कर दी। [स्त्रियों का वाम अंग फड़कना शुभ हुआ करता है। उस समय रावण के भी तो वाम अंग फड़के थे।] श्री जानकी जी के लिये जो जो सगुन हो रहे थे रावण के लिये वही वही असगुन हो रहे थे।

कटक चला। उसका वर्णन कौन कर सकता था? अपार वानर भालु गर्जना कर रहे थे। उनके नख ही उनके आयुध थे। (फिर भी) उन्होंने पहाड़ और (बड़े बड़े) वृक्ष (उखाड़ कर हाथों में) धारण कर लिये थे। वे इच्छाचारी थे-मन कामना के अनुसार चल सकने वाले थे (अतएव कभी) आकाश (मार्ग) से और (कभी) भूमि (मार्ग) से चले। भालू और कपि सिंह नाद करते जाते थे (जिसे सुनकर दिशाओं को थामने वाले) दिग्गज भी डगमगा कर चीत्कार कर उठते थे।

दिग्गज चीत्कार कर उठते थे, पृथ्वी डोल उठती थी, अचल भी चंचल हो उठते थे और सागर में खलबली मच जाती थी। (दिन और रात के साक्षी) सूर्य और चन्द्र के मन में हर्ष उमड़ पड़ता था (क्योंकि वे समझ चुके थे कि) अब सुर, नर, नाग, किन्नर (सभी) के दुख (मानों) टल गये। मर्कट लोग कटकटा रहे थे--दाँत पीस रहे थे--वे बिकट भट बहु कोटि कोटि (की संख्या में) दौड़ रहे थे। 'प्रबल प्रताप कोशल नाथ राम की जय हो' (ऐसा कहते हुए) उनके गुणगणों का गान करते जा रहे थे। विशाल अहिपति (शेषनाग) भी वह (केन्द्रीभूत) भार सह नहीं सक रहा था (इसलिये) बार बार मूर्छित होता जा रहा था और कठोर कमठ पृष्ठ पर बार बार दाँतों का टेका लगा लेता था—दाँतों से बार बार कछुए की पीठ पकड़ लेता था। उस समय वह (दृश्य बड़ा) सुहावना लगता था। (जान पड़ता था) मानों रघुवीर की रुचिर प्रयाण--प्रस्थिति (अर्थात प्रस्थान मुहूर्त या प्रयाण की प्रकृष्ट स्थिति) को परम सुहावनी और पावनी जानकर कमठ की पीठ (रूपी पट्टी) पर सर्पराज (दाँत रूपी टाँक से) अविचल बनाकर लिख रहे हैं।

★ कृपानिधि इस प्रकार जाकर समुद्र के सिनारे उतर पड़े। (अर्थात डेरा डाल दिया।) विपुल भालू और वीर कपि लोग (अथवा यों कहिये कि विपुल वीर या विपुल तथा वीर वे भालू तथा कपि लोग) जहाँ तहाँ फल खाने लगे।

★ आधिदैविक भाषा म कह जाता है कि यह विश्व सहस्र सिर वाले शेषनाग के फन पर टिका है और वे शेष महाकच्छप की पीठ पर स्थित हैं। आध्यात्मिक अर्थ में महाकच्छप है आदि प्रकृति जो पाँच तत्वों की विस्तार और संकोच (संक्रम और प्रति संक्रम) क्रिया करती है, ठीक उसी प्रकार जैसे कछुये के पाँचों अंग (अर्थात एक सिर और चारों पैर) बाहर बढ़ भी सकते हैं और भीतर भी सिकुड़ सकते हैं। शेष चैतन्य का वह शेष अंश हुआ जो 'पादोस्य विश्वा भूतानि' इस वेद मंत्र के अनुसार विश्व के समस्त भूतों-समस्त पदार्थों में स्थित है अथवा यों कहिये कि जिस पर विश्व के समस्त भूत स्थित हैं। आधिभौतिक (प्राकृत) जगत में शेषनाग और महाकच्छ को ढूँढना एकदम उपहासास्पद होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर की खोज

[मानस तत्वान्वेषी पं. श्री रामकुमारदास जी रामायणी, वेदांत भूषण, साहित्यरत्न, मणिपर्वत श्री अयोध्याजी]

सीताजानेस्सकलभुवनाधार कीर्तेः पताका,
विख्यातो विश्वदण्डाकृतिरखिललका केलि कौशल्य शालिः।
सर्वेशानन्त शक्तिः विधिहरिहरवन्द्यः प्रेमपाथोधिपूर्णः,
प्राणेशो प्रेष्ठमूर्तिःशुभगुणनिलयः पातुमां लक्ष्मणार्यः॥
कमल पाण कमलासना कमलकान्ति कमनीय।
शिशु अबोधनिज मोहिंगुनि छमिहि दोष सबसीय॥

श्री सीताजी के स्वयंवर के सम्बन्ध में कोई कहते हैं कि—

१—जनक जी शिवधनुष पूजते थे इसलिए धनुष के पास नित्य चौका लगा करता था। एक दिन चौका लगाने वाली के किसी कार्य में व्यस्त हो जाने के कारण सीता जी ने ही बायें हाथ से धनुष उठाकर उसके नीचे भी चौका लगा दिया। उनका यह बल देखकर जनक जी ने धनुष भंग का प्रण किया।

२—किसी समय खेलते खेलते ही सीताजी के वस्त्रों में बझकर धनुष घिसटने लगा, उनका बल तथा वस्त्रों की मजबूती देखकर राजाने धनुर्भंग का प्रण किया।

३—"तुलापिनाकसाहुनृप त्रिभुवन भटबटोरि-सबके बल जोखे।" (गीतावली) जनक ने वीरों की परीक्षा के लिये प्रण किया था। इत्यादि

परन्तु प्रथम दो भाव तो अप्रासंगिक एवं अप्रमाणिक अथच कथकड़ियो के मनगढ़न्त हैं और तीसरा तो गोस्वामी जी का कवि कल्पना प्रसूत रूपक है। उपर्युक्त दो की तरह और भी कितने कारण सुने जाते हैं परन्तु सभी तर्क एवं प्रमाण से रहित अतएव अनर्गल हैं।

इस विकट प्रण के मूल में कौन सा कारण निहित है इसका कोई स्पष्ट एवं सुपुष्ट प्रमाण-श्रौत स्मार्त प्रमाण मुझे नहीं मिला है। आगे जो कारण मैं बतारहा हूँ उसके लिये इशारा तो कई सद्ग्रंथों में है परन्तु खुले शब्दों में ग्रन्थ प्रामाणिकता की छाप नहीं है तो भी प्रसंगानुकूलता की छाप हृदय में जम गई है। उस हार्दिक भाव को इसलिये प्रगट कर रहा हूँ कि कुछ लोगों का मनोरंजन तो होगा ही साथ ही साथ शायद मानस मर्मान्वेषियों को किंचित नवप्रकाश या प्रकाशाभास ही प्राप्त हो। ऐसा विकट प्रण जनक ने क्यों किया यह निर्णय होने के पहले स्वयंवर कालीन प्रथा का ज्ञान हो जाने से इसके निर्णय में विशेष सुगमता हो जाने की संभावना है।

सामान्य और विशेष भेद से स्वयंवर दो तरह का होता था। सामान्य वह जिसमें कन्या ही स्वयं अपनी रुचि के अनुकूल पति का वरण करती थी। जैसे दमयंती, विश्वमोहनी, इन्दुमती आदि का स्वयंवर और दूसरा विशेष वह जिसमें वर को ही पत्नी के लिये परीक्षोत्तीर्ण होना पड़ता था, अर्थात् पुरुष ही वरण करता था, कन्या का कोई अधिकार नहीं रहता था। वह इस तरह कि जब पतिंवरा कन्या के लिये कन्या का पिता किसी व्यक्ति विशेष को खोजकर उसके साथ का विवाह करना चाहता था, परन्तु उस व्यक्ति विशेष से अपरिचित होने के कारण अथवा उसका पता न होने के कारण उसकी खोज एवं परिचय के लिये कोई ऐसा विकट तांत्रिक प्रयोग करके प्रण कर देता था कि जो उस अन्वेषणीय पुरुष की परीक्षा का कारण होता था, क्योंकि उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रण को वही इच्छित पुरुष ही पूरा कर सकता था दूसरा नहीं। प्रण पूरा करना ही परीक्षोत्तीर्ण होना एवं पति की ओर से वरण करना कहा जा सकता है।

द्रौपदी के अग्निकुण्ड से निकलते ही आकाश वाणी हुई थी कि यह कन्या पांडवों को व्याही जाकर कौरवों के विनाश का कारण बनेगी—

अस्या हेतो कौरवाणां महदुत्पत्स्यते भयम् ॥
(महाभा० १-१६६-४६)

परन्तु थोड़े दिनों के बाद ही पाण्डवों के लाक्षागृह में जल कर मर जाने का विश्वसनीय समाचार व्याप्त हो गया। धृतराष्ट्र ने पाण्डवों की अन्त्येष्ठी क्रिया भी कर डाली किन्तु द्रुपद को विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि—

"देव गिरा सुनि सुन्दर साँची।"

क्या देववाणी भी कभी असत्य हो सकती है। अतः द्रुपद ने तांत्रिकों की सलाह से पाण्डवों के नाम पर मत्स्यवेध नामक यंत्र (तिलस्म) का निर्माण करके विज्ञप्ति कर दिया कि जो मीनवेध करे वह द्रौपदी को पत्नी बनावे। मीन वेधना ही पाण्डव होने की कसौटी थी। देखिये महाभारत आदि पर्व अध्याय १८७

यज्ञसेनस्य कामस्तु पाण्डवाय किरीटिने।
कृष्णां दद्यामितिसदान चैतद्विवृणोतिसः॥ ८
सोऽन्वेषमाणः कौन्तेयंपांचाल्यो जन्मेजयः।
दृढंधनुरनायम्यं कारयामास भारत ॥ ६ ॥
यंत्रं वैहायसं चापिकारयामास कृत्रिमम्।
तेनयंत्रेण समितं राजा लक्ष्यं चकारसः॥१०॥

द्रुपद उवाच—
इदं सज्यं धनुः कृत्वा सज्जैरेभिश्च सायकैः।
अतीत्य लक्ष्यं यो वेद्धा स लब्धामत्सुतामिति ॥११॥
इति स द्रुपदो राजा स्वयंवरमघोषयत् ॥ १२ ॥

अयंहि कामो द्रुपदस्य राज्ञो,
हृदि स्थितो नित्यमनिन्दितांगाः।
यदर्जुनो वेष्टथु दीर्घ बाहु—
धर्मेण विन्देत सुतांममैताम् ॥

(म० भा० आदि प० १६५। १६)

यथा स्वयंवरे राज्ञि मत्स्यः पार्थेप्सया कृतः।
अयंतु बहिराच्छन्नो दृश्यतेसजले परम् ॥
(भागवत् १०। ८३। १६)

यही कारण है कि अर्जुन के अतिरिक्त दूसरा कोई भी उस मीन को वेधकर उस तिलस्म को तोड़ न सका। इसी तरह मद्रदेशाधिपति राजा बृहत्सेन भी अपनी कन्या लक्ष्मणा का व्याह उसकी रुचि अनुकूल ही नारायण से करना चाहते थे परन्तु उस समय कई नारायण थे जैसे परशुराम, व्यास, कपिल, दत्तात्रेय, कृष्ण, बलदेव, अर्जुनादि। यथा—

ब्रह्मरुद्रार्जुन व्यास सहस्रकर भार्गवाः।
मुचुकुन्दात्रेय कपिल बुद्धाद्यायेसहस्रशः॥
शक्त्यावेशवतारास्तु विष्णोस्तत्कालविग्रहाः॥
(तत्वत्रयभाष्ये)

इनमें अंश और अंशी का निश्चय न जानने से अंशी नारायण के नाम मत्स्यवेध का तिलस्म बांध कर उन्होंने विज्ञप्ति करदी थी। मद्रदेश का मत्स्य तिलस्म अंशी भगवान के नाम का होने के कारण ही उसका वेध अर्जुन से भी नहीं हो सका, जिस अर्जुन ने कि पाँचाल नरेश के यहां उसी तरह का ही मीन वेध कर महान यश और सर्व सुन्दरी अयोनिजा पत्नी प्राप्त कि थी। मद्रदेश का मीन वेध पूर्णनारायणावतार भगवान श्री कृष्ण ने ही किया था। (इस मद्रदेशीय मत्स्यवेध का पूर्ण विवरण भागवत १०। ८३। १७ से ३६ तक देखिये।) ऐसे ही दक्षिण कोशल (वर्तमान नागपुर बम्बई) के राजा नग्नजित ने अपनी कन्या सत्या का विवाह नारायण से करने की इच्छा से ही बहुत दूर दूर रहने वाले, मतवाले नरघाती उन सातों जंगली साड़ों को एक ही रस्सी में नाथ देने वाले को कन्या देने की प्रतिज्ञा की थी (देखिये भागवत १०। ५८। ३२ से ५५ तक तथा १०। ८३। १३, १४ श्लोक।)

राजा गाधि ने महर्षि ऋचीक के भार्गवी तेज पराक्रम की परीक्षा के लिये ही उनसे सत्यवती के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदले में एक हजार श्याम कर्ण घोड़े मांगे थे। पुराणों में ऐसे ही अनेकों आख्यान हैं और जहाँ जहाँ ऐसा प्रतिज्ञाबद्ध स्वयंवर होता था वहां २ ही कारण विशेष वश व्यक्ति विशेष के ढूंढ़ने के लिये-उसकी परीक्षा के लिये ही होता था। अतएव इसमें अब यह देखना है कि जनक जी ने शिव-धनुर्भंग पर ही सीता के व्याह का प्रण क्यों किया ? कि—

सोइ पुरारि को दण्ड कठोरा।
राज समाज आज जेहि तोरा॥
त्रिभुवन जय समेत वैदेही।
विनहिं विचारि बरै हठि तेही॥
"धनुतोरै सोइ बरै जानकी राउ होइ की राँक।"
(गीतावली)

यदि न तोड़ सके तो उठाकर प्रत्यंचा ही चढ़ा दें. यह अंतिम प्रण अर्थात् हारे दर्जे की बात थी कि—

"तोलने वेपनेऽथवा"
"रहा चढ़ाउब तोरब भाई।
तिल भरिभूमि न सके छुड़ाई॥"

यद्यपि इस प्रतिज्ञाबद्ध स्वयंवर का कारण मानस में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है तथापि श्री गोस्वामी जी के ग्रन्थों के अनुशीलन से—

समुझि परइ जस कारण मोहीं।
"आपनि समुझि कहै अनुगामी॥"

श्री सीता जी की अवस्था विवाह के योग्य हो जाने पर भी जनक जी ने न तो—

जो घर वर कुल होइ अनूपा।
करिय विवाह सुता अनुरूपा॥

न्यायानुसार वर खोज कर ही विवाह किया और न पतिंवरा स्वयंवर के अनुसार राजाओं, राजकुमारों को एकत्र करके कन्या को वर चुन लेने का अधिकार ही दिया यद्यपि सीता जी को अवस्था प्राप्त सयानी देखकर जनक जी को घोर दुःख होता रहता था जैसा कि स्वयं जानकी जी ने ही अनुसूया से बताया था—

पति संयोग सुलभं वयो वीक्ष्य पितामम।
चिन्तामभ्यगमद्दीनो वित्तनाशादिवाधनाः॥
(वाल्मी० रा० २। ११८। ३४)

श्रीसीता जी की उम्र और जनकजी की चिन्ता का वर्णन कुछ हेर फेर के साथ गोस्वामी जी ने भी लिखा है कि—

"जौ पटतरिय तीय सम सीया।
जग अस जुवति कहां कमनीया॥"
"तव सिय देखि भूप अभिलाखे।"
"भये मोह वश सब नर नाहा।"
"नृपन विलोकि जनक अकुलाने"

लोक एवं शास्त्र का सिद्धान्त है कि—

जो घर वर कुल होइ अनूपा।
करिय विवाह सुता अनुरूपा॥

अर्थात बेटी का विवाह उसके साथ करना चाहिये जो कि लड़की से रूप, गुण, बल, विद्या, बुद्धि, प्रतिष्ठा, परिवार, कुल, वंश, जाति आदि सब में सब प्रकार श्रेष्ठ हो। क्योंकि विवाह में—

कन्या वरयते रूपं पिता वरयते कुलम्।
माता वरयते द्रव्यं मिष्ठान्नमितरेजनाः॥
वर कन्या रूपहिं चहैं, पितु कुल बान्धवख्याति।
माता धन जन चहति है, भोजन चहति बराति॥

यदि ऐसा न हो सके तो हरबातों में लड़की के बराबर तो वर हो ही, लड़की से न्यून तो किसी अंश में नहीं ही होना चाहिये। न्यून को लड़की देना शास्त्रगर्हित तो है ही, लोक में अपयश भी कम नहीं होता और लड़की भी सुखी नहीं रहती जिससे माता पिता को हार्दिक दुख बना ही रहता है। अस्तु

हो सकता है कि जितनी लौकिक
बढ़ कर वर मिल ज और
जाता है; परन्तु हमारी कन्या-सीता के लिये रूप, गुण, वय, धन, परिवार आदि से बढ़कर या बराबर वर तो विधि के विधान में मिल सकता है; परन्तु यह पुत्री एक अलौकिक रूप से उत्पन्न हुई है-पृथ्वी से उत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी उत्पत्ति है पिता से नहीं। तात्पर्य यह कि इसी तरह वर भी अयोनिज हो, परन्तु ऐसा वर मिले तो कहां ? क्यों कि--

कोउ नहिं जनमें मात पिता बिनु बँधी वेद की नीती।

और मेरी कन्या सरीखे—

भूतलादुत्थितः सुतः।

कहीं सुना नहीं जाता, तब बेटी का विवाह किससे करूँ ? यदि किसी से पूछता हूँ कि तुम्हारी जानकारी में कहीं बिना बाप का बेटा है तो वह मुझे सिवा पागल अथवा वेवकूफ के और क्या कहेगा ? गोस्वामी जी ने लिखा है कि जैसे पार्वती को—

कुंअरि सयानि विलोकि मातु पितु सोचहि।
(पार्वती मंगल १०)

वैसे ही जनक जी भी—

नृप लखि कुंअरि सयानि बोलि गुरु परिजन।
करि मत रचेउ स्वयंवर शिव धनु धरि पन॥
(जानकी मंगल ८)

जब जनक जी ने अपनी कठिनाई गुरुवर याज्ञवल्क्यजी और पुरोहित शतानन्दजी के सामने रखी तो गुरू जी ने सलाह दिया कि आप अपनी योग शक्ति से पृथ्वी देवी को प्रत्यक्ष कीजिये तब या तो भू देवी अपनी कन्या को ले जायेगी या कोई सुगम मार्ग इस धर्म संकट से उद्धार पाने के लिये बतलायेंगी। तब जनक जी ने अपनी योग शक्ति से भू देवी का आवाहन किया। एक सुन्दरी के रूप में भू देवी प्रगट हुई तब जनक और पृथ्वी में इस तरह बात चीत होने लगी —

जनक-देवि ! मेरे यज्ञप्राँगण में तुम्हारी कन्या पैदा हुई। मैंने पाल पोस कर सयानी कर दिया, अब वह विवाह योग्य हो गई है, अतः अपनी बेटी को ले जाओ और जहां चाहो उसका विवाह करदो।

पृथ्वी-राजन् ! महीपाल की आज्ञा का उल्लंघन करके कौन सुख से जीवन यापन कर सकता है अतः मैं ही कैसे अज्ञोल्लंघन करूँगी। परन्तु जाने के पहिले क्या श्रीमान के चरणों में अपनी कुछ जिज्ञासा रख सकती हूँ ?

जनक-देवि ! सहर्ष पूछ सकती हो।

पृथ्वी-भूपते ! घर-गृहस्थी का कार्यव्यवहार पति-पत्नी मिलकर किस रूप में चलाया करते हैं ?

जनक-'गृहणी गृहमुच्यते' गृह के भीतर का काम गृहिणी सँभालती है और गृह के बाहर का काम गृहस्थ करता है।

पृथ्वी-कन्या के लिये योग्य वर गृह के बाहर खोजा जाता है या गृह के भीतर ?

जनक-बाहर।

पृथ्वी-बाहर कौन खोजता है ?

जनक-पति।

पृथ्वी-तब आपने मुझे यहां मंत्रणागृह में क्यों बुलाया है ? क्या सीता मेरी ही बेटी है आपकी नहीं ? मैं भू हूँ, क्या आप भूपति नहीं हैं। आप भूपति हैं अतः भू नन्दिनी के लिये वर खोजना आपका काम है। खोज लेने पर पसन्द करने में मैं केवल सम्मतिमात्र देने का अधिकार रखती हूँ। होगा तो आपकी ही रुचि से और सत् कन्याओं का तो सनातन से यही प्रण है कि—

यस्यनो दास्यति पिता सनोभर्ता भविष्यति।
(बाल्मी० रा० १।३२।२२)

जनक-देवि ! देवलोक की तो मैं कह नहीं सकता, परन्तु नरलोक में तो विवाह जगत में और जीवन में एक प्रधान अत्यन्त प्रधान और आवश्यक समस्या है, इसी पर सृष्टि और जाति अवलंबित है। यह वैदिक संस्कारों में मुख्यतम है, परम धर्म है, इसी से स्त्री पुरुषों का परस्पर ऐक्य होता है। दो को एक करने के लिये यह आवश्यक है कि उनमें समानार्थता और समान धर्मिता हो ; उनके गुण, धर्म, स्वभाव एक हों। ऐसा सवर्णता या समजातीयता से होता है। ऐसा होने से ही स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी और शक्ति हो जाती है और पुरुष उससे अभिन्न। और सब ठीक हो सकता है परन्तु सीता की समानता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध में मैंने अपने विचार से हताश होकर ही तुम्हें बुलाया है। भला सीता की समानता के लिये बिना बाप का बेटा-अवीर्यज पुत्र कहाँ मिल सकता है ?

पृथ्वी-आप समस्त क्षत्रिय बीरों को एकत्र कीजिये मैं उनमें अवीर्यज की परीक्षा कर लूंगी।

जनक (हँसकर)-भला बिना बाप का बनने (गाली सुनने) कौन आयेगा ? जब लोग सुनेंगे कि जनक तो अवीर्यज मनुष्य खोजने के लिये ही सब को एकत्र करना चाहते हैं तो मुझे क्या कहेंगे ? पागल या मूर्ख ! झूँठ तो मैं कह नहीं सकता और पतिंवरा स्वयंवर करना नहीं चाहता, क्यों कि भोली भाली बच्ची को किसी के कुल अभिजन आदि का क्या पता चलेगा। अतः धोखा खा जाने का डर है।

पृथ्वी-वैसा कहने और करने का अवसर ही नहीं मिल सकता।

जनक-तब कैसे और क्या किया जाय ?

पृथ्वी-महाराज देवरात के समय से आपके यहां जो शैव पिनाक रहता है उसी को निमित्त बना कर सबको एकत्र कीजिये। अर्थात जो कोई धनुष को उठावै, चढ़ावै, तोरै उसी के साथ सीता का विवाह होगा। घोषित कीजिये कि—

वीर्य शुल्का हि जानकी।

जनक-यह कौन बड़ी कठिन बात है; शिव धनुष उठा चढ़ा लेने वाले, तोड़ डालने वाले भी अनेक वीर्यज वीर हो सकते हैं। रावण पर तो सहज ही विश्वास किया जा सकता है; जिसने कि कैलाश को उठा लिया था। जब कि यह धनुष तथा सपरिकर एवं सपरिवार शंकर जी कैलाश पर ही थे, तब उस वीर रावण के लिये खाली पिनाक मात्र उठाना, चढ़ाना और तोड़ना भी कौन बड़ी बात है ?

पृथ्वी-ऐसा होने का अवसर ही न आयेगा।

जनक-कैसे ?

पृथ्वी-उस समय मैं कैलाश को पकड़े नहीं थी, और इस वार मैं स्वयं धनुष को पकड़े रहूँगी, जब अवीर्यज पुरुष आयेगा तभी छोड़ूंगी।

जनक-फिर भी डर है कि यदि कहीं सगरपुत्रों सरीखे कोई वीर हो जो योजन भर व्यास की पृथ्वी एक साथ अर्थात एक चंगुल में हटा देते थे प्रथम यदि कहीं परशुराम सरीखे ही वीर्यज वीर उतने अंश में तुम्हीं को उलट पलट दें जितने अंशों में कि धनुष है—

उलटौं महि जहँ लगि तव राजू।

पृथ्वी-ऐसा करने का भी किसी को अवकाश ही नहीं मिल सकता, क्यों कि मैं अपने सब सहायकों से भी सहायता लूंगी अर्थात सभी दिग्गज, कूर्म, वाराह और शेष आदि सब कोई दृढ़ता पूर्वक मुझे पकड़े रहेंगे। और पिनाक भी मुझे दावे रहेगा। आपसे अविदित तो है ही नहीं कि पिनाक भगवान विष्णु की हुँकार से स्तंभित-केवल गमनागमन शक्ति रहित (वाह्य जड़) हो गया है, भीतर से तो यह चैतन्य ही है और अभी भी वह भगवत-कृपा से जब चाहे तब छोटा बड़ा स्वेच्छानुसार ही हो सकता है और चाहे जितना हलका एवं गरुआ भी तो हो सकता है। अतः धनुष से भी कह दूँगी कि तुम वीर्यज पुरुषों के लिये और भी गरुआ होते रहना, बड़े तो काफी अभी से हो ही, जब कोई अवीर्यज पुरुष तुम्हें तोड़ने आये तो उसी क्षण मेरे संकेत करते ही छोटे एवं हलके बन जाना।

जनक-भला चैतन्य धनुष क्यों किसी के हाथ से टूटना (मरना) चाहेगा ?

पृथ्वी-धनुष तो टूटना ही चाहता है, क्यों कि धनुष में जो चैतन्यता है वह ब्रह्मर्षि दधीचि आथर्वण की है। ब्रह्मर्षि दधीचि जी धनुष पर ही स्थित हैं और धनुष टूटने से ही उनकी मुक्ति निश्चित है अतः मेरी सलाह को ही मानेगा। अतएव अनेक रावण, परशुराम, आदि के किये कुछ न होगा। इन लोगों को तो मैं जानती हूँ सभी वीर्यज हैं।

जनक-तब तो तुम अवीर्यज पुरुष को भी जानती होगी ही यदि कहीं कोई अवीर्यज पुरुष क्षत्रिय होगा तभी तो तुम इतनी दृढ़ता के साथ कहती हो, यदि कहीं कोई अवीर्यज क्षत्रिय वीर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो इतना षड़यंत्र क्यों रचती हो। पहिले ही बतादो!

पृथ्वी-हां जानती हूँ पर अभी बताऊंगी नहीं, क्यों कि अब तो वैसा करने का संकल्प हो चुका है। अच्छा अब मैं जाती हूँ, आप समारोह कीजिये।

पृथ्वीदेवी अन्तर्ध्यान हो गईं—अपने स्थूल शरीर में लीन हो गईं, तब जनक जी ने सर्वत्र विज्ञप्ति करवा दिया कि कोई भी क्षत्रिय वीर—

धनु तोरै सो बरै जानकी राउ होइ की रांक।

(गीतावली बाल का० ८६)

सभी वीर राजा लोग सुन सुन कर आये, और जो कोई धनुर्भंग की इच्छा से धनुष के पास जाता उसके बारे में पृथ्वी से धनुष पूंछता कि कहो—यह पुरुष वीर्यज है या अवीर्यज? यदि अवीर्यज हो तो इसके लिये हलका और छोटा हो जाऊं। पृथ्वी सभी राजाओं को वीर्यज ही ठहराती गईं। इसी से धनुष—

मनहु पाइ भट बाहुबल अधिक २ गरुआइ।

जनक ने अवीर्यज पुरुष खोजने के लिये तो प्रण ही किया था, अतः सब नृपों के उपहासी योग होने पर भी जनक को क्रोध नहीं आया था, वरन् नकली क्रोध किया था। अवीर्यज पुरुष को (यदि सभा में हो तो) उत्तेजित करने के लिये। और सचमुच एक अवीर्यज वीर (लक्ष्मण) को उत्तेजना आ ही गई। जनक का क्रोध नकली था, इसे स्वयं गोस्वामी जी ने ही लिखा है—

नृपन विलोकि जनक अकुलाने।
बोले बचन रोष जनु साने॥

जनक नहीं अकुलाये थे अपितु नृपगण ही अकुला गये थे यथा—

परिकर बाँधि उठे अकुलाई।

हां तो नृपों को अकुलाते हुये देखकर जनक ने इस मुद्रा से बोलना शुरू किया कि मानो इनकी वाणी रोष में सनी हुई है। यदि सच्चा रोष होता तो "जनु" उत्प्रेक्षा सूचक शब्द रखने का प्रयोजन ही न पड़ता। अस्तु

पृथ्वी और जनक का षड़यंत्र श्री सीताराम जी को तो मालूम ही था, नारायणावतार श्री लक्ष्मण जी को भी मालूम था। श्री लक्ष्मण जी नारायणावतार थे यथा—

विष्णुरित्था परमस्य विद्वाञ्जातो
बृहन्नभियाति तृतीयम। ऋग्वेद १०।१।३॥

ॐयोहवै श्री परमात्मा नारायणः स भगवान
कलास्वरूपो लक्ष्मणो भूर्भुवः सुवस्तस्मैवै नमोनमः॥

(तारसारोपनिषत् ३।६)

वैकुण्ठेशस्तु भरतः क्षीराब्धीशस्तु लक्ष्मणः।
शत्रुघ्नस्तु स्वयं भूमा रामसेवार्थमागताः॥

(बृहद्ब्रह्म संहिता)

अंशः संकर्षणो यस्य कलाशेषश्चिदात्मकः।
विभूतः शंकरः श्रीमान विश्व संहार कारकः॥
स एव राघव भ्राता लक्ष्मणोऽमित विक्रमः

(सदा शिव संहिता)

मूर्च्छितः पतितो भूमौतमादातुं दशाननः॥१०॥
हस्तैस्तोलयितुं शक्तो न बभूवाति विस्मितः।
सर्वस्य जगतः सारं विराजं परमेश्वरम्॥११॥
कथं लोकाश्रयं विष्णुं तोलयेल्लघुराक्षसः।
ग्रहीतकामं सौमित्रिं रावणं वीक्ष्य मारुतिः॥१२॥

(अध्यात्म रामायण युद्ध काण्ड सर्ग ६)

तस्यापि भगवानेष साक्षाद्ब्रह्ममयोहरिः।
अंशांशेन चतुर्धाऽगात्पुत्रत्वं प्रार्थितः सुरैः॥

(भागवत ९।१०।२)

(इस संबंध में मानस संघ से प्रकाशित मेरी "मानस सिद्धान्त" पुस्तक में विस्तार से देखा जा सकता है।)

हाँ तो किन्ही भी आगन्तुक नृपों को यह जनक का षड़यंत्र नहीं मालूम था। यदि मालूम होतातो—

सब नृप भये योग्य उपहासी।

का अवसर ही न आता। जनक के अन्य परिजनों, पुरजनों को भी नहीं मालूम था। महर्षिगण तो त्रिकालज्ञ एवं सर्वज्ञ होते ही हैं!

जब अवीर्यज श्री रामभद्र जी धनुर्भंगार्थ चले तब श्रीलक्ष्मण जी ने पृथ्वी के सभी सहायकों को सावधान कर दिया कि—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिशि कुँजरहु कमठ अहि कोला ।
धरहु धरणि धरि धीर न डोला ॥
राम चहहिं शंकर धनु तोरा ।
होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥

श्री सीता जी ने तो धनुष से भी स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि—

होउ हरुअ रघुपतिहिं निहारी ।

"रघुपतिहिं निहारी" कहने का तात्पर्य यही था कि रघुपति जी अवीर्यज हैं। प्रभु की तरफ इशारा करके बार बार पृथ्वी की तरफ जो—

प्रभुहिं चितय पुनि चितवमहि राजत लोचन लोल ।

उसका भी तात्पर्य यही था। सन् १८८२ ई० की प्रतिलिप की गई मानस तत्व विवरण टीका के पृष्ठ ५०० में पृथ्वी का धनुष पकड़े रहना लिखा है "हे पृथ्वी ! तू ने अभीतक इस धनुष्य को थाम लिया रहा के राम जी के सिवा और से विवाह नहीं हो।.....सो अब महाराज जी की बारी आई तातें छोड़ दे। १० ॥"

पृथ्वी श्री जी के संकेत को समझ गईं, पहिले से भी सावधान थीं ही। श्रीरामभद्र को तो अवीर्यज जानती ही थीं।

धनुष पर स्थित ब्रह्मर्षि दध्यङ् ने भी पृथ्वी को समझा दिया कि ये दशरथ कुमार अवीर्यज हैं खीर से प्रगट हुए हैं और तुम्हारी बेटी खेत से प्रगट हुई है अतः दोनों समान राशि के भी हुये। तब पृथ्वी ने धनुष को छोड़ दिया। धनुष ने भी श्री जी की आज्ञा का पालन पूर्ण रूपेण किया।

दाहिनो दियो पिनाक सहमिभयो मनाक
महाव्याल विकल विलोकि जनु जरी है ।
(गीतावली १।६१)

पहले से भी शायद सावधान था—

जनक सदसि जेते भले भले भूमिपाल,
भये बल हीन बल आपनो बढ़ायो है ।
तुलसीसो रामके सरोजपाणि पर्सत ही,
टूट्यो मानो वारेते पुरारि ही पढ़ायो है ॥
(कवित्ता० १।१०)

इन प्रसंगों के देखने से यही निश्चित होता है कि ऐसा विकट प्रण अवीर्यज पुरुष (बिना बाप का बेटा) खोजने के लिये ही किया गया था। वर का प्राकट्य खीर और कन्या का खेत से हुआ था तभी तो—

सोहति सीय राम कै जोरी ।

एक बात और, जैसे श्री राम जी लोकोत्तर (बिना बाप के) बेटा-वर थे वैसे ही उनके विवाह के लिये अयोध्या जी से जो बरात सजी थी वह भी लोकोत्तर थी। अथात् जैसे राम जी नकली बेटा थे वैसे लोक दृष्टि से वह बरात भी नकली बनौआ थी। देखिये गोस्वामी जी ने लिखा है--

बनइ न वर्णत बनी बराता ।

नकली--बनौआ बरात का वर्णन करते नहीं बनता। बनौआ इस लिये कि यह बिना दूल्हे की बरात थी। यह नकलीपना बरातियों का हृदय दग्ध कर रहा था। इसी से जब दूल्हा बरात में आ गया तब--

रामहिं देखि बरात जुड़ानी ।

यही नहीं रास्ते में जहाँ जहाँ बारात ठहरी थी वहां वहां वाले नर नारी गण उस बारात—नकली बारात को देखकर अपना हार्दिक भाव यद्यपि प्रगट नहीं करते थे परन्तु दुखित अवश्य हो गये थे। जैसा कि बारात की वापसी में देखा गया है, कि कहीं किसी ग्राम वासी ने बारात को देखा तक नहीं। किन्तु—

रामहि देखि ग्राम नर नारी ।
निरखि नयन फल होहिं सुखारी ॥

मानस संघ के सदस्य बनिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राक्षसराज

[श्री सुदर्शनसिंह जी]

(५) शक्ति की शोध

'ये महानुभाव मातः ?' दशग्रीव स्थिर दृष्टि से देख रहा था अपने पिता के पदों में प्रणत होते तेजोमय पुरुष को-'ये रत्नखचित विमान से पधारे हैं। स्वयं अत्यन्त तेजस्वी हैं। पितृपदों में इनकी अपूर्व श्रद्धा व्यक्त हो रही है।'

'ये तुम्हारे ज्येष्ठ भ्राता धनाध्यक्ष कुबेर हैं।' कैकसी तनिक सावधान होकर बैठ गई। उसने देख लिया कि वैश्रवण पिता को प्रणिपात करके उसको अभिवादन करने पधार रहे हैं।

'कुशली भव वत्स !' स्नेह पूर्वक आशीर्वाद दिया कैकसी ने कुबेर को। उसके संकेत पर दशग्रीव तथा उसके अनुजों ने भी उन धनाध्यक्ष को प्रणाम किया—'ये तुम्हारे अनुज !'

'तुम प्रसन्न तो हो भाई ?' धनाध्यक्ष ने दशग्रीव को अङ्कमाल दी-'नियति ने पितृचरणों की सेवा का सौभाग्य मुझे नहीं दिया। तुम उन तपोधन तथा माताओं की सेवा करके पुण्य धनी बनो।'

'आपका अनुग्रह !' दशग्रीव ने नम्रता पूर्वक कहा। 'देख रहा है !' धनाध्यक्ष के पिता की ओर लौटते ही कैकसी ने पुत्र को झिड़का-'वह भी तेरा भाई है। वह लोकपाल हो गया है। मुनि गण उसका स्तवन करते हैं। उसका तेज और उसका वैभव—स्पृहाहीन प्राणी तो नगण्य है। एक तू है कि इस बहेड़े के तपोवन में हीनसत्त्व पड़ा है। इतनी भी सामर्थ्य नहीं कि अपने अनुज की क्षुधा-शान्ति के साधन भी प्रस्तुत कर सके।'

'मातः ! मुझे क्षमा करो !' दशग्रीव के नेत्र प्रज्वलित हो उठे— 'मैं उसके समान या उससे भी महान् बनकर रहूँगा।'

'तात !' अपने दोनों अनुजों के साथ दशग्रीव पिता के समीप उपस्थित हुआ-'हमें तप की अनुमति प्राप्त हो।'

'मंगल हो वत्स !' महामुनि विश्रवा ने आशीर्वाद दिया-'द्विज का सहज स्वभाव होना चाहिये तप ; परम मंगलायतन तपस्या है सबके ही लिये।'

दशग्रीव, कुम्भकर्ण और विभीषण तीनों ही भाई उसी दिन मेरु के शिखर से बहुत दूर पश्चिम समुद्र तट पर पृथक पृथक स्थान चुनकर अपनी शैली से तपःलीन हो चुके थे। वह दक्षिण गोकर्ण क्षेत्र—दशग्रीव ने पावन तपोभूमि ही चुनी थी।

'क्षीण सत्व मुनिगण भला क्या तप करेंगे।' दशग्रीव के अहंकार ने उसे उत्तेजित किया-'मैं सृष्टि कर्ता को भी बता दूँगा कि तप कहते किसे हैं।'

सभी स्वभाव परतन्त्र हैं। राजस स्वभावापन्न दशग्रीव तप भी करे तो सात्त्विक तप कैसे कर सकता है। उसका तप उग्र राजस तप था। वह वीरासन से बैठ गया स्थिर दृष्टि और बैठा रहा।

'एक सहस्र वर्ष !' वर्षा, हिम एवं आतप कब आये, कब गये यह उस महाप्राण को पता ही नहीं लगा। न क्षुधा-पिपासा ने उसके समीप पहुँचने का साहस किया था और न निद्रा के अलसपद ही उसकी छाया का स्पर्श कर सके थे। वह स्थिर, शान्त, जागरूक स्थित रहा था एक प्रस्तर प्रतिमा के समान पूरे सहस्र वर्ष।

सहस्र वर्ष-जैसे हम आप घन्टे दो घन्टे कहीं एकाग्र बैठने के पश्चात सहसा उठना चाहें। उसने अपने शरीर के आस पास एकत्र मृत्तिकाराशि को अंग-कम्पन से गिरा दिया। उखड़ कर गिर पड़े उस मृत्तिका पर उगे तृण और वह उठ खड़ा हुआ जैसे पत्थर की एक दस मस्तक मूर्ति किसी अज्ञात की प्रेरणा से सहसा सजीव हो उठी हो।

सहस्र वर्ष—दशग्रीव को भी अपनी तपस्या की सहस्राब्दी मनाना आवश्यक ज्ञात हुआ। आज के मानव अपने नाम, अपने देह को इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्व दिये हैं। ये समाधि मंदिर और कीर्ति मंदिर, ये व्यक्तियों के चित्रों एवं मूर्तियों के अनावरण – स्थापना कार्य, ये जीवनियाँ और आत्म-कथायें– अन्ततः दशग्रीव इस आसुर परम्परा का संस्थापक न सही, वह विरोचन की परम्परा का महाउन्नायक तो था ही।

सहस्र वर्ष—रावण को तपस्या करते सहस्र-वर्ष व्यतीत हो चुके थे। उसे अपनी तपकी सहस्राब्दी मनानी थी। उस अतिमानव के योग्य ही तो हो सकती थी उसकी सहस्राब्दी।

उसने स्नान किया समीप सिन्धु की तरङ्गों में। वन से सूखी समिधाओं की राशि एकत्र की उसने और अरणिमन्थन करके महामुनि विश्रवा के उस वेदज्ञ पुत्र ने अग्नि को व्यक्त किया। समिधाओं की राशि जब प्रज्वलित हो उठी— उसने परिसमूहन, परिमार्जनादि संस्कार सम्पन्न किये और तब उसका एक कर ऊपर उठा .....।

दिशायें कांप उँठीं। मेघ के विना ही गगन ने रक्त वर्षा की। पशु-हिंस्रपशु तक चीत्कार कर उठे। दशानन के उठे कर ने अपने बढ़े हुये नखों से अपना ही एक मस्तक काट लिया था-इस प्रकार नोच लिया था, जैसे किसी वृक्ष से पक्व फल तोड़ लिया हो। एक आकुंचन तक नहीं आया उसके भाल पर।

'क्रां क्रीं ब्रह्मणे नमः स्वाहा !' प्रज्वलित हव्य-वाह को आज एक होताने अपने मस्तक की आहुति दे दी थी।

रक्तस्नात शरीर, छिन्न मस्तक ग्रीवाग्र- कोई चिन्ता नहीं हुई, कोई ध्यान तक नहीं गया इधर उस अद्भुत पुरुष का। उसने अपने तप की यह अपूर्व सहस्राब्दी सम्पन्न करली और स्वयं अट्ट-हास कर उठा।

अपने तपःस्थान पर वह सबल पदों से चलता पहुँच गया और फिर उसका वीरासन स्थिर हो गया। उसके शरीर से चलता रक्त प्रवाह — उसे पिपीलिका जैसे क्षुद्र जन्तु स्वच्छ कर सकते हैं, तब वह स्वयं क्यों व्यस्त बने। उसे इन व्यर्थ-हाँ, देह के ये कष्ट व्यर्थ बातें थीं उसके लिये और इन व्यर्थ बातों की ओर ध्यान देने का अवकाश नहीं था। उसकी तपस्या अग्रिम सहस्राब्दी में प्रयाण कर चुकी थी और प्रकृति असमर्थ थी सहस्राब्दी पूर्ण होने से पूर्व उसे उत्थित करने में।

❀ ❀ ❀

'मुनि विश्रवा के पुत्र अत्युग्र तपस्वी हैं' भगवती भारती ने सृष्टि कर्ता के समीप हिमोज्वल चामर लेते हुए कहा-'वैश्रवण ने देवताओं को भीत कर दिया था और उनके अनुज उनसे भी आगे हैं तितक्षा में।'

'कठिनाई यही है कि ये देव-बान्धव नहीं हो सकते।' सृष्टि कर्ता ने सूचित किया- 'दशग्रीव तो राक्षसों का अग्रणी बना बनाया है सृष्टि में वह रुद्र की ही सहायता कर सकता है और सन्तुष्ट करना चाहता है मुझे।'

'किन्तु अब वह दशग्रीव है कहाँ !' हंसवाहिनी के स्वर में कृपा थी- 'उसने अपने नौ मस्तक हवन कर दिये आपके निमित्त और अब वह तपस्या के दस सहस्रवर्ष पूरे होने पर स्नान करने उठ चुका है। दो घटी पश्चात उसकी समिधायें प्रदीप्त हो जायँगी और अपना अन्तिम मस्तक.....'

'तुम अलक्षित रह कर मेरा साथ दो !' स्रष्टा ने वाणी की ओर दृष्टि उठाई—'तुम्हारी सहायता अपेक्षित होगी मुझे उस तपोवन में।'

'मैं तो जानती हूँ कि केवल शेषशायी नीति का आश्रयण करते हैं अवसर विशेष पर ! वाग्देवी के अधरों पर स्मित की ज्योत्स्ना प्रस्फुटित हुई।

'उनका पुत्र उनका पदानुसरण करे—अनुचित क्या है !' ब्रह्माजी ने कहा—'लेकिन दशग्रीव ठगा नहीं जायगा। उसने मुझे मस्तक दिये हैं—अक्षय मस्तक मिलेंगे उसे।'

❀ ❀ ❀

दशग्रीव— लेकिन अब तो वह दशग्रीव नहीं है। अब तो केवल एक मस्तक है उसके विंशति बाहु शरीर पर। उसने अपनी तपस्या की नौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्राब्दियाँ उज्वलित की है अपने नौ मस्तकों की आहुति देकर और अब उसके तप की यह दसवीं सहस्राब्दी है।

वह स्नान कर चुका है। समिधायें एकत्र करली हैं उसने। अरणिमन्थन सम्पन्न हो चुका है। ऊर्ध्वशिख भगवान हव्यवाह की लाल लाल लपटें अब आहुति की प्रतीक्षा करने लगी हैं।

उसे और भय! वह उठा उसका एक दक्षिण कर। वे लगे उसके तीक्ष्णनख अपनी शेष ग्रीवा से। वह अपना अन्तिम मस्तक काटने जा रहा है—अभय, अविचल, निःसंकोच!

'अन्न! अन्न वत्स!' सहसा एक स्नेहमृदुल कर ने उस अद्भुत तापसका ग्रीवा पर पहुँचा कर पकड़ लिया। 'मैं सन्तुष्ट हुआ तुमपर!'

वह गगन को गुञ्जित करती परावाणी। तपस्वी ने अपने सम्मुख अरुणवर्ण, चतुर्मुख, अष्टभुज, ज्योतिर्मय, स्रष्टा को साक्षात उपस्थित देखा। उनके श्रीचरण धराका स्पर्श नहीं कर रहे थे। उनके भव्यमुख प्रसाद मञ्जु हो रहे थे और उनकी दृष्टि में अपार दया थी।

'मैं धन्य हुआ!' तापस के नेत्रों से प्रवाह फूट पड़ा। उसका स्वर भाव गद्गद् हो उठा था। स्तवन करने में अपने को वह असमर्थ पा रहा था।

'वरं ब्रूहि!' लोकपिता ने उसे सम्बोधित किया।

'भगवन्!' सचमुच उसे सम्बोधन ने सम्बुद्ध कर दिया था। 'समस्त प्राणी मृत्यु से भीत हैं। किसी वर का क्या महत्व जब उसे प्राप्त करनेवाला एक दिन मरेगा ही। अतः मैं श्रीचरणों में अमरत्व की प्रार्थना करता हूँ!'

'दशग्रीव!' स्रष्टा का सम्बोधन पर्याप्त था। उनके समस्त मस्तक पुनः उग आये और वह अब सचमुच दशग्रीच हो चुका। ब्रह्मा जी कह रहे थे—'निरपवाद अमरत्व अलभ्य है। मेरी सृष्टि ही सर्वत्र सापवादधर्मी है। अतः तुम कोई अन्य वरदान माँगो।'

'हम काहू के मरहिं न मारे।
बानर मनुज जाति दुइ बारे॥'

दशग्रीव ने दो क्षण सोचकर वरदान माँगा।

'एवमस्तु!' लोकपितामह सन्तुष्ट हुये—'तुमने मुझे मस्तक अर्पित किये हैं। तुम्हारे ये मस्तक अक्षय हो गये। कोई इन्हें काट भी ले तो दूसरे मस्तक तत्काल उग आवेंगे।'

भूमि पर गिरकर दशग्रीव ने प्रणिपात किया और जब उसने घुटने मोड़कर पुनः पृथ्वी पर मस्तक रखा—उसे सुनाई पड़ा—'अब से तुम और तुम्हारे अनुज एवं वंशधर इच्छानुसार रूप धारण करने में समर्थ होंगे।'

उसने मस्तक उठाया। कोई नहीं था उसके समीप। सृष्टिकर्ता अदृश्य हो चुके थे। वह महाप्राण दो क्षण में प्रकृतिस्थ हो गया और तब बड़े उच्च स्वर से अट्टहास कर उठा।

'मनुष्य और बानर! ये अल्पप्राण, हीनसत्व!' उसे स्पष्ट प्रतीत हुआ कि वृद्ध लोकस्रष्टा अब अधिक बुद्धिशाली नहीं रह गये हैं। वह उनकी वञ्चना करने में समर्थ हो गया है। मनुष्य एवं वानर भला उसका कभी भी क्या अहित कर सकते हैं—'निरपवाद अमरत्व अलभ्य है! निरपवाद अमरत्व से कहाँ हीन है यह अमरत्व!'

'अब?' दशग्रीव समीप की शिला पर बैठ गया। उसका तपोक्षीण शरीर स्रष्टा के स्पर्श से ही सुपुष्ट हो गया था। अब उसे अपने अग्रिम कर्तव्य को स्थिर करना था। 'अनुजों के आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिये मुझे।'

दस सहस्र वर्ष—उसके दोनों भाइयों को भी तो इतने ही वर्ष हो चुके तप करते। उनकी तपस्या भी अब फलवती होनी ही चाहिये।

अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दशग्रीव ने देख लिया कि दो विभिन्न स्थलों से उसके दोनों अनुज उसकी ओर ही आ रहे हैं। पर्वताकार कुम्भकर्ण प्रथम दिखा। दशग्रीव उसेअङ्कमाल देने बढ़ा क्योंकि प्रथम उसे ही समीप पहुँचना था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलियुग में ब्रह्म का अवतार

[लेखक श्री भैरवप्रसाद जी द्विवेदी रामायणी प्रयाग]

नारद— [विनीत भाव से] भगवन्! आज कुछ धृष्टता करना चाहता हूँ।

भगवान्— [हँसते हुए] हां! हां! अवश्य कहिये देवर्षि!! मुझे तो भक्तों की धृष्टता में ही आनंद मिलता है; फिर भक्तराज नारद जी की धृष्टता में क्या कहना!!!

नारद— [संकोच प्रदर्शन] प्रभू! क्या कहूँ, कहने में बड़ा संकोच हो रहा है।

भगवान्— नहीं, नहीं, अवश्य कहिये देवर्षि!

नारद— प्रभू! आपका अवतार तो प्रत्येक युग में हुआ करता है?

भगवान्— हाँ नारद!

नारद—भगवन्! इस कलियुग में आपका अवतार कब होगा?

[समस्त सभा में आश्चर्य]

भगवान्— [हँसते हुए] पगले! मेरा अवतार तो हो गया!

नारद— [साश्चर्य] क्या, क्या, कलि में आपका अवतार हो गया?

भगवान्— [हँसते हुए] हां, हां, नारद! मेरा अवतार हो गया।

नारद— क्षमा करें देव! मुझ माया मोहित को तो आज तक मालूम ही नहीं हुआ।

भगवान्— नहीं, नहीं, नारद! आपको मालूम तो है किन्तु इस समय आप भूल रहे हैं।

नारद— [लज्जित भाव से] देव! क्या आपका अवतार इस मृत्युलोक में हुआ?

भगवान्— [हँसते हुए] हां, हां, नारद! मृत्युलोक और भारत भूमि में।

नारद—[साश्चर्य] क्या कहा देव! भारत-भूमि में?

भगवान्— हां, हां, नारद! भारत-भूमि में।

नारद— इस अज्ञान के लिये क्षमा करें भगवन्! अच्छा, भारत भूमि में किस स्थान पर अवतार हुआ?

भगवान्— नारद! मेरा यह अवतार बड़ा ही विचित्र है। इस कलि में, मैंने अनन्त रूप धारण कर लिये हैं। इस समय केवल भारत में ही नहीं प्रत्युत संसार भर में साकार रूप में मिलूँगा।

नारद— प्रभू! क्या कहा; संसार भर में!!!

भगवान्— हाँ, हाँ, नारद!!! संसार भर में और इतना ही नहीं बल्कि घर घर में साकार रूप में पहुँच चुका हूँ।

नारद— [विनम्र भाव से] देव! आदेश दें! मैं अभी मृत्युलोक में जाऊँगा और आपके दिव्य साकार रूप का पुण्य दर्शन करूँगा।

भगवान्— [सस्मित मुद्रा में] बैठिये! बैठिये!! देवर्षि!!! कुछ समझ लीजिये।

[नारद जी बैठते हैं]

भगवान्— नारद! मेरे अवतारों के मर्म को जानते हो?

नारद— नहीं, देव! यदि मैं जानता ही तो इतनी बड़ी भूल क्यों होती?

[समस्त सभा में स्तब्धता]

भगवान्—तो आज जान लो! यह तो आप सभी जानते हैं कि मेरा प्रथम रूप निराकार है?

नारद— हाँ देव!!!

भगवान्— फिर मैं निराकार से साकार बना।

नारद—भगवन! आपके साकार बनने का कारण?

भगवान्— नारद! अब मैं अपने सभी अवतारों का सकारण वर्णन कर रहा हूँ। आप सभी ध्यान से सुनें। प्रथम तो मैं आप भक्तों के लिए ही निराकार से साकार हुआ :-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अगुन अरूप अलख अज जोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे।
जल हिम उपल बिलग नहिं जैसे॥"

भगवान्— आपने समझ लिया होगा कि मैं निराकार से साकार क्यों हुआ? अब आप साकार अवतार को सुनें।

"जब जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥
करहिं अनीति जाइ नहि बरनी।
सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥

भगवान्—आप लोगों ने समझ लिया होगा; निराकार से साकार और साकार से अवतार को।

नारद—[नत मस्तक होकर] हाँ, देव!

भगवान्—नारद! जब असुर स्वभाव के लोग संसार में बढ़ जाते हैं तब मैं अवतार ग्रहण करता हूँ। किन्तु इस समय तो सम्पूर्ण मानव मात्र असुर भाव को प्राप्त हो गये हैं क्यों कि—

"असुर मारि थापहिं सुरन, राखहिं निज श्रुति सेतु।
भरद्वाज सुनु अपर मुनि, राम जनम कर हेतु॥"

"मानहि मातु पिता नहिं देवा।
साधुन सन करवावहि सेवा॥
जिनके यह आचरन भवानी।
ते जानहु निसिचर सम प्रानी॥,,

नारद! अब तो घर घर में राक्षस!!! मैंने एक रावण के लिये एक नर रूप साकार अवतार ग्रहण किया। अब तो इस कलि में रावणों की गिनती ही नहीं है अतः अब मुझे इस कलियुग के अवतार अनन्त रावणों के लिए अनन्त रूप धारण क पड़ा।

नारद—देव क्या आपका वह विचित्र अवतार हो गया?

भगवान्— हां नारद! सुनो—मैं निराकार से साकार और अब नराकार राम से मैं पुस्तकाकार हो गया हूँ। मेरा पुस्तकावतार हो चुका है क्यों कि मैं विश्व का उद्धार अब एक रूप से नहीं कर सकता।

नारद—देव! आपका पुस्तकावतार!!!

भगवान—हाँ भक्तराज! पुस्तकावतार।

नारद—कैसे?

भगवान— सुनो—

"बालकाण्ड प्रभु चरण, अयोध्या कटि मन मोहै।
उदर बन्यो आरण्य हृदय किष्किन्धा सोहै॥
सुन्दर ग्रीव मुखारविन्द लंका कहि गायो।
जेहिं महं रावण आदि निसाचर सबहि समायो॥
उत्तर मस्तक मानि हरि एहिविधि तुलसीदास भन।
आदि अंत लौं देखिये श्री मन्मानस राम तन॥"

आभार

जिनके सम्बन्ध में यह पंक्तियां लिखी जा रही हैं वे इन्हें नहीं पढ़ेंगे। गतवर्ष वे मानस मणि के ग्राहक थे। इस वर्ष नहीं हैं। इसका हमें कोई उलाहना नहीं है। शोक इस बात का है कि उन्होंने अपने विचार की सूचना हमें नहीं दी और वी० पी० जाने पर लौटा दी। यदि वे)॥। का एक कार्ड भेज देते तो संस्था के ॥=) बच जाते और यह पैसे दूसरे ग्राहकों पर भार रूप में न पड़ते।

साथ ही धन्य हैं हमारे वे ग्राहक जिन्होंने मित्रों को नये ग्राहक बनाकर इन छूटे ग्राहकों की संख्या पूर्ति करदी। इतना ही नहीं, गत वर्ष से इस वर्ष की ग्राहक संख्या किंचित बढ़ भी गई है। अवश्य ही मणि को स्वावलम्बी बनाने के लिये अभी विशेष वृद्धि आवश्यक है और हमें भरोसा है अपने प्रेमी ग्राहकों का। वे ही यह शुभ कार्य सम्पन्न करेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामायण की प्रस्तावना

[पं० श्री मनीराम जी द्विवेदी]

तपस्वियों और वक्ताओं में श्रेष्ठ तथा वेद शास्त्र इतिहास पुराण आदि के अधिकारी विद्वान देवर्षि नारद से एकबार महर्षि वाल्मीकि ने यह प्रश्न किया—भगवन्! समस्त संसार में ऐसा कौन है, जो कि अनुपम गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञानी, कृतज्ञ, सत्यवक्ता तथा दृढ़व्रती हो? कौन ऐसा पुरुष है जो ईर्षा, द्वेष आदि से रहित, प्रशान्तात्मा, मनस्वी, तेजस्वी, विद्वान, सच्चरित्र, अतिशय रूपवान तथा अन्यतम लोक हितैषी हो। ऐसा सामर्थ्यवान कौन है, जिसके रण में क्रुद्ध होने पर देवता भी भयभीत हो जाते हों—आप जैसे बहुश्रुत और सर्वदर्शी महामुनि के मुख से किसी आदर्श पुरुष का वृत्तान्त सुनने की मेरी बड़ी इच्छा है।

ज्ञानवृद्ध नारद प्रसन्न होकर बोले—मुनिवर। संसार में सर्व गुण सम्पन्न पुरुष दुर्लभ हैं। जहां तक हमें ज्ञात है, ईक्ष्वाकु वंशोत्पन्न जगद्विख्यात राम ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें सभी गुण एक साथ मिलते हैं। ऐसे यशस्वी महा पुरुष के विषय में आप बहुत कुछ जानते ही होंगे। फिर भी मैं आपको उनकी कुछ विशेषतायें बताता हूँ।

राम स्वरूप से चन्द्र के समान अभिराम, बल वीर्य सम्पन्न, महा तेजस्वी और सर्व शुभ लक्षण युक्त हैं, उनके अंग प्रत्यङ्ग सम, सुदृढ़, सुविभक्त और सुविकसित हैं। स्वभाव से वे और भी सौम्य सुसंस्कृत तथा महान हैं।

राम की प्रकृति अत्यन्त शान्त, सरल और सुकोमल है। वे बड़े ही सहृदय, विनयी, उदार, सहनशील और समदर्शी तथा क्षमावान पुरुष हैं, उनके चित्त में किसी के प्रति कोई दुर्भाव नहीं रहता। लोकरंजन के लिये वे बड़े से बड़ा त्याग करने को उद्यत रहते हैं। सर्व समर्थ सत्ताधारी होकर भी राम प्रमादी, अहंकारी या स्वेच्छाचारी नहीं हैं।

राम बड़े स्वाभिमानी, स्वावलम्बी, दृढ़निश्चयी तथा कर्म शूर हैं। भयंकर परिस्थितियों में भी वे कर्तव्य विमुख नहीं होते और अपने पुरुष पराक्रम से प्रबलतम वैरी को भी परास्त करने का उत्साह रखते हैं। संसार में उनके जोड़ का धुरन्धर वीर और शत्रुहन्ता दूसरा नहीं है। वे महारथी माने जाते हैं देवता, दानव, मनुष्य, सभी उनका लोहा मानते हैं।

विद्या बुद्धि में भी रामकी सर्वमान्यता निर्विवाद है। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली, मेधावी, देश काल ज्ञानी, आचार कोविद तथा सर्व शास्त्र विशारद हैं।

जिस दृष्टि से भी देखा जाय, राम एक आदर्श नर नेता, पूर्ण पुरुष ही प्रतीत होते हैं। बल, पराक्रम, धैर्य, उत्साह, मनस्विता, तेजस्विता, विद्या, बुद्धि, शील, सौजन्य, संयम, सदाचार, त्याग, उदारता और कर्म वीरता आदि में उनकी बराबरी करने वाला कौन है। सार रूप में यही समझिये कि वे गंभीरता में समुद्र के समान, धैर्य में हिमाचल के समान, पराक्रम में विष्णु के समान, क्षमा में पृथ्वी के समान, प्रजा पालन में प्रजापति के समान तथा सत्य पालन में दूसरे धर्म के समान हैं। ऐसे महिमावान पुरुष के विशिष्ट गुणों का पूरा परिचय उसके जीवन चरित्र से ही मिल सकता है।

महर्षि बाल्मीकि को वह हृदयहारी एवं लोकोपयोगी वार्ता बहुत ही प्रिय लगी। उन्होंने मंत्रमुग्ध होकर एक २ प्रसङ्ग को ध्यान से सुना और कथा के तत्व तथा तथ्य को भली भाँति हृदयंगम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। एक आदर्श जननायक, आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श वीर और आदर्श महा मानव की कीर्ति कथा सुनकर वे कृतार्थ हो गये।

काव्य की उत्पत्ति-महर्षि बाल्मीकि को राम के जन्म से लेकर उनके राज्याभिषेक तकका इतिहास सुना कर देवर्षि नारद वहाँ से चले गये। उसके बाद बाल्मीकि अपने प्रधान शिष्य भरद्वाज को साथ लेकर गंगा के समीप तमसा नदी के किनारे गये। तटवर्ती वन का दृष्य बड़ा ही नयनाभिराम था। महर्षि इधर उधर घूम कर प्रकृति की मनोरम छटा देखने लगे। वहीं क्रौंच पक्षियों का एक सुन्दर जोड़ा आनन्द पूर्वक विहार कर रहा था। सहसा एक व्याध ने उन क्रीड़ासक्त जीवों पर बाण चला दिया। नर पक्षी रुधिर बहाता हुआ गिर पड़ा और छटपटा कर मर गया, अनाथिनी क्रौंची अपने चिर सङ्गी को निहत देखकर अत्यन्त करुण स्वर में विलाप करने लगी।

एक सीधे साधे प्रेमी जीव की हत्या और वियोगिनी के करुण क्रन्दन से महर्षि का कोमल हृदय द्रवित हो गया। उनके मुख से सहसा यह शोकोद्गार निकल पड़ा—रे निषाद तुझे अन्त काल तक कहीं भी सद्गति प्राप्त नहीं हो। क्योंकि तूने इस जोड़े में से एक काम मोहित जीव को (अकारण) मार डाला है।

मानिषादप्रतिष्ठांत्वमगमः शाश्वतीः समा।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥

शोक की तीव्रता में मुनि के मुख से यह वाक्य अपने आप निकल पड़ा था। बाद में इसके अर्थ पर विचार करके वे पछताने लगे। साधु पुरुष अपने द्रोहियों के भी अपराधों को क्षमा कर देते हैं, लेकिन बाल्मीकि ने क्षणिक आवेष में उस व्याध को घोर शाप दे डाला। इसके लिये उनका पश्चाताप करना स्वाभाविक ही था। वे मन ही मन भाँति भाँति के तर्क वितर्क करते हुए अपने शिष्य भरद्वाज से बोले—भरद्वाज! तुमने मेरा हृदयोद्गार तो सुना ही होगा। यह साधारण वाक्य नहीं है। यह तो चार पदों से युक्त, सम अक्षर वाली गीतलयबद्ध विलक्षण रचना है। मेरा शोक जनित वाक्य निश्चय ही श्लोक (काव्य, छन्द यशः स्वरूप) होगा अन्यथा नहीं।

भरद्वाज ने गुरु के उस मनोहर वाक्य को कंठस्थ कर लिया। तदनन्तर महर्षि तमसा में स्नान करके आश्रम में आये। वहाँ उन्होंने अपने अन्य शिष्यों को सारा हाल बताया। भावुक हृदय के लिये वह साधारण घटना नहीं थी। क्रौंच बध और क्रौंची क्रन्दन का करुणामय दृष्य बार-बार उनकी आंखों के आगे आ जाता था, और अन्तस्थल में यही वेदना जनित वाक्य का एक दूसरा ही अर्थ सूझ गया। वह यह था-हे श्रीमन् (राम) आप अनन्त काल तक लोक में प्रतिष्ठित रहेंगे, क्योंकि आपने कुटिल, कुचाली नीच राक्षस दम्पति में से एक का, जो महा कामी था—संहार किया है।

इस सूझ के साथ महामनीषी बाल्मीकि एक नई विचारधारा में बह चले। उनकी हृत्तन्त्री झंकृत हो उठी, हृदय की सरस वृत्तियाँ जग गईं। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ-मानों क्रौंच वध, एक महान कार्य के लिये दैवी संकेत था और उनके कंठ से जो छंद स्वतः प्रस्फुटित हुआ था वह मनोरमा मुखवासिनी सरस्वती का संदेश या कवि हृदय का उच्छ्वास था। उनका अन्तर्द्वन्द्व उन्हें राम का जीवन काव्य लिखने के लिये प्रेरित करने लगा।

महर्षि बाल्मीकि राम विषयक लोक कथाओं के अतिरिक्त नारद के मुख से उनका क्रमबद्ध जीवन-चरित्र सुन चुके थे। श्लोक का आविर्भाव स्वयं उन्हीं के मुख से हुआ था। उन्होंने दोनों का सुन्दर समन्वय करके सुसंस्कृत भाषा में एक सर्वोपयोगी सरस, सजीव, महाकाव्य प्रस्तुत करने का दृढ़ संकल्प किया। उनका शोक जन्य श्लोक संसार के सर्व प्रथम और सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य का बीज बन गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि की साधना—महर्षि बाल्मीकि ने बड़े मनोयोग से राम विषयक सम्पूर्ण मौखिक साहित्य का संकलन, अध्ययन और विवेचन किया। वे काव्य में राम का सुन्दर से सुन्दर, किन्तु सच्चा और प्रभावशाली चित्र उपस्थित करना चाहते थे इसलिये उन्होंने प्रत्येक घटना के संबन्ध में अच्छी तरह छान बीन करके जो कुछ सत्य था उसी को ग्रहण किया। शुभ मुहूर्त में महर्षि बाल्मीकि शुद्ध भाव से पूर्व की ओर मुख करके पवित्र कुशासन पर बैठे, और गंभीरता पूर्वक मनन करने लगे। उस समय वे वर्ण्य विषय में ऐसे तन्मय हो गये कि राम के जीवन की सारी घटनायें उनकी आखों के आगे नाचने लगीं। उन्हें अतीत का उज्जल चित्र और राम का लोकोत्तर चरित्र स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा। बाल्मीकि के हृदय का रस श्रोत उमड़ चला। वे रसमग्न होकर काव्य रचना में लग गये। उन्होंने मधुर और संयत भाषा तथा सरस, सजीव शैली में राम के जन्म से राज्यारोहण तक का वर्णन ऐसी उत्तमता से किया कि प्राचीन विषय भी नवीन और सर्वसामयिक प्रतीत होने लगा। अर्थ-गाम्भीर्य और पदलालित्य से युक्त तथा नव रसों से ओत प्रोत उस मनोहर ऐतिहासिक काव्य को सहस्र श्लोकों में लिखकर महर्षि ने छह काण्डों में विभाजित किया। पहले उन्होंने उसका नाम पौलस्त्यवध (रावण बध) रक्खा था। बाद में यह रामायण नाम से विख्यात हुआ। जिस समय वह ग्रन्थ लिखा गया श्रीराम अयोध्या के राज सिंहासन पर विराज मान थे।

रामायण का प्रचार—भगवान बाल्मीकि रामायण की रचना करके ही सन्तुष्ट नहीं हुए।

उन्होंने लोककल्याण की भावना से प्रेरित होकर लोकरंजन साहित्य की सृष्टि की थी। जनता में उसके प्रचार की आवश्यकता थी। महर्षि के शिष्यों में लव और कुश उसके लिये सबसे अधिक उपयुक्त थे। दोनों अत्यन्त मेधावी तथा कुशल गायक थे उनकी शिक्षा भी समाप्त हो चुकी थी। अतः महर्षि ने उन्हीं को सम्पूर्ण रामायण कण्ठस्थ करा दिया।

तदनन्तर गुरु की आज्ञा से दोनों कुमार जन समाज में घूम घूम कर रामायण का गान करने लगे। जहाँ कहीं भी कोई सार्वजनिक समारोह होता, दोनों पहुँच जाते और मधुर कंठ से रामायण का पाठ करके श्रोताओं को आकर्षित कर लेते थे। इस प्रकार जन साधारण में बाल्मीकि की रचना का प्रचार होने लगा।

एक दिन लव और कुश अयोध्या नगरी में गाते हुए घूम रहे थे। उसी समय उन पर राम की दृष्टि पड़ी। वे उन्हें अपने महल में ले गये। वहाँ दोनों ने राज सभा में मीठे स्वर से रामायण का गान किया। कथा के माधुर्य, काव्य के माधुर्य और कंठ के माधुर्य ने मिल कर श्रोताओं को रसमग्न कर दिया। बाल्मीकि की रचना इतनी सजीव थी ? कि भूत काल की सभी घटनाएँ सबकी आखों के आगे आ गईं। सब एक स्वर से धन्य २ कह उठे। स्वयं राम भी उस काव्य पर मुग्ध हो उठे, उन्होंने लव व कुश के मुख से उसे आद्योपान्त सुना।

नया प्रकाशन

मानवता के चरण—लेखक डा० भगवानदास सफड़िया। **मूल्य ॥)**

रोचक तथा उपदेशप्रद शैली में लिखे हुए छैः एकाँकी नाटकों का संग्रह है। तुरन्त मगा लें।

प्रकाशक—मानस प्रकाशन लिमिटेड रामवन (सतना).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुराग

[श्री रामसुपाल "भट्ट"]

बन्दौं गुरु पद पदुम परागा ।
सुरुचि, सुवास, सरस, "अनुरागा" ॥

यह श्री रामचरित मानस की एक श्रेष्ठ अर्धाली है। इसमें श्री गोस्वामी जी ने एक आश्चर्यजनक बात का निर्देश किया है। और वह बात है कि गुरु पद पद्म पराग में—सुरुचि, सुवास, और सरसता का होना ! उनका इस चौपाई में यह लक्ष्य है कि श्रीगुरुजी महाराज के कमल स्वरूपी चरणों में जो रज [धूल] लगी होती है उसमें-शोभा, सुगंध, और रस है।

शङ्का—गुरु और शिष्य प्रणाली बहुत पुरानी है। आज भी हम सब लोगों के गुरुदेव हैं और इतने दिनों के व्यतीत हुए जीवन में कईबार प्रत्येक भाई को गुरुदेव के चरणस्पर्श का अवसर प्राप्त हुआ होगा। पर अपने दिल पर हाथ रखकर पूछने से यही आवाज आती है कि हमें न शोभा दिखी, न सुगन्ध मिली, और न कोई रस ही मिला।

अतः गोस्वामी जी को उक्त तीनों बातें किस प्रकार जँचीं !

समाधान— श्री गोस्वामी जी को इन तीनों बातों का भली प्रकार अनुभव हुआ होगा। क्योंकि इस प्रार्थना वाली चौपाई में एक मात्र रज [धूलि] का ही महत्व है ! आगे प्रसङ्ग प्रारम्भ करते समय भी गोस्वामी जी इसी धूलि का स्मरण करते हैं—जैसे—यहि विधि सब संसय करि दूरी- सिर धरि गुरु पद पंकज 'धूरी'। और आगे भी अयोध्या काण्ड प्रारम्भ करते हुए " श्री गुरु चरन सरोज "रज" का ही पुनः स्मरण करते हैं। इन सब बातों से स्पष्ट प्रतीत होता है कि उन्होंने- शोभा, सुगंध और रस का होना उस धूलि में निश्चय ही मान लिया था। कैसे मान लिया था यदि यह प्रश्न बन पड़े तो उत्तर में—चौपाई के अन्दर ही 'अनुराग' शब्द सामने है। यह अनुराग [शब्द] उक्त तीनों बातों के निश्चय होने का प्रमाण है। यदि अनुराग आ जाय तो यह आश्चर्य नहीं रहेगा कि गुरु पद पद्म पराग [धूलि] में शोभा, सुगन्ध, और रस है। अनुराग ही पराग [धूलि] की शोभा, सुगन्ध, और रस है। बिलकुल स्पष्ट तो यह है कि 'अनुराग' शरीरधारी बनकर गुरु पद पद्म में, पराग रूपसे, शोभा, सुगन्ध, और रसमय भासने लगता है।

यदि हमें आज तक इसका भान नहीं हुआ तो कहना तो यही होगा कि बिना 'अनुराग' ही गुरु देव के चरणस्पर्श होते हैं। श्री गोस्वामी जी ने 'अनुराग' युक्त भावों से ही इन तीनों बातों का होना यथार्थ में बताया है। साथ ही यह भी उन्होंने संकेत कर दिया है कि वह चरण स्पर्श थोथा है जिसमें तीनों बातों का सम्मिश्रण न हो।

गोस्वामी जी ने सर्व प्रथम 'अनुराग' से आश्चर्य जनक बात का होना बताया; साथ ही यह भी बताया कि बिना 'अनुराग' के रामायण पढ़ी नहीं जा सकती। उन्होंने अपने ग्रन्थ में 'अनुराग' का महत्व दिया है। यहाँ तक कि जीव का परम लक्ष्य जो है वह भी बिना "अनुराग" के प्राप्त नहीं होता। जीव का परम लक्ष्य है ईश्वर का साक्षात्कार करना, शान्ति प्राप्त करना, सन्तोष सुखादि प्राप्त करना, और यह सबके सब ईश्वर स्वरूप हैं, रामरूप हैं, रघुपति तद्वत् हैं। पर "मिलहिं न रघुपति बिन अनुरागा। किए जोग तप ग्यान बिरागा"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोस्वामी जी ने श्री राम जी को नरलीला प्रकरण में स्वयं 'अनुरागी' बताया है। "गुरु पद बन्दि सहित 'अनुरागा' राम मुनिनसन आयसु मागा"। उन्होंने यह भी लिखा है कि 'अनुरागी' प्रत्येक क्षेत्र में सफल है। और वह ब्रह्म का भी दर्शन [साक्षात्कार] कर सकता है। उदाहरणार्थ कुछ 'अनरागी' पात्रों के नाम दिये जाते हैं !

१ श्री मनुसतरूपा—

द्वादस अच्छर मन्त्र पुनि जपहि सहित "अनुराग"।
बासुदेव पद पंकरुह, दम्पति मन अति लाग॥

२ श्री विदेह राज जी—

इनहि बिलो कत अति "अनुरागा"।
बरबस ब्रह्म सुखहिं मन त्यागा॥

३ श्री जनकपुर की स्त्रियाँ—

जुवतीं भवन झरोखन लागीं।
निरखहिं रामरूप "अनुरागी"॥

४ श्री भारद्वाज जी—

भरद्वाज मुनि बसहि प्रयागा।
जिनहिं रामपद अति "अनुरागा"॥

५ श्री केवट जी—

अति आनन्द उमगि "अनुरागा"।
चरन सरोज पखारन लागा॥

६ श्री भरतलाल जी—

एक टक रहे जोरि कर आगे।
सकहिं न कछु कहि अति "अनुरागे"॥

७ श्री बिभीषण जी—

गए बिभीषण पास प्रभु, कहेउ पुत्र वर मागु।
तेहि मागेउ भगवंत पद, कमल अमल "अनुरागु"।

अतः यह भली प्रकार से सिद्ध है कि उस धूलि में 'अनुराग' ही शोभा, सुगन्ध, और रस है। एतदर्थ अनुरागी होना मानव की महान आवश्यकता है।

श्री राघवेन्द्र सरकार की जय।

सच्ची मैत्री

विदेशों में मित्रों को शुभ अवसरों पर भेंट भेजने की प्रथा है। इनमें पुस्तकों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। यह है भी उचित। मित्रों के ज्ञानवर्धन में सहायक होना सच्ची मैत्री है। भारत में भी विद्यादान का बहुत बड़ा महत्व है। प्राचीन काल में ऋषियों, मुनियों के आश्रमों और तपोवनों में हजारों विद्यार्थी रहते थे। सबको निःशुल्क शिक्षा ही नहीं दी जाती थी वरन् भोजन भी मिलता था। आज भी अनेक विद्यालयों, पाठशालाओं तथा पुस्तकालयों का आधार उन्हें जनता से मिलने वाला दान ही है। रामवन आश्रम भी प्रेमियों के सहयोग से ही प्रगति कर रहा है।

इसी आधार पर हम अपने प्रेमी पाठकों के सन्मुख निम्नसुझाव उपस्थित करना उचित समझते हैं।

(१) विद्यादान की भावना से आप आश्रम को अपनी पुरानी या नई पुस्तकें प्रदान करें। जिनका आपको विशेष उपयोग न हो वे रामबन भेज दें। तुलसी संग्रहालय में उनका उपयोग होगा। केवल गीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तकें बिना पूर्व स्वीकृति के न भेजें प्रायः सब आ गई हैं।

(२) कुछ मित्रों को मानस मणि के ग्राहक बनाने की कृपा करें।

(३) घनिष्ट मित्रों को अपनी ओर से मानसमणि भेजवायें। इस सात्विक भेंट द्वारा उनमें भक्ति भावना जागृत करें। यह सच्ची मैत्री होगी।

आपके इस परोपकार तथा त्याग से तपोवन की भी उन्नति होगी।

शारदाप्रसाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'निज आयुध भुजचारी'

(ले० श्री जगन्नाथसिंह मुख्तार,)

श्री रामचन्द्र जी के प्रगट होने पर कौशिल्या माता ने भगवान की प्रार्थना की है। उस प्रार्थना में भगवान के रूप के विषय में 'निज आयुध भुजचारी' लिखा है। मानस के टीकाकारों ने इसका अर्थ लिखा है कि भगवान अपने चारों हाथ में शंख, चक्र, गदा तथा पद्म लेकर प्रगट हुये। 'चारी' शब्द का अर्थ चार (संख्या वाचक) लिखा है। परन्तु मेरी तुच्छ बुद्धि में 'चारी' शब्द का अर्थ ४ करने से पूर्वापर विरोध हो जाता है। इस विषय पर विचार करने के लिए मनुसतरूपा के प्रसंग पर ध्यान देना आवश्यक है।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि जो रूप मनुसतरूपा के सम्मुख प्रगट हुआ था वही रूप कौशिल्या माता के समक्ष भी प्रगट हुआ। कौशिल्या माता ने सतरूपा रूप में कहा था कि कि "चाहों तुमहिं समानसुत" तो भगवान ने कहा था कि "आपु सरिस खोजउं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई।" वरदान मनु ने माँगा था परन्तु सतरूपा ने भी उसी वरदान का समर्थन किया था अतः मनुसतरूपा दोनों का एकही रूप में भगवान को माँगना कहा जायगा। अब देखना है कि मनुसतरुपा के समक्ष भगवान किस रूप में प्रगट हुये थे। मनु ने कहा था :—

अगुन अखंड अनंत अनादी।
जोह चितहि परमारथ बादी॥
नेति नेति जेहि बेद निरूपा।
निजानंद निरुपाधि अनूपा॥
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना।
उपजहिं जासु अंस ते नाना॥

जिसके अंश से अनेक "शंकर, ब्रह्मा तथा विष्णु उत्पन्न होते हैं, जो नेति, नेति, निरुपनि: अगुन, अखंड, अनादि, निरुपाधि हैं। ऐसे रूप को देखा था। मनु ने कहा था कि जो स्वरूप भुशुंडि जी तथा शंकर जी के हृदय में वास करता है तथा जो सगुण निर्गुण दोनों रूपों में प्रगट होता है वह रूप चाहिए। वही रूप प्रगट भी हुआ। "बिस्ववास प्रगटे भगवाना" बिश्ववास भगवान तो श्री रामजी हैं। मन्दोदरी ने कहा है, "बिस्वरूप रघुबंश मनि···" श्री राम ही के अंश से अनेकों विष्णु बिरंचि आदि उत्पन्न होते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि मनु के समक्ष द्विभुज धनुधारी रामजी प्रगट हुये थे न कि विष्णुरूप चतुर्भुज भगवान, जिनके आयुध शंख, चक्र, गदा तथा पद्म हैं। शिव तथा भुसुंडि जी के मन में भी तो द्विभुज रामजी ही बास करते हैं जो सर्वदा धनुष-वाण लिये रहते हैं। भगवान ने यह भी कहा था कि "जासु अंस उपजहि गुनखानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी" "सोउ अवतरिहि मोरि यह माया।" यह माया सीता जी हैं। उसी प्रसंग में यह भी लिखा है कि भगवान मनु के समक्ष सीता जी के साथ प्रगट हुये थे। "राम बाम दिसि सीता सोई" विराजमान थीं। भगवान की शोभा वर्णन में लिखा है कि मनु के समक्ष जो भगवान प्रगट हुये थे वे चतुर्भुज विष्णु नहीं थे प्रत्युत द्विभुज धनुधारी (राम) थे "कटि निषंग कर सर कोदंडा।" रूप में थे।

यदि कौशिल्या माता के समक्ष शंख, चक्रादि धारी चतुर्भुज विष्णु प्रगट हुए होते तो कौशिल्या माता तुरन्त टोक देतीं और प्रश्न कर बैठतीं कि आपने तो द्विभुज धनुधारी रूप में प्रगट होने का वचन दिया था, आप अपने अंशरूप विष्णु बेष में क्यों आये। भगवान ने भी तो कहा था कि "आपु सरिस खोजउं कहं जाई। नृप तव तनय होब मैं आई।" अतः यह सिद्ध हुआ कि भगवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने द्विभुज धनुधारी राम ही रूप में कौशिल्या माता के समक्ष प्रगट हुए थे। शंख चक्रादिधारी अंश रूप विष्णु वेष में नहीं आये। तब तो "निज आयुध भुजचारी" में चार भुजा तथा निज आयुध का अर्थ शंख चक्रादि चार आयुध ठीक नहीं बैठता। इसका शुद्ध अर्थ जिससे पूर्वापर विरोध न हो करने के लिये कौशल्या-स्तुति "भये प्रगट कृपाला·····" पर ध्यान देना आवश्यक है।

अस्तुति में खरारी, अनंता, मायागुनग्यानातीत, श्रीकंता आदि विशेषण आये हैं। खरारी तो द्विभुज धनुर्धारी राम हैं न कि चतुर्भुज विष्णु जिनके चार आयुध शंखादि हैं। अनंत भगवान तो राम हैं न कि विष्णु। जो जो विशेषण स्तुति में हैं वे सब श्रीराम ही के हैं। 'श्रीकन्ता' का अर्थ जब टीकाकार विष्णु भगवान करते हैं तब भुजचारी का अर्थ चार भुजा तथा निज आयुध का अर्थ शंख चक्रादि कर देते हैं उनके अर्थानुसार 'श्री' का अर्थ लक्ष्मी है। परन्तु यहाँ 'श्री' शब्द का अर्थ लक्ष्मी नहीं प्रत्युत श्री जानकी माता है और 'श्रीकंता' का अर्थ लक्ष्मीपति विष्णु नहीं प्रत्युत सीतापति श्रीराम है। श्री=सीता। मानस से कुछ प्रमाण निम्नांकित हैं :—

उभय बीच श्री सोहइ कैसी।
ब्रह्म जीव बिच माया जैसी॥ (अरण्य-६)
तदपि अनुज श्री सहित खरारी।
बसतु मनसि मम कानन-चारी॥ (अर०-१०)
श्री सहित अनुज समेत।
कृपानिकेत पद मन लाइहौं॥ (अरण्य-२५)
जेहिबिधि कृपा सिंधु सुख मानइ।
सोइकर श्री सेवा बिधि जानइ॥ (उत्तर-२२)
सिंहासन अति उच्च मनोहर।
श्री समेत प्रभु बैठे ता पर॥ (लं० ११८)

इससे प्रगट है कि कौशिल्या माता के समक्ष श्रीकंता तथा खरारी द्विभुज धनुर्धारी श्रीराम जी प्रगट हुये न कि शंख चक्रादि धारी चतुर्भुज विष्णु भगवान। ऐसा अर्थ करने से ठीक ठीक मनु के समक्ष भगवान रूप का प्राकट्य कौशिल्या माता के सम्मुख भी बैठ जाता है और वरदानानुकूल होकर पूर्वापर बिरोध नहीं होता। अतः "निज आयुध भुजचारी" का अर्थ मेरी तुच्छ बुद्धि से यह होगा :—

निज आयुध = भगवान श्री राम के अपने आयुध अर्थात् धनुष-बाण एवं भुजचारी का अर्थ भुजाओं में धनुष-बाण लिये हुये उन्हें चलायमान दशा में रखे हुये हैं। जब कौशिल्या माता के समक्ष द्विभुज राम प्रगट हुये तो उनके दोनों हाथों में धनुष बाण थे। धनुष पर बाण चढ़ाए हुये थे और उसे सहज मुद्रा में इधर उधर घुमाते रहते थे। यह श्रीराम जी की सहज मुद्रा है कि वह सर्वदा उठते, बैठते चलते फिरते अनायास ही धनुष बाण हिलाते रहते हैं। चारी=चलायमान, चलने वाला। जैसे चर= चलने वाला, अचर= न चलने वाला। "बसतु मनसि मम कानन चारी" कानन चारी= बन में चलने वाले राम। चर=चलना। चरति, चरतः चरन्ति। चारी=चलने वाला=चलायमान भगवान अपनी सहज मुद्रा में सर्वदा धनुष बाण पर हाथ फेरते रहते हैं इसका कुछ प्रमाण मानस से दिया जाता है:—

(१) चित्रकूट में मुनि मंडली के बीच में शांतिमय वातावरण में श्री रामचन्द्र जी ज्ञान-चर्चा सुन रहे हैं। वहां धनुषबाण सँभालने की कोई आवश्यकता नहीं है। वहां बैठे बैठे भी भगवान अपनी सहज मुद्रा में अपने कमलवत हाथों को धनुषबाण पर इधर उधर फेरते रहते हैं अर्थात धनुषबाण के साथ दोनों हाथ चलायमान (चंचल) अवस्था में हैं मानो किसी लक्ष्य पर आघात करने के हेतु धनुष बाण को ठीक कर रहे हों:—

बेदी पर मुनि साधु समाजू। सीय सहित राजत रघुराजू॥
लसत मंजु मुनि मंडली, मध्य सीय रघुचन्दु।
ग्यान सभाँ जनु तनु धरें, भगति सच्चितानन्दु॥२३६॥
कर कमलनि धनु सायकु फेरत।
जिय की जरनि हरत हंसि हेरत॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) सुबेल शैलोपरि विभीषणादि भक्तों के साथ भगवान मृगछाला पर शाँत वातावरण में विराजमान हैं। आपस में कुछ विचार विमर्श हो रहा है। भगवान बैठे बैठे अपने दोनों कर कमलों से धनुष बाण को अपनी सहज मुद्रा में सुधारते रहते हैं अर्थात दोनों हाथों को धनुष बाण पर इधर उधर फेरा करते हैं। हाथ इधर उधर चलायमान हैं और स्थिरावस्था में नहीं हैं।

अतः इस प्रकार मेरी तुच्छ बुद्धि में इसका अन्वय चारी (चलायमान) भुज (में) निज आयुध (धनुष बाण) करके यह अर्थ कि "भगवान के चलायमान भुजाओं में उनके अस्त्र धनुषबाण सुशोभित हैं" करना सामयिक, संगत तथा उपयुक्त प्रतीत होता है। और इस प्रकार मनु सतरूपा के प्रसंग का ध्यान रखते हुये भगवान के वरदानानुसार पूर्वापर विरोध नहीं होता है।

सियावर रामचन्द्र की जय

चातुर्मास्य व्रत

आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक चातुर्मास्य व्रत करने का नियम है। इसमें परिव्राजक भी एक ही स्थान में निवास करके साधन भजन करते हैं। प्रति वर्ष ८ मास अभ्युदय इस लोक के उपार्जन में और ४ मास निःश्रेयस परलोक साधन में लगाकर धर्माचरण करने की यह सुन्दर परम्परा थी। कोई बड़भागी अब भी इसका अनुसरण करते हैं क्या? करना चाहें तो रामवन में सुविधा प्राप्त होंगी।

हरिशयनी एकादशी=आषाढ़ शुक्ल ११ ता० २७-६-५८ से साधना भजन प्रारम्भ कीजिये। इस वर्ष पुरुषोत्तम श्रावण के कारण ५ मास का अवसर प्राप्त होगा। व्रत पूर्ण होगा प्रबोधिनी एकादशी कार्तिक शुक्ल ११ ता० २२-११-५८ को। प्रतिवर्ष ही पर्वों से परिपूर्ण समय यह होता है। इस वर्ष हरिहरात्मक श्रावण पुरुषोत्तम मास के कारण इसका महत्व और भी बढ़ जायगा। पर्वों की पूरी सूची देना नहीं है प्रमुख होंगे (१) गुरुपूर्णिमा (२) पूरा पुरुषोत्तम श्रावण मास (३) श्रावणी (४) जन्माष्टमी (५) ऋषि पंचमी (६) पितृपक्ष (७) शारदीय नवरात्र (८) विजयदशमी (९) शरत्पूर्णिमा (१०) हनुमज्जयन्ती (११) दीपावली (१२) अन्नकूट आदि। रामवन में सभी पर्व दिवसों पर उत्सवादि की समुचित व्यवस्था की जायगी। पाँचमास में लगभग १०० दिन पर्व के हैं। ऐसा श्रेष्ठ सुगठित अवसर साधन भजन का मिलना कठिन है।

रामवन में साधकों के लिये स्वतंत्र कुटियाँ हैं। हम चातुर्मास्य व्रत के लिये ५ साधकों को स्थान दे सकेंगे। जो साधक अपने खर्च पर रहना चाहेंगे उन्हें भी स्थान मिलेंगे और जो आश्रम के खर्च पर रहना चाहेंगे उन्हें भी। चाहें तो सपत्नीक भी आ सकेंगे केवल पुरुषोत्तम श्रावण में रहने वालों के लिये व्यवस्था की जा सकेगी। आवश्य केवल यह है कि आप अभी से पत्र व्यवहार करके अपना स्थान सुरक्षित करालें।

शारदाप्रसाद
मंत्री, मानस-संघ
रामवन (सतना)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय 111388

संघ समाचार

माच मास में संघ के १८४ नये सदस्य बने तथा ८ नई शाखायें स्थापित हुईं, जिनका विवरण इस प्रकार है :—

शाखा संख्या २०२२ टिकरवारा [जबलपुर] सदस्य ६ मंत्री श्री रामचन्द्र जी दुबे। शा० सं० २०२३ कोटगढ़ [बिलासपुर] स० ६ मं० श्री छेदीलाल जी सिरदार। शा० सं० २०२४ बड़ेरा [जबलपुर] स० ६ मं० श्री बैजनाथप्रसाद जी। शा० सं० २०२५ नेतनागर [रायगढ़] स० ६ मं०। शा० सं० २०२६ बाँधामूड़ा [रायगढ़] स० ६ मं०। शा० सं० २०२७ सेमरी हरचन्द [होशंगाबाद] स० १० सं० श्री कृपाशंकर जी चौबे। शा० सं० २०२८ उदान [दुर्ग] स० ६ मं० श्री बहादुरसिंह जी। शाखा संख्या २०२९ बाड़ी-छोटी [भोपाल] स० ६ मंत्री श्री कालूराम जी तिवारी।

रामधन समाचार

श्री मारुति सेवाः—मार्च मास में मानस का एक अखंड पाठ नित्य होता रहा। इस मास में १२०६.५७ की आय हुई और खर्च ६३२.१४ हुआ। बचत ५७४.४३ की रही। इसमें से पिछली कमी २५०.९३ घटाने से अब ३३३.५० जमा रहे। इस मास में प्रेमियों ने हमारी जल की समस्या हल करने के लिये विशेष सहायता भेजने की कृपा की है। हम उन सबके आभारी हैं। अनावृष्टि न होती तो हमें यह सहायता न मांगनी पड़ती। प्रभु से प्रार्थना है कि अब भविष्य में ऐसा दुष्काल न आवे।

१-३-५८

१५.०० श्री रामकांत अग्रवाल, भाटापारा
२.०० ,, लाल रघुनंदनसिंह, उगनोचक

३-३-५८

५.०० श्री विजयराम श्रीवास्तव, पिरौना
२.५० ,, घनाराम रघुवंशी, सांकरा
२.०० ,, बजरामसिंह, चिरमिरी
११.०० ,, रामगोपाल पोद्दार, नागपुर

५-३-५८

५.०० श्री भगवानदास कैवर्त्त, कैमोर
५.०० ,, दिनेश्वरप्रसाद, मखदुमपुर
५.०० ,, सी० पी० शर्मा, खण्डवा
१.२५ ,, रामरक्षासिंह, हीरापुर
१.०० ,, नीलकंठ, ,,

७-३-५८

५.०० श्री अयोध्याप्रसाद गुप्त, मसकनवा
५.०० ,, महेन्द्रप्रतापसिंह, रीवा
५.०० श्रीमती शारदाप्रसाद, सतना

८-३-५८

५.०० श्री बैजनाथ जी त्रिपाठी, कुदरकोट
१०.०० ,, इन्द्रदत्त जी पुरोहित, जबलपुर
१०.०० गुप्तदान
५.०० श्री शीतलसिंह, नहला
१.२५ ,, रामसमुझ जी त्रिपाठी, सिकन्दराबाद
५.०० ,, पुरुषोत्तमसिंह जी, जगन्नाथपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१०-३-५८

२७.०० श्री वृजलाल जमुनाप्रसाद लखानी, एलडोरेट
१०.०० ,, मंगनीराम रामकुमार बाँगड, कलकत्ता
१.२५ ,, पुरुषोत्तमसिंह, जगन्नाथपुर
५.०० ,, दयाराम जी गर्ग, कटनी
१.२५ ,, रामरक्षित जी, बनारी
३.०० ,, माधूराम जी मास्टर, पवनी
५.०० ,, लक्ष्मण गोपाल काकड़े, खरोरा

११-३-५८

१०.०० श्री सूरजमल गट्टानी किशनगंज

१२-३-५८

२.५० श्री प्रेमनारायण जी सोनी, तामियाँ
५.०० ,, रामगोपाल जी पाराशर, जियागांव
२.५० ,, प्रशान्त जी, जबलपुर
२.५० ,, दरियावसिंह, तवरड़ामी

१४-३-५८

१.२५ श्री अयोध्यादास वैष्णव, चौरिया
१६.०० ,, ओंमप्रकाश जी, देहली

१५-३-५८

३.०० श्री कुन्दनलाल नन्हौरया, जबलपुर
१.२५ ,, रामरतन शर्मा, झाँसी
१.२५ ,, बाबू आनन्दस्वरूप भटनागर, झाँसी
११.०० शाखा बेटमा द्वारा श्री बसंतीलाल मोतीलाल,
५.०० श्री पं० शिवप्रसाद गौतम, सिकरीव्यास
१.२५ ,, दशरथराव, शिवरीनारायण
५.०० शाखा साजा द्वारा श्री रोंहनलाल स्वर्णकार
८.०० शाखा खोखरा द्वारा श्री फेकूलाल जी,
५.०० श्री श्यामसुन्दर अग्रवाल, गाडरवारा
५.०० ,, तुलसीप्रसाद मोहनलाल, ,,
५.०० ,, यशवंतराव गङ्गाधर, निसरपुर
२.५० ,, घनश्यामदास सातूवाला, पेण्डरा
७४.०० ,, गिरधारीलाल गोयनका, कलकत्ता

१८-३-५८

६.२५ ,, रामचन्द्र जायसवाल, सोहागपुर
३००.०० ,, विष्णुलार्ड कं०, नकरू
५०.०० गुप्तदान
३.५० श्री केशरीसिंह ठाकुर, खंडसरा
१.०० ,, लाल शत्रुहनसिंह जू देव, भैसवाही

१९-३-५८

७.२५ गुप्तदान
३१.०० श्री श्रीकृष्ण कामता दीक्षित, कानपुर
१०.०० ,, बी० डी० अग्रवाल, कलकत्ता
२.५० ,, डा० बी० एल० कोटी, मगंरौलपीर
५.०० ,, रामेश्वरदयाल अग्रवाल, नौगाँव
१०.०० ,, श्यामलाल नायक, लोधिया
१६.५७ ,, विष्णु लार्ड कं०, नैरोबी
२.०० ,, पुरुषोत्तम तिवारी, पेटरवार
५.०० शाखा पेटरवार द्वारा श्री विश्वनाथ गोस्वामी,

२१-३-५८

.५० श्री छेदीलाल सिरदार, कोहगड़

२२-३-५८

१०.०० श्री द्वारकादास मूदड़, भोपाल
१०.०० शाखा जम्होर द्वारा श्री बालमुकन्द अग्रवाल,
१०.०० श्री पुरुषोत्तमसिंह, जगन्नाथपुर
४.०० ,, कामेश्वरनाथ टन्डन, इटावा
५.०० ,, पूर्णचन्द्र कौशिकदास, तमनार
.५० ,, रामचन्द्र शुक्ल, कानपुर

२४-३-५८

२५.०० श्री भागीरथ जी भराड्य, सेंधवा
१५१.०० ,, चुन्नीलाल पन्नालाल, पानीतुला
१.२५ ,, कुमारी श्री कनकलाल त्रिवेदी, असनी
१.२७ ,, प्रबलप्रतापसिंह, बरियावां

२५-३-५८

५.२५ श्री के० एस० वर्मा, अखरार
१.२५ ,, हीरालाल, मल्हार
१०.०० ,, रामस्वरूप दुबे, भोपाल
१.२५ ,, प्रेमदास पुजारी, तलवाड़ा
१.२५ ,, उदिया जी गेहलोत, ,,
११.०० ,, गोपाल हरी दुबे, इन्दौर
१.२५ ,, दीनदयाल कोरी, झींझक
२.०० ,, गनेशलाल साहु, पलामू
५.०० ,, रामकंकन तिवारी, हरसिंहपुर
.२५ ,, जे० अप्पाराव, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२६-३-५८

१०.०० श्री कुँ० भीमसिंह जी; उदयपुर
५.०० ,, नरवदाप्रसाद दादा नारद, कन्देली
५.०० ,, लक्ष्मीनारायणजी धूत, भाटापारा
१५.०० ,, खगेश्वर जी शर्मा, ठेंगापाली
७.०० ,, नारायाणदास कावरा, भोपाल

२७-३-५८

५.०० श्री श्यामलाल तिवारी, गायव्यान
२.०० ,, श्री एम० पी० मलतारे, नागपुर
७.०० ,, मन्नू साहू, जुरलाकलाँ
३.०० ,, अविनाश भगत, सोनाहात्
५.०० ,, आर० पी० पोद्दार, बाम्बे
१.०० ,, रामकुमार पाण्डेय, सतना

२८-३-५८

१.०० श्री बसावनराय वर्मा, जैतपुरी
४.७५ ,, घनसाय साहू, वाराद्वारवस्ती
१.२५ ,, ज्वालाप्रसाद पाण्डेय, दुरपा
२.०० ,, रामरक्षासिंह, हीरापुर
५.०० श्रीमती जनकदुलारी, दिल्ली
५.०० रामायण मंडल शाखा अखंड द्वारा श्री नारायण जी हजारी
३३.०० श्री गोविन्दलाल जी जायसवाल, कटोरी
५.०० ,, शङ्करलाल जी, जुन्नारदेव
१.२५ ,, रामप्रसाद विश्वकर्मा, कन्हवारा
६.२५ ,, नत्थूप्रसाद साहु, छिंदवाड़ा
१.२५ ,, कन्हैयालाल राजपूत, सुकली
१०.०० जस्टिस श्री हरिश्चन्द जी, इलाहाबाद
१.०० श्री काशीप्रसादसिंह, लगरगवां

२९-३-५८

५.०० श्री बृजमोहनसिंह भुवाल, बेमेतरा
५.०० ,, रामप्रताप पाठक, सेमरीतालाव
२.४० ,, दयाशङ्करसिंह, उटिया
५.०० ,, तीरथराम जी, बुन्देली
२.०० ,, मोतीलाल जी साहू, इलाहाबाद
१२.८३ चढ़ोत्री

१२०६.५७

मानसप्रचारः—इस मास में सदस्य शुल्क से ६२.१२, प्रेमियों से १०.०० श्री राम नाम लड्डू विभाग से ६०.६२ और पत्र व्यवहार विद्यालय से १०.०० कुल १४२.७४ की आय हुई। चिट्ठी खर्च में ६६.७५ खर्च हुआ। बचत ७५.९९ की रही। पिछली कमी १३३६.८३ से यह घटाने पर अब १२६०.८४ की पूर्ति करना बाकी है।

८-३-५८

५.०० गुप्तदान
५.०० श्री मुन्नालाल जी देवासे, आर्वी

१०.००

तुलसी संग्रहालयः— इस मास में ८२०.०१ खर्च हुआ। पुस्तकों के लिये २६.०० प्राप्त हुए और भवन के लिये ५.०० का गुप्त दान मिला। कुल ३१.०० की आय हुई। दाताओं की ओर से पुस्तकें मंगा ली गई हैं। मास की कमी ७८९.०१ की रही जो पिछली कमी ४६९१.७० सहित अब ५४८०.७१ की पूर्ति करना बाकी है।

तुलसी संग्रहालय में ग्रंथ संग्रह प्रगति

नीचे लिखे महानुभावों ने पाँच या अधिक पुस्तकें प्रदान करने की कृपा की है।

१-	श्री मुन्नालाल जी देवासे,	आर्वी	११
२-	,, राधेश्याम जी पुरोहित,	पेटरवार	५
३-	,, बद्रीप्रसाद सोनार,	माधवगढ़	५
४-	,, हरशरण जी शर्मा,	,,	५
५-	,, पं०तरुणेन्दु शेखरजी तिवारी	,,	५
६-	माध्यमिक पाठशाला,	सज्जनपुर	१२
७-	श्री श्री चन्द जी जैन,	रीवा	३१
८-	,, ब्रह्मदेवसिंह जी,	दिल्ली	६

दाताओं की पूर्ण संख्या अब ३२ हो गई है। आशा है भविष्य में अधिक प्रेमी पुस्तकें भेजेंगे। सभी विषयों की हिन्दी तथा संस्कृत की पुस्तकें भेजी जा सकती हैं। तुलसी साहित्य का हम विशेष स्वागत करेंगे। —*शारदाप्रसाद*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री राम नाम लड्डूः— मार्च मास में ४००३ लड्डू तैयार हुए। दैनिक क्रम में १५५ लड्डू श्री मारुति भगवान को समर्पण हुए। शेष श्री रामनाम नौका के लिये रखे गये। केन्द्रों कि स्थितिः—

श्रीरामनाम बैंक पटना २०४६, [१] भाटापारा ७००, भैंसवाही ५२६, मोतीहारी ५०२, सेंधवा ४५१, परौंख ३६०, [२] डगनिया ३६०, नवलगढ़ २५१, [३] गोरखपुर २६०, [४] महू १६५, [५] जलालखेड़ी १६२, [६] पहरिया ११३ [७] नौगाँव ७४, [८] बाड़ा ६४, [९] तलवाड़ा ५२, [१०] रीवा ४०, [११] आशोक ३६, [१२] बाराद्वार ३३, [१३] हँसुवा २५, [१४] अटेली [१५] गुर्जीकिला

अन्न सेवा

महन्त श्री रोशनपुरी गोस्वामी ने ६ बोरा चावल भेजने की कृपा की है। इसमें १६ खंडी ५ काठा विविध प्रेमियों से उनके द्वारा संग्रह किया गया है और दो खंडी श्री रामरक्षित जी रामायणी से प्राप्त हुआ है। यह उन्हें रमपुरा यज्ञ में मिला था। महन्त श्री जवाहर पुरी गोस्वामी ने नीचे लिखे अनुसार विवरण भेजा है।

सर्व श्री पं०पूर्णानन्द ज्योतिर्विद भुखेम ३ खंडी, बाबू दक्षेन्द्रपुरी कोहड़िया ३ खंडी, होरिलगिर गोस्वामी कोहड़िया, १ खंडी ५ काठा, पं० रामानुज उपाध्याय १ खंडी ५ काठा, घनाराम साहू घोरपुरा २ खंडी, सेवाराम कुनमी १ खंडी, आशाराम रावत १ खंडी ५ काठा, उदेराम साहू समलपुर १ खंडी ५ काठा, शिवराम कुनमी १० काठा, खूबीराम कुनमी १० काठा, ढेलऊराम रावत ५ काठा, सुकदेवपुरी गोस्वामी ५ काठा, तनगूराम कुनमी ५ काठा,

यह धान संग्रह करने में सर्व श्री होरिलगिर जी गोस्वामी, पं० रामानुज उपाध्याय और सेवाराम जी ने अवर्णनीय परिश्रम किया है। इसके लिये शाखा तथा ग्राम वासी आभारी हैं। आशा है सब प्रेमी आश्रम को इसी प्रकार सहयोग देते रहेंगे।

हम भी इस कृपा के लिये आभारी हैं। आशा है नई फसल आने तक हमें चावल खरीदना नहीं पड़ेगा। गेहूँ क्षेत्र के प्रेमी यदि गेहूँ भेज देंगे तो अकाल के कारण उत्पन्न हमारी समस्या ही हल हो जाय।

श्री जमुनाप्रसादसिंह अध्यापक स्कूल लेदरी ने शाखा की ओर से ॥ऽ चना भेजा है। हम उनके आभारी हैं। श्री हनुमान जी के दैनिक भोग के लिये चने की भी आवश्यकता है ही।

विविध समाचार

भमरहा :—श्री रमाशङ्कर जी पाण्डेय के मकान में फाल्गुन शुक्ल १४ से चैत्र कृष्ण ८ तक जौनपुर निवासी पं० श्री लालताप्रसाद जी व्यास द्वारा मानस पर सुन्दर प्रवचन हुआ। काफी जनता आती थी। अंतिम दिन आरती, हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

मोगरा :—श्री सुकराम के यहाँ ता० २-२-५८ को रामायण का अखंड पाठ हुआ। बाद में कीर्तन, आरती, हवन, ब्राह्मण भोजन, सत्यनारायण की कथा होकर प्रसाद वितरण हुआ।

—पं० मिट्ठूलाल

बरौली :—श्री मङ्गलप्रसाद जी के गोला में श्री पं० केशरी किशोरशरण जी रामायणी मानसमार्तण्ड द्वारा ता० १४-३-५८ से २०-३-५८ तक मानस पर प्रवचन हुआ। कथा सुनने के लिये काफी श्रोतागण आते थे। भविष्य में मानस सम्मेलन करने का विचार हुआ।

—कन्हैयालाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरघौषी :—सदस्यों द्वारा श्रीराम विवाह लीला बड़े धूमधाम से हुई। —रामबालक

शास्त्रीनगर (कानपुर) :—श्री पं० पारसनाथ जी शुक्ल के निवास स्थान पर ता० १६ मार्च की शाम को मानस का गान हुआ। समाप्ति पर संकीर्तन, आरती आदि होकर प्रसाद वितरण हुआ। —संवाददाता

ऊन :—पंचायत प्रशिक्षण शिविर के समय श्री पं० आनन्द जी व्यास द्वारा शबरी प्रसंग पर बड़े रोचक ढंग से प्रवचन हुआ।
—विष्णुराम सनावद्या

नौगाँव :—मैंने नये मकान के पास तीन कुएँ खोदवाये सभी में पत्थर ही पत्थर पड़ता गया। तबियत परेशान हो गई। सहसा एक दिन श्रीहनुमान जी का स्मरण किया और चौथा कुआँ खोदवाया। उसमें भी पत्थर निकला। निराशा हुई लेकिन श्री हनुमान जी की कृपा से मरोड़ गया। कुछ दिनों में जल निकल आया। अपार हर्ष हुआ कुएँ का नाम श्री हनुमान कूप रखा गया।
—रामेश्वरदयाल अग्रवाल

लेदरी :—श्री नन्हेसिंह जी के मकान पर ता: २-३-५८ को अखन्ड रामायण, अखन्ड राम नाम जप सदस्यों द्वारा हुआ। समाप्ति पर आरती हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ।

टिकरबारा :— ता० ४-३-५८ को श्री सुरेन्द्रकुमार जी एम० ए० द्वारा रामायण पर प्रवचन हुआ। शाखा स्थापित हुई। —यमुनाप्रसादसिंह

बन्देमऊ :— शिवरात्रि को श्री शिव जी का पूजन तथा रुद्राष्टक का सामूहिक पाठ हुआ। ॐ नमः शिवाय मन्त्र का अखंड कीर्तन हुआ। श्रीशारदादास जी पुजारी ने सम्पुटित अखंड मानस पाठ किया। ग्राम औरवा में श्री मद्भागवत् सप्ताह हुआ। भण्डारा हुआ। —छोटेलाल

सागर :—सदर बाजार में ता० २८-१२-५७ से ५-१-५८ तक श्री दुलीचन्द जी राठौर के यहां, ता: ६-७ जनवरी को अशोक भवन में; तथा ६-१-५८ से १२-१-५८ तक श्रीसाँडलनी रहली वालों के यहां श्रीस्वामी किशोरीरमणाचार्यजी रामायणी वृन्दावन धाम द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ।

चंदेरी :—ता: १७-१-५८ से २०-१-५८ तक, मुंगावली में, ता० १३-१-५८ से १६-१-५८ तक श्री शिवराजसिंह के यहाँ, भोपाल में ता: २३-१-५८ से २५-१-५८ तक श्री जुगल किशोर नारायणदास के यहां तथा रायपुर में ता: २४-२-५८ से ३-३-५८ तक श्री सेठ केदारनाथ जी अग्रवाल के यहाँ श्री स्वामी किशोरी रमणाचार्यजी रामायणी वृन्दावन द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। —संवाददाता

घेगांव :—ता० ४-४-५८ को श्रीहनुमान जी के मन्दिर में १६-१७ सदस्यों द्वारा मानस पारायण, हनुमान चालीसा पाठ आदि होकर प्रसाद वितरण हुआ। —विष्णुदास

कटाव :— के श्री १०८ श्री महन्त मथुरादास जी महाराज ने चैत्र शुक्ला १३ को इस नश्वर शरीर का त्याग करके नित्य लीलामय प्रभु में प्रवेश किया। आप प्रसिद्ध सेवाभावी संत, गुजरात में श्री राम नाम और रामायण का डंका बजाने वाले थे। ऐसे महान सन्त के अभाव से इस प्रान्त का भाविक भक्त समाज अनाथ सा हो गया है। आपको श्री साकेत बिहारी पूर्ण ब्रह्म श्रीराम प्रभु परम शान्ति प्रदान कर अपने श्री चरणों में नित्य निवास प्रदान करें। —अवधकिशोरदास

पुष्कर :—श्री रामलक्ष्मण जी के भव्य मंदिर में श्रीरामानन्द जी शर्मा द्वारा मानस नवाह पारायण तथा अध्यात्म रामायण के पाठ हुए। श्रीराघवेन्द्राचार्य जी ने श्री बाल्मीकीय रामायण का पारायण किया। —संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत्र पारायण समाचार

[ताः २१-३-५८ से २९-३-५८ चैत्र शुक्ल १ से ९ तक]

झाँसीः—श्री रामचरित मानस प्रचारिणी समिति के कार्यालय में ११ सदस्यों ने श्री मानस का नवाह पाठ किया। नवमी को श्री राम जन्म महोत्सव मनाया गया। श्रीराम मन्दिर में अखंड पाठ हुआ। बाद में भंडारा होकर प्रसाद वितरण हुआ। —नारायणदास गोस्वामी

नयागाँवः—श्री दुर्गा के स्थान में १० सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर ब्राह्मणों एवं ९ कन्याओं को भोजन कराया गया, हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। नवमी को रात्रि में श्री पं० हेमराज पाण्डे द्वारा रामायण पर प्रवचन हुआ। ६०० के लगभग जनता इकट्ठा हुई थी। प्रति गुरुवार को साप्ताहिक रामायण होती है। —भोपतसिंह

उमरेठः—नवाह पाठ हुआ। हर रोज आरती होकर प्रसाद वितरण होता था। अन्तिम दिन हवन भी हुआ। —मंगुभाई

उराई डवरीः—नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —रामविलास

जियागाँवः—श्री मारुति मंदिर में मानस के ५ नवाह पाठ हुए। बाद में पूजन, आरती, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। मानस पर प्रवचन भी हुआ। —रामगोपाल

बेमेतराः—अखंड दीप जला कर नवाह पाठ किया। प्रतिदिन शाम को ६ हजार मंत्र जप हुए। —बृजमोहनसिंह

बिलासपुरः— नार्मल स्कूल में ताः ५-४-५८ को भारत के सुप्रसिद्ध रामायणी पं० श्रीरामरक्षित जी मानस भूषण का बहुत ही सुन्दर भाव भक्ति पूर्ण प्रवचन हुआ। —पं० माधोप्रसाद

बुन्देलीः—चैत्र बदी २ से १२ ताः ७-३-५८ से १७-३-५८ तक रामायण मंडली की ओर से मानस यज्ञ हुआ। जिसमें २५ साधकों द्वारा मानस पाठ तथा ५ साधकों द्वारा साथ ही साथ हवन भी होता था। जिसमें प्रमुख व्यास मानस तत्वान्वेषी पं० श्रीरामकुमारदास जी रामायणी अयोध्या, श्री पं० रामरक्षित जी बनारी, श्री पं० सूर्यप्रसादजी रामायणी गोसाईंपुर, श्री पं० राजेश्वरप्रसाद जी ओझा देवकर आदि थे जिनके प्रवचन नित्य १ बजे से ६ बजे तक होते थे। रात्रि में रामधुन कृष्ण-सुदामा नाटक शाखा मंत्रियों का परिचय शंका समाधान आदि होता था। सम्मेलन सफल रहा। —तीरथराम

जुड़ावनकलांः— श्री शंकर जी के मन्दिर में नवाह पाठ हुआ। हर बुधवार को रामायण होती है। —मन्नूराम साहू

हीरापुरः— श्री राम नवमी को नवनिर्मित मन्दिर में श्री हनुमान जी की स्थापना हुई।

धैयाः-श्री रामनाम मन्दिर के चारो ओर बैठकर पाँच साधकों ने नवाह पाठ किया। श्रीहरि मंदिर में नवाह पाठ हुआ। माइन्स बोर्ड क्लब में नवाह्निक पाठ, तथा अंतिम दिन अखंड हरि कीर्तन हुआ। हवन तथा मानस प्रवचन हुआ। दरिद्रगण को भोजन कराया गया। श्रीराम कृष्ण भूफोड़ ने श्री शंकर जी के मंदिर में नवाह पाठ किया। —रामरक्षासिंह

मन्दरौदः— नवाह पाठ हुआ। रामायण मंडली बालकगण द्वारा नाटक एवं लीला की गई। —प्रद्युम्नसिंह

अछल्दाः—प्राथमिक विद्यालय और नेविलगंज के ५० बालकों द्वारा नवाह पाठ हुआ। पूर्ण होने पर बाल भोजन और हवन हुआ। —नरेन्द्रसिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नन्दौरकलां:— नौ सदस्यों द्वारा मानस का नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, ब्राह्मण भोजन कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ।
—बनमालीप्रसाद

विहटा:—पाँच सदस्यों ने नवाह पाठ किया। समाप्ति पर सत्यनारायण जी की पूजा होकर प्रसाद वितरण हुआ। —वासुदेवराय

सफीपुर:— नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर प्रसाद वितरण हुआ। —बैजनाथ सेठ

उरमाल:— व्यक्तिगत २ नवाह पाठ हुए। माध्यमिक शाला में प्रति शनिवार सामूहिक रामायण होती है। —फकीरराम देवाँगन

भनपुरा:— व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए। श्रीराम नवमी को विप्रों, पुरुषों तथा बालकों को भोजन कराया गया। हवन हुआ। —रामनाथ

खैरा:— ५ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुए। समाप्ति पर हवन हुआ, जलूस निकाला गया और प्रसाद वितरण हुआ। —मनराखन साहू

रेड़ा:— सात सदस्यों और २ महिलाओं ने नवाह पाठ किये। समाप्ति पर हवन, नगर कीर्तन, भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। -धनेश्वरप्र०

पचाड़ि:—श्री रामानुग्रहदास जी रामायणी की अध्यक्षता में मानस का नवाह पाठ हुआ और मानस पर प्रवचन हुआ। नवमी को श्री राम जी का जलूस निकाला गया। बाद में ब्राह्मण भोजन होकर विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन श्रीराम जन्म पर हुए। —बाबू जंगलीप्रसाद

कोकलकचक:— ६ सदस्यों ने नवाह पाठ किया। समाप्ति पर हवन, कीर्तन तथा ब्राह्मण भोजन हुआ। —रामकिसुनप्रसाद

कोटरा:—चैत्र शुक्ल ८ से, २४ घन्टे का मानस का अखंड पाठ हुआ। समाप्ति पर प्रसाद वितरण हुआ। —प्यारेलाल गिरवरसिंह

सिरसा:— श्री देवी जी और श्री महावीर जी के स्थान में १७ सदस्यों द्वारा मानस का सामूहिक नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, कीर्तन, ब्राह्मण भोजन हुआ। —बनमालीलाल

भैंसतरा:—५ व्यक्तियों द्वारा मानस का नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —भुवनलाल

भमरहा:— नवाह पाठ १ तथा सुन्दरकांड के १८ पाठ हुए। समाप्ति पर हवन, आरती, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —रमाशंकर

हिरमी:— नवाह पाठ, और नित्य २ माला जप तथा गीता के १० श्लोक अर्थ के सहित होता था। अंतिम दिन संगीत रामायण गान रामध्वनि होकर प्रसाद वितरण हुआ। —चोबाराम कश्यप

नहला:— ५ सदस्यों ने नवाह पाठ किया। बाद में हवन, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —शीतलसिंह

घेगाँव:—श्रीराम मंदिर में २६ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। दशमी को हवन हुआ जलूस निकाला गया। प्रसाद वितरण हुआ। मानस पर प्रवचन हुआ। —विष्णुदास साधु

धुरकोट:— श्री हनुमान जी के मन्दिर में मानस का एक अखंड पाठ, एक सम्पुटित पाठ तथा श्रीहनुमान चालीसा के १०० पाठ हुए। श्रीमद् देवी भागवत् हुई। समाप्ति पर हवन तथा ब्राह्मण भोजन हुआ। तीन व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए।
—ठा० रणजीतसिंह

अटंग:— मानस का अखंड पाठ हुआ। जलूस निकाला गया। —हिरऊराम

रहटी:—नवाह पाठ हुआ। —भिकारीलाल

भिनपुरा:— नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर जलूस निकाला गया। हवन आरती होकर प्रसाद वितरण हुआ। —भवँरलाल जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुगसलाई :—श्री रामनगीनासिंह जी के स्थान पर मानस का अखण्ड पाठ ९ दिन तक हुआ। समाप्ति पर हवन होकर प्रसाद वितरण हुआ। नवमी को सेवा सदन पुस्तकालय में मानस का एकाह पाठ एवं हवन हुआ। शाम को सुन्दरकाण्ड का पाठ एवं प्रवचन हुए। —रामसमुझ शुक्ल

घोघरा :— नवमी को अखण्ड पाठ, राम नाम जप, रामनाम लेखन आदि हुए। एकादशी को श्री ॐकारप्रसाद जी द्विवेदी के घर में रामायण का अखण्ड पाठ, विनय पत्रिका, हनुमान चालीसा, शिव चालीसा, गायत्री चालीसा एवं बरवैरामायण का अखण्ड पाठ व हवन हुआ। —माधवहरि

खजरी :—शीतला मन्दिर में ९ सदस्यों द्वारा नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन हुआ। जलूस निकाला गया। प्रवचन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —पुनाराम

कोटमी :—पांच सदस्यों द्वारा नवाह पाठ तथा २ अखण्ड पाठ हुए। समाप्ति पर हवन, कीर्तन हुआ। —रामानुज वैष्णवदास

भाटापारा :—श्री रामजानकी मन्दिर में भगवान राघवेन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में नौ दिन तक मानस का अखंड पाठ, श्री वाल्मीकीय रामायण का नवाह पाठ, श्रीमद्भागवत सप्ताह, श्रीदुर्गा सप्तशती का पाठ, अखंड पाठ, प्राणप्रतिष्ठा यज्ञ हुआ। दशमी को जलूस निकाला गया। पूरे उत्सव भर भारत सुप्रसिद्ध रामायणी कवि रत्न पं० भैरवप्रसादजी द्विवेदी रामायणी प्रयाग द्वारा मानस पर बहुत ही मार्मिक हृदय स्पर्शी प्रवचन हुआ। जनता प्रवचन से बहुत ही प्रसन्न है। —त्रिशूलधारी

कोटमी :—दो व्यक्तिगत पाठ, एक अखंड पाठ तथा ६ सदस्यों द्वारा सामूहिक पाठ हुआ। बाद में ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —रामरंगीलेदास

दुरपा :—चार व्यक्तिगत नवाह पाठ हुए। समाप्ति पर हवन, कीर्तन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —नकछेदप्रसाद

सुसारी :— २५ सदस्यों द्वारा सामूहिक नवाह पाठ हुआ। अंतिम दिन हवन, ब्राह्मण भोजन होकर प्रसाद वितरण हुआ। —गोपीलाल बोंदर

हरदा :—मानस का नवाह पाठ हुआ। श्रीमती महादेवीजी डवरा द्वारा मानस पर प्रवचन हुआ। —अम्बालाल

भोपाल :—श्रीराधा कृष्ण मंदिर घोड़ा नक्कास में मानस का सामूहिक नवाह पाठ हुआ। समाप्ति पर हवन, आरती होकर प्रसाद वितरण। हुआ श्री रामनारायण जी अध्यापक के गृह पर मानस का अखण्ड पाठ हुआ। समाप्ति पर हनुमान चालीसा पाठ, हवन होकर प्रसाद आदि वितरण हुआ। —पं० करुणाशंकर

सूचना

भारत सेवक समाज का जिला स्तरीय ग्रीष्म शिविर आगामी ता० १० मई से ३१ मई तक रामवन में होगा। ८० से १०० तक विद्यार्थियों के भाग लेने की आशा है। इन्हें जीवनोपयोगी विविध क्रमों की व्यवहारिक शिक्षा प्रदान की जायगी। उच्च विद्वानों के भाग लेने की आशा है। मानस मणि के पाठक भी भाग लेकर लाभ उठावें।

काशीप्रसाद दुबे
सचिव शिविर विभाग
भारत सेवक समाज, सतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस सङ्घ द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

१—तुलसी मुक्तावली (प्रथम किरण) (श्री शम्भूप्रसाद बहुगुना, एम०ए०डिप०साइ०) ।।।-)
२— ,, ,, (द्वितीय किरण) ।।।)
३—शबरी मङ्गल (श्रीशम्भूप्रसाद बहुगुना) ।।।)
४—मानस मूल (मानस राजहंस, पं० श्री विजयानन्द जी त्रिपाठी) ।।)
५—शतपञ्च चौपाई (,,) २।।।)
६—मानस प्रसंग (,,) ३।।)
७—मानस-व्याकरण (,,) २)
८—सचिव सुमन्त्र (श्री सुदर्शनसिंह) ।-)
९—विवेकी विभीषण (,,) ।।)
१०—महात्मा बाली (,,) ।-)
११—श्रीभगवन्नाम संकीर्तन (,,) -)।।
१२—विधाता विश्वामित्र (,,) ।।)
१३—जरठजटायु (,,) ।-)
१४—देवर्षिनारद (,,) ।=)
१५—श्री हनुमान चरित (,,) ३।)
१६—मानस महत्व (पं० भैरवानन्द) १)
१७—सार्थ श्रीरामतारक प्रयोग विधि (महन्त श्री रामपदार्थदास जी महाराज एवं वेदान्त भूषण पं० श्री रामकुमारदासजी) ।।)
१८—श्री रामचरित मानस में वेदान्त दर्शन (रायसाहब हीरालाल वर्मा) १।)
१९—स्व स्वरूप दर्शन (,,) १)
२०—सब ग्रन्थन को रस (रा० सा० हीरालाल) १)
२१—दिव्य दशमी (श्री चक्र) ।=)
२२—मानस मन्दाकिनी प्रथम हिलोर (श्रीचक्र) ।)।।
२३— ,, ,, द्वितीय ,, ,, ।-)
२४— ,, ,, तृतीय ,, ,, ।-)
२५—महाभागवत चरित्र (पहिला भाग) (महात्मा श्री बालकराम जी विनायक) १)
२६—महाभागवत चरित्र (दूसरा भाग) १)
२७—विश्व साहित्य में रामचरित मानस (काव्य समीक्षा) (श्री राजबहादुर लमगोड़ा) १=)
२८—श्री रामचरित मानस में मिथिलाधाम (श्री अवधकिशोरदास श्री वैष्णव) ।)
२९—मानस प्रणेताशंकर (आचार्य पीठाधिपति श्री राघवाचार्य स्वामी जी) ≡)
३०—अनुरागी केवट (श्री रामरक्षित जी रामायणी) ।=)
३१—श्री मानस सिद्धान्त (वेदान्तभूषण श्री पं० रामकुमारदासजी रामायणी) २।।)
३२—सखी गीता (,,) ।)
३३—मानस पारायण पूजन पद्धति (,,) ।≡)
३४—धर्मरथ (,,) ।।।)
३५—सन्तवाणी (श्री महन्त रामदास जी नागा) =)
३६—हनुमान साठिका (श्री बलदेवदासजी) =)
३७—सुख शान्ति के दो मंत्र (श्रीसन्त विनीत बिहारी दास जी) ≡)
३८—भगवद् कीर्तन (,,) ≡)
३९—अनसुइया चरित्र (,,) ≡)
४०—व्यंगोपदेश (,,) ।≡)
४१—वीर वधू उर्मिला (,,) ।≡)
४२—वाल्मीकि तुलसी भये (श्री डा० भगवान-दास सफड़िया) ।।।)
४३—मानवता के चरण (,,) ।।)

संचालक
मानस प्रकाशन लिमिटेड
पो०—रामवन (सतना)

'मानस मणि' के अधिक से अधिक ग्राहक बनाइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं०—एल १०१

रामवन के प्रकाशन

१—अब तक रामवन से कुल मिलाकर ६३ पुस्तकें छप चुकी हैं।

२—ये पुस्तकें सबकी सब धार्मिक हैं। जीवन को पवित्र करने-वाली हैं।

३—इनमें श्रीराम-चरित मानस के कुछ स्थलों का विवेचन है। विभिन्न पात्रों के चरितों का विशद वर्णन है। गम्भीर चिन्तन पूर्ण सामग्री है। कहानी-पुस्तकें हैं। नाटक है और कथावाचकों के काम की पुस्तकें हैं।

४—ये पुस्तकें =) से लेकर ३॥) तक की हैं।

५—आप इन्हें किसी भी शुभ अवसर पर किसी सुहृद को उपहार दे सकते हैं।

६—घर में ये पुस्तकें रहेंगी तो इनका अध्ययन घर के छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सभी सदस्यों को संयम, शालीनता तथा आस्तिक बनने की शिक्षा देगा।

७—आप २) भेजकर हमारे स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। यह २) जमा रहेगा। कोई पुस्तक छपने पर आपको सूचना देकर 'वह पुस्तक भेज दी जायगी। स्थायी ग्राहकों को सब पुस्तकों पर जो रामवन से प्रकाशित हैं, २५ प्रतिशत कमीशन दिया जाता है।

८—आप पुस्तक सूची मँगाकर अपनी रुचि की पुस्तकें छाँट लें।

९—१) से कम की पुस्तक मंगाना हो तो उसके मूल्य तथा डाकव्यय को जोड़कर उतने का टिकिट भेज दें। क्योंकि १) से कम की वी०पी० नहीं भेजी जाती।

111388

* स्थायी ग्राहक बनकर लाभ उठाइये। *

मानस मणि

पो०—रामवन (सतना)

ग्राहक संख्या—6

सम्पादक जी "गुरुकुल पत्रिका"

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

पो० गुरुकुल कांगड़ी

सम्पादक—भगवानदास सफड़िया। प्रकाशक—शारदाप्रसाद, मन्त्री, मानस संघ, रामवन (सतना)

मुद्रक—[illegible], गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar